आँधी के बाद

(उपन्यास)

लेखक

डॉ० लक्ष्मी नारायण टंडन 'प्रेमी'

वितरक—

हिन्दी-साहित्य-भण्डार,

अमीनाबाद, लखनऊ।

चिं० नवीन नंदन टंडन एम० एससी०

की

भावी-पत्नी

को

सस्नेह,

लक्ष्मी नारायण टंडन 'प्रेमी'

प्रेमोपहार

दो शब्द

छुआछूत ऐसी सामाजिक समस्या के इर्द-गिर्द लिखे हुए इस उपन्यास का स्वागत करते हुए मुझे हर्ष है। पर छुआछूत मिट तभी सकती है जब जातपाँत मिटे, और जातपाँत के तभी लुप्त होने की सभावना है, जब धर्म लुप्त हो। धर्म यानी हिन्दू, मुस्लिम आदि धर्म। न कि नैतिक मान्यताएं जो मनुष्यकृत है और युगानुसार बदलती रहती है, यानी बदलनी चाहिए।

लेखक क्रान्तिकारी है, उस हद तक जहाँ तक वह छुआछूत के विरोधी है। पर 'निवेदन' मे भिन्न-धर्मियों में शादी का निषेध कर वह क्रान्ति के मार्ग पर एक जकशन तक जाकर रुक गए है। पर क्रान्ति का रथ तो चलेगा, तब तक चलेगा जब तक मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण बिल्कुल लुप्त न हो।

मन्मथ नाथ गुप्त

नई दिल्ली। २-१०-१९६१

निवेदन

प्रत्येक युग की कुछ विशेष समस्याएँ होती है । आज के युग की अनेक समस्याओ मे जात-पाँत तथा ऊँच-नीच के भेद की समस्या भी विकराल है । ज्यो-ज्यो मनुष्य की बुद्धि विकसित होती जाती है तथा हृदय विशाल होता जाता है वह परिवार, जाति, समाज, धर्म, प्रान्त तथा देश के सकीर्ण दायरो से क्रमश उत्तरोत्तर ऊपर उठता जाता है—विश्व-बन्धुत्व की ओर । हवाई-जहाजो तथा अन्य वैज्ञानिक आविष्कारो के युग मे देश की आपस की दूरी बहुत कम हो गई है । किन्तु मानव-प्रकृति अपनी कमजोरियो से इतनी बोझल है कि सब कुछ जानने के बाद भी प्राय वह वही कर बैठता है जो उसे नही करना चाहिए ।

पर प्रत्येक वस्तु की एक सीमा भी होती है । सुधार तथा परिवर्तन धीरे-धीरे ही होते है तथा उनके अनुकूल अपने को ढालने मे मनुष्य को कुछ समय भी लगता है । आर्य-समाज के 'जात-पॉत-तोड़क-मडल' ने भले ही कोई विशेष उल्लेखनीय सफलता अभी न पाई हो, पर शिक्षित तथा फारवर्ड तरुणे-तरुणियो ने अन्तर्जातीय, अन्तर्प्रान्तीय तथा अन्तर्देशीय विवाह करके इस क्षेत्र मे बहुत कुछ मार्ग प्रशस्त किया है ।

अभी हाल ही मे (२३ सितम्बर, १९६१ को) 'बैकवार्ड एड शेडूल्ड-कास्ट-कान्फ्रेंस' मे लखनऊ के त्रिलोकीनाथ-हॉल मे बोलते हुए उत्तर-प्रदेश के गृहमत्री श्री चरण सिंह ने कहा है कि 'संविधान मे इस प्रकार सुधार करना चाहिए कि राज्यों तथा केन्द्र की 'गजटेड पोस्ट' केवल उन्ही योग्य पढे-लिखे व्यक्तियो को दी जायँ, जिन्होंने अपनी 'कास्ट' (जाति), 'कम्यूनिटी' या राज्य के बाहर विवाह किया हो । जात-पॉत के विनाशकारी भूत को नाश करने के लिए केवल यही उपाय है । उन्होने कहा कि जन्म द्वारा ऊंच-नीच पैदा होने की मान्यता ही हमारे पिछडे-पन का मुख्य कारण है । यह जात-पाँत, ऊँच-नीच का भेद केवल हिदुओं

ही मे नही है वरन् मुसलमानों तथा ईसाइयो मे भी है और उनमे से अधिकतर हिंदू ही है जिन्होने अपने धर्म-परिवर्तन कर लिए है। समय-समय पर गौतम बुद्ध से लेकर स्वामी दयानद आदि समाज-सुधारको ने इस बुराई को दूर करने का प्रयत्न किया है किन्तु वे असफल रहे है। भारतीय-स्वतत्रता के युद्ध मे इस समस्या पर गभीर विचार नही दिया जा सका क्योकि राष्ट्रीय नेता अपेक्षाकृत और बडे कार्यो मे व्यस्त थे। किन्तु स्वतत्रता प्राप्ति के तुरत बाद जात-पाँत के द्वारा उत्पन्न सामने आई समस्याएँ सन्मुख आ गई है। अब इन्हे और अधिक स्थगित नही किया जा सकता। सविधान के कुछ अशों मे सुधार, परिवर्तन के पश्चात् जो अविवाहित अफसर नौकरी मे नियुक्त हो, वे यदि बाद मे अपनी जाति या 'कम्यूनिटी' मे विवाह करे तो उनकी नौकरी समाप्त कर दी जाय।'

और गृह-मत्री के बोलने के पश्चात् ही उसी सभा और मच मे बोलते हुए वन-मत्री श्री अलगू राय शास्त्री ने कहा कि गृह-मत्री का सुझाव भयकर है, और किसी को उसे स्वीकार नही करना चाहिये—वह सुझाव जो अन्तर्जातीय, अन्तर्धर्मीय तथा अन्तर्प्रान्तीय-विवाहो का दिया गया है। मै इसके विरुद्ध हूं। प्रमुख आवश्यकता है पिछड़े लोगों मे उत्तम शिक्षा तथा आर्थिक विकास की। व्यक्ति, जाति या फिरके के पिछडेपन का उत्तरदायित्व, आ,थक-पिछडेपन से है। इसे दूर करने के लिए समानता, शान्ति तथा एक-दूसरे को ठीक से समझने से ही यह समस्या दूर होगी।

कहने का तात्पर्य यही है कि अन्तर्जातीय तथा अन्तर्प्रान्तीय-विवाहों के सम्बन्ध मे ही विद्वानो तथा नेताओ मे अभी भेद है, तो अभी अन्तर्धर्मीय विवाहो के विरोध का तो कुछ कहना ही नही। पर विरोध हो या न हो पर अर्न्तधर्मीय-विवाह होते ही रहते है। और यदि ठीक से अध्ययन किया जाय तो हिंदू-मुसलमान या हिंदू-ईसाई मे हुए ऐसे विवाह सफल नही कहला सकते। विवाह के एक-दो वर्ष बाद ही गृहस्थ-जीवन, वैवाहिक-जीवन मे कडवाहट आ जाती है।

स्वयं महात्मा गाँधी ने एक बार कहा था कि हिंदू-धर्म से छुआछूत मिटाने का एक ही उपाय यह है कि हिंदू लडकियाँ अछूतों को ब्याही जायँ तथा अछूत लडकियो से हिंदू विवाह करें।

नेशनल-इंट्रीगेशन-कोन्फेस नई दिल्ली मे २९ सितम्बर, १९६१ को बोलते हुए कांग्रेस-प्रेसीडेंट, श्री सजीव रेड्डी ने भी जात-पॉत पर प्रहार किया और कहा कि होस्टलो तथा बोर्डिगो के नाम धर्म तथा जाति के नाम पर रखना अवाछनीय तथा हानिप्रद है क्योकि इससे छोटे विद्यार्थियो मे एकत्व की भावना तथा एक राष्ट्र के होने की भावना नही आ पाती। जीवन के किसी भी क्षेत्र मे किसी को भी लाभ उठाने से इस लिए वचित न किया जाय क्योकि वह एक विशेष जाति या धर्म से सम्बन्धित है।

बीकानेर के महाराजा कर्णी सिह ने भी उक्त सभा मे कहा कि जाति तथा धर्म के भेद-भाव का पूर्ण रूप से उन्मूलन करना चाहिए तथा प्रारभ से ही यह प्रयत्न करना चाहिए कि जात-पॉत तथा धर्म की भावना मानवता के विकास मे आडे न आने पावे। अतः शिक्षा के क्षेत्र मे बाल तथा तरुण विद्यार्थियो मे जात-पॉत का भेद-भाव प्रारभ ही से पनपने न पावे।

सक्षेप मे कहना यही है कि क्या शिक्षा, क्या नौकरी, क्या विवाह तथा क्या जीवन का कोई भी अन्य क्षेत्र हो जात-पाँत तथा धर्म के रूढि-वादी बन्धन को तोडने की आवश्यकता का अनुभव विद्वान, नेता, तथा समझदार अमीर-गरीब सभी कर रहे है।

जैसा मैने अपने उपन्यास "पुराने रास्तेः नए मोड" की भूमिका मे कहा है कि हिंदू-धर्म की रक्षा के लिए तथा छुआछूत मिटाने के लिए यह आवश्यक है कि अन्तर्जातीय-विवाह किए जायँ। उनकी आवश्यकता है, उपयोगिता है।

राष्ट्र की एकता, प्रान्तीयवादिता के नाश के लिए अन्तर्प्रान्तीय विवाहो का भी उपयोग है, पर अन्तर्धर्मीय-विवाहो का मैं विरोधी हूँ,

विशेष कर हिंदू-मुसलिम विवाह का। अन्तर्धर्मीय-विवाहो का विरोध मेरा कुछ कारणो से है। यो तो बहुत शीघ्र ही वह समय आवेगा—और उसे आना ही चाहिए—जब रूढिवादी-धर्म के बधन भी छिन्न-भिन्न हो जायँगे—और उन्हे होना भी चाहिए। पर अभी इतना विकसित साधारण (avarage) मनुष्य नही हुआ है। इसीसे मै फिलहाल अन्तर्धर्मीय-विवाहो को प्रोत्साहन नही देता। यो उपयुक्त समय आने पर अन्तर्धर्मीय-विवाह होगे भी और होने भी चाहिए। अभी तो हिंदू-कन्याये जो भी यवनो के यहाँ गई है अधिकतर प्रसन्न नही रह पाई है।

अन्तर्प्रान्तीय तथा अन्तर्जातीय-विवाहो मे भी विवाहो के कुछ दिनो के पश्चात् प्राय पति-पत्नी के प्रेम मे शिथिलता देखी गई है—मै अपवाद की बात नही, 'बहु-सख्या' की बात करता हूँ। यह तो मानी हुई बात है कि अन्तर्जातीय, अन्तर्धर्मीय तथा अन्तर्प्रान्तीय विवाह केवल वही होगे जो 'लव-मैरेज' के अन्तर्गत आते है। और प्रायः 'लस्ट' ही आजकल 'लव' कहलाता है।

कारण स्पष्ट है। अभी समाज इतना आगे नही बढा कि वह अन्तर्जातीय-विवाहो को भी सह सके। मै प्रेम-विवाह, अन्तर्जातीय तथा अन्तर्प्रान्तीय विवाहो का समर्थक हूँ किन्तु अन्तर्धर्मीय-विवाहो का नही—मै फिर कहता हूँ कि केवल इसलिए कि अभी 'एवरेज' आदमी के विचार इतने उदार नही हुए है। और वही ऐसे विवाहो की असफलता के कारण बनते है। अपने प्रस्तुत उपन्यास मे श्री घोरपडे द्वारा (पेज २२७ मे) मैने अपने विचार कहलवाए है।

मेरे उपन्यास "पुराने रास्ते : नये मोड" की भूमिका मे (पेज ११) मे प्रसिद्ध उपन्यासकार बन्धुवर श्री अमृतलाल नागर ने जो कुछ कहा है उसे मानते हुए भी मेरा उनसे थोडा सा मतभेद है। मेरा कहना केवल यही है कि अपवाद-स्वरूप ही ऐसे अन्तर्धर्मीय तथा अन्तर्देशीय-विवाह सफल होते है। पर आँख खोलकर यदि ध्यान से देखा जाय,

अध्ययन किया जाय तो हम पायेगे कि अधिकाश विवाह असफल ही होते है ।

मैं अन्तर्धर्मीय—विशेषकर हिंदुओ तथा मुसलमानो मे —विवाहों का किसी प्रकार समर्थक नही हूँ—फिलहाल अभी । 'आदर्श' दूसरी बात है, मै वह बात जो व्यावहारिक है उसकी बात कहता हूँ । हमारे सामने जो नित्य-प्रति उदाहरण आते है, उनसे मै आँखें कसे बद कर सकता हूँ । इस उपन्यास लिखने का मेरा उद्देश्य भी यही है । प्रस्तुत उपन्यास के ढाँचे मे तो तथ्य तथा सत्य है । अर्थात् इस प्रकार के विवाहो की बात आए-दिन सुनाई देती है—हाँ उसका पूरा कलेवर अवश्य कल्पना का वरदान है । इस उपन्यास मे अपेक्षाकृत घटनाये कम है विचार अधिक ।

पात्रो के सम्बध मे भी मुझे कुछ कहना है । कुछ लोग कहेगे कि 'यह कैसे सभव हो सकता है कि एक हिंदू लडकी किसी मुसलमान से तो प्रेम करती हो, इतनी फारवर्ड हो, नई लाइट मे पली हो, और उसमे पातिव्रत या सतीत्व का पुरातन हिंदू-आदर्श भी हो । जिन यवन-पुरुष से उसका यौन-सम्बध एक बार हो चुका हो—भले ही वह बलात्कार हो—उसके अतिरिक्त वह किसी और को किसी भी दशा मे शरीर समर्पित करने को, विवाह करने को, धर्म-भाव से, आध्यात्म-रूप मे प्रस्तुत न हो । उसका दृढ विश्वास तथा निश्चय हो कि अब किसी दूसरे की पत्नी रहने का, बनने का उसका अधिकार ही शेष नही रह गया है । इतनी ही चरित्र-प्रियता यदि उसमे होती तो वह किसी यवन के प्रति प्रेम-भाव ही क्यो रखती, वासना-भाव ही क्यो रखती ? यह चरित्र-चित्रण ही असभव-सा है । 'रेखा' के इस रूप को देखकर, पढकर झुंझलाहट होती है ।'

मानव-प्रकृति बडी विचित्र होती है, पेचीदा होती है । मनोविज्ञान से परिचित होने पर लोग जानते है कि कुछ विचित्रताएँ, कुछ विशेषता, कुछ मान्यताएँ, जिन्हे 'व्हिम' (सनक) के अन्तर्गत भी लाया जा

सकता है—साधारण बुद्धि, ज्ञान, अनुभव वाले उसे 'व्हिम' ही कहेगे—विशिष्ट स्त्रियो या पुरुषो मे पाई जा सकती हैं, पाई जाती है। मानव-प्रकृति गणित नही है कि उसमे सदा दो और दो चार ही होगे। अत पाठको को यदि 'रेखा' के इस प्रस्तुत रूप पर कोई आपत्ति हो, उसका ऐसा चरित्र-चित्रण करने पर मेरे प्रति उन्हे कुछ झँझलाहट हो, उन्हे कुछ अस्वाभाविकता लगे, तो मुझे मेरे उद्देश्य मे सफलता मिल गई, तो मेरा परिश्रम सफल हो गया।

मानव-स्वभाव मे एक गुत्थी, एक पेचीदगी, एक 'कमप्लेक्स' भी हो सकता है, इसे भी क्यों भूला जाय—जिसकी कोई व्याख्या सभव नही है सिवाय इसके कि व्यक्ति-विशेष की यही विचित्र, विशेष प्रकृति है, ऐसा ही उसका स्वभाव है, मान्यता है, 'व्हिम' है। इस आधार पर ही किलेदार की इस्लाम-धर्म पर अटूट श्रद्धा और अपनी हिंदू-प्रेमिका तथा बाद मे पत्नी के लिए सब कुछ बलिदान करने की भावना आश्रित है। उसकी प्रसन्नता के लिए अपनी मान्यताओ को भी अत मे तिलाजलि दे देने को वह प्रस्तुत हो जाता है। उसी प्रकार आप्टे का रेखा को किसी मूल्य पर भी फिर से हिंदू-धर्म मे वापस लाने का प्रयत्न भी यही 'व्हिम' है। रेखा की बसी-बसाई गृहस्थी को बिगाड कर भी अपने कार्यो और प्रयत्नो की असंभवता को जान कर भी पूरी शक्ति तथा सद्इच्छा के साथ प्रयत्न-रत होना, ये सब स्वभाव के 'कमप्लेक्स' के उदाहरण है।

मैने कुछ असाधारण स्वभावो, मान्यताओ तथा व्यवहारो वाले पात्र-पात्रियो का जानबूझ कर सृजन किया है, इसे मै स्वयं स्वीकार किए लेता हूं। यह समझकर ही पाठक आलोचना में प्रवृत्त हो। हाँ सब पात्र है इसी दुनिया के।

•उपन्यास के सब पात्र-पात्रियाँ तथा समस्त घटनाये काल्पनिक हैं। यदि कही किसी पात्र-पात्री को इसमे कही अपने जीवन के किसी अश की समानता मिले तो इसे सयोग या इत्तिफाक ही समझा जाना चाहिए। हाँ एक विशेष 'उदाहरण' को आधार अवश्य बनाया गया है।

ऐसेअनुभव हीन पुरुषो या स्त्रियो के प्रेम-विवाहो का अन्त प्राय ऐसा ही दुखद भी हो सकता है, यह चिर-परिचित बात है। भावनाओ के प्रवाह मे बहकर, प्रेम-बनाम-मोह मे अधा बनकर, एक ओर से बिना आगा-पीछा सोचे एकदम अपने उद्देश्य-सिद्धि के लिए फाँद पडना अहितकर हो सकता है, यह दिखलाना ही उपन्यास का उद्देश्य रहा है तथा साथ ही यह भी कि मानवता-मनुष्यता, धर्म के स्थूल रूप से अधिक बलवान है, अधिक स्तुत्य है। सच्चे और समझदार, उदार मुसलमान भी एक साथ रह ही न सकते हो ऐसी बात नही है।

"पुराने रास्ते : नये मोड" मे अन्तर्जातीय-विवाह का समर्थन था तथा "आँधी के बाद" मे, अन्तर्धर्मीय-विवाह का फिलहाल विरोध। इसके अतिरिक्त मुझे इस उपन्यास के सम्बन्ध में आपसे और कुछ कहना नही है, हाँ सुनना बहुत कुछ है।

मैं मित्रवर डॉ० प्रेमनारायण टडन (लखनऊ-विश्वविद्यालय), श्री नारायण भास्कर भावे तथा श्री माधव लक्ष्मण नातू के प्रति अपना आभार कैसे प्रकट करूँ जिन्होने मुझे उपन्यास लिखने तथा शीघ्र समाप्त करने की प्रेरणा दी, क्योकि वे मेरे आत्मीय हैं।

अत मे मै भारत-गौरव भूतपूर्व क्रान्तिकारी तथा आज के प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री मन्मथनाथ गुप्त का आभारी हूँ जिन्होंने 'दो शब्द' लिखने की कृपा की है।

२२४।४९, प्रेमी कुटीर,
पजाबी टोला,
राजा बाजार के निकट,
लखनऊ।

लक्ष्मी नारायण टंडन 'प्रेमी'
२—१०—१९६१

आँधी के बाद

: १ :

कराँची मे मैं इडियन हाईकमिश्नर्स आफिस मे हेडकल्र्क था। तब पाकिस्तान मे भारत मे कमिश्नर डॉ० सीताराम थे। वह ऐसा स्थान था जहाँ से व्यापारियो, सरकारी नौकरी-पेशा वालो, अफसरो, शरणार्थियो, राजनीतिज्ञो, अपहरण की हुई स्त्रियो तथा साधारण मनुष्यो आदि सभी को सदा कुछ न कुछ काम पडता ही रहता था। अत हर प्रकार के पुरुषो तथा स्त्रियो से मेरा सम्पर्क और सामना पडता था। यो स्वय भी मैं प्रकृति से मिलनसार था और जिस पोस्ट पर मै काम करता था, उसका महत्व मै बता ही चुका हूँ। भारत से जो पाकिस्तान आते थे उन्हे भी हमसे काम पडता था और पाकिस्तान से जो भारत जाना चाहते थे उन्हे भी पहले मेरे ही पास आना पडता था। अत. सभी लोग हम दफ्तरवालो से मेल-मुलाकात बढाने का प्रयत्न करते थे क्योकि न जाने कब और क्या उनका काम हमसे निकल पडे।

एक बात और भी थी। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान तो खैर बन ही चुका था अत. शरणार्थियो की समस्या दोनो ही देशो मे थी। जैसे हिन्दुस्तान मे बहुत सख्या मे हिन्दुओ और सिक्खो को भागकर या स्वेच्छ से पाकिस्तान से आना पडा था वैसे ही भारी सख्या मे मुसलमान भी हिन्दुस्तान सें पाकिस्तान जा कर बसे थे। कुछ तो मजहबी जोश से तथा कुछ राजनीतिक लाभो को दृष्टि मे रख कर, बडी-बडी ऊँची और रगीन कल्पनाओ को हृदय मे लिए पाकिस्तान को गए थे तथा कुछ हिन्दुस्तान मे हिन्दुओ के भावी अत्याचार के भय से हिन्दुस्तान से गए थे।

उनका विचार था कि पाकिस्तान बन जाने के बाद बहुसंख्यक हिन्दुओ के हृदय मे जो यवनों के प्रति प्रतिक्रिया होगी वह उनके लिए हितकर नही होगी, अतः खैरियत इसीमे है कि अनेक पीढियो से जिस भारत-भूमि पर बसे हुए थे, उस भूमि तथा वहाँ के हेल-मेल वालों की आत्मीयता और प्रेम को भूल कर अपने नये मुसलिम राज्य अर्थात् पाकिस्तान मे बसना ही अधिक लाभप्रद रहेगा।

और बहुत से ऐसे भी मुसलमान थे जो हिन्दुओ के जोर-जुल्म के कारण भी इच्छा न रहते हुए भी, धन-सम्पत्ति तथा इष्ट-मित्रों का मोह छोड कर पाकिस्तान को भागने को बाध्य हुए थे। पाकिस्तान मे स्वतन्त्रता मिलते ही हिन्दुओ और सिक्खो के खून से जो भीषण होली खेली गई थी, उसकी भीषण ही प्रतिक्रिया भारत मे भी हुई तो इसमे अस्वाभाविकता की क्या बात थी। दिल्ली मे, बम्बई मे तथा कलकत्ते आदि बडो नगरो में तथा उत्तरप्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश तथा पजाब आदि राज्यो (प्रान्तो) के अनेक स्थानो मे छोटी-बडी अनेक घटनाएँ हिन्दू-मुसलिम-सघर्ष की हुई। यह सत्य है कि भारतवर्ष मे हिन्दू-मुसलिम-सघर्ष शीघ्र ही दबा दिए गए।

भारत की प्रारम्भ से ही उदार नीति रही है। पर पाकिस्तान बनते ही जो वहाँ आम कत्लेआम हिन्दुओ-सिक्खो का हुआ था उससे साधारण हिन्दू-सिक्ख जनता बुरी तरह से तिलमिला उठी थी। और प्रारम्भ में तो कुछ दिनो तो उसने मुसलमानो को पीस डालने के प्रयत्न मे कुछ भी उठा नही रखा था। उस भीषण प्रतिक्रिया की प्रथम आँधी के झोंको में यवन अपने जान-माल को पूर्ण रूप से अरक्षित पाने लगे और तब जिन्हे पाकिस्तान भागना सभव हुआ वे पाकिस्तान को भागे ही।

पहली आँधी के निकल जाने के बाद भारत के यवनों ने भी अनुभव किया कि प० नेहरू की छत्रछाया में उनका धन, धर्म, जन, मान सब सुरक्षित हैं। धर्म-निरपेक्ष भारत में यवनो को भी वही सम्मानपूर्ण

स्थान प्राप्त है जो हिन्दुओ तथा अन्य अल्प-संख्यक, अन्य धर्मावलम्बियो को। पर जब प्रथम आँधी का झोका आया था तो सचमुच उसने यवनो को जड से झकझोर दिया था और अपने तथा अपने परिवार की प्राणरक्षा के लिए जितने अधिक से अधिक यवन-परिवार भाग सके थे पाकिस्तान भाग गए थे।

भारत मे या तो कॉग्रेसी मुसलमान या दूरदर्शी राजनीतिज्ञ यवन ही रह गए थे या फिर वे निर्धन, निर्बल, मुसलमान जिनके पास भागने के लिए न पैसा था न क्षमता। जिन्हे रोज-रोज कुआँ खोदना और रोज-रोज पानी पीना था, वे भाग कर जाते भी कैसे ? उन्होने तो अपनेको मरने या जीने के लिए अपने भाग्य पर, अल्ला मियाँ के नाम पर छोड दिया था। पर निश्चय ही जो दशा पाकिस्तान मे हिन्दुओ-सिक्खो की थी उससे हजार गुना अच्छी हालत भारत मे बाद मे मुसलमानो की रही।

अनेक लोगो का कहना है कि पाकिस्तान के हिन्दुओ-सिक्खो के कत्लेआम का बदला लेने की तीव्र भावना राष्ट्रीय-स्वय-सेवक-सघ मे हुई। अनेक हिन्दू जो हाल ही मे यवन हुए थे तथा अनेक हिन्दू स्त्रियाँ जो स्वेच्छा से या बाध्य होकर यवन हुई थी, उन धर्म-परिवर्तित-हिन्दुओ के प्रति हिन्दुओ को रोष भी था और वे उन्हे किसी न किसी प्रकार से हिन्दू-धर्म मे वापस लाने मे प्रयत्नशील थे, इच्छुक थे। जिन यवनो के सहयोग से इन हिन्दुओ ने धर्म-परिवर्तन किया था उन पर तो विशेष रूप से आर्यसमाजी तथा आर एस. एस वाले फाड खाए बैठे थे। अत ऐसे लोगो तथा उनके परिवारो के प्रति यदि भारत के कुछ राजनीतिक दल पीछे पडे हो तो न यह आश्चर्य की बात थी और न इसमे कुछ अस्वाभाविकता ही थी। एक ऐसे ही परिवार के सदस्य से मेरा सम्पर्क कराँची में हुआ।

एक अन्य महाराष्ट्र सज्जन श्री नारायण केशव घोरपडे थे जो वहाँ के नमक के कारखाने मे इजीनियर थे। महाराष्ट्रीय सज्जन होने

के कारण मेरा-उनका सौहार्द्र बढ गया था। वह बहुत ही मिलनसार थे। प्राय. भारत के आए कुछ मुसलिम शरणार्थियो में से कुछ मध्यवर्गीय सज्जन भी उनके यहाँ एकत्रित हुआ करते थे। उनमे से एक श्री अहमद हुसैन किलेदार भी थे। मेरी उनकी मुलाकात एक दिन श्री घोरपडे ने ही कराई। उनके यहाँ किसी शुभ कार्य के उपलक्ष्य मे एक दावत थी। श्री घोरपडे जी मेरे तथा श्री किलेदार दोनो के मित्र थे। श्री घोरपडे द्वारा परिचय करा देने के बाद श्री किलेदार और मुझमे भी काफी मित्रता हो गई।

एक बार श्री किलेदार ने अपने किसी मुसलिम मित्र के भारत जाने के लिए मुझसे परमिट दिलवाने को कहा। उन्ही दिनो भारत मे हैदराबाद रियासत मे 'पुलिस-ऐक्शन' चल रहा था। इससे भारत को जाने के लिए पाकिस्तान के मुसलमान प्रायः अनुमति नही पा सकते थे। इडिया-गवर्नमेट इस बारे मे काफी सख्त थी। किन्तु मेरे कारण किलेदार जी के मित्र को भारत आनेका परमिट सरलता स मिल गया। इससे किलेदार मेरे बहुत कृतज्ञ हो गए और मुझे बहुत मानने लगे। उनकी आत्मीयता मुझसे बढ गई।

यो तो पूरे पाकिस्तान तथा पूरे हिन्दुस्तान भर मे हिन्दू-मुसलिम-वैमनस्य की भावना जोरो पर थी और पाकिस्तान मे भीषण नरहत्या हुई थी पर यह नरहत्या पश्चिमी-पाकिस्तान के पजाब तथा सीमा-प्रान्त मे ही जोरो से हुई थी। सिधु प्रान्त मे उतनी बर्बरता नही हुई थी अत हिन्दुओ के प्रति उतना अधिक विद्वेष, ईर्षा, क्रोध आदि करॉची मे नही था जितना पजाब तथा सीमा-प्रान्त मे था। अतः यहाँ हिन्दू-मुसलमान अपेक्षाकृत अधिक मित्रवत् थे।

हिन्दुओं और मुसलमानो मे वैमनस्य अवश्य अपनी पूरी ऊँचाई पर था पर हजारो वर्षों से साथ रहते-रहते घृणा के मौजूद रहने पर भी किसी न किसी कोने मे अत्मीयता भी सुप्तावस्था मे पडी थी और कभी-कभी उसकी निद्रा भग हो जाती थी। अनेक उदार विचारो के सज्जन हिन्दुओ मे भी है और थे तथा यवनो मे भी।

एक और भी बात स्वाभाविक होती है। परदेस मे अपने देश, प्रान्त या नगर-गाँव का कोई परिचित-अपरिचित यदि मिल जाता है तो आपस मे सौहाद्र, प्रेम और आत्मीयता की लहरे उठने लगती है। अपने नगर मे तो लोग बाज दफे अपने पडोसियो तक को ठीक से नही जानते है। बम्बई, कलकत्ता ऐसे बडे नगरो मे तो एक ही बिल्डिग मे रहने वाले अनेक परिवार एक-दूसरे के प्रति पूर्ण रूप से उदासीन और अनभिज्ञ रहते है, पर एक दूसरे देश मे दो अपरिचित किन्तु एक राष्ट्र के निवासी भी बडी जल्दी हिलमिल जाते है।

मै महाराष्ट्री हूँ। श्री किलेदार भी बम्बई नगर के निवासी थे और महाराष्ट्रियो से उनका घनिष्ट सम्पर्क अपने भारत-निवास के समय मे रहा था। उनके पुरखे किसी समय स्वय महाराष्ट्री थे, किन्तु बाद मे उनके पूर्वज दादा ने यवन-धर्म स्वीकार कर लिया था। अत· किलेदार की शिराओ मे यवन होते हुए भी महाराष्ट्रीय-रुधिर तो वह ही रहा था।

व्यक्तिगत रूप से मिस्टर किलेदार मुझे एक सज्जन लगे। वह भारत से पाकिस्तान मे जाकर बसे थे पर भारत-भूमि की, अपने पुरखो के नगर की उन्हे याद न आती हो यह कैसे हो सकता था। मैं भारतवासी था और महाराष्ट्री, अतः मेरे प्रति उन्हे धीरे-धीरे सौहाद्र पैदा हो गया। हमलोगो का परिचय घनिष्ठता मे परिवर्तित होने लगा। वह पढे-लिखे, नई रोशनी के तरुण थे। एक दिन उन्होने अपने घर मुझे चाय पर निमन्त्रित किया जिसे मैंने सहर्ष स्वीकार कर लिया।

यदि श्री किलेदार स्वय न बताते कि वह यवन है तो सम्भवत. उनकी वेषभूषा और रगरूप देख कर यह समझना कठिन ही होता कि वह हिन्दू नही है। मराठी तो वह अच्छी तरह से बोल ही लेते थे, एक तरह से वह उनकी मातृभाषा थी। पर यवन होने के नाते वह उर्दू अच्छी-खासी बोलते थे, जो स्वाभाविक भी था। उनके उच्चारण तथा उर्दू-भाषा के प्रयोग से उन्हे यवन समझा जा सकता था। पर वह

हिन्दी भी बहुत अच्छी बोल-समझ लेते थे । अपनी पत्नी के कारण वह हिन्दी के भी अच्छे जानकार हो गए थे, ऐसा उन्होने मुझे बताया था।

उनकी आयु सात्ताइस-अट्ठाइस की होगी । वह स्वस्थ तथा सशक्त थे। क्लीन-शेव, नाक-नक्शा सुन्दर, कुछ लम्बे, गठा हुआ शरीर तथा व्यक्तित्व आकर्षक था । सभी के सूटेड-बूटेड रहने के कारण आजकल हिन्दू-मुसलमान-ईसाई मे भेद करना कठिन हो जाता है । अँग्रेजी ड्रेस मे वह सदा रहते थे । वह करॉची पोर्ट मे कस्टम्स के दफ्तर मे ऊँची पोस्ट पर सर्विस मे थे ।

उनके घर जब मैं चाय पर गया तो उन्होने अपनी पत्नी से मेरा परिचय 'मिसेज जोहरा किलेदार' कह कर कराया । लगभग चार वर्ष का एक बालक हमीद उनकी गोद मे था । मिसेज किलेदार लगभग चौबीस वर्ष की सुन्दर, स्वस्थ तरुणी थी । वह कुछ ठुमकी थी । रग हल्का गेहुँआ था पर नाक-नक्शा उत्तम और आकर्षक था ।

'आप श्री अरविद हरी आप्टे है तथा नागपुर-निवासी महाराष्ट्र सज्जन है । मेरे हाल ही मे हुए मित्र है तथा यहाँ हाई-कमिशनर्स आफिस मे काम करते है' कहकर किलेदार ने उन्हे मेरा परिचय दिया । मैंने ध्यान से देखा कि मेरा परिचय पाकर मिसेज किलेदार को विशेष प्रसन्नता हुई । उनका चेहरा खिल सा गया, पर कुछ क्षणो बाद ही मुझे लगा कि उनका चेहरा कुछ मुर्झा सा गया है । मै बहुत ध्यान से उनके चेहरे के उत्तार-चढाव को देख रहा था ।

प्रथम तो उन्हें बुरके मे न पाकर ही मुझे आश्चर्य हुआ था । फिर एक यवन हिन्दू से अपनी पत्नी का परिचय करवा रहा है, यह भी कम आश्चर्य की बात न थी । पर नई रोशनी के केवल पति ही नहीं है, पत्नी भी है, यह समझने मे मुझे देर न लगी । मिसेज किलेदार साडी-जम्पर पहने थी और यदि उनका नाम न बताया जाता तो कोई भी उन्हे यवन नही कह सकता था । वह न केवल पोशाक से वरन् सूरत-शक्ल,रूप-रग से भी हिन्दू लगती थी । पर जब उन्होंने हाथ जोड़ कर

मुझसे 'नमस्कार' कहा तथा बोली 'आपके दर्शन पाकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई' तो मेरे आश्चर्य का सचमुच ठिकाना न रहा। 'नमस्कार', 'दर्शन' तथा 'प्रसन्नता' शब्द उनके मुख से सुन कर यह तो निश्चय ही हो गया कि वह हिन्दी भाषा की जानकार है। साथ ही यह भी कि वह काफी पढी-लिखी और फारवर्ड है। क्योकि मुझसे मिलने पर न तो वह विशेष शरमाई या सकुचित हुई, न घबराई।

वह सुसाइटी मे आती-जाती रही है, तथा बाहर वालो से बिना झिझक से वह मिलती रही है, परिचित होती रही है, यह भी उनके व्यवहार से स्पष्ट हो गया। पढे-लिखे सभ्य और सुशिक्षित स्त्रियो-पुरुषो के चेहरो पर एक ऐसी स्पष्ट छाप विद्या और सस्कृति की होती है कि देखने वालो को उसका आभास अनायास ही हो जाता है। 'आदाबअर्ज' या 'अस्सलामआलेक' के स्थान पर उनका 'नमस्कार' और वह भी हाथ जोड कर, मुझे रुचिकर तो लगा ही, वह आश्चर्य का विषय भी लगा।

मैने कहा "आपके पति से और अब आपसे परिचय पा कर मुझे विशेष प्रसन्नता हुई है। यह मेरा सौभाग्य है जो आप लोगो से मुलाकात हुई। भगवान चाहेगा तो यह मुलाकात सदा के लिए हम सब को सच्चा मित्र रखेगी। परन्तु मुझे अत्यन्त आश्चर्य हुआ है आपके मुँह से शुद्ध हिन्दी शब्दो को तथा उनका उच्चारण सुनकर। इसके अर्थ है कि आप केवल अँग्रेजी और उर्दू ही नही हिन्दी की भी जानकार है।"

मेरी बात सुनकर एक मुर्दा-मुर्दा सी मुस्कराहट मिसेज किलेदार के चेहरे पर आई। पर वह कुछ बोली नही। ऐसा लगा जैसे वह कुछ विचारो मे खो सी गई हो। मिस्टर किलेदार अवश्य मुस्करा कर बोले "आपका ख्याल गलत नही है। अँग्रेजी और मराठी ज़बान के अलावा हिदी मे भी आपकी अच्छी पहुँच है। उर्दू तो आपने अब सीखी है— मुझसे। और अब उर्दू जबान मे भी आपका दखल है। आपसे मिलकर

मुझे ही नही इन्हे भी निहायत खुशी हासिल हुई होगी क्योकि आप भी महाराष्ट्रीय हैं और यह भी ।"

मैंने कहा "आप भी महाराष्ट्र की है, यह जानकर मुझे कितनी प्रसन्नता हुई है उसे शब्दो मे व्यक्त करना असभव है । इस सियासत, राजनीति को क्या कहा जाय जिसने आज हिंदू और मुसलमान भाइयो के बीच हिंदुस्तान और पाकिस्तान बनाकर एक गहरी खाँई पैदा कर दी है । आप लोग किसी समय हिन्दुस्तानी थे, आज पाकिस्तानी है, मै हिन्दुस्तानी हूँ और पाकिस्तान मे नौकरी कर रहा हूँ । कल जो हम एक थे आज दो हो गए है । अब तो खैर हिन्दुस्तान और पाकिस्तान बन ही गया है पर भगवान करे दोनो देशो मे प्रेम और भाईचारा बढे ।"

मिसेज किलेदार के विषय मे विस्तार से जानने की मेरी इच्छा हुई किन्तु किसी स्त्री के विषय मे पूछताछ अशोभनीय होता, विशेषकर प्रथम मुलाकात मे अत. मै शिष्टाचार के नाते चुप रहा । जोहरा जी ने तीन प्यालो मे चायदानी से चाय उँडेली । तीन तश्तरियो मे दालमोठ तथा बिस्कुट पहले ही रखे जा चुके थे । हम लोग चाय पीते रहे और इधर-उधर की अनौपचारिक बाते होती रही । चाय पीने के बाद वह तो अपने बच्चे के साथ भीतर चली गई । मै तथा किलेदार उनके ड्राइगरूम मे कुछ देर बैठे रहे और भारत, पाकिस्तान तथा अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति पर बाते करते रहे । कुछ देर बाद मैं भी उनसे अतिम नमस्कार करके अपने घर को चल दिया पर आगामी रविवार को उन्हे दोपहर के भोजन पर अपने यहाँ निमन्त्रित किया ।

चाहता मै था कि उनकी पत्नी के लिए भी कहूँ पर संकोचवश मैने उनकी पत्नी के लिए नही कहा । सोचा सब कार्य धीरे-धीरे ही ठीक होगा । रास्ते भर न जाने क्यो मैं मिसेज किलेदार के बारे में सोचता आया । एक विशेष करुणा, ममत्व तथा सहानुभूति मुझे उनके प्रति अपने हृदय मे जगती हुई दिखाई दी । एक व्यथा, एक शून्यता, एक एकाकीपन का

भाव मुझे मिसेज जोहरा की आँखो मे झाँकता हुआ दिखाई दिया था। यो उनकी आयु चौबीस-पच्चीस वर्ष की ही होगी पर आयु के देखते हुए जो गभीरता तथा उदासीनता मुझे उनके चेहरे पर दिखी वह कुछ असाधारण सी थी। जिज्ञासा, उत्सुकता तथा चचलता का जैसे उनमें पूर्ण अभाव सा था। किलेदार के चेहरे पर अवश्य मस्ती, बेफिक्री तथा प्रसन्नता थी। मार्ग भर न जाने क्या-क्या सोचता घर आया।

: २ :

अगले रविवार को किलेदार मेरे यहाँ आए। मैने उनका परिचय अपनी पत्नी मजुला से कराया। फिर हम दोनो ने भोजन किया। शुद्ध महाराष्ट्रीय भोजन बना था। और मैने ध्यान दिया कि श्री किलेदार ने उसे बहुत रुचि से खाया। ऐसा लगता था कि जैसे महाराष्ट्रीय भोजन से वह अपरिचित नही थे और वह भोजन उन्हे रुचिकर भी लगता था। भोजनोपरात मेरे बैठके मे दो आराम-कुर्सियो पर हमलोग लेट गए। बातो ही बातो मे किलेदार ने अपने गत जीवन का थोडा-बहुत परिचय दिया।

उन्होने कहा "पाकिस्तान बन जाने से मोलवी-मुल्लाओ और कट्टर मजहब-परस्तो को सुकून भले ही हुआ हो, पर हम-आप बीच के तबके के इसानो को इससे कोई खास फायदा नही हुआ है। हिदू और मुसलमान जैसे पहले रहते थे वैसे ही अब भी रहेगे, बल्कि वे दोनो घाटे मे रहेगे। हमारे लीडरान जरूर मजे मे है। सियासत के दाव-पेच हम लोग क्या जानें समझें, पर शतरज के मोहरे हम लोगों को ही बनना पडता

है । मैं आपको अपनी ही दास्तान सुनाऊं । पाँच-छै पीढी पहले मेरे कोई पुरखे लाहौर से आकर बरार मे बस गए थे । हम लोगो ने धीरे-धीरे महाराष्ट्रियन तौर-तरीके अखतियार कर लिए और एक पीढी बाद हम लोग भी महाराष्ट्रीय हो गए ।

"मेरे मरहूम बाबा बम्बई चले आए और वही बस गए । एक मुसल-मान औरत से उन्हे मोहब्बत हो गई और उसी मोहब्बत ने उन्हे मुसल-होने पर मजबूर किया । पहले हिदू-मुसलमानो मे इतनी नाइत्तिफाकी और मज़हबी ताअस्सुब न था । यह तो हद से हद पिछले पचास सालो के अदर जहर के बीज फूटकर पौधे का शुक्ल मे अयाँ हुआ है । अपनी जड़े मजबूत करने के लिए, अँग्रेजी हुकूमत को मजबूत करने के लिए अँग्रेजो ने हिंदुओ और मुसलमानो को लडवा-लडवा कर एक-दूसरे का जानी दुश्मन बनवाया है ।

"खैर मै अपने दादा जान का जिक्र कर रहा था । जिस मुस्लिम औरत को वह प्यार करते थे उसके हमल रह गया तब शादी करने का अहम मसला सामने आया । मेरी दादी अपना मजहब छोडने को रजा-मद नही हुई और तब जरा हिदू भी अपने मजहब से कट्टर थे । हिंदू मुसलमान आसानी से हो सकता था, मगर मुसलमान की शुद्धी करना उसे हिंदू बनाना, हिदू लोग पसद न करते थे, खास तौर पर ब्राह्मण । मेरे दादा जान को हकीकत मे अपनी माशूका से सच्चा इश्क था । इस लिए मोहब्बत पर अपने मजहब को निछावर करना ही सिर्फ एक रास्ता समझ पडा और उन्होने कलमा पढकर इस्लाम मजहब कबूल कर लिया । इस तरह से मेरे दादा महाराष्ट्र ब्राह्मण थे और मेरी दादी किलेदार मुसलमान । तब से हम लोग मुसलमान ही रहे ।

"आपको एक बहुत मजेदार बात बताऊँ । मगर आप मेरी बातो से 'बोर' तो नही हो रहे है ?"

मैंने कहा "अरे भाई साहब आप भी क्या बाते करते है । मैं तो अपना पूरा ध्यान केन्द्रित करके आपकी दिलचस्प बाते सुन रहा हूँ ।

विश्वास कीजिये अगर आप चौबीस घटे सुनाये जायेगे तो मै चौबीस घटे सुनता जाऊँगा ।"

उन्होने कहा "मेरी दादी भी दादा जी को बेहद प्यार करती थी । मेरे दादा-दादी दोनो साफ दिल के, भले और खुदा मे एतकाद रखने वाले इसान थे, मगर मजहबी कट्टरता उनमे न थी, गोकि दोनो ही दीनदार थे । दादा जान ने दादी को रामायण, गीता और मुखतलिफ मजहबाना किताबें पढाई । उन्होने दादी जी को मराठी भाषा भी सिखा दी । और आपको ताज्जुब होगा कि दादा जान हिंदी के भी अच्छे जानकार थे और उन्होने दादी जी को हिंदी भी सिखा दी । उधर दादी जी के कहने पर दादा जान ने उर्दू, फारसी और अरबी भी एक मोलवी को ट्यूटर रखकर पढी और कुरानशरीफ को ध्यान से पढा ओर समझा । इस सबका नतीजा यह हुआ कि दोनो ही उदार विचारो के हो गए ।

"दादा जान ने कई बार दादी जी से कहा कि मै चाहता हूँ कि मै फिर हिंदू हो जाऊँ, और तुम भी हिंदू हो जाओ । पहले तो दादी जी ने मजूर नही किया मगर बाद मे खामिद की मोहब्बत और हिंदू-मजहब की थोडी-बहुत जानकारी ने उन्हे मजबूर किया कि वह दादा जान की बाते या सलाह कबूल करे । जब कुछ मुसलमान पडोसियो और मिलने वालो को दोनो की दिली मशा मालूम हुई तो उन लोगो ने दादा जान के ख्याल की सख्त मुख़ालिफत की और जिन लोगो से दादी जान पर्दा नही करती थी उन्होने दादी जी को भी समझाया । मगर इस समझाने-बुझाने का कोई खास असर नही हुआ । दादा जान ने दादी से कहा "मैं तुम्हारे खातिर मजहब क्या और जो भी कहो छोड सकता हूँ, और तुम मेरे कहने से मजहब बदलने को तैयार नही हो । मैं तुम्हे कभी इसके या किसी के लिए जोर नही दूँगा । यह तो दिल का सौदा है । समझ मे आए, अक्ल मे घुसे तो मान लो वरना हम दोनो तो मजहब के मामले मे हिंदू भी हैं और मुसलमान भी ।"

दादी जी दादा जान के लिए हर कुरबानी के लिए तैयार थी। दादा जान थे भी सच्चे आशिक, नेक खामिद और मुजस्सिम शरीफ। वह हमेशा कहते थे, सच्ची इसानियत हममे होना चाहिए और फिर हम चाहे हिंदू हो या मुसलमान कोई खास फरक नही पड़ता है। मैंने इस्लाम मजहब कबूल जरूर कर लिया है और इस मजहब की बहुत सी बाते निहायत बुलद है। मै इस मजहब की इज्जत करता हूँ, मगर मेरी रगो मे हिंदू मजहब का खून है। हिंदू-धर्म भी दुनिया के तमाम मजहबो मे ऊँचा दर्जा रखता है। दोनो ही मजहबो मे बहुत सी बाते मिलती है। मेरा ख्याल है कि हर मजहब-परस्त को हिंदू-मुसलिम और ईसाई वगैरह मजहबो के बारे मे अच्छी तरह से पढना चाहिए, जानना चाहिए। हर मज़हब की 'कम्परेटिव स्टडी' (तुलनात्मक अध्ययन) से उनका मजहबी ताअस्सुबपना चला जायगा।'

"हाँ तो उस जमाने मे हिन्दू-मुसलमानो मे इतनी कट्टरता, इतना ताअस्सुब इतनी नाइत्तिफाकी न थी। सचमुच कुछ दिनो के बाद दादा जान और दादी जी दोनो एक आर्य-समाज मन्दिर मे हिन्दू हो गए, शुद्धी करा ली। दादा-दादी के मुस्लिम यार-दोस्तो तथा रिश्तेदारो ने इस बुरा तो बहुत माना, पर आज का ज़माना न था कि इन निजी मामलो को सियासत का जामा पहना कर मूड-फुटौव्वल होने लगती।

"आजकल तो निजी मामलो मे भी मजहब के बरखुरदार, हामी, 'मजहब खतरे मे है' का नारा बुलद कर के मुल्क भर मे आफत बरपा कर देते है। खैर कुछ दिनो तो जोरो की चर्चा रही पर बाद मे दादा जान के हिंदू-मुसलिम सबसे फिर पहले के जैसे ताल्लुकात हो गए। हाँ एक बात जरूर दोनो ने महसूस की। दादी तो खैर मुसलमान पहले थी ही, इससे उनके पिछले रिश्तेदारो का उन्हे छोड देना या उनसे गुस्सा रहना तो कुदरतन ठीक था। हिंदू हो जाने पर भी हिन्दुओ ने उन्हे अपने मे दूध-पानी की तरह नही मिला लिया। दादी जी अपने को बिल्कुल पानी से जुदा की हुई मछली की तरह समझने लगी। हिन्दुओ

के इस बर्त्ताव, उसकी इस कमजोरी, इस खासियत की शिकायत उन्होने दादा जी से की। वह शिकायत न भी करती तो भी खुद दादा जान इस बात का अन्दाजा लगा चुके थे। दादा जी तो कुछ सालो पहले हिंदू ही थे। कुछ दिनो को जरूर मुसलमान बन गये थे।

"प्रायश्चित करने के बाद भी हिंदू दोस्तो और रिश्तेदारो से उन्हे वह राहोरस्म, मुरौव्वत, मोहब्बत और अपनापन नही मिला जो उन्हे पहले मिलता था जब वह हिंदू ही थे। दिली जजबात का पता चल ही जाता है। ज़बान से कुछ भी न कहा जाय मगर रख-रखाव, तौर-तरीके और आपसी बर्ताव ख द सब कुछ कह देते है। हिंदुओ मे वह जैसे 'अछूत' समझे जाते थे। हिंदू लोग उन्हे नीची निगाह से देखते थे। कुछ लोग तो इतने मुँहफट थे कि उनके मुँह पर भी कह देते थे कि लाख आर्य-समाज शुद्धी कर ले पर कही मुसलमान हिंदू हुआ है या हो सकता है। कौन ऊँची जाति का हिंदू इनकी लडकियो से अपने लड़को की शादी करेगा।

"कहने का मतलब यह है कि हिंदुओ मे दरियादिली की कमी है। आप बुरा तो नही मान रहे है? मै बहुत बेतकल्लुफाना ढग से आपसे बातें कर रहा हूँ।"

मैने कहा "क़िलेदार भाई! आप विश्वास करे कि आपकी स्पष्ट-वादिता का मुझ पर बहुत प्रभाव पड़ रहा है। काश आपकी भाँति प्रत्येक हिंदू तथा मुसलमान साफ दिल का, सुलझे, खुले और उदार विचारो का होता। बुरा मानने वाली बात ही आप क्या कह रहे है। बहुत कुछ जो आप फरमा रहे है ठीक है। और फिर आप तो अपने दादा जान के तजुर्बे और जानकारी की बाते बता रहे है। बुरा क्यो मानूँगा। हाँ हम दोनो एक-दूसरे के बारे मे अधिक से अधिक जान कर और निकट हो जायेगे। भगवान करे ऐसा ही हो। हाँ, तो फिर?"

वह बोले "हम मुसलमानो मे यह बडा अच्छा कायदा है कि एकबार मुसलमान हो जाने पर फिर कोई ऊँच-नीच नही, सब बराबर। सब

एक साथ खा-पी सकते है, सब आपस मे लडके-लडकियाँ विवाह कर सकते है। खैर दादा जान ने अपने कुछ खास हिन्दू दोस्तों से अपनी दिली बेचैनी बताई। कहा 'मैं मुतमइन नही हूँ। हिंदू हूँ मगर मुझे जब मुसलमान ही समझा जाता है तो फिर मेरे हिंदू रहने से फायदा ही क्या है ? अगर हिन्दुओ ने यही रवैय्या अखतियार किया, और ईमानदारी की बात यह है कि उनका हमेशा यही रवैय्या रहा है तो फिर हिंदुओ का खुदाहाफिज। न जाने कितने हिंदू मुसलमान हो चुके है, और और एक बार मुसलमान या ईसाई होकर फिर कोई हिंदू होना-बनना पसद नही करता। तो फिर वाकई जो पहले मे ही मुसलमान या ईसाई था वह हिंदू बनना क्यो पसद करेगा ?'

"दादा जी की बात उन लोगो ने अपने दायरे के हिन्दुओ से कही। यह भी कहा कि अगर हम सबने अपना यही रवैय्या बरकरार रखा तो खतरा है—समझ लो। वह फिर मुसलमान हो सकते है।

"मगर नासमझ हिंदुओ के—नासमझ कहने के लिए मुझे उम्मीद है आप माफ करेंगे—कान मे जूँ नही रेंगी। उन्होने इस बात की कतई परवाह नही की। और मुश्किल से शुद्धी के दो साल बीते होंगे कि दादा-दादी फिर इस्लाम के झडे के नीचे आ गए। वे सिर्फ मुसलमान खुद ही नही हुए, मगर मुझे कुछ अफसोस मगर फक्र के साथ कहना पडता है कि दादा जान इतने कट्टर मुसलमान हो गए और हिंदुओ के खिलाफ हो गए कि उनकी कोशिशो का नतीजा था कि कई हिंदुओ को उन्होने मुसलमान बनाया या बनवाया। मुसलमानो ने दादा जान के फिर इस्लाम मे वापस आने पर खुशियाँ मनाई, उन्हे गले से लगाया और उन्हे दूध-पानी की तरह मिला लिया।

"इस तरह से तीन पीढ़ियो से मेरे खानदान वाले मुसलमान है। और मै आपसे छिपाऊँगा नही, मुझे मुसलमान होने पर फक्र है। मगर मैं आपके लपजो मे 'उदार विचारो' का हूँ। हिन्दू-मुसलिम दोनो भाई-भाई हैं। दोनो अपने-अपने मजहबी उसूलो पर चलें खुशी से। यह बेकार का

हिंदू-मुसलिम फसाद, दगा क्या । मगर भाई साहब 'माब मेटेंलटी' तो आप जानते ही है । हमारे लीडरान अपनी गद्दी और रोटी को सही-सलामत रखने के लिए लोगो को बरगलाते है और हम पढे-लिखे समझदार भी इन सियासतदारो के बहकावे में आकर एक-दूसरे की गर्दनें काटने को बखुशी तैयार हो जाते है तो फिर उन बेचारे अनपढो या कम पढे-लिखे, कम समझदार लोगो को क्या तोहमत लगावे । ये हमारे मुल्ला-मोलवी और पंडित और दीगर लीडरान ही हिंदू-मुस्लिम झगडे की जड है ।खैर होगा । मैं कहाँ से कहाँ आ गया ।

"मेरे दादाजान चार भाई थे। तीन भाई हिन्दू ही रहे । पर सबने हमारे दादा से कत ताल्लुक कर लिया। दादाजान के औलादे तो ज्यादा हुई मगर छै औलादे जिदा रही या यो कहूँ कि उन्होने पूरी उम्र पाई—तीन लडके और तीन लडकियाँ । मेरे वालिद मरहूम सब से छोटे थे । आज मेरे एक चाचा जान और तीनो खाला जिंदा नही है । चार-पाँच साल के अन्दर ही सबका इतकाल हुआ है। मगर सब के आगे अच्छी खासी तादाद मे औलादे है। अब उन सब के मुतल्लिक आपसे कह कर आपका वक्त फजूल नही जाया करूँगा। मेरे वालिद मरहूम बम्बई हाईकोर्ट के एक नामीगरामी बैरिस्टर थे। मेरे सिर से उनका साया अभी तीन-चार साल ही हुए है उठा है। पचास-बावन की कम उम्र मे ही उनका हार्ट फेल हो गया। मेरे वालिद एक फरिस्ता थे। मजहबी ताअस्सुब का उनमे नामोनिशान भी नही था। मगर उनके बारे मे भी इस वक्त मैं कुछ नही कहूँगा। अपने ही बारे मे आपको बतऊँगा। पता नही क्यो आपके मैं बहुत करीब अपने को पाने लगा हूँ । मगर यह सब कुछ कहकर मै आप पर जुल्म कर रहा हूँ ।"

मैने कहा "भाई साहब अगर आप यह सब सोचेंगे तो मैं आपसे गुस्सा हो जाऊँगा । अब जब आपने मुझे भाई और दोस्त कहा है तो फिर मेरा-आपका पर्दा क्या ? विश्वास कीजिए आपके बारे मे तो मै जितना भी जान सकूँ जानने की इच्छा रखता हूँ ।"

किलेदार ने कहा "यह मेरी खुशक़िस्मती है और मैं अल्लाताला का तहेदिल से इसके लिए शुक्रिया अदा करता हूँ। मगर आपके बारे मे भी मैं कितना जानता हूँ ?"

मैंने कहा "आपकी इच्छा मैं अवश्य पूर्ण करूंगा। मैं अपने बारे मे आपको सब कुछ बतलाऊँगा। मगर अभी तो आपसे ही सुनता है। हाँ, तो आप क्या कह रहे थे ?"

उन्होने कहा "मेरा तमाम बचपन और जवानी का कुछ हिस्सा बम्बई ही मे गुज़रा। बम्बई से मैंने पाँच साल पहले वहाँ की यूनिवर्सिटी से इकनामिक्स मे एम० ए० किया। वालिद मरहूम के मरासिम और ताल्लुकात अफसरो और सियासी लीडरान से अच्छे थे। आप तो जानते ही है आज का जमाना शिफारिश का जमाना है। वालिद साहब की कोशिशो के बावजूद जब मै आई० सी० एस० मे नही आ पाया—आखिर 'कम्पटीटिव इक्जामिनेशस' मे भी तो अच्छे नम्बर पाना जरूरी है, खाली 'वायावोसी' के सिलसिले मे उनकी कोशिश कहाँ तक कारगर साबित होती—तो फिर किसी भी अच्छी सर्विस मे मैंने होना पसद किया। और वालिद मरहूम की ही पहुँच का यह नतीजा था कि उसी साल मुझे यह नौकरी मिल गई जिसमें मैं फिलहाल हूँ।

"सेन्ट्रल गवर्नमेट की सर्विस मे मैं था। मैं बम्बई गवर्नमेट के 'कस्टम्स आफिस' मे मुहर्रिर था। कुछ ऐसे वजूहात हुए जिनकी वजह से मैंने बम्बई से अपना तबादला दिल्ली करा लिया और दिल्ली से मुझे 'मर्सी प्लेन' के द्वारा पाकिस्तान भागना पडा।

"हाँ, पढने-लिखने मे तो मै बहुत अच्छा तालिबइल्म न था, हाँ हर साल दर्जा जरूर मिल जाता था, मगर मै खिलाड़ी जरूर अच्छा था। यो तो 'स्पोर्ट्स' (खेलो) मे मै 'आल-राउडर' (सब खेलो मे माहिर) था मगर बैडमिटन और क्रिकेट का तो मै बहुत अच्छा खिलाडी था। रज़ी-ट्राफी-मैचेज़ मे मै बम्बई की ओर से खेला हूँ। मै 'मीडियम-पेस-बाउलर' तथा अच्छा 'बैट्समैन' था। और बैडमिटन मे मै प्राविंशियल

फेम' (प्रान्तीय ख्याति) का आदमी था। 'बाम्बे-बैडमिंटन-कोर्ट'-क्लब का मै मेम्बर था। वहाँ औरतें और आदमी सभी खेलने आते थे।

"बी० ए०, एम० ए० के चार सालो तक मै बैडमिटन का 'चैम्पियन' (विजेता) रहा हूँ। मिसेज जोहरा से मेरी जान-पहचान बैडमिटन-कोर्ट मे शुरू-शुरू मे हुई। कभी वहाँ, कभी कालिज की ग्राउंड पर हम दोनो खेलते समय मिलते। वह भी बैडमिटन की एक अच्छी खिलाडी थी—बहुत अच्छी तो नही मगर 'एवरेज' (साधारण)। मेरे खेल से वह काफी खुश थी और उनका खिचाव धीरे-धीरे मेरी ओर होता गया। यह कशिश ही कुछ दिनो बाद मोहब्बत मे तबदील हो गई। उस वक्त वह बी० ए० की तालिबइल्म थी। जिस साल उन्होने बी० ए० किया मैने एम० ए० किया। हम दोनो का रोमास या कोर्टशिप करीब दो साल चली। और आप समझ ही गये होगे कि हमारी 'लव-मैरेज' (प्रेम-विवाह) हुई। मगर उसे 'लव-मैरेज' नही भी कह सकते है; 'फोर्स-मैरेज, (जबरदस्ती शादी) कह सकते है। अब अगर आपको इस बारे मे जानने का इश्तियाक होगा तो मैं आपसे फिर अर्ज करूँगा। मगर इस वक्त तो मुझे इजाजत दीजिए। मिसेज किलेदार का इसरार है कि मै जल्दी ही आ जाऊँ। आज उन्हे शापिंग (दूकानो से चीजे खरीदना) करना है। मगर आपसे जल्द ही मुलाकात करने की तमन्ना है। आपको कभी फुरसत होगी ?"

मैंने कहा "अगर कल हम और आप सीधे आफिस से छुट्टी पा कर मिले ? किसी रेस्टोरेंट मे चाय-नाश्ता, और उसके बाद सिनेमा-शो, तो कैसा रहे ? घर पर आप भी कह जायँ और मै भी। हम लोग बाते भी करेगे तब। और अगले इतवार को अगर आप मिसेज किलेदार और बेबी हमीद के साथ मेरे यहाँ दोपहर का खाना कबूल करे तो मैं निहायत मशकूर और ममनून हूँगा। पर उस दिन कोई भी प्रोग्राम आप लोगो का दूसरा न रहे, न मेरा।"

किलेदार जी ने कहा "सिनेमा की बात तो मजूर। मगर अगले इतवार को तो मेरा हक है ।"

मैने हँस कर कहा "देखिये भाई जान इस तरह से बनिये की तरह तौलिये-नापियेगा तो गडबड है ।"

वह भी हँस कर बोले "अच्छा साहब आप ही जीते। मगर इसके बाद वाले इतवार को तो मेरा हक बदस्तूर रहेगा ।"

मैने हँस कर ही कहा "यह अभी से मजूर ।"

इसके बाद किलेदार अपने घर चले गए।

: ३ :

संयोग का जीवन मे बहुत बडा महत्त्व होता है। एक ऐसी घटना हो गई जिसने किलेदार को मेरे पास अधिक निकट आने मे सहायता दी। दूसरे दिन प्रात मैं फल-तरकारी आदि गृहस्थी के लिए खरीदने के लिए बाजार गया था। यकायक देखा कि एक चार बर्ष का लडका तेजी से सडक को पार करने के लिये दौडा। दोनो ओर से मोटरें तथा तथा घोडे-गाड़ियाँ आदि पर्याप्त सख्या मे आ-जा रही थी। बच्चा अपने सरक्षक की उँगली छोड कर भागा था इतना ही केवल देखने का समय मिल पाया था। हडबडा कर मैं भी बहुत तेजी से बच्चे की ओर भागा और झपट्टा मार कर तेजी से बच्चे को दबोच कर सडक के दूसरी ओर पहुँच गया। भगवान को धन्यवाद कि दुर्घटना होने से, कुचलने से बाल-बाल मैं भी बचा। एक इधर से आती हुई मोटर ने तथा एक उधर से आती हुई मोटर ने ब्रेक लगा लिए थे और उसके फल-स्वरूप जोरो की किर्र''' की आवाजे हुई थी। मेरा दिल जोरों से धड़क रहा था। यह सब पलक मारते ही हो गया। तनिक शान्त और स्थिर होने पर मैने

देखा कि मेरे ही पास एक अन्य सज्जन भी हाँफते और डरे-घबराये खड़े थे। आश्चर्य से मैंने देखा कि वह किलेदार थे। और आश्चर्य ही से उन्होने भी कहा "अरे आप्टे जी आप!"

बात यह थी कि हमीद को हल्की खाँसी आती थी और उसे दिखाने तथा डॉक्टर से दवा लाने को किलेदार इस ओर आए थे। सडक को पार करना था और यह इत्तिफाक था कि हमीद उँगली छोड़ कर सीधे सडक पार करने को दौड पडा। बच्चे तो बिना इधर-उधर देखे सीधे भागते ही है। जब तक वह समझे-समझे और हमीद के पीछे भागे, मैं भी तेजी से हमीद को झपट्टा मार कर सडक के उस पार दौड कर ला चुका था। किलेदार भी इसी गरज से दौडे थे, पर हमीद मेरी पकड मे पहले आ चुका था। किसी के खरोचा तक न लगा था पर हमीद बेहद डर गया था, और यह सब क्या हुआ, इसे समझ न सकने के कारण रोने लगा था।

इधर-उधर की काफी गाडियाँ रुक गई थी और थोडी भीड़ भी जमा हो गई थी। पर हम सब सुरक्षित है यह जान कर सब अपने-अपने रास्ते चल दिए थे। बहरहाल अब तो हमीद को समझा कर, चुप करा कर डॉक्टर को दिखा कर तथा दवा ले कर मै तथा किलेदार एक साथ किलेदार के घर तक गए। हम लोगो को दफ्तर भी जाना था। अत किलेदार के अनुरोध पर भी मै उसके घर तो नही गया और उसने भी बहुत जोर इस लिये नही दिया कि आज सायकाल को तो हम लोगों के मिलने का प्रोग्राम था ही।

किलेदार ने कहा था "हम और जोहरा दोनो ही आपके अहसान से दब गए है। इसकी जान आपने बचाई है। मान्नी हुई बात है बेगम आपकी मुरीद हो जायँगी।"

खैर उसी सोमवार को इडिया-हाई कमिश्नर्स-आफिस से लगभग पाँच बजे सायकाल को छुट्टी पा कर मै मिस्टर किलेदार के कराँची पोर्ट के कस्टम्स के दफ्तर साइकिल से गया। आफिस का काम उनका

भी समाप्त हो चुका था, और पूर्व-निश्चय के अनुसार वह मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। मेरे आते ही वह एक निकट के रेस्टोरेंट मे चले। बोले "यही चाय-नाश्ता किया जाय, और एक घटे का समय हम लोगो को है, तब तक यही गपशप की जाय। फिर सिनेमा चलेगे।" चाय-नाश्ने का आर्डर उन्होंने दे दिया। फिर कहा "बेगम बहुत शुक्रगुजार है। आपको बुलाया है।"

मैने कहा "आपने अपने प्रेम-विवाह के बारे मे विस्तार से बताने को कहा था, आज बताइए।" बात मैने टाल दी।

किलेदार ने कहा "यह तो आपसे बता ही चुका हू कि मै बम्बई के विलसन कालिज का तालिबइल्म था। मशहूर खिलाडी था इसमे मुझे वहाँ के पढने-लिखने वाले ज्यादातर लडके-लडकियाँ जानते थे। मिस रेखा साने ने बी० ए० का पहला साल जब विलसन कालिज मे ज्वाइन किया तब मै एम० ए० के पहले साल मे था। यही मिस रेखा साने आज मिसेज जोहरा किलेदार, मेरी बीबी है, जिनसे मिलने का आपको नियाज हासिल हो चुका है। यह बता ही चुका हूँ कि मिम साने खुद बैडमिंटन की शौकीन और खिलाडी थी। इस वजह से एक-दूसरे को जल्दी ही जान गए।

"मैं तो एक मशहूर खिलाडी था इससे उन्हे ग्वास तौर से मेरी खिलाडी-जिन्दगी के बारे मे जानने का इश्तियाक था, और उन्होने लोगो से सुन-सुनाकर, पूछ-पाछ कर जान भी थोडा-बहुत लिया था। हम तालिबइल्म तो लडकियो के बारे मे जानने को, उनसे मुलाकात करने और उनसे राहरस्म बढाने को बेचैन रहते ही है। जो भी लड़कियाँ खिलाडी थी उनके बारे मे जानने और उनसे जान-पहचान होने मे मुझे जरूर कुछ सहूलियते हासिल थी, और मैने उनसे फायदा उठाया।

"बैडमिंटन-कोर्ट मे कभी-कभी हम दोनो एक-दूसरे को देखते। फिर धीरे-धीरे कभी-कभी खेल वगैरह के बारे मे बाते भी हो जाती थी। फिर खेल के अलावा और मसलो पर भी गुफ्तगू होने लगी और जल्दी

ही निजी मामलात पर भी हम लोग कभी-कभी बातचीत कर लेते थे। दो जवान लडका-लडकी जब ज्यादा एक-दूसरे से मिलेंगे, करीब आयेंगे तो उनमे आपस मे एक-दूसरे के लिए खिचाव और बाद मे उस खिचाव का मोहब्बत का जामा पहन लेना एक कुदरती उसूल है। चुनाचे हम लोग कभी-कभी सिनेमा भी जाते, कालिज के खाली घटों मे भी मिल लेते और अक्सर मैरीनड्राइव, जू, म्यूजियम या इडिया-गेट वगैरह पर भी मिल लेते।

"मिस रेखा के वालिद नासिक–मिंट मे मिंट-आफिसर थे। वह एक बडे आदमी थे और अपने खानदान के साथ नासिक ही मे रहते थे। यो रहने वाले वह बम्बई के थे। और बम्बई मे उनके खानदान के कुछ और लोग भी रहते थे। मिस साने के नाना भी बम्बई ही के बाशिदे थे। शिवा जी पार्क के पास दादर मे उनका बॅगला था। मिस साने रोज लोकल-ट्रेन मे आती-जाती थी, क्योकि वह अपने नाना जी के यहाँ रहती थी और दरअस्ल मे उनके नाना उन्हे बेहद प्यार करते थे।

"मेरी तथा रेखा जी की मेल-मुलाकात कुछ हिंदू लड़के-लड़कियों को पसद न थी। मगर मै उनसे कालिज मे कम ही बोलता था, सिर्फ बैडमिटन-ग्राउड को छोड कर। मै खुद भी उनसे मोहब्बत करने लगा था और मेरा ख्याल था कि उन्हे इसका अन्दाजा लग चुका था। मैं बहुत उदार विचारो का था और हिंदू-मुसलिम मसलो, सियासी मामलात, लव-मैरेज और मोहब्बत वगैरह सभी बातो पर उनसे खुले दिल से बहस-मुबाहसा करता था।

"मै उनसे अक्सर कहता "अगर सच्ची मोहब्बत एक औरत और एक मर्द मे है तो फिर मजहब को बीच मे नही आना चाहिए। सुसाइटी तो नुक्ताचीनी करने से बाज नही आती है, उसकी कहाँ तक परवाह की जाय। हिंदू-मुसलिम मसला तो मसलहतन पैदा किया गया है। मेरे ख्याल से तो अगर कोई मुसलिम औरत किसी हिंदू से मोहब्बत करती है तो उसे पूरी छूट शादी की होनी चाहिए। वैसे ही मैं किसी हिंदू

औरत को प्यार करता हूँ तो मुझे उससे शादी करने से क्यो रोका जाय ? हॉ शर्त यह है कि वह भी मुझसे मोहब्बत करती हो।"

"एक दिन उन्होने जरा हिचकिचाते हुए पूछा था "क्या आप किसी हिंदू स्त्री से प्रेम करते है।"

"मैने उन्हे ध्यान से देखते हुए कहा "हॉ करता तो हूँ, मगर वह भी करती है या नही, मै नही जानता। एक बात जरूर है अगर वह मुझसे शादी के लिए तैयार हो जायगी तो उससे शादी करने मे मै अपनी खुशकिस्मती समझूँगा। अगर वह ऐसा नही करती है तो वह मेरे दिल की मल्का तो रहेगी ही, हॉ यह मुमकिन है कि फिर मै और किसी से शादी ही न करूँगा। आखिर शादी है क्या ? दो मोहब्बत मे तड़पते हुए दिलो का एक सौदा ही तो है।"

"उन्होने और भी हिचकिचाते हुए पूछा "कौन है वह सौभाग्य-शालिनी ?" मैने कहा "अभी उसका नाम बताने की जुर्रत मुझमे नही है। मगर हो सकता है आपको जल्दी ही बता दू। शायद ज्यादा दिनो तक आप से छिपाना नामुमकिन भी हो। आप मेरे इतने करीब आ चुकी है।

"उन्होने कहा "इसके माने यह है कि आप मेरा विश्वास नही करते। अगर आप चाहते है कि आपकी प्रेमिका का नाम मै किसी से न बताऊ तो विश्वास कीजिए मै उसे अपने ही तक रखूँगी।"

"मेरा ख्याल ठीक था कि उन्हे पूरा शुबहा हो गया था कि वह ही मेरी माशूका हैं, मगर वह बन रही थी, अपने को नावाकिफ दिखाकर। उन्होंने बाद मे खुद मजूर कर लिया था कि उस दिन के पहले ही मैं समझ चुकी थी कि आप मुझ पर फिदा हो चुके है।

"मैने रेखा से कहा "आप कैसी बाते करती है। आप पर मुझे यकीन नही होगा ? अपने से ज्यादा मुझे आप पर भरोसा है। अभी इससे नही कहता हूँ कि हो सकता है कि मेरे नाम बताने का असर मेरे हक में कुछ बुरा हो। खैर छोडिये भी इसे। आप मेरी राजदाँ है। अच्छा आज

या कल अगर सिनेमा चला जाय ? मशहूर इँगलिश प्ले 'निनीचिका' मेट्रो मे लगा है जिसमे क्लार्क गेबल और ग्रेटा गार्बो की ऐक्टिग है। आपको कोई एतराज तो नही होना चाहिए।"

"उन्होने कहा "मैं कल चल सकूँगी शाम वाले शो मे। कल नानाजी से कह आऊँगी। कल कालिज खत्म होते ही मै 'गेट-वे-आफ-इडिया' पहुँच जाऊँगी। आप भी वही मुझसे मिले। कालिज से एक साथ नही चलेगे।"

"मै रात भर सोचता रहा कि अपनी मोहब्बत की बात मिस रेखा साने को बताना ठीक होगा या नही। आखिर मे मैंने यही तय किया कि बता देना ही मुनासिब होगा। अगर उन्हे कुछ एतराज हुआ या उन्होने बुरा माना तो फिर देखा जायगा। बुरा अगर नही भी मानेगी तो भी इब्तिदा मोहब्बत से हो सकती है मगर इन्तिहा शादी से मुमकिन नही लगती। आखिर वह हिंदू है मै मुसलमान। खैर देखा जायगा।

"दूसरे दिन हम लोग वादे के मुताबिक मिले। बाक्स के दो टिकट ले कर हम लोग काफी पहले सिनेमा-हाल मे दाखिल हो चुके थे। किनारे की तरफ की एक कोच पर हम दोनो बैठ गए। इधर-उधर की बाते होती रही। हम लोग करीब-करीब बैठे थे। हम लोगो के बदन तो नही हा कपडे जरूर एक दूसरे के छू रहे थे। रोशनी बुझ गई और खेल शुरू हो गया। ऊपर के बाक्स मे यो भी भीड कम होती है। उस दिन इत्तिफाक से हम लोगो के आसपास की सीटे खाली थी। खेल सनसनीखेज, लव और रोमास से भरा था। मैंने अपना घुटना रेखा के घुटने से हल्का सा लगा दिया और मैंने देखा कि हलकी सी जुबिश तो उसके पैरो मे हुई मगर उसने अपना घुटना हटाया नही। थोड़ी देर बाद मैंने रेखा के एक हाथ को जो उसके घुटने पर रखा था धीरे से ले लिया। उसने हाथ छुडाने की कोशिश की, मगर वह दिली कोशिश न थी। दिखावा भर थी। मैने हाथ छोडा नही, दबाए रहा। और फिर उसने भी कोई खास कोशिश हाथ छुडाने की नही की। इटरवल के कुछ

देर पहले मैने उसे 'किस' कर लिया। रेखा कुछ बोली तो नही पर उसने फौरन अपना हाथ मुझसे छुडा लिया और मुझसे कुछ सरक कर बैठ गई। मै कुछ गुमसुम डरा सा बैठा रहा।

"इटरवल होने पर लाइट (प्रकाश) जल गई। पन्द्रह-बीस आदमी जो उस क्लास मे थे उतर कर नीचे चले गए। सिर्फ हम दोनो ही वहाँ रह गए। रेखा ने मुझे गुस्से और परेशानी से देखते हुए कहा—"मिस्टर किलेदार मुझे आपसे यह आशा न थी। आपने यह बहुत बुरा काम किया है। अब मैं घर जा रही हूँ।" यह कह कर वह उठी।

"मैने उससे मिन्नत की—"मै गुनहगार हूँ। आप मुझे चाहे तो माफ कर दे। नही तो आप जो भी सजा मेरे लिए मुनासिब समझे मुकर्रर कर दे मै सिर झुका कर उसे कबूल कर लूँगा। अब आप से छिपा कुछ नही है। मै आपसे मोहब्बत करता हूँ। मगर मै आपसे वादा करता हूँ कि आप से हट कर बैठूँगा। आपको नही छुऊँगा। पर पूरा तमाशा देख कर जायँ। नही तो देखने वाले क्या समझेगे। मुझे उम्मीद है आप मुझे मौका देगी और देखेगी मै अपना कौल पूरा करता हूँ या नही। यह मेरी पहली गल्ती थी। और उसके लिए मैं निहायत शर्मिन्दा हूँ।"

"बहुत समझाने-बुझाने पर रेखा रुकी तो, मगर हम लोग बिलकुल एक-दूसरे से बोले नही। मानी हुई बात थी कि फिर तमाशा देखने मे मन क्या लगता। मैं मन मे यही सोचता रहा कि अपनी मोहब्बत का इजहार करने की हिम्मत मुझे नही होती अगर रेखा ने अपनी हथेली मुझे पकडे रहने न दी होती। आखिरकार जो अपना हाथ पकडे रहने दे सकती है, उसके दिल मे कुछ तो जगह होगी ही मेरे लिए। मगर 'किस' (चुम्बन) करना शायद ज्यादती हुई—पहला दिन था। मुझे इतना बेसब्र नही होना था। ऐसा तो नही है कि पहला दिन है इससे मेरे इतने आगे बढ जाने पर वह ज्यादा शर्मा गई हो। खैर उसने मुझे माफ तो कर ही दिया होगा नही तो इन्टरवल के बाद चली जरूर जाती। अगर ऐसा होता तो मै भी चला जाता। मुझे अब देखना है कि कल और उसके बाद रेखा क्या रुख अख्तियार करती है।

"हमारे रास्ते मे सबमे बडी रुकावट है हम लोगो के मजहब की। जब रेखा जानती है कि मोहब्बत का हश्र, अजाम क्या होगा, यह कतई नामुमकिन है कि मेरी उसकी शादी हो सके तब ठीक भी है वह 'किस' तक क्यो बढे। मै उसका दोस्त हूँ, उसने मेरा यकीन किया है, मेरे दिल को ठेस न लगे क्या इसीलिए तो उसने यह कुरबानी नही की कि खैर अपना हाथ मुझे लिए रहने दिया। मै इसे कुरबानी ही कहूँगा। मगर कई दफे वह मेरे साथ अकेले ट्राम और बस पर तो बैठ चुकी है, गोकि डरती-डरती। लेकिन ट्राम और बस में एक साथ बैठने पर भी शक की गुंजाइश भी खास नही रहती। इन औरतो के दिल की बात समझना बडा मुश्किल होता है, इनका राज ˙ ।

"खेल खत्म होने पर हम दोनो ट्राम तक पहुँचे और चर्चगेट के टिकट लिए। स्टेशन से दादर का टिकट लेकर मैने उसे लोकल-ट्रेन पर बैठा दिया। रास्ते भर हम दोनो चुप रहे। मैने उससे पूछा था "मै आप के साथ दादर तक चल सकता हूँ।" रेखा ने कहा था "नही, कोई आवश्यकता नही है।" मैने इसरार नही किया। 'खुदाहाफिज' कहने के पहले सिर्फ यही कहा था "रेखा जी! आपने मुझे माफ किया? मेहरबानी करके मुझे माफ कर दीजिए।" वह बोली नही। उनकी आँखो मे आँसू आ गए थे। उन आँसुओ का मतलब मैने यही समझा था कि वाकई उन्हे दिली तकलीफ है। मगर मेरी मोहब्बत कबूल कर लेने के बाद एक दिन मेरे पूछने पर उन्होने इकबाल किया था कि दरअसल वह भी मुझसे मोहब्बत करती थी। उन आँसुओ की वजह थी उनका यह ख्याल कि काश हम दोनो हिंदू होते या मुसलमान, तो अपनी मोहब्बत तस्लीम करने मे उन्हे कोई उज्र न होता।

"उसके बाद तीन-चार दिनो तक रेखा जी कालिज मे मुझे दिखी तो जरूर मगर एक तो यो भी हम लोग वहाँ कम बोलते थे, और उन तीन-चार दिनो मे वह खास तौर से मुझसे कतराई। वह बैडमिंटन खेलने भी नही रुकी। तीन-चार दिन के बाद एक दिन मैंने उन्हे घेरा। फिर

बहुत आजिजी से उनसे दरख्वास्त की कि मेरी वजह से वह अपना खेल बंद न करे। अगर मेरी मौजूदगी के सबब से वह खेलने नही आती है तो कसम खाकर कहता हूँ कि मैं बैडमिटन खेलने न आया करूँगा। या अगर आप हुक्म दे तो बैडमिटन खेलना ही हमेशा के लिए छोड सकता हूँ आप मुझे माफ कर दे। मै आज से खेलने नही आऊँगा।"

"काफी देर वह सिर नीचा किए हुई सोचती रही। फिर बोली" नही आप खेलना मत छोडे। आप जरूर खेलने आया करे। मेरी क्या आई या न आई।"

"मैने कहा "अगर आपको मेरी वजह से खेल छोडना पडा है तो मैने पक्का इरादा कर लिया है कि मैं भी नही खेलूँगा। अब मै उस वक्त ही खेलूँगा जब आप भी आयेगी नही आज से मैने बैडमिटन छोडी। हा अगर आप मुझसे बोलना न चाहेगी तो मै न बोलूँगा। सिर्फ यही सजा अपने को दे सकता हूं।"

"आप फिर तो कभी वैसी हरकत न करेगे ?"

"नही, आपको नाखुश कर के नही। मगर एक बात मैं आपसे छिपाऊँगा नही। आपको खुश रखने को मै आपसे बोलना तक बद कर सकता हूँ। मगर यह मेरे लिए खुदकुशी से कम तकलीफदह नही होगा। मगर मै आपको मोहब्बत करता हूँ। आपको मोहब्बत न करूँ यह मेरे बस की बात नही है। हाँ इस मोहब्बत का इजहार नही करूँगा, यह दूसरी बात है। तो आपने मुझे किया माफ ?"

रेखा बोलीं नही तो मैने फिर कहा "आप मुझे माफ नहीं करती है तो न सही। तो फिर मुझे कोई सजा ही दे। दो मे से एक काम तो आपको करना ही होगा। नही तो मेरे दिल को सकून नही होगा।"

"रेखा ने कहा "अच्छा मै कभी-कभी खेलने आया करूँगी। आप हठ करते है तो खैर क्षमा ही सही।"

"फिर कभी-कभी और उसके बाद करीब-करीब रोज वह खेलने आने लगी—कभी क्लब मे, कभी कालिज-ग्राउड पर। एक-दो दिन तो वह मुझसे

नहीं बोली, पर धीरे-धीरे वह थोडा-बहुत मुझसे बोलने लगी। और जल्दी ही वह मुझसे पहले ही की तरह से बोलने-चालने लगी। एक दिन मैने उनसे कहा "आप सिनेमा कभी नही चलेगी ? मै तो उस दिन के बाद गया नही। अकेले क्या जाऊँगा।"

"रेखा ने मुझे बहुत गौर से देखा। फिर बोली "जी नही, आपके साथ सिनेमा बद। यद्यपि मुझे आपकी प्रतिज्ञा पर विश्वास है, पर मनुष्य बहुत निर्बल होता है। उसके विचारो को पलटते देर नही लगती। अब तो आप मुझसे कुछ न चाहेगे ? सच-सच बोलिये।"

"आप सच-सच बोलने को कहती है तो चाहूँगा तो मै आप से सब कुछ। मै खुद आप को ही चाहता हूँ। मै झूठ नही बोलूँगा। ऐसा नही है कि मैने अपने मन को समझाया नही है। मगर मै आपको मोहब्बत करना छोड नही सकता। तो भी एक शरीफ आदमी की तरह मैने आपको जबान दी है कि मेरी कोई हरकत ऐसी नही होगी जो बेजा हो, आपको नागवार हो। मोहब्बत का इजहार नही होगा मगर वह मेरे दिल से निकल नही सकती। आप चाहे तो मुझे ठुकरा सकती है, और ठुकरा रही ही है।"

"रेखा जी कुछ बोली नही।

"इसके बाद गाहेबगाहे मै रेखा जी से सिनेमा की निस्बत कहता। एक दिन मैने उनसे कहा "आप मुझ पर करम नही फरमाती है न सही, मगर आपको मुझपर रहम नही आता ? आप औरते तो मुजस्सिम दया की अवतार कही जाती है।"

"रेखा जी ने मुस्कराकर कहा—शायद न मुस्कराने की नाकामयाब कोशिश उन्होने की होगी—"अपने मतलब के लिए तर्क तो बडा सुन्दर करते है। अच्छा, आप के साथ क्या किया जाय कि आप समझेगे कि आप पर दया की गई। आप बहुत मोहब्बत-मोहब्बत कहते है। आप मुझे मोहब्बत करना क्यो नही छोड देते। हम लोग केवल मित्र-मात्र रहे।"

"मोहब्बत करना और मोहब्बत छोडना दोनो अपने अखतियार मे नही है। अगर आप खुद किसी से प्रेम करती होती तो आप समझती कि मोहब्बत के जजबात अक्ल की पाबदी से सरोकार नही रखते। अच्छा आप थोडी सी मुझे छूट दे दे। थोडी सी रियायत मेरे साथ कर दे, मै कुरानशरीफ और आपकी गीता की कसम खाकर कहता हूँ कि उसमे ज्यादा बिना आपकी रजामदी के नही चाहूँगा।"

"क्या रियायत, छूट आप चाहते है, वह भी सुन लूँ।"

"आप सिर्फ मुझे इतना हक दे दे कि मै आपके हाथो को छू सकूँ, इससे ज्यादा कुछ नही।"

"मगर आप मेरा हाथ भी छूना क्यो चाहते है ? इतनी भी छूट क्यो ? इतनी छूट मान लीजिए आपको मिल भी गई, तो थोडे दिन बाद आप और ज्यादा छूट मागेगे। उँगली पकड कर पहुँचा पकडना आप लोग खूब जानते है।"

"नही रेखा जी ! आप इतनी छूट देकर मेरी आजमाइश कर ले। जिस दिन इससे जरा भी आगे बढू आप मुझे वही ठोकर मार दीजिएगा। मुझे आपकी इज्जत का भी ख्याल है और अपनी इज्जत का भी। तो इतनी छूट दी आपने मुझे ?"

"जी नही छूटवूट कुछ नही । आप खुद सिनेमा क्यो नही देख आते।"

"बिना आपके तो नही जाऊँगा।"

"यह तो आपकी बडी जबरदस्ती है।"

"अब आप इसे चाहे जो समझ ले। अब हर बात मे आपकी नाही, इकार नही चलेगा। सिनेमा का वादा किया कीजिए। आप मुझे दोस्त तो समझती ही है कम से कम—उस रिश्ते से मै जोर दे सकता हूँ।"

"अच्छा देखा जायगा।"

"देखा नही जायगा, कल चलिए। आज तो आप जायँगी नही, घर से बिना पूछे।"

"खैर दूसरे दिन रेखा जी मेरे साथ सिनेमा गई । इतना तो यकी-नन ठीक ही था कि उनके दिल मे मेरे लिए थोडी जगह तो थी ही, नही तो वह सिनेमा मेरे साथ न आती ।

"लाइट बुझ जाने पर मैने रेखा जी से पूछा "आप अपने हाथ छूने की मुझे इजाजत दे दीजिए ।"

"जी नही, आप चुपचाप बैठे रहिए ।"

"आप बडी जालिम है । अपने दोस्त के लिए इतना भी नही कर सकती है ?"

"मै अपने मित्र के लिए कुछ कर सकती हूँ या नही इसका उत्तर तो समय देगा । पर आप विश्वास करे यदि आवश्यक बात कोई हो तो अपने मित्र के लिए कष्ट भी उठा सकती हूँ । यह कोई आवश्यक बात नही है । आवश्यक होती तो मै गौर करती । अच्छा बोलिए नही, सुनने दीजिए ।"

"जरूरी आपके लिए न हो, पर मेरे लिए आपके लफ्जो मे आवश्-यक है । तो मैं आपका हाथ छूता हूँ । छू लेने दीजिए तो मै नही बोलूँगा और आप का 'डिसटरबेस, (ध्यान बटना) नही होगा ।"

"आप की समझ मे इतना नही आता कि कोई सुन लेगा तो मन मे क्या कहेगा, लाख आप फुसफुस करके धीरे बोल रहे है ।"

"रेखा जी ! इसीसे मै किनारे बैठता हूँ कि कोई सुन न सके, भीडभाड से दूर रहूँ—बाक्स मे । मै हाथ छूता हूँ ।"

"वह बोली नही । कुछ देर हिम्मत की । फिर मैने उनका हाथ अपने हाथो मे ले लिया । उन्होने हाथ छुडाने को जोर लगाया, पर जब मैने नही ही छोडा तो फिर चुपचाप तमाशा देखती रही और, मै उनके हाथो से खेलता रहा, दबाता रहा । कई बार उन्होने हाथ छुडाने की नाकाम-याब कोशिश की । इटरवेल हो जाने पर, रोशनी हो जाने पर ही मैने उनका हाथ छोडा । वह बोली "आप बहुत खराब आदमी है । इसी लिए मुझे यहाँ लाए थे ।"

"इटरवेल के बाद खेल शुरू होने पर मैने उनके हाथ टटोले, मगर वह हाथो को दूर, अपनी बाँई ओर दूर किए हुए थी। वह जानती थी कि अँधेरा होते ही मै उनके हाथो को पकडने से बाज नही आऊँगा। मै ढूँढ-ढाँढ कर उनके हाथो को अपनी ओर जबरदस्ती घसीट लाया और उनकी धमकी कि 'आइदा आपके साथ नही आऊँगी' के बावजूद, और उनके बार-बार जोर लगाने के बावजूद मैने उन्हे खेल खत्म होने पर ही छोड़ा।

"बाहर निकलने पर वह मुझसे बिगडी जरूर पर, मैने ध्यान दिया कि उनके गुस्से मे दम नही था। बहरहाल यह मेरी पहली कामयाबी थी। उसके बाद वह रोजमर्रा की तरह मिलती-बोलती रही। कभी-कभी सिनेमा भी गई। पर इस वाकिये के बाद पहली बार मेरे सिनेमा के इसरार करने पर उन्होने पूछा था—"बोलिए आप मेरा हाथ तो नही पकडियेगा ?"

"अच्छा देखा जायगा। चले तो आप पहले।"

"नही, देखा नही जायगा। पहले हाँ कर दीजिए तब चलने की सोच सकती हूँ।"

"अच्छा नही पकडूँगा बाबा चलिए तो।"

"वह मेरे साथ सिनेमा गई। और खेल शुरू होने पर जब मैने उनका हाथ पकड लिया तो उन्होने कहा "आपने वादा किया था। यही आपकी बात है, कौल है ?

"यह मेरी गलती नही है। आप खुद चाहती है मै झूठ बोलूँ तो फिर इसमे मेरी क्या गलती है। इतना तो मेरा हक है। इसके लिए आप चाहे बिगडे चाहे खुश हो। अच्छा चुप रहिए, नही तो आसपास वाले सुन लेंगे। हाथ नही छूटेगा।"

"अपना मतलब है तब लोग सुन लेगे। और जब मै कहती थी सुन लेंगे तब कहते थे नही सुनेगे। नही छोड़ोगे ?"

"नही।"

"अच्छी बात है जो मन मे हो आज कर ले। आइदा कभी सिनेमा को कहियेगा।"

"फिर हाथ उन्होने घसीटने की कोशिश भी नही की। खेल खत्म होने के बाद उन्होने मुझसे कहा "तुम झूठे हो" और मैने कहा "तुम जालिम हो।"

"मैने आपको यह सब इसलिए बताया ताकि आप समझ सके कि किस तरह से धीरे-धीरे वह मेरे करीब आती गई, और अपनी छिपाई हुई मोहब्बत का इज़हार इन इशारो और अपने बर्त्ताव से करने लगी।

"अच्छा भाई! अब हम लोगो को सिनेमा के लिए चलना चाहिए। रास्ते मे बाते होती रहेगी।"

साइकिलो पर हम लोग चल दिए। किलेदार ने अपने किस्से को आगे बढाते हुए कहा "यह वह वक्त था जब हिंदू-मुसलिम-नाइत्तिफाक़ी अपनी बुलदी पर थी। दोनो एक दूसरे के खून के प्यासे थे, जान के दुश्मन थे। यह ठीक है कि सेटर (केन्द्र) मे काँग्रेस और मुसलिमलीग की मिली-जुली सरकार थी, मगर मुसलिमलीग का हाथ दोस्ताना न होकर मुखालिफत का था। सेटर मे रहकर मुसलिमलीग अपना पाया मजबूत कर रही थी। मुसलिमलीग काँग्रेस की पीठ मे छूरा भोकना चाहती थी और मुसलमानो को कामिल यकीन दिलाया जा रहा था कि कॉग्रेस भी यही करना चाहती है, यही कर रही है।

"मुसलमानो की सीक्रेट (गुप्त) मीटिंगे होती थी और हर मुसलमान को पैगम्बर रसूल और कुरानशरीफ के नाम पर कम से कम दो-चार काफिरो को कत्ल करने और हिंदुओ को मुसलमान बनाने के लिए कसमे खाई जाती थी। एक हवा थी और उसमे सभी को बहना पडता था। आपसे झूठ नही बोलूँगा। मुझे भी मज़हबी जोश भले ही इतना ज्यादा न हो तब कि मैं काफिरो को कत्ल करना बिला सबब चाहता, मगर यह मेरी दिली ख्वाहिश ज़रूर थी कि मैं अगर दो-चार हिंदुओ को मुसल-मान बना सका तो अपने दीन की खिदमत करूँगा। चुनाँचे मैंने रेखाजी

से शादी करके उन्हे मुसलमान बनाने की मन मे ठान ली थी। मगर मैं मोहब्बत वाकई उनसे करता था।

"एक तो मोहब्बत और दुश्मनी यो भी छिपाये नही छिपती, और फिर हम दोनो को कई बार एक साथ देखा था उन लोगो ने, जो हम दोनो से वाकिफ थे। और दूसरी गलती हम लोगो की भी थी कि हम लोग अब ज़रा लापरवाह हो गए थे। पहले तो वह बहुत डरती थी कि कही कोई देख न ले, मगर बाद मे पहला वाला डर और झिझक बहुत कम हो गई थी।

"रेखाजी को उनके दोस्तो, रिश्तेदारो या जान-पहिचान वालो ने काफ़ी समझाया कि तुम इस मुसलमान के साथ मत रहा करो, इससे तुम्हारी काफी बदनामी होती है। ये म्लेक्ष नफरत के ही काबिल है, वगैरह। यही नही सी० आई० डी० की तरह हम दोनो पर निगाह रखी जाने लगी और रेखाजी पर कुछ सख्ती भी शायद हुई और उन्हे डराया-धमकाया भी गया, समझाया भी गया। मगर रेखाजी मुझे सब-कुछ बता देती थी।

"वह लोगो से यही कहती "इस व्यर्थ के सदेह से क्या लाभ है। जैसे सब छात्र-छात्रायें, सब छात्र-छात्राओ से बोलते है, वैसे ही मैं भी सब लड़के-लड़कियो से बोल लेती हूँ. वह हिंदू हो, मुसलमान हो, पारसी हो या ईसाई हो। किलेदार एक अच्छा खिलाडी है। मैं भी स्पोर्ट्स-वोमैन (खिलाडी स्त्री) हूँ। इसीसे उससे सभव है अधिक मिल लेती हूँ।"

"मगर जैसा हमेशा होता है कि रोक-टोक मे, सख्ती मे मोहब्बत और बढती है, वही उनके साथ भी हुआ। रेखा हिंदू थी। हिंदू होने के नाते उनके जज़्बात क्या थे यह तो मै ठीक से नहीं कह सकता। मगर यह यकीनी बात है कि मज़हब ओर मोहब्बत मे झगडा जरूर हुआ होगा। मैने खास तौर मे इसे देखा कि कई बार उन्होने मुझसे भागने की कोशिश की, मगर इश्क ने उन्हे भी लाचार कर दिया होगा।

"एक दो बार वह मुझे अपने नाना जी के बँगले पर दादर ले गई और एक बार नाना जी से मुलाकात भी कराई, मगर मैने ध्यान दिया कि नाना जी को मेरा आना और रेखा की मुझसे रब्त-जब्त पसद नही आई। मै नाना जी के घर फिर नही गया। रेखा जी मेरे घर जरूर आई।

मै बार-बार खुले लफ्ज़ो मे अपने इश्क का इजहार उनसे करता, और वह बिगडती नही थी, बल्कि चुपचाप सुन लेती थी। बाज दफे कुछ मुस्कराकर, कुछ गुस्सा दिखा कर कहती "आप को हर वक्त बस यही बाते सूझती है। है मुहब्बत तो क्या करूँ। आप आखिर चाहते क्या है मुझसे ?"

"चाहता तो मै हूँ कि तुम्हे हमेशा के लिए अपने दिल मे कैद रखूँ। मै चाहता हूँ मेरी—तुम्हारी शादी हो जाय। तुम मेरी जिन्दगी मे आ जाओ। और जो इतनी रोके तुमने मुझ पर लगा दी है उन्हे हटा दो। अब मुझसे अपने को रोका नही जाता है।"

"विवाह तो सभव नही है। आप इस विचार को छोड दे। हम दोनो के मजहब अगर बाधक न होते तो सभव है मै आपकी बात पर विचार करती। और मुझसे क्या चाहते है, जो-जो मन मे आता है ऊलजलूल मेरे सामने बका करते है, मौका मिला कि हाथ पकड़े रहते है। मानते है मेरा कहना है।"

"तो अब और नही मानूँगा।"

"और उसी दिन सिनेमा मे मैने बेअख्तियार हो कर उन्हे प्यार कर लिया। उसने मुझसे कहा "आपको अपना वादा याद है ?"

"आप भी मुझसे मोहब्बत करती है तो इस पर रोक मै नही मानूँगा।"

"उसने मुझे थोडा-बहुत बका-झिका। पर इसके बाद अकसर मौका मिलने पर उसे कलेजे से लगा कर मै चूम लेता। थोडे दिनो बाद उसने इस पर भी बिगडना छोड दिया।

"मिस रेखा तीन बार मेरे घर आई—'मिस रेखा' मै कह रहा हूँ, इस पर गौर कीजिएगा। मेरी वालिदा और वालिद उससे मिल कर बहुत खुश हुए। मैने वालिदा मरहूमा से बता दिया कि मैं रेखा जी को मोहब्बत करता हूँ और इनसे शादी करना चाहता हूँ। उन्होने वालिद मरहूम से कह दिया। और इस ख्याल से कि हिंदू लडकी मुसलमान बन सकेगी, उन्हे काफी सुकून हुआ। वह मेरे सब कुछ बता देने पर मुतमइन हुए। इस वक्त दोनो वालिदा-वालिद का इन्तकाल हो चुका है।

"एक दिन जब रेखा जी मेरे घर आई तब इत्तिफाक से घर मे नौकरो के अलावा वालिद-वालिदा-भाई-बहिन कोई न थे। रेखा जी मेरे कमरे मे थी और उस दिन रेखा के समझाने-बुझाने, बिगडने-गुस्सा होने, खुशामद करने और धमकी देने पर भी उन्हे जबरदस्ती और बेमन से हमबिस्तर होना पडा।

"इसके बाद सात-आठ दिनो तक वह मुझसे बहुत नाखुश रही और क़तई नही बोली। मगर सात-आठ दिनो के बाद उनका गुस्सा कुछ कम हुआ। मोहब्बत तो उनके दिल मे भी थी ही—कहाँ तक आखिर अपने को रोकती।

"एक दिन मैंने उनसे कहा "अब तो जो होना था वह हो गया, अब माफ कर दीजिए और यह गुस्सा खत्म कर दीजिए।

"रेखा जी करीब पन्द्रह-बीस मिनट तक मुझे बुरा-भला कहती रही और मै सिर झुकाए सुनता रहा। अक्सर यही नौबत आती। मै हमेशा सिर झुकाए सुनता रहता। एक दिन मै बीमार पड गया। कई दिनो तक मै कालिज नही गया। एक दोस्त के हाथ मैंने एक स्लिप रेखा जी को भेजी जिसमे उनसे इस्तेदुआ की कि मुझे अगर वह देख जाने की तकलीफ गवारा करें तो मै निहायत मशकूर और ममनून हूँगा।

"मुझे उम्मीद तो नही थी कि रेखा जी मेरे यहाँ आयेंगी, मगर मुझे खुद अपनी आँखों पर यकीन नही हुआ जब मैंने उन्हे अपने सामने अपने

कमरे मे पाया। वालिद साहब कचहरी गए थे, सब भाई-बहिन पढने। अब मेरे काई भाई-बहिन नही रहा है। वालिदा थी घर पर। वह निहायत अक्लमद थी। रेखा जी के आने पर वह मुझे पहले भी अकेले मे मिलने का मौका दे चुकी थी। चुनाचे उस दिन भी उन्होने यही किया। मेरी सेहत की हालत और बीमारी ने रेखा को मुझ पर कुछ मेहरबान कर दिया था। मैने उन्हे कलेजे से लगाकर चूम लिया। उन्होने कोई खास एतराज तो नही किया सिर्फ यह कहा "आपको इतना भी ध्यान नही हैं कि कोई देख सकता है। आपके यहाँ आने से तो मै इसीसे घबराती हूं। आपने इतनी प्रार्थना की थी कि मै आपकी पिछली चीज भूलकर भी चली आई। यह मेरी भलमनसाहत है।"

"मैने कहा "वालिदा साहबा पिछवाडे किसी काम से चली गई है। घर मे कोई नही है, तब कौन देख लेगा। आप मुझे जो कुछ कहती रही हैं या कहेगी सुनता रहा हूँ, सुनता रहूँगा भी, पर मेरा ख्याल है कि मैने बहुत बडा गुनाह नही किया था। अगर मै तुमसे मोहब्बत न करता होता और आप भी मुझसे प्रेम न करती होती तब यह जरूर गुनाह होता।"

"जी नही, प्रेम करने के यह अर्थ नही हे कि यह सब भी हो।"

"मै कुछ बोला नही उनके हाथो और पूरे बदन भर से खेलता-दुलराता रहा। और मेरे घर से चलने के पहले उनके सख्त एतराज और हाथा-पाई करने के बावजूद उन्हे फिर हमबिस्तर होना पडा था। इस बार वह बहुत ही परेशान और बिगड कर गई थी। मगर पहली बार गल्ती जितनी तकलीफ देती है, दूसरी बार उतनी तकलीफ नही देती। मैने उनसे कहा था "जैसे एक बार वैसे दस बार। उससे कोई खास फरक नही पडता।"

"मै सात आठ दिन और नही कालिज गया। फिर कालिज जाने पर वह मुझसे नही ही बोली। मैने मन मे सोचा महीना-पन्द्रह दिन न बोलने दो। फिर बोलेगी ही।

"एक दिन जब मुझे जरा भी उम्मीद न थी कि वह मुझसे मिलेगी वह चुपके से मेरे पास आई और बोली "कालिज खत्म होने के बाद आपसे कुछ बहुत आवश्यक वाते करनी है। आप 'गेट-वे-आफ-इडिया' पर मिले।"

"मैने इसे ही गनीमत समझा। मै 'गेट-वे आफ-इडिया' पर पहुँचा थाड़ी देर ही इन्तजार करना पडा कि रेखा जी आ गई। हम दोनो पैदल ही ताजमहल होटल की ओर से समुद्र के किनारे होते हुए 'मेरीन ड्राइव' की ओर चले। रेखा बहुत गमगीन और उदास थी। बोली "मुझे मिटाकर, बरबाद कर के, इस परेशानी मे डालकर आपको क्या मिला? आप मुझे वास्तव मे प्रेम करते थे? कदाचित् आप यही चाहते थे। अब तो आप प्रसन्न होगे कि मै इस मुसीबत मे फँस गई हूँ। मुझे आत्महत्या न करना पडे। खैर आपकी इच्छा। आपकी हविस तो पूरी हो गई है। आप तो कहते थे मुझे मोहब्बत करते थे। क्या मोहब्बत इसीलिए की जाती है कि स्त्री चाहे मरे चाहे जिये, पुरुष से क्या मतलब। वह तो अपनी मनमानी कर ले। आपने जो कुछ किया अच्छा ही किया। मैं इसी योग्य थी। गल्ती आप की नही मेरी थी। या यदि कहूँ मेरी अज्ञानता की, अनुभवहीनता की, मेरी आयु की थी तो भी गलत न होगा। मैने आपका इतना विश्वास क्यो किया? मै आपसे इतनी मिली-जुली क्यो? मैने क्यो आपको ढील दी, अवसर दिया कि आप मेरे साथ खेल सके? गल्ती मेरी थी, मै उसके लिए भुगतूँगी। मैने आपको 'किस' करने दिया, आलिगन करने दिया, और तब आपने सोचा अब जब इसको इतना फाँस लिया है तो 'सेक्स' ही क्यो रह जाय? आप 'किस-इम्ब्रेसँ' तक ही कैसे धीरज रख लेते? आपतो मुझे मेरे माँ-बाप, नाना-नानी, सम्बन्धियो से छुड़ाना चाहते थे, इस दुनिया ही से छुडाना चाहते थे।"

"मैंने कहा "आप बेहद परेशान है। पर परेशानी का बायस आपने बताया ही नही। मैं मजूर करता हूँ कि मेरे सिर पर भूत सवार हो

आया था और मै दो बार अपने को सेक्स से नही रोक सका । यह शायद इतनी बडी गल्ती है जिसकी सजा जितनी बडी हो कम होगी । मगर इस गल्ती का आखिर कोई हल भी है ? अगर हो तो मुझे बताये । इस वक्त आप बहुत खफा है, बहुत परेशान है । मै जो कुछ भी कहूँगा आप उस पर यकीन नही करेगी । यह मेरी बदकिस्मती है कि आप समझती है कि आपको मिटाने, आपको परेशान करने और सिर्फ अपनी हाविस पूरी करने के लिए मैने मोहब्बत का ढोग रचा । आप सोचती है मै आपसे सच्ची मोहब्बत नही करता । सिवा चुप रहने के आज मेरे हाथ मे कुछ भी नही रह गया है । 'सेक्स' वाली अपनी गल्ती भी मानता हूँ, मगर आपको कैसे यकीन दिलाऊँ कि अगर आपको सचमुच मोहब्बत न करता होता तो शायद इतना आगे मै न बढता । मै समझता था यह मेरा वाजब हक है । मै सेक्स का गुनाहगार हूँ, क्या सिर्फ इसी बात पर आपको यकीन हो गया कि मै प्रेम का ढोग रचता था, सच्चा प्रेम नही करता था । मै मानता हूँ कि मै आपसे मोहब्बत इसलिये करता था कि मुझे सुख मिलता था । मोहब्बत तो एक नशे की तरह मुझ पर छा गई थी और नशे मे कभी-कभी आदमी वह भी कर जाता है जो उसे फिलहाल न करना चाहिए । और मुझे कहने दे कि मै खुद कुछ नही करता, कर भी नही सकता । सब कुछ हो जाया करता है । जो हो जाता है उसकी बहुत कुछ जिम्मेदार परिस्थितियाँ होती है ।"

"ठीक है आपने अपना वाजिब हक ले लिया, अब रेखा को उसके भाग्य पर मरने-जीने को छोड दीजिए । आप तो 'सेक्स' के लिए 'गल्ती हो गई' कह कर अलग हो गए, परन्तु आपके इस कह देने से मेरा दुर्भाग्य तो समाप्त नही हो जायगा । आप मेरा दुर्भाग्य सुनना ही चाहते है ? मेरे ही मुँह से ? आप कुछ समझ नही सकते है ? अब भी बताने की आवश्यकता है ?"

"रेखा जी कही आपको हमल.... ?"

"रेखा ने जवाब नही दिया । चद मिनटो के लिए उसने अपना मुह ढक लिया और फिर हाथ तो उसने हटा लिए मगर उसकी आँखो से बडे-बडे आँसू निकलने लगे जिन्हे वह बार-बार जल्द पोछने लगी। अब सब कुछ साफ हो गया था।

"मैंने सजीदगी से कहा "आपकी परेशानी अहम है। जिस मुसीबत मे आप मुब्तिला हो गई है उसको दूर करने के दो ही तरीके हो सकते है। या तो आप मुझसे निकाह करना मजूर कर लें और या फिर हमल को गिराने के लिए किसी लेडी डाक्टर की खिदमात हासिल करूं या कुछ दवा वगैरह का इतजाम किया जाय। आप क्या चाहती ह ? मेरे घर आए करीबन एक माह आपको हुआ है। मुझे लगता है आपको 'मेसेज' (मासिक-धर्म) न हुए सात-आठ दिन से ज्यादा चढे नही होगे। गल्ती के लिए सजा देने की काफी वक्त पडा है, इस वक्त तो आपको अपनी फिक्र करनी है। आपको इस मुसीबत से छुटकारा दिलाना पहली जरूरत है। आप कुछ बोले तो ! चुप रहने से काम कैसे चलेगा ?"

"आपका अनुमान ठीक है। सात-आठ दिन मुझे चढ गए है। आप किसी दवा का प्रबध करे। या उससे विशेष लाभ की आशा न हो तो फिर किसी लेडी डॉक्टर की चिता करे। मैंने सुना है कि आपरेशन आदि के बाद इतनी अधिक दुर्बलता आ जाती है कि आपरेशन आदि की बात छिपाना प्राय: असभव हो जाती है।"

"मैने रेखा जी को काफी भरोसा दिया। ब्रेबर्न स्टेडियम के पास मे होते हुए चर्चगेट स्टेशन पर मै उसे दादर के लिए ट्रेन पर बैठा आया। अब मेरे सामने यह अहम मसला था कि मै रेखा जी के लिए क्या करूँ। मै उन्हे धोखा देना नही चाहता था, पर मै उन्हे अपनी बीबी बनाना ही चाहता था, उन्हे छोडना किसी भी हालत मे नही चाहता था। मैं सचमुच उनसे मोहब्बत करता था। क्या करूँ क्या न करूँ कुछ फैसला न कर पाया। यह भी सोचा कि अल्ला मियाँ ने मौका

अच्छा दिया है इससे फ़ायदा क्यो न उठाऊँ। अगर हमल बरकरार रहता है तो फिर झक मार कर उन्हे मुझसे शादी करनी ही पडेगी। तो क्या मै असली दवायें उन्हे न दे कर मामूली हाज्मे-आज्मे की दवा देकर बहलाऊँ ? मगर यह तो धोखा होगा रेखा जी के साथ। मगर मोहब्बत मे कुछ भी नामुनासिब नही होता—सब कुछ जायज़ है। तो फिर ?

"मैं अपनी वालिदा से बहुत ढीठ था। मेरा ख्याल है कि ज्यादातर औलादें अपने वालिदो से डरती है और वालिदाओ से ढीठ होती है। मैने बिल्कुल सच-सच बातें वालिदा साहबा से बता दी। अपने जजबात भी बताए, अपने मन के पाप को भी बताया।

"माँ हमेशा अपनी औलाद की ख़ुशी की ही बात सोचती है। उन्होने काफी देर सोचा। फिर सलाह दी कि "अगर रेखा इस्लाम कबूल कर सके तो सिर्फ तुम्हे बीबी ही नही मिलेगी बल्कि एक सबाब का काम भी तुम मजहब के नाम पर करोगे। इसलिए ऐसा न हो कि कि तुमसे मायूस होकर वह हमल गिरवाने को किसी दूसरे की मदद ले। वह बालिग है इससे तुम पर मुकदमे का डर नही है। और मुकदमा चले भी तो तुम्हारे अब्बा है, तुम्हे काहे का खौफ। मगर हाँ बात खुल जाने पर बढे नही, हिन्दू-मुसलिम सवाल न लीडरान पैदा कर दे। अहँ देखा जायगा जैसा होगा। मेरे ख्याल से तुम इधर-उधर की बेकार दवाये उसे देते रहो। हमल गिरवाने मे तुम ही घाटे मे रहोगे।"

"वालिदा ने अब्बा से कहा होगा। अब्बा से मुँह-दर-मुँह बाते मेरी कम ही होती थी और खास कर इस नाजुक मसले पर तो गैरमुमकिन था मेरी जबान खुलती। वालिदा ने मुझसे दूसरे दिन कहा "वह कहते थे कि अहमद से कह देना तुम्हारी राय की मैं भी ताईद करता हूँ। आगे-पीछे जो भी होगा देखा जायगा। हम दोनो को ही नही तमाम मुसलिम जमात को उसके साथ हमदर्दी होगी।"

"मैंने रेखा जी को धोखा देना ही तय किया। मै नीच, बुजदिल और बदमाश तबियत का नही हूँ, अगर आप मेरा यकीन कर सकें। मै बार-बार कहता हूँ कि मै रेखा को प्यार करता था और उसे मुसलमान बनाने की ख्वाहिश मे मेरे घर वाले मुझे बढावा दे रहे थे।

"मैने रेखा जी को हाज्मे की दवा दी। मैने कहा "डाक्टर का कहना है कि इस दवा का असर धीरे-धीरे होगा मगर यकीनन होगा। एक महीने तक आप घबराये नही। तो फिर आप मुझ पर यकीन करके इस दवा का इस्तेमाल आज ही से शुरू कर दीजिए।"

"डूबते को तिनके का सहारा बहुत होता है। भोली रेखा ने मेरा यकीन किया। मेरा मन मुझे फटकार रहा था कि यह तू बेईमानी, बेइंसाफी कर रहा है।

"मैने रेखा जी की सबसे मुलायम जगह पर चोट की। मैने कहा—"हम मुसलमानो के यहाँ तो तलाक जायज है। एक औरत अगर अपने खामिंद को छोडकर दूसरे से निकाह या मुताह कर लेती है तो उसे बुरा नही समझा जाता। वह तो उसूलन और मजहबन जायज़ और मुनासिब है। मगर, आप, हिन्दुओ के यहाँ तो औरत एक बार जिसको प्रेम कर लेती है, जिसे पति बना लेती है, उस खामिद को वह ताजिदगी नहीं छोडती, छोड सकती। जिसके साथ वह हमबिस्तर हो चुकती है, उसके अलावा वह अपने बदन को दूसरे को छूने नही दे सकती, भले ही उसे अपनी जान दे देनी पडे। खुशी या नाखुशी से तुम अपने जिस्म को मुझे सौप चुकी हो, अब तुम अगर मुझसे शादी न करके किसी दूसरे से शादी करोगी तो मजहब के लिहाज से अधर्म होगा। तब मेरे अलावा जब तुम अपना जिस्म किसी को सौप ही नही सकती, तो फिर मेरी ही बीबी होना कबूल क्यो नही करती? मैं तुमसे सच्ची मोहब्बत करता हूँ इसमे तो तुम्हे भी शक-शुबहा नही होना चाहिए।

"रेखा मेरी ओर देर तक देखती रही। फिर उसने कहा—"ठीक है आप मेरे शरीर का उपभोग कर चुके है। इसे अगर किसी और को

सौपूँगी तो दुश्चरित्र हो जाऊँगी। दुश्चरित्र तो एक तरह से यो भी हो गयी हूँ अगर आपसे शादी न की। पर एक बात अब भी मेरे हाथ मे है कि मै शादी ही न करूँ और सदा कुँआरी रहूँ तो किसी दूसरे मनुष्य को शरीर सौपने का प्रश्न ही नही उठेगा। आपसे विवाह करने मे धार्मिक बखेडे है। हाँ यदि आप हिंदू-धर्म स्वीकार करने को तैयार हो जायँ तो मैं प्रसन्नता से आपसे विवाह कर लूँगी। यद्यपि मेरा विचार है कि मेरे माता-पिता, नानी-नाना तथा अन्य सम्बन्धी इस पर भी राज़ी नही होगे। इसलिए सोचती हूँ कि चूँकि आपसे प्रेम तो मै भी करती ही हूँ अत: मै अविवाहित ही रहूँगी। पर खैर यह सब तो बाद की बातें है, पहले तो गर्भपात कराना है। परन्तु अभी तक तो दवा का कोई प्रभाव मुझे नही दिखाई दे रहा है। आप डाक्टर से क्यो नही कहते ?"

"मै कुछ भी नही बोला। मगर मैने मन मे कहा—"मै तुम्हे छोड़ सकता हूँ मगर अपना मजहब नही छोड सकता। एक तो इस्लाम मज़-हब मेरी रग-रग मे यो ही भिदा है और फिर मेरे दादा मरहूम का तजुरबा मै भूल नही सकता। तुम्हे ही इस्लाम मजहब कबूल करना पडेगा।" पर मैंने उससे कहा—"डाक्टर से क्या मैं कहता नही, पर उसका कहना है यह 'प्रेगनेसी' (गर्भ) बाज दफे इतनी 'आब्सटीनेट' (जिद्दी किस्म की) होती है कि दवाओ का भी असर नही होता। मैं रेखा जी खुद बहुत परेशान हूँ। क्या करूँ कुछ समझ मे नही आता।"

"पन्द्रह दिन तो हो गए है। मुझे तो कुछ पता ही नही चलता। अधिक दिन घर मे गर्भ छिपाना कठिन हो जायगा। आजकल मे किसी दूसरे की दवा करे। क्या इसी डाक्टर का ठेका है ?"

"मैने कहा—"ऐसा ही करूँगा।"

"मगर दूसरे दिन ताकत की दवा बनवाकर रेखा को लाकर दे दी। और उस बेचारी ने मुझ पर यकीन करते हुए दस-पन्द्रह दिन वह दवा भी पी ली। मगर उससे होना-हवाना क्या था ? मैं बाज दफे अपने को कोसता और यही सोचता कि मोहब्बत का नाम तू क्यो लेता है। तूने

एक हिंदू औरत की अस्मत के साथ पहले खेल किया और अब उसकी ज़िदगी से खेल कर रहा है। यह भी हो सकता है कि अगर तू उसकी दिली ख्वाहिश को पूरा कर देता है तो मुमकिन है आगे-पीछे चल कर वह तेरी गुलाम हो जाय, और अगर तू उससे दगाबाजी करता गया और तेरे फ़रेब को वह जान गई तो फिर मुमकिन है वह ज़िदगी भर तेरी सूरत देखने की भी रवादार नही होगी। मगर यह सब सोचता ही रहा। दिल मे मै चाहता था कि ऐसे हालात पैदा कर दिए जायँ कि वह मेरे जाल मे ऐसे फँसा जाय जैसे मकडी के जाल मे मक्खी।

"हमल रह जाने के बाद बिला नागा रेखा मुझसे मिलती रही। मिलना जरूरी जो था उसके लिए। मिलती तो घटो अपना दुखडा रोती। देखने वालो ने यह सब देखा और उसके वालिद को नासिक मे और उसके नाना को दादर मे इसके मुत्तलिक नमक-मिर्च लगाकर खबरें भेजी। उन लोगो को यह तक लिख दिया कि रेखा किलेदार से फँसी है और शायद 'प्रेगनेट' (गर्भवती) भी है। अगर आप लोग जल्दी खोज-खबर नही लेगे तो कही वह मुसलमान न हो जाय, वगैरह।

"वह सब बाते मुझे बताती रहती थी। अगर और वक्त होता तो वह मुझसे कम से कम मिलती, मगर जिस हालत मे वह थी, उसमे वह बगैर किसी हमदर्द और मददगार से मिले कैसे रह सकती थी।

"मुझसे फँसी होने का अन्दाजा तो ठीक हो सकता था, मगर रेखा के 'प्रेगनेंट' होने की बात उन लोगो ने रेखा के वालिद और नाना को डराने के लिए लिखी थी, गोकि था यह वाकया।

"सालाना इमतिहान के मुश्किल से दो महीने रह गये थे, इसलिए रेखा के वालिद और नाना ने उसका पढना तो मुल्तवी नही कराया, न छुडाया, और बहुत ज्यादा सख्ती भी इस डर से नही की कि कही इमतिहान मे इसका नतीजा बुरा न हो। लेकिन रेखा को समझाते, डराते, धमकाते वे लोग जरूर रहते थे। एक दिन रेखा के वालिद छुट्टी लेकर बम्बई आ गए। नाना जी के यहाँ ही वह ठहरे। उन्होने रेखा

से कहा "क्या यह सच है कि तेरा सम्बन्ध किसी मुसलमान से है जो किलेदार कहलाता है ? क्या तुम उससे रोज मिलती हो ? क्या यह सत्य है कि तुम्हे इस सम्बन्ध मे काफी समझाया गया मगर तुमने कोई परवाह नही की ? देखो झूठ बोलने से, बात बनाने से कोई लाभ नहीं है। मैं यहाँ इसी उद्देश्य से आया हूँ और मैं तुम्हारे कालिज जाकर सब पता चलाऊँगा। तुम्हारी माता जी को भी इसीसे साथ लाया हूँ ताकि वह ठीक से और बाते भी जान-समझ ले जो मुझे मालूम हुई है।"

"पहले तो रेखा ने वही बाते उनसे भी कही जो अमूमन वह सब से कहती थी कि "किलेदार अच्छा खिलाडी है, और मै भी खेलती हूँ, इसी से उससे मुलाकात है। मगर चूँकि वह मुसलमान है इससे मेरी झूठी शिकायते लोग आप लोगो को लिखते है।"

"इसके बाद उसके वालिद ने उसे वे खतूत पढ़ने को दिए जो उनके पास कई आदमियो के आए थे। एक पत्र, कोई देशपाडेय थे, उन्होने लिखा था पर ज्यादातर खत तो गुमनाम नामो से थे। खत पढने के बाद रखा ने फिर सच्चाई से इकार किया।

"दूसरे दिन उसके वालिद विलसन कालिज आए। वहा के प्रिसपल, कुछ लेक्चरारो और कुछ तालिबइल्मो से मिले। प्रिसपल और लेक्चरारो से तो कोई खास खबर उन्हे नही मिली, मगर उन सब तालिबइल्मो से जिनसे वे मिले, सब ने एक आवाज मे और जोरदार लफ्जो मे उनसे कहा कि इन खतूतो मे जो कुछ दोनो मे प्रेम की बाते लिखी है वह तो ठीक है ही, वाकयात कुछ इससे भी आगे बढे है, वगैरह। रेखा के वालिद को किसी तालिबइल्म ने दूर से मुझे भी दिखा दिया था। उन्होने मुझे गौर से देखा होगा।

"रेखा अब समझ गई थी कि अब छिपाना बेकार है। काफी समझाने-बुझाने, डराने-धमकाने पर उसने कबूल कर लिया कि किलेदार मुझसे मोहब्बत करते है और मैं भी उनसे प्रेम करती हूँ।

"उसके वालिद ने कहा "यदि तुम ऐसी होगी, यह मै जानता तो

तुम्हे इतनी स्वतन्त्रता न देता। तुमने मेरी नाक कटा दी है और मेरे वश का नाम डुबो दिया है। तुम्हे प्रेम ही करना था तो तुम्हे कोई भी हिन्दू लडका नही मिला था जो एक मुसलमान पर ही तू मरने गई। खैर जो हो गया वह हो गया। मैं अब भी तुझे क्षमा कर सकता हूँ भी यदि तू प्रतिज्ञा करे कि उस कुत्ते से अब मे तू कोई सम्बध न रखेगी। भूल मनुष्य से होती है, परन्तु गल्ती करने के बाद अगर तेरी आँख खुल जाय तो भी खैर मै क्षमा कर दूँगा।"

"उसकी वालिदा ने कहा " अगर मै जानती कि यह ऐसी होगी तो मै इसके पैदा होते ही इसका गला दबा देती। ये मुसलमान जो हिन्दुओ के जानी दुश्मन है, उनसे तू मेल-मुलाकात बढाने बैठी। तू शिवा जी की जाति की है और तेरे यह कर्म। यदि तूने भविष्य मे किलेदार से कोई सम्बध रखा तो फिर तू मेरे लिए मर गई, और मै न तेरी सूरत कभी देखूँगी और न अपनी सूरत देखने दूँगी। मुझे तू ठीक-ठीक बता दे कि लोग क्यो तेरे चरित्र पर दोप लगा रहे है और गर्भवती होने की बात कह रहे है। अगर तू नही बतायेगी तो तेरी डाक्टरी परीक्षा करा कर हम वास्तविकता ज्ञात कर लेगे।"

"रेखा जी का डर बिल्कुल ठीक था। मगर अब हम लोग सिनेमा-घर तक पहुँच चुके है। अब यही तक।"

साइकिल-स्टैंड पर साइकिल रख कर टिकट खरीद कर हम लोग सिनेमा-हाल मे दाखिल हुए।

: ४ :

सिनेमा देख कर घर लौटते समय किलेदार साहब ने अपनी दास्तान फिर आरभ की। उन्होने कहा "मुख्तसर हाल यह है कि शुरू मे हमल से इकार किया गया मगर चूँकि तीसरा महीना उसे लग गया था

इसलिए कुछ आसार ऐसे अयाँ हुए—मसलन जी का मिचलाना, कुछ भूख की कमी वगैरह कि उसकी नानी, मामी और मा को शक पक्का हो गया। रेखा मारी-पीटी भी गई। जिस दिन लेडी-डाक्टर को बुलाना तय हुआ था उस दिन लाचार हो कर रेखा ने कबूल कर लिया। उसने रोते हुए उन्हे बताया कि "एक दिन वह मेरे यहाँ गई थी और मैने उसके साथ जबरदस्ती की। यह शर्म की बात थी, इससे वह किससे क्या कहती। परेशानी मे दिन गुजार रही थी।"

"रेखा जी के वालिद और नाना बडे आदमी थे। लेडी-डॉक्टर बुलाई गई। रुपये मे बहुत ताकत होती है। उसने कहा "फिलहाल मै दवा देती हूँ। ख़ुदा चाहेगा तो इसीसे कामयाबी हो जायगी। नही तो खैर इमतिहान हो जाने दीजिए, चद दिन तो है ही और, उसके बाद अगर जरूरत हुई तो आपरेशन वगैरह कर दिया जायगा।"

"मामला मुमकिन है इतना तूल न पकडता अगर मैं मुसलमान न होता। बहरहाल रेखा का मुकम्मिल और माकूल इलाज अब होने लगा। कुछ तो इस वजह से और कुछ अपने वालिद के आ जाने से, कुछ उनकी सख्ती से और कुछ कालिज मे थोडी-बहुत शोहरत हो जाने के सबब से रेखा ने करीब-करीब मुझसे बोलना-मिलना बद कर दिया। मगर जिस दिन तक वह मिलती रही थी उस दिन तक अपने घर का अपने बारे मे पूरा हालचाल ईमानदारी से देती रही। और मेरा कयास है कि उसे यह मालूम था कि मैं अपनी वालिदा से सब कुछ बता देता हूँ और वालिदा वालिद से शायद जरूर बता देती होगी। वालिदा से बता देने की बात एक दिन मेरे मुँह से निकल गई थी।

"इमतिहान ऐन सिर पर था, इससे परेशानियो के बावजूद भी रेखा और मै दोनो पढ रहे थे। ऐसी परेशानी के आलम मे ही हम दोनो इमतिहान मे शरीक हुए और ख़ुदा का फज्ल है हम दोनो को कामयाबी हासिल हुई थी, गोकि मैने एम० ए० मे और उसने बी० ए० मे थर्ड डिवीजन पाया।

"डाक्टरी दवाओ से कोई खास फायदा नही हुआ और तब इमतिहान खत्म हो जाने के बाद आपरेशन तय हुआ। मगर लेडी-डॉक्टर ने कह दिया था कि कुछ ऐसी पेचीदगियाँ है कि जान को खतरा भी हो सकता है क्योकि चौथा माह लग चुका है। और अगर किसी तरह स जान पर आँच न भी आई तो भी हमेशा के लिए इनकी तन्दुरुस्ती खराब हो सकती है।

"रेखा के घर वालो का कहना था कि अब यो भी इसकी और हम लोगो की जिन्दगी रायगाँ और बेसूद है। हमल गिरना ही चाहिए, भले ही यह मरे या जिए।

"उसके वालिद सर्विस मे थे, इससे उनका ज्यादा कयाम तो बम्बई मे मुमकिन नही था, वह बार-बार छुट्टी ले कर आते थे। उन्होने बाद मे दो महीने की लम्बी छुट्टी ले ली और अपने पूरे खानदान के साथ बम्बई आ गए। गर्मी की छुट्टियाँ थी इससे स्कूल-कालिज बद थे, इससे रेखा के छोटे भाई-बहिनो की पढाई के नुकसान का सवाल नही था।

"रेखा के वालिद और नाना तो उसे खास नही कहते थे मगर औरते उसे दिन-रात कोसती, कोचती, बुरा-भला कहती और गालियाँ देती। मेरा ख्याल है अगर उसे ज्यादा औरते ताने-शिकवे से परेशान न करती तो मुमकिन है रेखा आखिर मे इस्लाम मजहब कबूल न करती, मगर इन चीजो का उल्टा 'रिऐक्शन' (प्रतिक्रिया) होती है। बाज दफे झुँझला कर वह मन मे कहती कि मुझे इस हद तक सब परेशान करेंगे तो अहमद ही से शादी कर लूँगी।

"जो हुआ वह हो चुका। वह तो अब पलटा जा नही सकता। आगे के लिए फिर वैसी गल्ती न होने पाए, सिर्फ इसका ख्याल रखा जाय। अब गुजरी हुई बातों पर रोज कोचने-भोकने से फायदा तो कोई खास होगा नही, उलटे आदमी और जिद्द पकड़ेगा और अपने आप अपना नुकसान न करता होगा तो जिद्दा-जिद्दी मे कर लेगा। मगर यह बातें

कौन सोचता है पहले, खास कर औरतो मे इतनी समझदारी और अक्ल कहाँ। रेखा जी के साथ यही हुआ।

"फिर जान हर एक को अजीज होती है। आपरेशन मे जान के खतरे को सुन कर उसके लिए रेखा भी दहशत खाने लगी थी मगर हमल गिराने के अलावा और कोई तदबीर भी तो नहीं थी। और आपरेशन को अब तो दो-चार दिन भी टालना, मुल्तवी करना मुमकिन नही था।

"आपरेशन के लिए तो शायद रेखा तैयार भी हो जाती मगर उसके खानदान वालो के दो इसरार उसे कतई नापसद और नामजूर थे। पहला इसरार तो उन लोगो का यह था कि इसी साल जल्द से जल्द वह किसी महाराष्ट्र जवान से उसकी शादी कर देना चाहते थे। दूसरा इसरार उनका यह था कि वह मुझपर मुकदमा दायर करेंगे और उसे यह मेरे खिलाफ कहना पडेगा कि बिना उसकी रजामदी के उसके साथ 'जिनह' हुआ है, उसे 'रेप' किया गया है। उसकी पढाई तो खत्म कर ही दी जायगी और आपरेशन के बाद उसे उसके वालिद नासिक ले जायँगे।

"चूँकि हिन्दू-मुसलमान का सवाल था इसलिए खास तौर से हिंदू जवान मेरे खिलाफ थे ही, गोकि सबको शक ही था। असलियत सिर्फ़ रेखा के खानदान वालो के अलावा किसी को ज़ाहिर न थी। मगर बद-नामी थोडी-बहुत तो फैल ही चुकी थी। एक राष्ट्रीय-स्वय-सेवक-संघ का नौजवान विश्व दामोदर देशपाडेय एम० ए० रेखा से शादी करने को तैयार हो गया था क्योकि उसका कहना था कि मजहब के नाते वह इस कुर्बानी को तैयार है, उसका फर्ज़ हो जाता हैं। कुर्बानी इसलिए कि उसने जोकि यह फैसला किया था कि वह शादी-वादी के झगड़े मे ही नही फँसेगा और मुल्क और मजहब के लिए उसनें अपनी जिन्दगी निसार करने का पक्का इरादा कर लिया था। उसने एम० ए० फर्स्ट क्लास मे किया था। इसमे कोई शक नही कि इस जमात के नौजवानों में मज़हब के नाम पर क़ुर्बान होने की ख्वाहिश रहती है, उन्हे इश्तियाक होता है।

"शादी करने की एक शर्त इस नौजवान ने रखी थी, वह यह कि किलेदार पर मुकदमा चलाया जाय और उसे जेल भिजवाया जाय। रेखा जी उसके खिलाफ मुकदमे मे अपना बयान दे। जो वाकयात न भी हो, वे भी झूठ बनाकर इस तरह से रेखा जी पेश करे कि इस कमबख्त को हिदू-स्त्री पर निगाह डालने की सजा मिले।

"रेखा जी कहती थी "मै विवाह तो नही ही करूँगी। विवाह करने के अर्थ है मै वेश्या हो गई। मेरा जब एक मनुष्य से शारीरिक सबध हो चुका हो तो फिर दूसरे से ठीक नही है।"

"वे लोग समझाते कि जब तुम पर जबरदस्ती की गई है तब तुम बेकसूर हो। और फिर तुमसे तो प्रसन्नता से एक हिदू विवाह करने को प्रस्तुत है।

"मेरा ख्याल है कि शादी के मसले पर उसी वक्त अगर जोर न रेखा जी से दिया जाता तो मुमकिन था, आगे-पीछे चल कर वह जरूर किसी हिदू से शादी करने को तैयार हो जाती। उस वक्त तो उनका यह 'व्हिम' (खब्त) था, सनक थी। उनका दिमाग खुद परेशान था, और खानदान वाले और भी परेशान किए हुए थे। अपना अच्छा-बुरा सोच सकने का इम्तिआज, तमीज उस वक्त उन्हे नही थी। जल्दबाजो मे उल्टे-सुल्टे ही काम होते है। मगर बाज दफे ऐसी परेशानियाँ दरपेश होती है कि तुरत-फुरत ही कुछ तय करना और बमुताबिक करना पडता है। मा-बाप का जल्दी से जल्दी शादी करने को सोचना भी एक तरह मे वाजिब था। मुमकिन है वे लोग सोचते हो कि 'सेक्स' का चस्का रेखा को लग चुका है। मुमकिन है कि हालात मे फिलहाल जो गर्मी पैदा हो गई है, उसके खत्म हो जाने के बाद फिर रेखा का कही ऊँचे-नीचे पैर न पड़ जाय, या फिर मुझसे मिलने की वह कोशिश न करे। जवानी बावली होती है। इसके अलावा बदनाम लडकी से शादी करने को कम हिंदू जवान ही तैयार होते हैं। अभी तो एक अपने को 'आफर' (दे रहा है) कर रहा है। यह मौका चूकना निहायत बेवकूफी

होगी जिसके लिए उन्हे ज़िंदगी भर पछताना पडेगा और खुद यह बेवकूफ लडकी बाद मे पछतायगी ।

"पढाई छूट जायगी, खत्म हो जायगी, इसका अफसोस भले ही रेखा जी को हो, पर वह इसके लिए तैयार थी । आपरेशन के लिए भी वह बेमन से रजामदी दे चुकी थी । मगर एक बात के लिए वह तैयार न थी । उनका कहना था "खैर गलती मैने की है । उसकी आज घर वाले मुझे जो सजा देना चाहे दे दे । मै सिर-आँखो पर कबूल करूँगी । पर मुकदमेबाजी हो, चारो ओर और मेरी बदनामी हो, सबकी निगाह मेरे ऊपर पडे, सब मुझे थू-थू करे, इसके लिए मै बिल्कुल तैयार नही हूँ । और मुकदमे के दौरान मे मै किसी पर बनाकर झूठ तोहमत लगाऊँ यह तो बिल्कुल असभव है ।"

"कहने का मतलब यह है कि रेखा के खानदान वाले जिद्दमजिद्दा और लोगो के भडकाने की वजह से मुकदमा दायर करने का फैसला किए हुए थे, आमादा थे--आपरेशन के कामयाब हो जाने के बाद—और मुकदमेबाजी और शादी की मुखालिफत रेखा जी कर रही थी ।

"वे लोग कहते थे 'तुम कहती हो जो सजा हम लोग देंगे उसे कबूल करोगी । ये दो बाते ही सजा समझ कर कबूल करो ।"

"रेखा जी कहती थी "खैर विवाह की बात पर तो मै आगे-पीछे सोच सकती हूँ । परन्तु मुकदमेबाजी की शर्त मुझे बिल्कुल अस्वीकार है । और जो मैने यह सुना है कि किलेदार को जान से मार डालने की तरकीबे हो रही है यह तो बहुत ही अनुचित बात है । गलती उनकी ही नही, कुछ मेरी भी है। भूल, नासमझी, अनुभवहीनता, आयु का तकाजा, चाहे जो उसे आप नाम दें, पर गलती, गलती ही है ।"

और देशपाँडेय कहता था "बिना मुकदमा चलाए और इस मुसल्ले को सजा दिलाए मै विवाह नही करूँगा । बदनामी तो आखिर मेरी भी होगी क्योकि रेखा जी से मेरा विवाह होगा पर जब मै भावी पति हो

कर बदनामी की परवाह नही करता, पुरुष होकर चिंता नही करता, तो रेखा जी क्यो फिक्र करती है।"

"बहरहाल रेखा जी पर हर मुमकिन सख्ती की गई। और जब वह बेहद परेशान हो गई तो एक दिन उन्होने मुझसे मुलाकात की। मुलाकात इस तरह से हुई। उन्होने मुझे एक खत लिखा जिसमे उन्होने मुझसे 'गेट-वे-आफ-इडिया' पर एक खास दिन और खास वक्त पर पहुँचने को लिखा। यह भी लिख दिया कि हो सकता है मै न भी आ पाऊँ, तो एहतियातन दूसरे दिन भी हो लीजियेगा। मेरे ऊपर काफी सख्ती और निगरानी है, इससे मुमकिन है जो वक्त मैंने आपको दिया है उससे दो-चार घटे इधर-उधर भी हो सकता है। मौका मिल सका, मुमकिन हुआ तब ही तो मै आ सकती हूँ। यह समझ लीजिए कि अगर उस दिन नही मिल सके तो फिर शायद कभी मुलाकात न हो सके। मेरे खत की अहमियत को नुक्ते-नजर रख कर मिले। आपको तो किसी वक्त किसी दिन कही भी आने-जाने मे परेशानी का सवाल ही नही उठेगा। परेशानियाँ तो मेरे साथ है, वगैरह।

"खुली हुई चीज थी कि मुझे जब बिलकुल मायूसी और नाउम्मेदी थी तब मुझे रेखा जी का खत मिला। और मैं सिर के बल मुकर्रर वक्त के बहुत पहले ही गेट-वे-ऑफ-इडिया पर पहुँच गया। दिए हुए वक्त के करीब एक घन्टे बाद रेखा जी मुझे आती हुई दिखलाई दी। वहाँ की भीडभाड मे कोई न कोई मेरा या उनका जान-पहचान वाला मिल सकता है, इस खौफ से हम लोग हमेशा ताजमहल होटल की तरफ से समुद्र के किनारे-किनारे होते मैरीन-ड्राइव की ओर पैदल चल पडते थे। उस रास्ते पर भीडभाड कभी नही होती थी। चुनाचें उस दिन भी ऐसा ही किया गया।

"रेखाजी ने बताया कि "किन कठिनाइयो को पार करके वह यहाँ आ पाई है। उसके बतलाने की कोई जरूरत नही है। पर कल आपरेशन होना तय हुआ है। इसलिए अगर आज न मिल पाती तो फिर

जिंदा बचती या नही, और जिंदा बचती भी तो कब तक कमजोरी दूर होती और फिर क्या-क्या नई घटनाये होती इन सबके बारे मे, कुछ भी नही कहा जा सकता—मै बम्बई मे होती या नासिक मे, क्या कह सकती हूँ। मेरी क्या-क्या कठिनाइयाँ है, चिताये है, आपको उनका पूरा ज्ञान हो जाय, इसे मै न भूल सकती थी, न दृष्टि से हटा सकती थी। आपको मै बताना चाहती थी। और पत्र मे सब लिखना असभव भी था और अनुचित भी। पत्र यदि किसी के हाथ मे पड जाता तो काफी परेशानी का कारण हो सकता था। और मैं लिखती भी कि आप पढकर पत्र फाड डाले तो भी वैसा आप कभी नही करते।",

'इसके बाद रेखा जी ने मुझे उस दिन तक के सब वाकयात बताए और मेरा ख्याल है कि ईमानदारी से सच-सच।

"मैने सब कुछ सुना। फिर पूछा "आप मुझसे मोहब्बत करती है ?"

'यह सवाल पता नही आप पूछते क्यो है ? क्या आप इतना भी नही समझ पाते ? तो फिर मै आपको यह सब बताने क्यो दौडी आती ?"

"मेरी उस बेजा हरकत के बाद भी ? तुम मुझसे नफरत नही करती ?"

"उस बेजा हरकत के बाद मै आपको माफ नही कर सकी हूँ। आपने मुझे कही का नही रखा। अब यह मेरा शरीर किसी के मतलब का नही रहा। कम से कम मैं अब इसे किसी और को सौपने की बात नही सोच सकती।"

"तो तुम फिर मेरी ही क्यो नही बन जाती; मुझसे शादी करके ?"

"मै शादी की बात सोच सकती हूँ अगर आप हिंदू हो जाँय।"

"मान लो मै आपकी बात मान भी लेता हूँ तो भी क्या आपके खानदान वाले मुझे खुशी से कबूल करेंगे ?"

"मेरा ख्याल है नही कबूल करेगे, कम से कम खुशी से। मगर तब इतना अधिक विरोध और शत्रुता का भाव उनमे नही रहेगा। और मै तो आपको कबूल कर ही लूँगी—वे करें या न करे।"

"मैने रेखा जी को अपने दादा मरहूम का हिंदू से मुसलमान होने, फिर मुसलमान से हिंदू होने और फिर लाचार हो कर मुसलमान बनने का पूरा किस्सा बताया। फिर कहा "तुम ही बताओ मेरे हिंदू होने पर भी मुझसे अपनापन हिंदू न दिखावेगे, मुझे नफरत करेंगे, और मै ही नही तुम भी उनकी नजरो मे गिरी होगी, तुम्हे भी इज्जत की नजर से वे लोग न देखेगे, इसे क्यो नही सोचती। ओर सब मे बडो मुश्किल यह है कि मेरे माँ-बाप और रिश्तेदार कभी तैयार नही होगे कि मै इस्लाम मजहब छोडूँ। आप ही रेखा जी इस्लाम मजहब मेरे लिए क्यो नही कबूल कर लेती ?"

"यह सभव नही है। तो फिर जैसा चलता है चलने दीजिए। अब तो जो सजा मुझे भगवान देगे भोगूँगी ही।"

"अच्छा रेखा जी ! एक बात अगर आप करे तो कैसा हो। आप न इस्लाम मजहब कबूल करे और न मै हिंदू बनूँ। दोनो अपने-अपने मजहब मानते रहे। और हम लोग 'मुताह' करवा ले। निकाह मै चाहता था पर निकाह मुमकिन नही लगता। या फिर सिविल-मैरेज कर ले। पर शायद मेरे वालदैन इसे पसद न करे।"

"मुताह मै करा नही सकती। तब मुझे 'रखैल' ही कहेंगे-समझेगे, और यह अपमान मै सहन न कर सकूँगी। सिविल-मैरेज करके भी और यदि धर्म-परिवर्तन न करके भी आपकी पत्नी रही तो भी मुसलमान ही कहाऊँगी और हमारी औलादे मुसलमान होगी। आप हिन्दू बनने को तैयार नही हे ? आप तो कहते थे आप मुझसे सच्चा प्रेम करते थे ? तो आप प्रेम के लिए कुछ बलिदान नही कर सकते ? सब कुछ कुर्बानी मुझसे ही करवाना चाहते है ? तो यह आपका अतिम उत्तर है ? मै आज इसीलिए आपसे मिली हूँ।"

"रेखा जी फिलहाल तो मेरा यही उत्तर समझो। मगर मै इस मसले पर गौर करूँगा, इसका वायदा करता हूँ। मेरा आखिरी जवाब सुनने के पेश्तर आप मुझे भूल न जॉय, छोड न दे, इतनी इल्ते-दुआ है। बोलिये, वादा कीजिए। आप को मै भूल सकूँ यह नामुमकिन है मुझे आप वक्त दे थोडा। अगर नासिक चली भी गई तो क्या यह उम्मीद रखूँ कि आप मुझे खत लिखेगी ? आप कही भी रहे मै आपको अपनी बनाने का इतजार करूँगा।"

"मै आपकी बातो पर विचार करूँगी। इसके अतिरिक्त मै और कुछ अभी नही कह सकती।"

"पता नही आपसे कब मुलाकात अब हो। मेहरबानी करके इतनी इजाजत तो दे दे कि कुछ लहमो के लिए ही सही, आपका हाथ मे छु सकूँ।"

"क्या कीजियेगा हाथ पकड कर जब हमेशा के लिए आप उसे पकडना नही चाहते।"

"मेरी मल्का! मै क्या चाहता हूँ यह तो मेरा दिल जानता है और मेरा खुदा।"

मैने रेखा का हाथ पकड लिया। दिन था, रास्ता था, इससे कुछ लहमो के लिए ही बीच-बीच मे ऐसा कर सकना मुमकिन था। हो सकता है रेखा जी यह न चाहती हो पर छीना-झपटी होने पर कोई देख न ले इस खौफ से ही शायद बेमन से वह मुझे रोकने मे नाकामयाब हुई।

उन्हे ट्रेन मे बैठा आया।

"अब हम लोगो को बातचीत खत्म करनी होगी। अब हम लोगो को अलग-अलग रास्तो पर जाना है। इशाअल्लाह कल मै आपके दफ्तर आऊँगा, अपने दफ्तर के खत्म होने के बाद—अगर आप इजाजत दे।"

मैने कहा "सहर्ष।"

और हम लोगो की साइकिले अलग-अलग रास्तो पर थी।

: ५ :

दूसरे दिन मगल को श्री किलेदार सवा पाँच के लगभग सायकाल को मेरे दफ्तर मे आ गए और हम दोनो ने एक रेस्टोरेट मे चाय पी और फिर हाथ मे साइकिले लिए पैदल चलते और बाते करते निकट के एक पार्क मे जाकर बैठ गए। किलेदार जी ने अपने गत-जीवन के विषय मे बताते हुए कहा "यह ठीक है कि मेरा और आपका मजहब अलग-अलग है और आपके मजहब की ही लडकी रेखा थी जिसकी मै बाते कर रहा हूँ। हो सकता है आपको इससे कुछ तकलीफ होती हो और बुरा भी लगता हो मगर न जाने क्यो आपको मेरा दिल भाई और दोस्त मान चुका है। इससे मै अपनी हर अच्छी और बुरी बात बिना छिपाए कह रहा हूँ।

"रेखा जी से मैने कह तो दिया कि अपना मजहब बदलने के बारे मे सोचूँगा, मगर मुझे सोचना-वोचना कुछ नही था। मे रेखा को छोड सकता था लेकिन इस्लाम से मुँह मोडना गैर मुमकिन है। मगर मैंने उससे 'पालिसी' के तौर पर, चालाकी मे, यह कहा था ताकि वह मेरी तरफ से बिल्कुल मायूस और नाउम्मेद न हो जाय और अपने वालिद से अपने दोनो इसरारो पर कायम रह सके। रेखा जी ने सबसे बडी भूल मुझे यह खत लिखकर की थी। अगर मेरे ऊपर मुकदमा चला तो यह खत सारे राज खोल देगा और उल्टे रेखा के खानदान वालो को परेशानी में पडना पडेगा। इस खत मे रेखा जी की रजामदी का सबूत नुमायाँ है। मेरे वालिद ने कहा "अब अगर खुद रेखा जी तुम्हारे खिलाफ बयान देगी तो भी मे तुम्हे बचा सकता हूँ।"

"इसके बाद करीब दो महीने तक मुझे रेखा जी की कोई खबर नही मिली। न वह मुझे कही दिखी न उनका कोई खत आया। मै भी समझा कि वह एक सपना था जो आया और खत्म हो गया, चला गया। मगर रेखा जी के लिए मोहब्बत मेरे दिल मे बदस्तूर थी। कालिज

खुले। मेरी पढाई खत्म हो चुकी थी। मै जानता था कि रेखा जी भी शायद आगे न पढेगी, मगर हाय रे आदमी की उम्मीद! मे कई बार कालिज गया कि शायद रेखा जी पढने आएँ, मगर वह पढने नही आई। मुझे रेखा जी का नासिक का पता मालूम था मगर उन्हे खत लिखना महज एक हिमाकत होगी जब तक रेखा जी के बारे मे थोडा-बहुत भी मैं न जान जाऊँ कि दो महीने के दरमियान मे उन पर क्या बीती। हो सकता है मेरा खत उनके वालिद के हाथ पड जाय। हो सकता है रेखा जी की जबरदस्ती शादी कर दी गई हो। भाई बुरा मानने की बात नही है—शादी के पहले बहुत सी लडकियाँ ऐसे ही कहती है ख्वाह वह हिंदू हो या मुसलमान, जो 'सेक्स' से वाकिफ हो चुकती है, और फिर किसी अजनबी के साथ उनकी शादी कर दी जाती है। यह जरूरी नही है कि शादी के पहले के अपने आशिक से ही उनका विवाह हो या निकाह हो। रेखा जी भी इस वक्त जोश मे है, कह कुछ भी सकती है, मगर जब जबरदस्ती किसी हिंदू से उनकी शादी कर दी जायगी तो उन्हे पटा कर बैठना ही पडेगा। बहरहाल रेखा जी मेरे हाथ से गई, ऐसा मुझे यकीन हो गया।

"अब मै आपसे अपनी हैरत और खुशी का इजहार कैसे करूँ जब करीब दो महीने बाद मेरे पास रेखा जी का एक खत आया। खत मे लिखा था कि वह बम्बई नाना जी के यहाँ आ रही है। अगर सभव हुआ तो वह दूसरे पत्र मे तारीख, समय और स्थान मिलने के लिए लिखेगी। यदि यह सभव न हुआ तो हो सकता हे वह मेरे घर स्वय आवे क्योकि और कोई उपाय मुझसे मुलाकात का नही हे। शेष चीजे मिलने पर ही बताना सभव होगा। आशा है आप घर पर ही मिलेगे। यह भी लिखा "ऐसा न हो कि मे आपके यहाँ आऊँ और आपसे भेट न हो सके। यह भी सभव है कि बम्बई आकर भी, आपसे मिलने की इच्छा होने पर भी, जो कठोर नियत्रण तथा देख-भाल मुझ पर होगी उसके कारण आपसे मिलने का अवसर न भी पा सकूँ—बहरहाल

प्रयत्न तो करूँगी ही। यदि आपके यहाँ गई भी—एक बार जाना ही अति कठिन लगता है—और आप न मिले, तो फिर दूसरी बार आना तो कदाचित् ही सभव हो। तो फिर अतिम नमस्कार ही समझिए।" आदि।

"रेखा जी के हूबहू लफ्ज, जुमले और जवाब तो मुझे याद नही है, उनका मकसद और मशा जो था वह मैने आपसे अर्ज कर दिया है। रेखा जी की मोहब्बत से मेरा एक फायदा यह हुआ कि उनके कहने से मैने हिंदी जबान ठीक से सीख ली। और मतलब भर को ठीक से पढ लेता हूँ, लिख लेता हूँ, बोल लेता हूँ, समझ लेता हूँ। बाद म उनके कहने पर मैने अर्थ वाली रामायण और गीता भी पढी और मेरे कहने पर उन्होने कुरान-शरीफ का उर्दू तरजुमा भी पढा।

"खत पाने के बाद मै अपने ही घर मे नजरबद सा रहने लगा। सैर-सपाटा, सिनेमा-सरकस एक तो यो ही मेरा करीब-करीब बद था और फिर इस खत को पाने क बाद मैने सिर्फ यार-दोस्तो से मिलना ही मौकूफ नही कर दिया यह खास हिदायत भी नौकरो को दे दी कि कोई भी पूछे तो कह दे घर पर है नही, बाहर गए हुए है। रेखा जी को घर के तमाम नौकर-नौकरानी, छोटे-बडे पहचानते ही न थे यह भी जानते थे कि वह मेरी माशूका है। इसलिए नौकरो को हिदायत दे दी कि अगर रेखा जी आये तो फौरन बिना मुझसे पूछे उन्हे अदर लाना, मै घर मे हूँ या न हूँ—इसमे गफलत न होने पावे।

"वालिदा और वालिद की सलाह थी कि अगर इस बार रेखा जी घर पर आवे तो उन्हे हर तरह से समझाया जाय और मजबूर किया जाय कि वह इस्लाम कबूल कर ले और निकाह कर ले—अगर मुमकिन हो तो उसी दिन, ताकि फिर वह निकल भागने का रास्ता ही न पा सके। उसके बाद जो होगा देखा जायगा।

"मगर यह मुझे कामिल यकीन था कि वह मुसलमान बनने क लिए कतई तैयार नही होगी। वालिद ने कहा "शरियत की रूह से निकाह

के लिए दो शर्तें तो बहुत ही जरूरी है। एक तो निकाह एक मुसलमान आदमी का मुसलमान औरत से ही हो सकता है, गैर मजहब वाली औरत से नही। अगर वैसी शादी कर भी दी गई तो कानूनन वह नाजा-यज होगी। कानून को नजर मे वह मुकम्मिल शादी ही नही होगी। दूसरी बात यह है कि शादी के पहले लडकी की रजामदी लेना जरूरी है। रेखा के घर वाले आये और उससे काजी को बताई बाते पूछे और कहे और लडकी का जवाब ले। मगर रेखा जी के वालदैन तो हिन्दू है। वे भला क्यो अपनी लडकी से कुछ कहने-पूछने लगे, भला अपनी भी रजामदी क्यो देने लगे। और जब तक लडकी के माँ-बाप लडकी से इस निकाह के बारे मे पूछ-ताछ नही कर लेते, उससे निकाह की सारी शर्ते नही कह देते और उसकी साफ मजूरी नही ले लेते, तब तक वह निकाह मजहबी नुक्ते-नजर से ठीक होगा ही नही, नाजायज शादी होगी— कानून की नज़र मे। इसलिए रेखा जी से अगर जबर-दस्ती शादी, निकाह अहमद का कर भी दिया जाता है तो वह निकाह ही नाजायज होगा और उल्टे मेरे लडके पर ही केस चल सकता है। इस लिए हिंदू-रेखा और मुसलमान-अहमद से शादी मुमकिन नही है।

"पर एक बात है। जबरदस्ती अगर काज़ी को बुलवाकर शादी अहमद और रेखा की करादी जाय और रेखा से कहा जाय कि "यह जायज शादी ही गई है तो बेचारी को कानून मे क्या है, ठीक-ठीक इसे तो जानती ही नही, यही समझेगी कि ठीक ही निकाह अब होगया मेरा। मुसलिम कानून की उसकी जानकारी की कमी का फायदा हम-लोग उठा सकते है। कानूनन शादी नही हुई, पर भोली रेखा समझेगी शादी पूरी हो ही गई। निकाह ही निकाह सब कहते रहना।

"इससे इस बार जैसे ही रेखा आवे अहमद और उनकी जबर-दस्ती शादी कर दी जाय। कौन फिर वह मुकदमा चलाने बैठेगी जो जायज़-नाजायज का राज अयाँ होगा और मुकदमेबाजी की नौबत आयेगी तो कह दिया जायगा कि वह कलमा पढकर पहले मुसलमान

हो गई थी । झूठी गवाहियाँ दिलवा दी जॉयगी । उसके मुसलमान होने पर निकाह हुआ । उसके माँ-बाप हिन्दू थे वह शादी के खिलाफ होते इमसे उन्हे बिना बताए निकाह हुआ, पर रेखाजी की मुसलमान सहेलियो ने वह सब शरियत की शर्त्ते पूरी की जो माँ-बाप करते । रेखा जी की मुसलमान क्लासफेलो तथा सहेलियाँ दो-चार विलसन कालिज मे होगी । यह इस्लाम की खिदमत है । इसमे उसकी मुसलिम सहेलियाँ झूठ गवाही देने को तैयार हो जायँगी । हमे इन सब के लिए तैयार जरूर रहना चाहिए मगर इन सब बातो के लिए अभी मे परेशान होने की जरूरत नही है । जब मुकदमे की नौबत आयेगी तब देखा जायगा ।"

"रेखा जी बजाय खुद तो मेरे यहाँ नही आई लेकिन उनका एक खत और आया जिसमे उन्होने मुझे एक तारीख दी 'गेट-वे-आफ इडिया' पर मिलने की । यह भी लिखा कि वक्त मै नही लिख सकती । दिन मे किसी वक्त भी आ सकती हूँ जब भी मौका मिल सके । हो सकता है मौका न मिलने पर न भी आ सकूँ ।

"मै सुबह आठ बजे ही वहाँ मुकर्रर तारीख पर पहुँच गया । रेखा जी एक बजे के करीब वहाँ आई । हम दोनो अपने पुराने वाले रास्ते पर पैदल चल पड़े । रेखाजी ने कहा "आखिर आपने हर तरह से मुझे परेशान करने का प्रयत्न किया ही । आप मुझसे मोहब्बत नही करते थे खेल करते थे । पिछली बार जब मै अपसे मिली थी आपसे बताया था कि फलाँ लेडी डॉक्टर मेरा आपरेशन करेगी । उनका पता-ठिकाना भी आपको बताया था । आपने मेरे उस विश्वास को ठोकर मारी । आप ईमानदारी से बताइए कि जो दवाये आपने मुझे ला दी थी वे वास्तव मे गर्भपात के लिए थी ?"

"मैने सिर झुका कर कहा "नही रेखा जी । आपके पेट मे बच्चा मुझसे था । मैं उसे जाया करना नही चाहता था । कोई भी वालिद यह नही चाहेगा, जब तक कोई खास वजह न हो । मगर आपसे

अगर यह तब कहता तो आप उस वक्त यह न समझ पाती कि मेरा असली मशा इसके पीछे क्या है। आपको गलतफहमी होती। मैंने आपको हाज्मे वगैरह की दवाये ला दी थी। अच्छा आप बताइए कि क्या आपकी दिली ख्वाहिश थी कि हमल गिरा दिया जाय ?"

"यो तो कोई होनेवाली-माँ यह नही चाहेगी । मगर मेरे सामने बदनामी का प्रश्न था। और उससे बचने के लिए मै सब कुछ करने को तैयार थी। आपने मुझे धोखा दिया था; खैर अच्छा ही किया था। आप न भी मजूर करते तो भी क्या —लेडी डॉक्टर ने पिछली दवाइयो की अस्लियत खोल दी थी।"

"लेकिन मैंने आपको हर तरह से परेशान करने की कोशिश बाद मे क्या की ?"

"कितने भोले बन कर आप सवाल कर रहे है ? आप अगर झूठ भी बोलेगे तो भी मुझे धोखा नही दे पावेगे।"

"बख ुदा मै नही समझ पाता आपका मतलब क्या है।"

"जिस दिन मेरा आपरेशन होने वाला था उस लेडी-डॉक्टर को गुमनाम पत्र किसने एक कासिद (पत्र- वाहक) के द्वारा भिजवाया था जिसमे लिखा था कि "रेखा जी का 'एबार्शन' (गर्भपात) आप कराने वाली है। हमल मुझसे है। अगर आपने यह किया तो मै आप पर कानूनी कारवाई करूँगा।"

"आप यकीन कीजिए इसे सुन कर मुझे जितनी हैरत हुई है, मै कह नही सकता। मैने लेडी-डॉक्टर को खत लिखना तो दूर इस बात को सोचा भी न था। अगर मै आपसे कहूँगा कि मै तो इस खत के बारे मे जानता तक नही, लिखने की तो बात ही क्या, तो आप कतई मेरी बात पर यकीन न करेगी। आज आपसे ही मैंने यह सुना है। आप यही सोचेगी एक बार यह मुझे बेवकूफ बना चुके है, झूठ बोल चुके है। झूठ बोल रहे हैं। अभी खुद ही मजूर कर चुके है कि अपने होने वाले बच्चे

पास पहुँचा गया। इस बम्बई नगर मे प्रत्येक प्रकार के डॉक्टर मिल सकते है केवल ढूँढने वाला चाहिये और पैसा चाहिए। कुछ लेडी डॉक्टर ऐसी भी है जिनकी केवल गर्भपात कराने से ही प्रमुख आय होती है। परन्तु इस दूसरी लेडी-डॉक्टर ने मुझे बहुत ध्यान से देखा और फिर माँ से पूछा "क्या आप रेखा साने है ?" अपना नाम सुन कर मुझे भी आश्चर्य हुआ तथा माता जी को भी। माता जी ने 'हाँ' कहा। उन्होने काफी बुरा-भला हम लोगो को कहा और बोली "क्या आप मुझे फँसाना चाहती है ? मुझसे मेरी दोस्त लेडी-डॉक्टर मिसेज वर्मा ने उस खत का जिक्र किया था जो उनके पास आपके निस्बत आया था।"

"पिता जी की परेशानी अत्याधिक थी। मुझपर दिनरात फटकार पडती थी और गालियाँ मिलती थी। पर पिता जी ने एक बार फिर प्रयत्न किया। परन्तु यह सब करते-करते एक मास और व्यतीत हो गया। मुझे चार मास का गर्भ हो चुका था। एक लेडी-डॉक्टर ने एक हजार रुपये पर आपरेशन करने का वादा तो किया पर उसने साफ कह दिया कि जान जाने की सभावना अधिक हो सकती है। आप लोग अपने उत्तरदायित्व पर कराना चाहे तो मै कर सकती हूँ। मगर मेरी सलाह मानिए तो गर्भपात मत करवाइए। बच्चा हो जाने के बाद भी पढाई-लिखाई हो सकती है।"

"बात यह थी कि मेरी माता जी मुझे अपनी विवाहित कन्या बताती थी। गर्भपात कराने का कारण वह मेरा बुरा स्वास्थ्य बताती और मुझे भूतपूर्व टी० बी० की मरीज बताती। मेरी पढाई भी बच्चा हो जाने के कारण आगे न हो सकेगी, यह भी कारण बताती थी।

"लेडी डॉक्टर ने मुझसे पूछा "आप आपरेशन का खतरा उठाने को तैयार है ? जिदगी और मौत का सवाल हो सकता है।"

'मै गर्भपात तो चाहती थी, पर जान जाने का भय मुझमे इतना समा गया कि मैं आपरेशन कराने की अपनी स्वीकृति नही दे सकी। फल यह हुआ कि फिर गर्भपात नही ही कराया गया, और आपकी

गलती आज भी मैं अपने पेट मे लिए हुए हूँ। पिता जी मुझे नासिक ले गए। वहाँ भी एक लेडी-डॉक्टर से बातचीत की गई मगर वहाँ भी इस 'स्टेज' (स्थिति) पर वैसा करने से उसने इकार कर दिया क्योंकि जान चली जाने के इमकानात' (सभावना) थे।

"वह तरुण जो मुझसे विवाह करने का प्रस्तुत था, उसे पिता जी ने विश्वास मे लिया, और उसे सब बाते खोलकर ही बता दी। उसने कहा "कोई बात नही, मै बच्चा हो जाने के पश्चात् इनसे विवाह कर लूँगा। उस बच्चे को या तो अनाथालय मे दे दिया जायगा या उसे हिंदू के रूप मे पाला जायगा, या उसे किसी उपाय से समाप्त कर दिया जायगा, परन्तु ये सब तो बाद की बाते है। इस समय सोचना यह है कि क्या किया जाय ? परन्तु मेरी जो दो शर्ते है पहले, वह पूरी होना चाहिए।"

"नाना जी तथा मेरे परिवार ने यह निश्चय किया कि मुझे वह पूना या किसी और दूसरे स्थान पर ले जायेगे—मेरे बच्चा होने के कुछ दिन पूर्व। बच्चा किसी अस्पताल मे या प्राइवेट तौर पर घर मे पैदा होगा और उसके बाद बच्चे का कोई प्रबन्ध करने के पश्चात् मुझे फिर नासिक ले आया जायगा। और यही से मेरा जबरदस्ती विवाह कर दिया जायगा।

"मुझे पिता जी कही लिए जा रहे है—मै नही जानती हूँ कहाँ ? या फिर मुझे आप पर मुकदमा चलाने के सिलसिले मे लाए है। यो भी इन दो महीनो मे एक महीने मुझे अमरावती अपने एक सम्बन्धी के यहाँ भेज दिया था। मैंने इन लोगो को विश्वास दिलवा दिया है कि मैं आपसे घृणा करती हूँ और आपकी सूरत भी कभी नही देखूँगी। तब थोडी बहुत आजादी मुझे मिली है। मुझे आपसे आखिरी बार पूछना है कि आप मुझसे विवाह करना चाहते है या नही ? इसका फैसला आज ही हो जाना चाहिए। अगर आप हिंदू होना नही चाहते तो मैं मुसलमान होना नही चाहती। मै आपसे प्रेम करती हूँ इसका प्रमाण मैं इस तरह से दूँगी कि अपनी शक्ति भर किसी से विवाह नही करूँगी। आपका

आखिरी निर्णय जानने के लिए ही मैंने आपसे मिलने का खतरा उठाया है ।"

"इतने अहम मसले का जवाब तुम तुरत-फुरत चाहती हो, सोचो मेरे साथ यह कितनी बेइसाफी है । तुम अगर मेरे यहाँ चल सको तो मैं अपने वालिद-वालिदा से सलाह-मशविरा करके तुम्हे आज ही बता दूँगा ।"

"यह आपको स्वय निर्णय करना है । वालिद-वालिदा से क्या पूछना है । आप बच्चे नही है ।"

"आप ठीक कहती है । फैसला मुझे खुद ही करना है । मै खुद ही करूँगा । मगर सलाह किसी से भी लेना बुरा नही हो सकता । आप मेरे यहाँ जाने से डरती है दो बार के तजुरबे से । मै खुदा की कसम खा कर कहता हूँ कि इस बार मैं वह वहशियाना हरकत नही करूँगा । आप भरासा कीजिए । मान लीजिए मै अपने कौल को पूरा नही करता हूँ तो भी काई खास नुकसान आपका नही होगा—दो बार के बजाय तीन बार सही—उससे कोई खास फरक नही आयेगा । मैं खुद आज ही आपको जवाब देना चाहता हूँ । आप मेरे लिए नही तो अपने बच्चे के लिए मेरी होना कबूल करे ।"

"बहरहाल बमुश्किलतमाम मैं मिस रेखा साने को अपने घर ला सका । मेरी वालिदा और वालिद दोनो ही घर पर थे । वह मुझे रेखा जी के साथ देख कर निहायत खुश हुए । मैंने वालिदा से आज की सारी बाते बता दी । वालिद मरहूम ने रेखा जी से मजूर किया था कि खत उन्होने ही खुद अहमद के नाम से लेडी डॉक्टर को भेजा था । सारा हाल उन्हे मेरी वालिदा से पता चला था ।

"उन्होने रेखा से कहा "मेरे ख्याल से तो आप के मुसलमान बनने या अहमद के हिदू बनने का मसला इस वक्त मुलतवी किया जाय । सिर्फ दानो की शादी आज और अभी हो जाय । फिर इतमीनान से साच-समझ कर इस मसले पर गौर किया जायगा । शादी अभी हो जाना चाहिए ।"

"रेखा जी ने जल्दी ही महसूस किया कि उन्होने बहुत बडी गलती और भूल मेरे साथ मेरे घर पर आकर की है। अब मै इन लोगो की कैद मे हूँ। कोई बाहरी मदद मुझे मिलना असभव है। और यह लोग विवाह कर देने पर आमादा है। धर्म-परिवर्तन करने की बात एक धोखा है, एक बहकावा, एक बहलावा है मुझे। मुझे मुसलमान बनाने की, यह इन लोगो की ट्रिक है, चाल है। मुझे मुसलमान बनना ही पडेगा।

रेखा जी ने कहा "मै तुरत विवाह करने को प्रस्तुत नही हूँ। और मान लीजिए मै विवाह करना भी चाहूँ तो हिदू-तरीके से विवाह करना चाहूँगी।"

वालिद ने कहा "हिदू-तरीके से और इस्लामी-तरीके से शादी मे क्या फ़र्क है। शादी शादी है, किसी भी तरीके मे हो। हिदू-ढग से शादी मुमकिन भी तो नही है। इस वक्त तो निकाह ही मुमकिन है। और यह समझौते की अहमद की बात तो माकूल है कि वह मुसलमान रहे, आप हिदू। आप मुसलमान हो जायँ इस बात पर हम लोग जोर नही देगे। यह आपकी ख़ुशी पर है। मगर अहमद हिदू मजहब किसी हालत मे कबूल नही करेगा, शादी हो या न हो।"

रेखा जी ने कहा "तो मै जाती हूँ।"

वालिद ने कहा "अब आपका यहाँ से जाना गैरमुमकिन है। अब आप शादी के बाद यहाँ से जा सकेगी।"

"इसके माने यह है कि आप लोग मेरे साथ जुल्म-जबरदस्ती कर रहे है। यह विश्वासघात है, धोखा है, नीचता है। क्यो मिस्टर अहमद हुसैन किलेदार साहब! आप यही भरोसा दे कर मुझे यहाँ लाए थे? आप मुझसे जबरदस्ती शादी करके मुझसे मोहब्बत पाने की आशा रख सकते है?"

मेरे वालिद ने कहा "वह क्या बोलेगा। हम लोगों ने कोई बुरा काम नही किया है, न करने जा रहे है। आपको अगर शादी अहमद

से नहीं करनी थी तो उसे खुदा के नाम पर छोड देती। आप खुद उससे बार-बार मिलती रही है। अब वह कहता है कि बिना आपके वह अपनी जान दे देगा और गैरमुमकिन है कि आपके अलावा वह किसी और से शादी करे। अपने लडके की जिंदगी, उसकी खुशी के लिए हम लोगो को आपकी जरूरत उसके लिए है। अब आप चाहे जो चाहे या न चाहे, हम लोगो का यह फैसला है कि शादी का इन्तजाम हम अभी करते है और शादी अभी होगी।"

"यह असम्भव है" यह कहकर रेखा जाने के लिए उठी, मगर इशारा पाकर नौकरानी ने उन्हे जबरदस्ती बैठा दिया। उन्होने शोरगुल करने की कोशिश की। मगर अव्वल तो उनकी आवाज बाहर तक पहुँच सकती यही नामुमकिन था और फिर उनका मुँह बद कर दिया गया। उन्हे ठेल कर मेरे कमरे मे कर दिया गया। मै भी अपने कमरे मे आ गया। मेरे वालिद फौरन घर के बाहर चले गए। मै समझ गया शायद वह मोलवी वगैरह को लाने गए थे। उन्होने पहले ही से इसका इन्त-जाम कर रखा था। कानूनन निकाह मुमकिन नही है, पर 'फार्स' तो होगा ही।

"रेखा जी मुझे हजारो बाते सुनाती रही, रोती रही, सिर पीटती रही, मगर मुझे न बोलना था न बोला। उन्होने जा-बेजा मुझे सब कुछ कहा। कभी मुझे गुस्सा आता, कभी रहम, कभी अफसोस। मगर मैंने तय कर लिया था कि मै बोलूँगा ही नही। करीब दो घटे मे वालिद लौटे। उनके साथ दो मोलवी थे। रेखा जी इन दो घटो तक बराबर रोई थी। वह समझ गई थी कि मेरे साथ क्या होने वाला है।

"कौन वहाँ उनका मददगार हो सकता था। उन्होने काफी हाथ-पैर मारे। मगर उन्हे घर की कई औरतो और लडको ने पकड रखा था। कलमा पहले पढा गया,—एकतरफा डिग्री तो थी ही और फिर जबर-दस्ती उनका निकाह मुझसे कर दिया गया— गोकि न वह कानूनन

निकाह ही था, न कलमा पढना-पढाना । वह तो महज एक खेल था, ज़बरदस्ती थी, नाजायज और गैरकानूनी तो था ही। कानून की निगाह मे हम लोग 'क्रिमनल' (अपराधी) थे । पर वालिद का तो मशा था कि रेखा जी समझ ले कि अब तो हमेशा के लिए जो होना था हो चुका। जायज तौर से निकाह हुआ और मुझे धार्मिक तथा कानूनी रूप से फाँस लिया गया, बेबस कर दिया गया । उसके बाद उनसे कहा गया "अब जो होना था वह हो चुका, अब आप इनकी शादी-शुदा बीबी है ।"

"रेखा जी को जबरदस्ती मेरे साथ एक तश्तरी मे ही खिलाया गया । गोकि कोई इसकी अहमियत इसलिए नही थी क्योकि हम दोनो एक-साथ न जाने कितनी बार खा-पी चुके थे । आज के फारवर्ड जमाने मे खाने-पीने का परहेज़ ही कहाँ रह गया है ।

"उसके बाद वह मेरे कमरे मे ठेल दी गई । मै वहाँ पहले से था ही। मैंने उनसे कहा "देखिए आपका मुझसे निकाह हो चुका है । मै अपने वालिद और वालिदा से भी लड जाऊँगा अगर उन्होने आपसे बाकायदा इस्लाम मजहब कबूल करने और पाबदियो पर जोर दिया । आप हिंदू रह सकती है मगर बीबी मुसलमान की ही रहेगी । आप मुझे जानवर, वहशी चाहे जो समझे, मगर आज सुहागरात के दिन हमबिस्तर होना जरूरी है । इसलिए अब यह मेरा जायज हक है । मेरा ख्याल है कि अब आपको कोई एतराज भी नही होना चाहिए ।"

"रेखा जी दु ख के मारे करीब-क़रीब पागल सी थी । उन्होने सिर्फ यही कहा "जो-जो भी आप लोग मेरे साथ करना चाहे कर सकते है । जब सब काम जोर-जबरदस्ती और वहशियाना ढग से ही हो रहे है तो खाली एक यही चीज क्यो शेष रह जाय ।"

"मेरा ख्याल है कि कोई भी भला खामिद अपनी बीबी को ऐसी हालत मे परेशान न करता । मगर मेरी वालिदा की मुझे खास हिदा-यत थी कि चूँकि यह हिंदू-मुसलमान का मसला हो सकता है, इस-

लिए इस रेखा को पूरी तरह से तुम मजबूर कर दो, लाचार कर दो कि वह फिर सिर उठा ही न सके। माँ होकर भी अपने लडके से मुझे बेशर्म होना पडा है—बात ही ऐसी पड गई है। सुहागरात की रस्म तुम्हे पूरी अदा करनी ही है, भले ही वह रोये-धोये, लडे-झगडे। इसके बाद कानूनन हमारा पाया शायद कुछ मजबूत हो सके। देखो बचपन मत करना कि उसके आँसुओ की सबब से तुम मेरे इशारे को नजर-अदाज करो।"

"और रेखा जी को हमबिस्तर होना पडा। उन्होने जरा भी रुकावट नही डाली। वह बराबर यही कहती रही "यही नही, और भी जो तुम चाहो कर सकते हो।"

हमबिस्तर हो चुकने के बाद फौरन उन्होने कहा था "बस एक ही दफे या दो-चार दफे और ? कोई कसर आज रह न जाय।"

"और शर्म के मारे मै मुँह लपेटे रात भर पडा रहा था। सुबह तडके मैने उनसे कहा था "रेखा जी ! मैने आपके साथ जो वहशियाना बर्ताव किया वह मैने अपनी वालिदा की हिदायत के मुताबिक किया था—हो सकता है मजहबी कोई बात इस रिवाज मे हो। अब तो तुम मेरी बीबी हो और मै तुम्हारा शौहर। अब हमलोगो को पिछली बाते भूल जाना चाहिए और नए तरीके से जिंदगी शुरू करना चाहिए। शादी के मामले मे मेरे वालिद और वालिदा ने जरूर तुम्हारे साथ जालिमाना बर्ताव किया है, मगर अब तुम देखोगी वे लोग निहायत भले, शरीफ और हमदर्द लोग है और तुम्हे आँखो की पुतली की तरह प्यार करेगे, तुम्हारा ध्यान रखेगे।"

"रेखा जी कुछ बोली नही। मेरा ख्याल है रात भर वह भी सोई न थी। शायद रात भर रोई थी। उनकी आँखें लाल थी। उन्होने यह महसूस कर लिया होगा कि अब रोने-धोने, लडाई-झगडा करने से कोई फायदा नही है। मेरी किस्मत का फैसला जो होना था कल हो गया। अब तो जो सामने है उसको खूबसूरती से निभाना अक्ल-

मदी होगी । अपनी किस्मत से समझौता करने, किस्मत के आगे सिर झुका देने को वह मजबूर हुई थी। उनकी उस दिन की दुख भरी मूरत आज भी मेरी नजरो के सामने है ।

"अच्छा भाई ! अब काफी देर हो चुकी है। अब हम लोगो का चलना चाहिए । आप कहे तो कल मैं फिर आपके दफ्तर आऊँ ?"

मैने कहा "दफ्तर नही, मेरे घर । वहाँ चाय पीकर इतमीनान से बाते कीजिएगा । "

अपनी पत्नी से मै किलेदार की सारी बाते बता देता था । मेरा हृदय भी रेखा के लिए पीडा से भरा था और मेरी पत्नी का भी ।

: ६ :

अगले दिन बुद्ध को किलेदार जी मेरे घर पर आए । चाय-नाश्ते के पश्चात् हम दोनो बैठके मे बैठ गए । उन्होने अपने किस्से का क्रम प्रारभ किया—"हाँ, तो मै कह रहा था कि सुबह तडके मैने रेखा जी से कहा "तुम जरा शान्त होकर मेरी बातो पर गौर करो । मै तुम्हे प्रेम करता था और तुम्हे पाना चाहता था, बस यही कसूर अगर मेरा था तो था । तुम्हे पाने के लिए हर जायज और नाजायज तरीके मैने अख्तियार किए । मै मजूर करता हूँ पहली बार तुम्हे हमबिस्तर करने के पीछे भी मेरी यही ख्वाहिश काम कर रही थी । अब एक बात पर और गौर करो । अगर तुमने मुझसे बिल्कुल कत ताल्लुक कर लिया होता, हमबिस्तर होने के पहले या बाद भी, तो शायद मेरे वालिद-वालिदा, मेरे मामले में दखलदाजी न करते । मगर जब उन्हे पक्का यकीन हो गया कि तुम

खुद मेरी होना चाहती हो, सिर्फ मजहब का सेंटीमेंट (जज्बा) ही तुम्हे रोक रहा है, तो उन्होने मजबूर होकर कल-वाली सूरत अपनाई। अब मान लो तुम मुझे छोड कर जाना भी चाहो तो यकीन रखो तुम्हारे माता-पिता, रिश्तेदार और तुम्हारा हिंदू-समाज तुम्हे कबूल नही करेगा —ठीक से, बाइज्जत तरीके से। तुम आजसे मेरा और मेरे घर वालो का बरताव अपने साथ मुखतलिफ पाओगी।"

"रेखा जी रोती रही। फिर कहा "मेरी तकदीर मे यह ही बदा था। मेरे पिता जी धर्म के मामले मे बहुत कठोर है। सभव है वह मुझे अब अपने मे मिलाना तो दूर, मेरी सूरत भी देखना पसद न करे। माता जी भी मुझसे अत्यत अप्रसन्न है। पर वह आर० एस० एस० का तरुण देशपाडेय तथा नाना जी, मुझे, सभव है, अब भी छोडना न चाहे। कानूनन यह जबरदस्ती वाली शादी जायज है या नही, मै नही जानती पर नैतिक दृष्टि से मै तुम्हारी पत्नी हो चुकी, और अब इसमे कोई रद्दोबदल (परिवर्तन) सभव नही है, मै चाहूँगी भी नही, परन्तु तुम मुझे प्रेम करने का दावा करते हो? मेरे लिए बलिदान करने को कहते हो? और फिर जब म तुमसे धर्म-परिवर्तन को कहती हूँ तो तुम इकार करते हो, तो फिर तुम मेरे लिए क्या करोगे? मैने तुम्हारे लिए क्या नही किया। मै हिंदू रमणी हूँ। मैने अपने प्रेमी पर पूर्णतया विश्वास किया उस पर भरोसा किया। तुम एक आदर्श प्रेमी नही थे यह निष्कपट सत्य है। अब तुम एक सफल और सच्चे पति हो सकते हो या नही, यह देखना है, या केवल एक हिंदू स्त्री को मुसलमान बनाने को ही तुमने प्रेम का ढोग किया था? हिंदू स्त्री अपने प्रेमी और पति को प्राय कभी धोखा नही देती।"

"उसे कलेजे से लगाते हुए मैने कहा। रेखा! सिर्फ मजहब तबदील करवाने के अलावा तुम जो चाहो मुझसे करवा सकती हो। तुम मेरा इमतिहान ले सकती हो अभी या जब चाहो। मै तुम्हे मुकम्मिल आजादी देता हूँ। तुम अभी चाहो तो अपने नाना जी के यहाँ अपने

वालिद के पास जा सकती हो। तुम मेरी किसी बात का यकीन न करो भले ही, सिर्फ एक बात का यकीन कर लो कि मै सच्चे दिल से प्यार करता हूँ।"

"अब मै वहाँ जाकर क्या करूँगी। क्योकि अब वहाँ मेरे लिए स्थान नही होगा, जब उन्हे निकाह की बात ज्ञात होगी। हाँ सभव है मुझे कचहरी मे न खडा होना पडे क्योकि बहुत सभव है आपके पास कोर्ट की नोटिस आवे या और कुछ हो।"

"अगर तुम कोर्ट मे जाना नही चाहती हो या वहाँ जाने से बचाव तुम्हारा करना है तो तुम्हारी और मेरी बेहतरी के लिए अच्छा यही होगा कि कुछ दिन के लिए तुम्हे किसी ऐसी जगह पर रखा जाय, रहने का इतजाम किया जाय जहाँ तुम्हारी हवा भी किसी को न मिल सके। मगर यह शोरगुल सा क्या हो रहा है ? मै अभी आता हूँ" कह कर मै बाहर चला गया। रेखा जी कमरे ही मे रह गई।

"पता नही वालिद साहब इतनी जल्दी सुबह कहाँ घर से बाहर चले गए थे। पता नही मैने क्यो यह गलती की कि ऊपर से झाँकने के बजाय एकदम घर के बाहर शोरगुल का सबब जानने को निकल पडा। मुझे देखते ही कई आवाजे एक साथ जोर से निकली 'यही है किलेदार, इसे गिरफ्तार करो।' और इसके पेश्तर मै कुछ सँभल पाता मुझे कई आदमियो ने पकड लिया और फिर पुलिस के आदमियो ने कस कर मेरे दोनो हाथ पकड लिए। इसके पेश्तर कि मै कुछ पूछ सकूँ एक सिपाही ने कहा "आपके नाम वारट है। आप एक हिंदू लडकी को भगा लाए है।"

"मै चारो ओर से घिरा था। उधर दो लेडी-कास्टेबुल भी साथ थी। वे फौरन घर के भीतर घुस गई और इसके पेश्तर कि वालिदा और नौकर रेखा का कोई माकूल इन्तजाम छिपाने का कर सकते दोनो लेडी-सिपाहियो के सामने रेखा जी पड गई। शायद रेखा भी ज्यादा शोरगुल का सबब जानने को कमरे से बाहर निकली थी। एक लेडी-

सिपाही ने पूछा 'आप मिस रेखा साने है ?' और बेअख्तियार उनके मुँह से हाँ निकला—इसी नाम से कल तक वह पुकारी जाती ही थी। और उन्हे घेर कर दोनो औरते बाहर ले आई। रेखा जी के एक तो कल के वाकयात की सबब से ही होश-हवास ठिकाने नही थे, और फिर आज की उस नागहानी से जिसकी उन्हे कोई उम्मीद भी नही थी, बेहद घबरा गई थी। यह सब मुझसे उन्होने बाद में बताया था।

"शायद आपने इस किस्से को अखबारो मे पढा हो—करीब तीन-चार बरस पहले। हिन्दुस्तान के तमाम अखबारों मे, खास तौर से सी० पी०, बरार और बम्बई वगैरह सूबो के तमाम हिन्दू-उर्दू-अँग्रेजी-मराठी-गुजराती वगैरह अखबारो मे यह सनसनीखेज खबरे छपी थी।

"काफी मुसलमान भी जमा होने लगे थे। वालिद साहब को भी फौरन खबर भेजी गई क्योकि उनका पता लगाने को लोग इधर-उधर भेजे गए थे। वह अपने एक दोस्त एडवोकेट के यहाँ गए थे—शायद कानूनी मशविरा करने के लिए। वह फौरन आए। मगर हिंदू-मुसलिम फसाद हो पावे या वालिद घर तक आ पावे, उसके पेश्तर मुझे और रेखा जी को कोतवाली पहुँचा दिया गया।

"मुझे यह समझने मे देर नही लगी कि मेरे ऊपर मुकदमा चलाने के लिए काफी तैयारियाँ रेखा जी के रिश्तेदार कर रहे है और आर० एस० एस० पार्टी हदतुलइमकान मेरे खिलाफ हिन्दुओ को भडका रही है। रेखा जी के वालिद और नाना काफी बडे आदमियो मे से थे। उनके मरासिम भी आला अफसरो और मिनिस्टरो तक जरूर होगे। उन्होने रातोरात दौड कर-करा कर ऊपर से जोर डलवा कर मैजिस्ट्रेट से मेरे नाम वारट निकलवा दिया होगा। रेखा जी जब शाम तक नही लौटी होगी तो उनकी ढुंढाई हुई होगी और उधर हिंदू-लीडरान से आर० एस० एस० वाले मिलजुल रहे होगे। रात होते ही उन्हे कामिल यकीन हो गया होगा कि रेखा जी मेरे मकान के अलावा और कही नही हो सकती होगी।

"चुनाचे इसी कयास पर उन्होने यह पुलिस द्वारा 'ऐक्शन' (कारवाई) लेने की जुर्रत की होगी। मेरा मकान भिडी बाजार मे था जो मुसलमानो का गढ समझा जाता था। मगर ये सब काम ऐसे तुरत-फुरत हुए कि कुछ करते-धरते ही हम लोगो से न बना। बम्बई शहर भर मे एक सनसनी उस दिन फैल गई होगी क्योकि पुलिस काफी तादाद मे बाद मे ड्यूटी पर इस डर से तैनात कर दी गई थी कि अगर दगे-फसाद की नौबत आवे तो उसे दबाया जा सके, रोका जा सके।

"बाज दफे बडे-बडे अक्लमन्द भी भोड गलतियाँ कर जाते है। मेरे वालिद इतने दानिशमद बैरिस्टर होते हुए भी एक भारी भूल कैसे कर गए यह इत्तिफ़ाक ही है या इसे तकदीर कहा जा सकता है। अव्वल तो उन्हे यह खयाल भी न होगा कि इतनी जल्दी भी कोई कारवाई दूसरी तरफ से की जा सकेगी। उन्हे रेखा जी को फौरन ऐसी जगह भेज देना चाहिए था जहाँ उनके पाये जाने के इमकानात न होते, और बेहतर तो यही होता कि मुझे भी उनके साथ ही बम्बई से बाहर भेज देते या वही कही दूसरी जगह छिपा देते। मगर जो होना था वह हो गया। मुझे बाद मे पता चला कि तमाम हिंदू कॉग्रेस, हिंदू-महासभा और आर० एस० एस० वाले एक हो गए थे। खुली हुई बात है कि मुसलिम लीग और दीगर मुसलिम जमातो ने भी सामना करने को कमर कस ली थी। अब यह मसला मेरा और रेखा जी का निजी न होकर हिंदू-मुसलमान का हो गया था।

"बहरहाल कह चुका हूँ कि कई हिंदू-मिनिस्टरो और कुछ आला अफसरो ने छुपे तौर पर इस तूल पकडे हुए मामले में निजी दिलचस्पी लेना शुरू की। मुझे रेखा जी ने बाद मे बत सी बातें बताई थी। वही मै आपको बता रहा हूँ। रेखा जी को उनके वालिद के सुपुर्द कर दिया गया, गोकि उन्होने कोतवाली मे कह दिया था कि उनका निकाह मुझसे जबरदस्ती करा दिया गया था और अब उनकी शादीशुदा बीबी हूँ।

"रेखा जी पर काफी दबाव डाला गया, उन्हे काफी मारा-पीटा गया, समझाया भी गया कि वह कोर्ट मे यही कहे—अगर कोर्ट मे जाने की नौबत भी आवे—कि मेरा-उनका निकाह हुआ ही नही, और मै किलेदार से हमेशा नफरत करती थी। इसके अलावा जो कुछ झूठ किलेदार के खिलाफ उन्हे सिखाया जाय, बताया जाय, वह वही कहे।

"रेखा जी ने बाद मे अपने बदन पर पडे हुए कुछ बर्दों की जगहो को मुझे सिखाया था। उन पर कितनी मार पडी होगी, कितनी सख्ती हुई होगी यह आप अदाजा लगा सकते है।

"वह आर० एस० एस० का नौजवान फौरन रेखा जी मे शादी करने को तैयार हो गया क्योकि निकाह जायज हुआ ही कहाँ था। हिदू-धर्म की रक्षा के नाम पर एक हिंदू औरत को मुसलमान बनने से रोकने के लिए वह भारी से भारी कुर्बानी करने को तैयार हो गया था। हिदुओ मे काफी जोश था। हिंदू-लीडरान ने काफी अक्लमन्दी का काम किया। रेखा जी को बम्बई से बाहर किसी ऐसी जगह भेज दिया गया जहाँ उनका पता-ठिकाना लगना बिल्कुल नामुमकिन था। यही नही रेखा जी की जबरदस्ती हिदू तरीके से उस आर० एस० एस० के नौजवान से शादी कर दी गई।

"रेखा जी के आँसुओ, मिन्नत और इस धमकी के बावजूद कि वह जहर खाकर खुदकुशी कर लेगी उनकी न सुनी गई। उन्होने कहा था कि मेरी शादी उसी दिन हो गई थी जिस दिन मेरा शरीर अपवित्र कर दिया गया था। मै दुबारा किसी की बीवी कैसे बन सकती हूँ। हाँ, मै अपने को समझूँगी कि बेवा हूँ। अहमद से मै कोई ताल्लुक नही रखूँगी। मगर उनकी सुनी भी कैसे जाती? और उनकी बातो पर यकीन कौन करता क्योकि एक बार वह इन लोगो के 'लफ्जो' मे निकल भागी थी। हाँ इस हद तक उनके ऊपर सख्ती की जाने लगी और वह बदिश मे रक्खी जाने लगी कि उन्होने वहाँ से छुटकारा पाने और मौका मिलने पर भाग जाने को तय कर लिया।

"शादी के बाद वाली रात भर वह उस नौजवान के साथ अकेले कमरे मे बन्द कर दी गई तो उन्होने मिन्नत करके अपनी अस्मत को बचाया। उन्होने उस नौजवान से कहा था "आपके साथ भी मेरा विवाह ज़बरदस्ती कर ही दिया गया है, यद्यपि कहाँ तक न्याय इसका समर्थन करेगा, मै नही जानती, आप जबरदस्ती मुझे हमबिस्तर भी कर सकते है, और आप तो अपना कानूनी और नैतिक अधिकार भी समझेगे, पर जरा सोचिए कि मेरा करीब सातवाँ महीना है। ऐसे समय 'सेक्स' धार्मिक दृष्टि से भी अनुचित समझा जाता है। आप बच्चा हो जाने दे। उसके बाद मै चाहूँगी भी तो आपसे भागकर जा ही कहाँ सकूँगी। फिर सबसे बडी बात यह है कि आपने उच्च आदर्श के लिए यह बलिदान किया है। आप सयमी देशभक्त तरुण है। आप विषय-वासना के दास नही है। तो फिर विवाह के बाद 'सेक्स' अवश्य ही हो यह बात छोटे आदमी सोचते है, आपसे त्यागी-बलिदानी नही। मै जानती हूँ आप विवाह ही करना चाहते तो मुझसे भी अच्छी लडकियाँ आपको मिल सकती थी, परन्तु आपने तो मेरा उद्धार करने के लिए मुझसे विवाह किया है। आप अपने बडप्पन पर ही रहे—आपकी इसीमे शोभा है।

"एक बात मै आपसे और निवेदन कर दूँ। बच्चा होने पर मै उसे मरने न दूँगी, अनाथालय मे या किसी गैर को न सौपूँगी। वह किसी से हो, आखिर मैं उसकी माँ हूँ। वह मेरे पेट से पैदा होगा। आप महान है। उसे हिंदू समझ कर, मान कर उसे बढने-जीने दीजिएगा"

"रेखा जी ने यह भी बताया "देशपाडेय शराफत का अवतार था। मुझे रात भर हिंदू-धर्म की विशेषताओं और इस्लाम-धर्म के विरोध मे समझाता रहा, और धर्म के नाम पर, कर्तव्य के नाम पर, राष्ट्र के के नाम पर मुझसे आपको छोड देने, भूल जाने की अपील करता रहा। बहुत सहानुभूति के साथ उसने मुझे समझाया। उसने मुझे ममता और दया ही दिखाई। उसने बार-बार मेरे आँसू पोछे और मेरे हाथों को

अपने हाथो मे पकडे हुए वह मुझे आश्वासन देता रहा कि मै उसके सच्चे और प्रेम पवित्र की अधिकारिणी बनूँगी। मेरी पिछली गल्तियो को वह भुला देगा। वह मेरे सिर पर हाथ फेरता रहा। मुझे चूमा, मुझे गले से लगाया। मुझे ढाढस बँधाया। पर 'सेक्स' की ओर उसका ध्यान तक फिर नही गया।

"मै स्वीकार करती हूँ कि उसकी बातो का मुझ पर प्रभाव पडा। आर० एस० एस० वाले तर्क इतनी अच्छी तरह से कर लेते है, और अपने दृष्टिकोण को इतनी सुन्दरता मे दूसरे के सम्मुख रख सकते है कि उनकी बाते दूसरो को उचित ही समझ पडती है। मै उसकी भलमनसाहत से बहुत प्रभावित हुई। और अगर आपके लिए मेरे हृदय मे स्थान न होता तो उसकी बन कर रहने मे मै गर्व करती। यह भी हो सकता है कि अगर वह निरतर मेरे साथ रहता तो संभव है मन या बेमन मे मै उसकी पत्नी होना हृदय से स्वीकार कर लेती और तब कदाचित् मैं आत्म-समर्पण भी कर देती। पर मै सचमुच आपमे प्यार करती थी।

"भाग्य मे जो लिखा होता है वह होता ही है। मेरे भाग्य मे तो आपकी होना लिखा था। इसीसे वैसी ही मेरी बुद्धि हो गई, वैसी ही परिस्थितियाँ बनती चली गई। बता चुकी हूँ कि आप पर मुकदमा दायर कर दिया गया था। इसलिए देशपाडेय जी का बम्बई मे मौजूद रहना अधिक आवश्यक था। वह दो-तीन दिनो के बाद चले गए। और मानी हुई बात है कि उनके जाने के पश्चात् जो उनकी बातो का प्रभाव मुझ पर पडा था वह धीरे-धीरे लुप्त होने लगा और आपकी याद मुझे आने लगी। आप शरीफ है और एक स्त्री जो भी पुरुष मे चाह सकती है, वह सब कुछ आपमे है। काश आप मुसलमान न हुए होते! पर अब तो मैं भी मन मे सोचती कि अब तो एक तरह से मैं भी मुसलमान तो हूँ ही। और जब आप जिद पकडे है कि इस्लाम धर्म नही छोडेगे तो या फिर लाचारी मे मैं मुसलमानी मर्जहब हृदय मे कबूल ही कर लूँ और या फिर

सच्चे मन से कलमा न पढ कर मुसलमान न बनूँ हिन्दू ही रहूँ—मै हिन्दू और आप मुसलमान। पर हम लोगो का प्रेम कायम रहे। आप को सेक्स की जबरदस्ती के लिए भी क्यो बुरा-भला कहूँ। जब आप मेरा आलिंगन-चुम्बन करते रहे तो फिर शेष रह ही क्या गया। सेक्स न भी होता तो भी मै पवित्र तो रही नही। आपके अलावा आलिगन-चुम्बन तथा सेक्स भी किसी और को अनुमति देना भी तो मेरे लिए अनुचित ही होगा।

"सबसे बुरी बात जो मेरे साथ होती रही वह यह थी कि मेरी माता जी बहुत कट्टर हिन्दू भी थी और अत्याधिक क्रोधी और चिडचिडी भी। पापिनी, कुल-कलकिनी, धर्म-भ्रष्टा, हत्यारिनी, कुलटा आदि वह बात-बात मे कहती। गालियाँ देती। व्यग्य करती, कभी-कभी चाटा-घूसा भी मार देती। बराबर कहती "इसका मुँह देखना पाप है। यह पैदा होते ही क्यो न मर गई। इसका कोई प्रात मुँह देख ले तो उसे भोजन नसीब नही होगा। न जाने कौन उस जन्म के मेरे पाप थे जो यह मेरे कोख से पैदा हुई। सब को मौत आती है इसे ही मौत नही आती।" आदि

"अब इन गालियो से जो हो चुका था वह तो मिटता नही, हाँ उसकी प्रतिक्रिया यह अवश्य हुई—और आप के हक मे अच्छी ही हुई—कि मैंने सोचा जब मै पापिनी ही हूँ तो फिर मुसलमान ही बनूँगी, अहमद के साथ ही रहूँगी। कभी-कभी वह मुझे चुनौती भी देती "एक बार तू भाग सकी थी। अब तेरे देवता भी नही भाग सकते। अब तो मर कर ही तू यहाँ से निकल पायेगी। तनिक भी भागने का प्रयत्न किया तो तेरे हाथ-पैर तोड दूँगी।"

"कितनी नासमझी थी माता जी की। मैं जोर देकर कहती हूँ कि मेरी देशपाडेय से शादी कर देने के बाद तो फिर माँ को मुझे कुछ कहने-सुनने का कोई उचित कारण ही न था। उनसे विवाह हो जाने के पश्चात् फिर मुझे भागने को यदि किसी ने बाध्य किया, किसी ने

मुझे मुसलमान बनने को लाचार किया तो वह मेरी माँ थी, केवल माँ। काश वह मानव-स्वभाव और मनोविज्ञान की ज्ञाता होती और समझदार होती तो प्रेम, क्षमा, सहानभूति, दया और समझाने-बुझाने का सहारा लेकर मुझे बदल सकती थी। परन्तु मैंने कहा न कि जैसा भाग्य मे होता है वैसी ही बुद्धि हो जाती है, वैसी ही परिस्थितियाँ हो जाती है।

"दो बातो का मुझ पर बहुत बुरा असर पडा। मेरी माँ सदा यही कहती 'बच्चा होने के समय तू मर जाय तो पाप कटे या वह मुसलमान का बच्चा मर जाय। और न भी मरी और लडका या लडकी हुई और जिन्दा रही तो भी उसे मरवा डालने का प्रयत्न करूँगी, नही तो उसे किसी को दे-दिवाकर या फेक-फाँक कर बराबर करूँगी। लाख कोई न जाने-समझे, पर होगा तो वह मुसलमान के वीर्य से विधर्मी। कहाँ के पाप है कि तेरे साथ इस अज्ञातवास मे मुझे रहना पड रहा है, और न जाने कब तक मुझे ऐसा जीवन व्यतीत करना पडेगा। पूजा-पाठ छुटा, बाल-बच्चे छुटे, इस कुलटा की देख-भाल को मेरी गर्दन फँसाई गई।

"यह (मेरे पिता) तो ठीक कहते थे 'मेरे लिए रेखा मर गई। किलेदार के साथ रहे चाहे दुनिया भर के साथ। अब न मुझे मुकदमा चलाना है न अपनी और हंसी करानी है। नाक तो जो कटना थी कट ही चुकी।' वह तो तुझे मरा समझ कर धीरज रख लेते, पर आजकल के तरुणो की बुद्धि को घुन लग गया है। क्या कलयुग आ गया है। इस वेश्या के साथ जो अपने पेट मे एक म्लेक्ष की सतान पाल रही है, उसके साथ ही विवाह करने को तैयार हो गया देशपाडेय। धर्म-कर्म तो रहा ही नही। मुकदमा लडकर ही हमे क्या मिलेगा। रुपये-पैसे की बरबादी और दुनिया भर की चिन्ता और हानि। पर इन औधी खोपड़ी वाले तरुणो की बात मे यह बूढे होकर भी आ गए। आ क्या गए जब उनके पीछे सब ही पड गए तो वह भी अकेले क्या करते।

आज केवल इस एक पापिनी के कारण इतनी हलचल हुई है। मै ही मर जाऊँ तो छुट्टी मिले। भगवान न मुझे मौत देते है न इसे।"

"मेरी माँ सदा से ही कडी जबान की थी तथा पुतातन-पथी। धर्म के मामले मे माँ अपनी सतान की इतनी शत्रु हो सकती है, यह देख कर मुझे दुख भी होता था और आश्चर्य भी। न जाने कितनो के ऐसे ही 'केस' हो जाते होगे। उन पर पर्दा पडा रहता है तो वे इतनी गाली-गलौज के पात्र नही बन पाते, मेरा 'केस' प्रकाश मे आ गया है—केवल इतना ही भेद है, अत मेरे ऊपर बौछारो का अत नही है।

"ज्यो-ज्यो मेरी सौर के दिन निकट आते जाते थे मुझे अपनी होने वाली सतान के प्रति मोह-ममता बढती जाती थी। इतना तो मैने निश्चय कर लिया था कि प्राण भले ही दे दूँगी पर बच्चे को अपने से अलग न होने दूँगी। गलती मेरी है मै उसका फल भोगूँ तो खैर ठीक है। बेचारे बच्चे की क्या गलती है। वह क्यो मेरी गलती का फल भोगे। अगर जबरदस्ती बच्चे को इन लोगो ने मुझसे अलग कर दिया तो मै अपने प्राण दे दूँगी। अब मेरे जीवन मे रहा ही क्या ? अब तो जीवन मुझे इस कैदखाने मे बिताना है। वह पहले सा रोमास, पहले सा प्यार-मोहब्बत कहाँ ? विश्व दामोदर जी तो देश-धर्म की सेवा करेगे। उनको तो यह आत्म-सतोष होगा। मै तो न अपने लिए जी पाऊँगी न दूसरो के लिए। कुत्ते-बिल्ली की सी नीरस जिंदगी होगी। दोनो समय पेट भर लूँगी और छत की धन्नियाँ गिनूँगी। विश्व जी मुझपर दया करेगे, प्रेम नही कर सकते।

"मेरी ऐसी स्त्री को लाख उन्होने बलिदान की भावना से अपनाया हो पर उसमे कर्त्तव्य की भावना ही अधिक होगी, प्रेम नही। हो सकता है क्या, यह निश्चित है कि उनके लिए भी मुझे बच्चे पैदा करने पडेगे। पर जीवन मे रस क्या रहेगा। देशपाडेय जी ने स्पष्ट कह दिया है कि राष्ट्र-सेवा को, आर० एस० एस० के आदर्शों को वह मेरे लिए त्याग नही सकते। वह मेरे साथ बराबर नही रह सकते।

बीच-बीच मे वह मुझसे मिलने बम्बई से आ जाया करेंगे । मुझे, मेरे कैदखाने की मजबूती और मेरे प्रायश्चित-पूर्ण जीवन को देखने वह बीच-बीच मे आ जाया करेंगे। मै उनकी रखैल की तरह हूँगी। उनकी पत्नी की भाँति नही जो अपने पति के कधे से कधा मिलाकर चल सके।

"यदि उन्हे मेरे साथ रहना नही था, मुझे विधिवत् पत्नी के अधिकार नही देने थे, कर्त्तव्य नही करने-कराने थे तो फिर विवाह का मजाक क्यो किया ?

"पर उन्होने ने तो स्वय अपने मुँह से कह दिया है "केवल एक उद्देश्य है—एक हिदू-स्त्री को यवन होने से रोकना।" भाड मे जाय ऐसी हिदू-रमणी और हिन्दूपना। ठीक है किलेदार भी कहते है तुम्हारे लिए मै अपना धर्म नही त्याग सकता, और देशपाडेय जी कहते है तुम्हारे लिए मै अपना कर्त्तव्य नही त्याग सकता। दोनो पुरुप अपने आदर्श पर है। स्त्री ऐसी वस्तु नही है जिसके लिए कुछ त्यागा जा सके। पर मेरा क्या आदर्श है जिसके लिए मै कह सकूँ कि मै इसके लिए किलेदार को भी छोड सकती हूँ और देशपाडेय को भी। हाय री कमजोर औरत !

"देशपाडेय अपने साथ मुझे रखने, बम्बई ले जाने को प्रस्तुत नही है, या स्वय और कही मुझे लेकर चले जाने का न उनका आज न कभी इरादा है। आर० एस० एस० वाले पुरुष हो या लीगी, औरत केवल एक सम्पत्ति है जिसका भोग पुरुष कर सकते हे बस। इससे अधिक उसका महत्त्व नही है। स्त्री की श्रद्धा कही नही है।

"मेरे पिता जी ने, माता जी ने मुझ पर विश्वास न करने को देशपाडेय से कह दिया है। तो फिर मेरे जीवन मे रहा ही क्या शेष ? इससे तो मै अहमद के साथ ही अच्छी। वहाँ मै सबकी आँखो की पुतली हूँगी, सब मुझे प्यार करेंगे, सिर-आँखों पर रखेगे। वहाँ मुझे सुख ही सुख है पति का प्रेम है, सम्मान है। पत्नी का अधिकार है।

केवल हिंदू-धर्म छूटता है। पर हिंदू-धर्म गर्वीला भी है और अनुदार भी है—और यही उसके क्षय का सदा कारण रहा है—मेरी माता हिंदू-धर्म का प्रतिनिधित्व करती है। देशपाडेय जी भी मुझे एक जीवित मशीन से अधिक नही समझते जिसके न हृदय है और न उसमे भावनाये। उनका आर० एस० एस० का गर्व उन्हे 'मनुष्य' के हृदय से सोचने ही नही देता। तो हिंदू-धर्म छूटता है तो छूटे। जब हिंदू-धर्म मेरा नही हुआ तो मै हिंदू-धर्म की क्यों हूँ" आदि।

"आप्टे जी! ये सब बाते रेखा जी मुझे बताती रही थी, जब वह उस कैदखाने से भाग कर दुबारा मेरे पास आई थी। उनकी डायरी भी पढने का मुझे मौका हासिल हुआ था बाद मे। इसीसे उनके जज़्बात को इतनी अच्छी तरह से आपके सामने रख सका हूँ। बहरहाल वह निहायत ईमानदार और सच्ची बीबी साबित हुई है। उन्हे अगर दुख है तो सिर्फ यही कि वह हिंदू नही रही और न मै हिंदू बनने को तैयार हुआ।

"हाँ तो रेखा जी ने मुझे यह भी बताया कि वह नौजवान विश्व दामोदर देशपाडेय मेरे महीने-डेढ महीने की नजरबदी के जीवन मे केवल दो-तीन बार मेरे पास आए। वह जब मेरे पास आते तब उन्हे देख कर मेरा ध्यान फिर हिंदू-धर्म की महत्ता की ओर जाता और उनकी बातो का सार मुझे समझाई पडता। मै मन ही मन कहती "मै केवल अपनी विषय-वासना की शान्ति के लिए ही अहमद के पास जाना चाहती हूँ। पर यदि केवल विषय-वासना ही कारण होता तो विषय-वासना तो मेरी देशपाडेय भी पूरी कर सकते है। वह तो मैने ही उन्हे रोका। जितनी राते भी वह मेरे पास रहे उन्होने अपने ऊपर सदा नियन्त्रण रखा। कितने मर्द ऐसा कर सकेगे? बद कमरा, रात का समय और अकेले पति-पत्नी! पति कहना ही उन्हे पडेगा, यदि अहमद को पति कहती हूँ। यदि निकाह के सब विधान पूर्ण-रूपेण पूर नही हुए है तो विवाह के भी सब धार्मिक कृत्य

और विधान समुचित रूप से तथा पूर्ण-रूपेण नही हुए है। निकाह की भी जल्दी थी, किसी तरह से कर भर लेना था और विवाह के सम्बन्ध मे भी अक्षरत यही बात कही जा सकती है। दोनो ही मेरे विवाह जबरदस्ती हुए थे।

"ऐसा नही है कि हर बार मिलने पर 'सेक्स' का इसरार (बार-बार कहना) देशपाडेय का मुझसे न था, पर मेरे समझाने और मिन्नत करने पर उन्होने सदा अपने को काबू मे रखा। वह केवल रात भर मुझे समझाते-बुझाते। एक खाट पर बैठते अवश्य। मुझे छूते अवश्य, प्यार अवश्य करते, पर विषय-वासना के लिए नही, यह दिखाने के लिए कि वह वास्तव मे मुझे प्रेम करेगे, इसी का प्रमाण उनका आलिगन-चुम्बन है।

"देशपाण्डेय जी से मुझे पता चला कि मुकदमा दायर किया जा चुका है।"

"रेखा जी का तो बहुत कुछ हाल मैने आपको बता दिया। अब थोडा-बहुत आपको अपने बारे मे बताना होगा। पर इसे अब कल तक के लिए मुल्तवी किया जाय। कल आप मेरे यहाँ चाय पियेगे।"

मैने स्वीकार कर लिया।

: ७ :

दूसरे दिन बृहस्पति को मै किलेदार साहब के यहाँ गया—दफ्तर से छुट्टी होने पर। चाय और नाश्ते की सामग्री ले कर स्वय श्रीमती किलेदार, भूतपूर्व रेखा साने, आईं। यह दूसरी बार वह मेरे सामने आई थी। मुझे ऐसा लगा कि जैसे उन्हे कुछ मुझसे मिलने पर, मेरे सामने आने पर प्रसन्नता सी हुई हो। बिल्कुल महाराष्ट्रीय वेष-

भूषा मे वह आज थी। महाराष्ट्र-हिंदू-सधवा के चिह्न उसके शरीर पर स्पष्ट थे—मगलसूत्र, माथे पर कुकू, हाथ मे चूडी, जूडे मे फूल, माँग मे सेदुर आदि। वह पैजामा या गरारा नही वरन् साडी पहने थी। अत: यह निश्चय था कि हृदय से तथा आदतो से वह अब भी हिंदू ही है। स्वय किलेदार जी के मुख पर भी मैने सतोष ओर प्रसन्नता के चिह्न देखे। शिष्टाचार के नाते मैंने नमस्ते के बाद उनसे पूछा "आपका स्वास्थ्य तो ठीक है न ? हामिद कैसा है ?"

नमस्कार करने के पश्चात् रेखा जी ने मुझसे कहा "आपके कितने आभारी हम दोनो है इसे शब्दो मे व्यक्त करना सभव नही है। आप न होते तो ।" बीच ही मे टोकते हुए मैंने कहा "आभार गैरो का माना जाता है अपनो का नही। यदि आप लोग मुझे अपना नही समझते तो खूब आभा प्रकट कीजिये" ।"

किलेदार ने मुझे टोका ""जब आप दोनो महाराष्ट्रीय है तो फिर हिंदी-उर्दू मे बातचीत क्यो करते है ? आप दोनो मराठी जबान मे गुफ्तगू क्यो नही करते ? मै चाहता हूँ आप मराठी ही मे आइदा बोला करे। अच्छा अब आभार नही प्रगट किया जायगा।"

मैं भी मुस्कराया और रेखा जी को भी इससे काफी प्रसन्नता हुई। मैंने उनसे दो-चार बातें मराठी जबान मे ही कही और मराठी मे उत्तर देते हुए उन्हे कितनी आत्मिक प्रसन्नता हुई इसे वह स्वय छिपा नही सकी। उन्होने मेरे पूछने पर मराठी ही मे बताया "आज कदाचित् तीन वर्ष बाद मुझे मराठी भाषा मे बोलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। आपके मित्र मराठी जबान समझ तो लेते है, अच्छी खासी बोल भी सकते है, पर मेरी इनकी गुफ्तगू उर्दू या अधिक से अधिक हिंदी या हिन्दुस्तानी में होती है। एक महाराष्ट्र भाई से मिल कर और मराठी भाषा बोल कर इतने दिनो के बाद मुझे कितनी आत्मिक प्रसन्नता हुई है, मैं कह नही सकती। हमीद ठीक है, सो गया है।"

किलेदार को अपनी पत्नी की प्रसन्नता पर अत्यन्त सतोष हुआ।

उनकी पत्नी अपने को अकेला-अकेला अनुभव करती थी। इसलिए उन्होने मुझे भी प्रोत्साहन दिया कि "तुम गाहेबगाहे, (यदाकदा) उनसे मिल लिया करो, इससे जो वह अकेलापन महसूस करती है, वह जो एकाङ्गी है, उसमे कुछ कमी होगी। आप दोनो महाराष्ट्र के है, इससे आप दोनो को एक दूसरे से मिलकर सूकून होना लाजमी है।"

अपनी पत्नी को भी उत्साहित करते हुए बोले "तुम हिदी मे इनसे बाते मत किया करो। मराठी मे ही बोला करो। और मेरे इन दोस्त और बिरादर से तुम बखुशी मिल सकती हो। अगर मै घर पर न भी हूँ और यह आ जायँ तो इनसे हिचकिचाने या शर्माने की ज़रूरत तुम्हे नही है। यह भी तुम्हारे महाराष्ट्र भाई है। और बिरादर! इस घर मे आप-का हमेशा इस्तेकबाल होगा, मुझसे भी और मेरी बीबी से भी। इनकी तबियत गिरी-गिरी, मुर्दा-मुर्दा रहती है। इनके मन बहलाने, इन्हे खुश रखने की मैं हदभर, हरचद कोशिश करता हूँ—जो और जितनी मेरे इमकान मे है—मगर यह खुश नही हो पाती है। अपने भाइयो, अपने वतन की अपने भाई-बन्धो की याद आना 'नेचुरल' (स्वाभाविक) है। आपसे मिलकर इनकी कुछ तबियत बहलेगी।"

मैंने कहा "एक बात आप से पूछूँ? आप लोगो के यहाँ तो पर्दे की बहुत सख्त पाबदी है तो फिर आपने बहिन जी को मेरे सामने कैसे आने दिया—पहले ही दिन और एक गैर आदमी से मिलने-जुलने की स्वतत्रता अपनी पत्नी को देते हुए हिचक नही हुई, जब कि मै हिंदू हूँ?"

किलेदार जी मुस्कराये। फिर उन्होने कहा "रेखा जी हिंदू थी, यह तो आपको बता ही चुका हूँ। रेखा जी! आप चौकिये मत, न झिझकिए-शर्माइये। भाई साहब से थोडा-बहुत मैंने तुम्हारे और अपने बारे मे बताया है। इस लिए मैं और भी थोडा इनके करीब आ गया हूँ और तुम्हे भी इनके करीब कर देना चाहता हूँ। इन्हे तुम बडे भाई समझ कर मिलो, बोलो, मुझे कोई एतराज नही है। हमीद की जिन्दगी . . अच्छा भाई! खफ़ा मत हो, नही कहूँगा कुछ।

"हाँ, तो हिंदू होने की वजह से इनके यहाँ एक तो पर्दा होता ही न था, और पर्दा न करने की इन्हे महारत थी, आदत थी। फिर मै खुद अँगरेजी खयालात का आदमी हूँ, पर्दे-वर्दे पर मेरा एतकाद नही है। इसलिए आपकी रेखा जी और मेरी जोहरा बेगम पर्दा वग़ैरह यो भी खास नही करती। दूसरे मेरी बीबी फरिश्ता है। इतनी ईमानदार, सच्ची और नेक बीबी शायद ही दो-चार हो इस शहर मे। यह मेरी ऐन खुशकिस्मती है कि तकदीर ने मुझे इन्हे अता किया है। आप हिंदू जरूर है, मगर आप भी वैसे ही 'जेनरस व्यूज़' (उदार विचारो) के है जैसे मै। आपको देखकर मुझे अपने कदीमी वतन की याद आ जाती है। मुझे आप पर भी पूरा भरोसा है और अपनी नेक बीबी पर भी, इसलिए आप दोनो के मिलने-बोलने मे मुझे कोई हिचक नही होगी। अब बेगम! जब तक यह यहाँ रहा करे उतनी देर तक चाहे जब मेरे-इनके पास आ जाया करो या चाहे बराबर बैठी रहा करो।"

मैने ध्यान से देखा कि रेखा जी को आशातीत प्रसन्नता अपने पति की उदारता से हुई। किन्तु मै इनके पूर्व-जीवन के विषय मे कुछ जानता हूँ, यह जानकर उन्हे कुछ प्रथम बार लज्जा और सकोच सा हुआ हो तो अस्वाभाविक नही है। बहरहाल वह ड्राइग रूम से चली गई और लगभग डेढ-दो घटे बाद जब मै जाने वाला था अपने घर, तब वह पान, सुपारी, कत्था, चूना आदि लेकर हम लोगो के पास आई थी और जाते समय हम दोनो ही ने नही स्वय किलेदार साहब ने भी 'नमस्कार' किया। आज उन्होने 'खुदाहाफिज' नही कहा था। हो सकता है हमीद इसका कारण हो।

दोनो पति-पत्नी द्वार पर कदाचित उस समय तक खडे रहे होगे जब तक मैं आँखों से ओझल न हो गया हूगा। मैं रास्ते में सोच रहा था कि मेरे दृष्टि से ओझल हो जाने के पश्चात् संभव है रेखा जी ने अपनी निकलती हुई ठडी साँस को अपने पति से छिपाने का प्रयत्न किया हो। किन्तु इसमें सदेह नही कि किलेदार जी यवन होते हुए भी

बहुत नेक शरीफ तबियन के, उदार विचारो के और एक उत्त म पति है। और रेखा जी भी हिंदू-धर्म और महाराष्ट्र-समाज से छूटने के कारण घुटी-घुटी तबियत लिये रहते हुए भी नेक और सच्ची बीबी है।

उनके तीन-चार वर्ष के पुत्र को भी मैने देखा। वह सुन्दर, स्वस्थ और भोला बालक था जिसे गोद ले लेने की सबकी तबियत होती होगी। यह वही बालक था जिसे गर्भ मे धारण किए हुए रेखा जी के दो-दो विवाह हुए थे।

मै मार्ग भर यही सोचता आया कि जब बडा होने पर अपने माँ-बाप का पूरा किस्सा उसे ज्ञात होगा तो हिंदू माँ के पेट से पैदा हुआ यह यवन ही न जाने कितने हिंदुओ का खून बहा सकता हे या उनके रुधिर का प्यासा हो सकता है। एक हिंदू-स्त्री अपनी नफ्स-परस्ती (भौतिक सुख) के कारण, अपनी एक नासमझी, भूल, अनुभव-हीनता के कारण, भावनाओ मे बहने के कारण यवन बनकर न जाने कितने विधर्मियो को पैदा करती है और वे विधर्मी अन्य असख्य विधर्मियो को बढाते है और हिंदुओ का नाश करते है। हिन्दुस्तान मे थे ही कितने मुसलमान। हिन्दुस्तान के बाहर से तो बहुत थोडे मुसलमान आए थे। शेष यहाँ के सभी मुसलमान भूतपूर्व हिंदू है जो आज हिंदुत्व की जड काट फेकने को सबसे आगे है। खैर।

हाँ, तो रेखा जी के ड्राइग रूम से चले जाने के पश्चात् किलेदार साहब ने अपनी गाथा का क्रम आगे बढाया था। कहा "मेरे वालिद साहब जब घर पहुँचे तो—पूरा हाल उन्हे रास्ते ही मे पता चल गया था—उन्होने वालिदा साहबा से सब कुछ ठीक से समझा। फिर मेरे वालिद साहब और अन्य मुसलिम लीडरो ने अपनी दौड-धूप शुरू की। वह पता चलाकर पुलिस-स्टेशन पर पहुँचे। मुझसे मुलाकात की। रेखा जी से मिलना चाहा। पर मुझे ही खुद नही मालूम था कि रेखा जी इस वक्त है कहाँ। रेखा जी से उनकी मुलाकात नही हो सकी। फिर उन्होने दौड-धूप करके, ऊँचे अफसरो से मिल-मिलाकर मुचलके और जमानत

पर मुझे छुडवा लिया। मेरे नाम कोर्ट से नोटिस आ चुका था। मुझ पर मुकदमा दायर किया जा चुका था कि मैने एक हिंदू औरत के साथ पहले तो जिनह् किया और फिर उसे बरगला कर भगाया और अपने घर मे उसे कैद कर लिया जहाँ से वह बरामद की गई।

"इधर मेरे वालिद ने उल्टा मुकदमा रेखा जी के पिता और नाना पर दायर कर दिया कि मेरी शादीशुदा बहू को उसकी मर्जी के खिलाफ इन लोगो ने पुलिस के जरिये से पकडवा लिया। बहू और अपने लडके की हतक-इज्जती का जुर्म, घर मे घुस आने का जुर्म आदि रेखा के पिता आदि पर लगाए गए। दोनो तरफ से मुकदमा चला।

"वालिद से, जो मुसलमान पुलिस और कोर्ट के ऊँचे अफसर या बम्बई गवर्नमेंट के सेक्रेटेरियट के आला ओहदेदार थे, हमदर्दी मे पेश आए, और वालिद को छिपे तौर से मदद देने को तैयार थे। मगर सभी ने उन्हे बता दिया था कि कई मिनिस्टर और बहुत से ऊँचे हिंदू अफसर रेखा जी के पिता और नाना के मामले मे खास दिलचस्पी ले रहे है और पूरी सहायता दे रहे है, इसलिये उनकी मुखालिफत करना या आपको खुलेआम मदद देना न हम लोगो के हक मे अच्छा होगा न आपके हक मे। और ऐसा करना हम लोगो के लिए मुमकिन भी नही है। मगर चूँकि मजहब का सवाल है और आपसे हम लोगो के मरासिम भी अच्छे है, इससे जो भी भीतरी बाते हमलोगो को मालूम होगी आपको बताते रहेगे और हर तरह की मुमकिन इमदाद आप लोगो को मिलेगी।

"रेखा जी के पिता, नाना, भाइयो के अलावा बहुत से हिंदू तालिब-इल्मो और दीगर हिन्दुओ के बयान हुए। आर० एस० एस० वाले तो मेरे और मेरे वालिद के जानी दुश्मन हो चुके थे और मरने-मारने को उतारू हो चुके थे। मेरे, मेरे वालिद और वालिदा के भी बयान हुए और उन मोलवियो के भी बयान हुए जिन्होने कलमा-निकाह पढवाया-कराया था। रेखा जी को कोर्ट ने तलब

किया, मगर रेखा जी के वालिद की तरफ से कहा गया 'रेखा जी का पता नही है। ऐसा लगता है उसे फिर कही इन लोगो ने धोखा देकर भगा दिया है या वह खुद भाग गई है।'

"उधर वालिद रेखा जी के पिता पर रेखा जी को छिपा देने का जुर्म लगाते थे और इधर रेखा जी के पिता अपनी लडकी को फिर से भगाने या भगवाने का जुर्म वालिद और मुझ पर लगवाते थे। मानी हुई बात है कि रेखा जी के गुम होने से मुकदमा आगे बढ नही रहा था क्योकि मुकदमे का बहुत कुछ फैसला रेखा जी के बयान पर होता, उस पर ही मुकदमे का सारा दारोमदार था।

"आप जानते ही है कि यहाँ के कोर्टो मे यो भी मुकदमा दायर करने और फैसला होने के बीच मे काफी अर्सा लगता है—कभी-कभी बरसो। अगर रेखा जी मुकदमे के दौरान मे नही दस्तियाब होती है तो दोनो ही के मुकदमे शायद खत्म हो जाँय और दो मे से किसी पार्टी को कोई खास फायदा न हो।

"हम लोगो का ख्याल था कि रेखा जी को कही बहुत दूर भेज दिया गया है, और अब उनका वापस आना गैरमुमकिन है। रेखा जी के मुचलके और जमानत के रुपये जब्त होने पर इन बडे आदमियो को क्या खलता।

"मिस्टर देशपाडेय का भी बयान कोर्ट मे हुआ था मगर उसने यह कोर्ट मे नही कहा था कि उसकी शादी रेखा जी से हो गई है। उसका बयान काफी जोरदार था। वकीलो ने उन्हे सलाह दी होगी कि अगर अहमद से रेखा का निकाह नाजायज करार दे दिया गया, और उम्मीद पूरी है दे दिया जायगा, तब तो आपकी शादी हो ही चुकी है और मान लीजिए निकाह कोर्ट जायज करार देता है तो फिर आपकी शादी नाजायज़ करार दी जायगी और तब आप पर उल्टे मुकदमा चलाया जा सकता है, गोकि इसके इमकानात है नही। इसलिए इस पहलू को अभी पोशीदा ही रखा जाय।

"देशपाडेय ने रेखा जी से भी बता दिया था कि वह अपनी और उसकी शादी की बात अभी पोशीदा रखेगे। जरूरत पर ही पर्दा फाश किया जायगा। यह सब बाते बाद मे रेखा जी ने मुझे बताई थी।

"उस जमाने मे हर शख्स की जबान पर इस दिलचस्प केस की बाते थी। चार आदमी जहाँ जमा होते रेखा और अहमद वाले किस्से पर ही गुफ्तगू करते, अपनी राय का इजहार करते। पुलिस की सरगर्मियाँ बढ गई थी। हिंदू-मुसलम-टेशन (सघर्ष का भय) बढा हुआ था, इससे पुलिस को मुस्तैदी के साथ, दगा-फ़साद होने की नौबत न आने पावे, काम करने के खास आर्डर ऊपर से आ चुके थे। अखबार वालो की चाँदी थी।

"जिस तरह से कुछ सालों पहले विमला और दूल्हा के केस ने कानपूर के बडे-बडे हिंदू-सरमायेदारो को एक मे कर दिया था और सबकी मदद से विमला जी को दूल्हा के कब्जे से हटा दिया गया था, वैसे ही शायद बम्बई के भी हिंदू-सरमायेदार सब रेखा जी के पिता-नाना की पीठ पर हाथ धरे थे। यों बजायखुद रेखा के नाना जी भी लखपती-करोडपती थे। उन्हे रुपयो और मददगारो की इफरात थी। हम लोगों की तरफ भी यही हाल था।

"जिस दिन मुकदमा होता वकीलो-बैरिस्टरो की एक-एक फौज दोनों तरफ होती। चोटी के वकील रेखा जी के पिता ने किए थे। ज्यादातर वकीलो ने अपनी खिदमात खुद पेश की थी और कुछ वकीलो ने तो रुपया लेना भी रेखा जी के वालिद से इस बिना पर नामंजूर कर दिया था कि अब यह आपका और आपकी लडकी का केस नही है, यह हम सब का केस है, यह हिन्दू-मुसलमान का केस है; आपकी ही इज्जत का सवाल नही है, हम सब हिन्दुओ की इज्जत का सवाल है।

"ऐसा ही कुछ मुसलिम वकील भी वालिद से कहते थे। बम्बई शहर ही नही पूरे बम्बई सूबे में इस केस की वजह से हलचल थी, और

मेरा यह ख्याल है कि पूरे हिन्दुस्तान मे थोडी-बहुत इस बात की चर्चा थी।

"यह भी सुना गया था कि ऊपर से मैजिस्ट्रेट पर दबाव पड़ रहा है और मैजिस्ट्रेट था भी हिन्दू, गोकि उसके बारे मे यह मशहूर था कि वह अपने उसूलो का बहुत पक्का है और किसी के साथ रू-रियायत करना नही जानता। पर यह तो 'केस' ही दूसरी तरह का था। मुकदमा अगर फैसले तक गया भी तो ज्यादा उम्मीद यही थी कि फैसला रेखा के वालिद के मुआफिक ही होगा। मुझे जुर्मो से रिहा कर दिया जायगा, इसका कामिल यकीन वालिद को था क्योकि रेखा जी के लिखे हुए कई खत मेरे पास थे। और रेखा जी ने इतना बचपन किया था या यो कहूँ सचमुच मुझपर इतना ज्यादा यकीन किया था कि उसमे तारीख और जहाँ से खत भेजे गए थे उन जगहो के नाम भी लिख दिए थे। शायद आर्ट की स्टूडेंट होने के नाते इस बारीक कानूनी गिरफ्तो की ओर उनका ध्यान भी नही गया होगा।

"रेखा जी ने मुझसे बताया था कि "जब विश्व दामोदर जी और पिता-नाना जी आदि आपके विरुद्ध मुकदमा दायर करने की बाते करते थे तब उन्हे नही ज्ञात था कि मै बीच-बीच मे आपको पत्र लिखती रही हूँ। मैने उन्हे यह नही बताया था, और बताती भी कैसे। बताती तो वे मुझे जिन्दा दफना न देते? प्रेम मे जितनी ही बाधाये उपस्थित की जाती है वह उतना ही बढता है। मेरे साथ भी यही हुआ। मै जानती थी कि मुकदमे के दौरान मे जो पत्र मैने आपको लिखे है वे आपका मुकदमा जितवा देगे। मेरी रजामदी तो आप उन पत्रों के द्वारा ही प्रमाणित कर देगे। मैने तो अपने हाथ-पैर स्वय ही तोड लिए थे, अपने को स्वय ही फँसा लिया था। मै यदि अपने पिता जी के कहे के अनुसार अपने पर आपकी जोर-जबरदस्ती का इल्जाम भी लगाऊँ तो उसमे होना-हवाना कुछ नही है। विरुद्ध पार्टी के वकील जिरह मे मेरी सारी बनाई बातो के धुर्रे उडा देगे।"

"बात थी भी ठीक। इस तरह से जब 'अनसरटेनटी (अनिश्चितता) मे वक्त गुजर रहा था एक अजीबोगरीब वाकया गुजरा। रेखा जी बम्बई आ रही थी और विक्टोरिया-टर्मिनस स्टेशन पर उतरते ही मेरे किसी हमदर्द ने उन्हे पहचान लिया और उन्हे पकडने-रोकने की कोशिश की। शायद बम्बई का बच्चा-बच्चा रेखा जी के नाम से वाकिफ हो चुका था। काफी भीड जमा हो गई। कुछ पुलिस वाले भी जमा हो गए और रेखा जी को पहचान कर हिरासत मे ले लिया गया। आग की तेजी से यह खबर चारो ओर फैलने लगी। रेखा जी के पिता, नाना और देशापाडेय ने भी यह खबर सुनी होगी। देशपाडेय के मददगार पुलिस के बडे-बड़े हिन्दू अफसर थे। चुनाचे उसने रेखा जी से मिलने की इजाजत पा ली। रेखा जी कोतवाली मे थी।

"वह रेखा जी से मिला। उनके भाग आने का सबब पूछा। उन्हे लानत-मलामत दी। कैसे भाग सकी, यह भी पूछा। मगर रेखा जी ने कोई खास और माकूल जवाब उन्हे नही दिया। बाद मे उसके वालिद और नाना भी उससे कोतवाली मे मिले। जब कई मिनिस्टर, एस० पी०, डी० एस० पी०, मैजिस्ट्रेट, एम० पी०, एम० एल० ए० ओर दीगर अफसरान उनके मददगार और हमदर्द थे तो उन दोनो को रेखा जी से मिलने की इजाजत कैसे न मिलती। मगर उन लोगो को भी कोई जवाब, उनके सवालो का, रेखा जी ने नही दिया। यह कैसे भाग निकली, इसका सदमा और ताअज्जुब उसके पिता, नाना, देशपाडेय वगैरह सब को था।

"अगर इत्तिफाक से रेखा को उसके वालिद का कोई हमदर्द देख लेता तो यकीनन् वह फिर पकड कर नाना जी के यहाँ दादर पहुँचा दी जाती। पर 'होनी' तो कुछ और ही थी—वह दिखी मेरे हमदर्द को और उन्हे 'पुलिस लाक-अप' मे आना पडा। शायद भारी मुचलका और जमानत देने की इजाज़त पाने के लिए वे लोग कोशिश करते और रेखा को देशपाडेय जरूर दादर ले जाता, और मुचलके और जमानत के लिए

उन लोगो ने दौड-धूप भी शुरू कर दी थी, मगर इन लोगो की हैरानी की इन्तिहा न रही जब रेखा जी ने साफ कह दिया "मै इन लोगो के साथ नही जाऊँगी। मुझे डर है कि ये लोग मुझे जान मे मार डालने या अजहद तकलीफात देने की कोशिश करेंगे। मैं बालिग हूँ। और मेरी मर्जी के खिलाफ ये लोग मुझे नही ले जा सकते।"

"कहा न कि जिन लोगो के हाथ मे ताकत और कानून था वे देशपाडेय की तरफ थे और फिर पैसे मे बडा जोर होता है। मगर इसके पहले ही रेखा जी के वालिद उसकी तरफ से मायूस हो चुके थे। इस लिए देशपाडेय वगैरह लाचार होकर हाथ मल कर बैठ गए।

"यह सब मेरे वालिद को भी पता चला। उन्होने भी रेखा जी से मिलने की कोशिश की और बमुश्किलतमाम उन्होने इजाजत हासिल की। वह रेखा जी से मिले। मगर उन्होने वालिद की किसी भी बात का जवाब नही दिया। वालिद ने पूछा कि मै अगर मुचलके और जमानत की कोशिश करूँ और इजाजत पा सकूँ तो मेरे साथ चलोगी? मगर रेखा जी ने साफ इकार कर दिया।

"रेखा ने कहा "मुझे पता चला है कि मुकदमा अभी खत्म नही हुआ है और अब मुझे जो कुछ कहना होगा कोर्ट मे ही कहूँगी। क्योकि कोर्ट की आज्ञा की अवहेलना मै कैसे कर सकती हूँ। कोर्ट मे तो मुझे कहना पडेगा ही। पर क्या कहूँगी यह न आपसे कहूँगी अभी, न पिता जी से। मै आप दोनो मे से किसी के यहाँ नही रहूँगी। हाँ अगर किसी दूसरे सभ्रान्त सज्जन के यहाँ मेरे रहने का प्रबन्ध हो सके तो मै वहाँ रह सकती हूँ।"

"भागते भूत की लँगोटी बहुत। देशपाडेय से रेखा जी ने सिर्फ इतना कहा कि "वहाँ मुझ पर काफी जुल्म होता था, न भागती तो क्या करती। मौका मिल सका और मै भागी।"

"देशपाडेय इसे सुनकर मायूस इससे नही हुआ क्योकि वह समझा कि रेखा किलेदार के लिए सभवत नही भागी है। माता जी पडी भी तो

चौबीस घंटे इसके पीछे रहती थी, यद्यपि मैने उन्हे समझाया, कई बार मना भी किया। उन्होने रेखा जी से कहा "मैंने एक आदर्श के लिए तुम्हे अपनी पत्नी बनाया है। मै आदर्शवादी हूँ। मै तुम्हें प्रेम करूँगा उतना जितना कोई भी पति अपनी पत्नी को कर सकता है—कदाचित् किलेदार मे भी अधिक। तुम मुझे अवसर दोगी, परीक्षा लोगी, तब तुम्हे सच्चाई ज्ञात होगी। तुम सदा अपनी माता के ही पास नही रहोगी। यदि तुमने मेरा विश्वास प्राप्त कर लिया तो तुम्हे सदा अपने साथ रखूँगा जहाँ भी मै रहा।"

"रेखा बोली नही। देशपाडेय ने सोचा कि हम लोगो के साथ रहने को यह राजी नही हुई पर किलेदार के यहाँ रहने के लिए इसने स्वीकृति नही दी यह भी बुरा लक्षण नही है।

"मेरे वालिद को इससे सुकून हुआ कि खैर मेरे यहाँ न सही अपने वालिद के यहाँ भी रहने को तैयार नही हुई और अपने वालिद वगैरह की छिपाई जगह से यह भाग आई, यह भी बाते अपने ही हक मे है।

"चुनाचे फिर कोशिशे हुई और खुद मैजिस्ट्रेट के यहाँ रहने को रेखा जी तैयार हो गई। इसमे दोनो मुखालिफ पार्टियो को कोई एतराज न था। अफसरो से जो चाहा जाता लिखवाना-कहलवाना रेखा जी के लिए मुमकिन ही था। खैर रेखा जी मैजिस्ट्रेट के यहाँ चली गई। मैजिस्ट्रेट ने साफ कह दिया कि बिना रेखा जी की मर्जी के मैं दोनो पार्टियो के किसी भी मेम्बर को उनसे मिलने की आज्ञा नही दूँगा। हाँ किसी भी पार्टी का कोई भी वकील या कानूनी सलाहकार अगर चाहेगा तो मैं इजाजत दे दूँगा बशर्ते वह यह साबित कर सके कि उसे वाकई किलेदार के खानदान या साने-परिवार से आज्ञा रेखा जी से मुकदमे के सिलसिले मे मिलने की मिल चुकी है और वह इन दो मे से किसी पार्टी का वकील है या वकील है।

"सबने यह शर्तें कबूल कर ली। कोशिश करने के बाद तीन दिन बाद मुकदमा चालू करने के लिए तारीख 'एनाउंस' (घोषित) कोर्ट ने कर

दी क्योंकि दोनो पार्टियो ने एक-एक दिन अपने वकीलो के लिए माँगा था। अगला दिन वालिद साहब के वकीलो के लिए मुकर्रर हुआ और इसके बाद वाला रेखा जी के पिता जी के वकीलो के लिए।

'अगले दिन वालिद के वकीलो के चुने नुमाइदे रेखा जी से मिले। सबने उन्हे कानूनी मशविरा दिया। यह बताया कि उन्हे क्या-क्या कोर्ट मे कहना चाहिए, क्या-क्या बाद मे सवाल पूछे जायँ तो क्या-क्या उनके उत्तर वह दे। और जो अहम बात उनसे कही गई वह यह कि वह कबूल कर ले कि अपनी खुशी से उन्होने अहमद हुसैन से निकाह पढवाया है और उनके साथ बीबी की हैसियत से रहना चाहती है। यह हमल उन्हीसे है और हमबिस्तर होने मे उनकी रजामदी थी। रेखा जी से यह भी खूब समझाया गया, भरा गया कि अहमद उन्हे जी-जान से मोहब्बत करता है और अगर उन्होने अहमद को कबूल नही किया तो दूध की मक्खी की तरह हिंदू आपको निकाल कर अपने से फेंक देगे। हिंदू आपको कभी बाइज्जत शामिल नही करेंगे। मुख्तसर मे कहना यह है कि वही बाते उन्हे समझाई गई' जो पचासो बार हम सब उनसे कह चुके थे। रेखा जी सुनती तो सब गई पर बोली कुछ भी नही। वह खामोश ही रही।

"वकीलो ने वापस आकर वालिद से बताया था यही कुछ कि लडकी अजीब है। उसके दिमाग को समझना बिलकुल नामुमकिन है। वह तो गूँगी की तरह बैठी रही, सुनती रही। खुद कुछ न बोली, न कुछ पूछा, न किसी बात पर एतराज किया और न किसी बात पर हामी भरी। मुकदमे के दौरान मे यह क्या कहेगी, इसका अदाजा लगाना गैरमुमकिन है।

"रेखा के वालिद के वकीलों का गरोह उसके बाद वाले दिन रेखा जी से मिला। बाद मे रेखा जी ने मुझे बताया था कि "उन लोगो ने भी कुछ ऐसी ही शिकायत मेरे वालिद और नाना से की होगी। मै गूँगी की तरह सुनती सब रही पर बोली कुछ भी नही। वे लोग इस पर

अप्रसन्न भी हुए। उसमे कई वकीलो ने हिंदू जाति के नाम पर प्रार्थना की, अपील की, ऊँच-नीच समझाया और वह कुछ कहा जो सैकडो बार देशपाडेय जी तथा और हिंदू-राष्ट्र-प्रेमी मुझसे कह चुके थे। मै स्वय हिंदू हूँ। मेरा हृदय भी अपने धर्म के प्रति प्रेम रखता था, परन्तु मेरी माता जी मुझे विधर्मी बनने का प्रमुख कारण हुई। ये असहिष्णु अदूरदर्शी हिंदू ही हिंदुओ को विधर्मी होने मे सहायता देते है। काश इस बात से हिंदू और मुसलमान दोनो शिक्षा ले सके। यदि माता जी के अत्याचार मुझ पर न होते, उनका अमानुसिक व्यवहार—मै अमानुसिक ही कहूँगी—मुझपर न होता तो मै देशपाडेय जी की ही होकर रहती।

"पढे-लिखे-समझदार होकर भी देशपाडेय जी पता नही यह कैसे नही समझे कि धीरे-धीरे ही बस मे किया जाता है। उँगली पकड कर ही पहुँचा पकडना चाहिए। जो वह मुझसे करवाना चाहते थे, अगर साल-छै महीने चुप रह जाते, मुझे प्यार-मोहब्बत से जीतने की कोशिश करते और तब मुझसे मनमाना करवाते तो कदाचित् करवा सकते थे। पर धार्मिक जोश ने उन्हे जल्दबाज और बेसब्र बना दिया—मानव-स्वभाव की विशेषताओ और कमजोरियाँ भी वह भूल गए। इसीसे आज मैं आप की हूँ। मैने बहुत ईमानदारी से आप से सब कुछ बताया है। धार्मिक जोश बाज दफे आदमी को समझदार, दूरदशी नही होने देता, रहने देता।

"वकीलो ने जो मुझसे कहा वह बहुत अशो मे ठीक भी था। आपको सुनकर उसे बुरा भी लग सकता है। उन्होने कहा "तुम हिंदू की सतान हो। तुम यवनो को पैदा करोगी। और फिर वही यवन तुम्हारे भाइयो तथा बहिनो की गर्दने काटेगे। तुम अपने क्षणिक सुख के लिए, मूर्खतापूर्ण भावना के बस मे हो कर, बह कर अपनी भी हानि कर रही हो और हिंदू जाति का भी अहित कर रही हो। यह रूप और यौवन चार दिनो का है। जहाँ तुम्हारे प्रेमी की तबियत भर गई और वह तुम्हे मुसलमान बना पाया, और तुम्हारा यौवन और सौं-

न्दर्य समाप्त हुआ कि वह तुम्हे ठुकरा भी सकता है। तुम आज नहीं मानोगी तो तुम्हे जिंदगी भर पछताना पडेगा। तुम्हे आज अनुभव नही है। खोकर तुम सीखोगी। और तब सीखना-न सीखना सब बेकार होगा ''' '।' इसके बाद उन लोगो ने अनेक सच्ची घटनाये और बयान उन हिंदुओ के बताए जिन्होने धर्म-परिवर्तन कर लिया था। मै रोती रही मगर मै चुप रही। मैने यह निश्चय कर लिया था कि जो होना होगा, होगा, पर मैं सच-सच ही सारी बाते कोर्ट मे कह दूँगी।"

"तो आप्टे भाई! आज हम लोग यही पर बाते खत्म करे। कल अगर हुक्म देगे तो कोर्ट मे दिए रेखा जी के बयान का जिक्र करूँगा। रेखा जी ने विस्तार से सब बाते अपनी डायरी मे बाद मे भरी थी और उन्हे पढकर जो उन्होने मुझसे नही भी कहा था वह भी जाना जो कहने से रह गया होगा।

"मै चाहता हूँ जाने के पहले आप रेखा जी से कुछ बातचीत कर ले। हो सकता है रेखा जी बीच मे हम लोगो को गुफ्तगू करते देख कर वापस लौट गई हो। हो सकता है उन्होने आड मे से हम लोगो की गुफ्तगू का कुछ, हिस्सा सुन भी लिया हो। खैर मैं उन्हे बुलाता हूँ। बाते तो अब होती ही रहेगी।"

इसके बाद किलेदार जी ने 'बेगम! ओ बेगम!!' कह कर आवाज दी। 'बेगम' शब्द सुन कर मुझे कितनी पीड़ा हुई मैं कह नही सकता। एक हिंदू-कन्या आज बेगम है, यवन है। रेखा जी पान लेकर आई। मुझसे मराठी मे कहा "क्षमा कीजिएगा मेरे सिर मे आज दर्द हो रहा है इसीसे मैं आप लोगो के साथ बैठ नही पाई। अब तो आप मेरे पूज्य अतिथि नही, अपने घर के आदमी हैं। आप आज्ञा दें तो मै जाकर लेट सकूँ।"

मैंने कहा "अवश्य।" फिर मैं और किलेदार थोडी देर इधर-उधर की बाते करते रहे। और तब मैं अपने घर चल दिया। कल क़िलेदार साहब ने मेरे यहाँ आने का वादा कर लिया।

मार्ग-भर मैं सोचता आया कि आखिर किलेदार का यह सब सुनाने का उद्देश्य क्या है ? उसकी कथा सुनकर एक हिंदू होने के नाते मुझे कितनी पीडा हुई है, क्या इसका अनुमान वह नही कर पाता होगा। क्या मुझे दुखाने के लिए या अपनी बहादुरी की बात दिखाने के लिए वह यह सब कहता है और मेरा मित्र होने का ढोंग करता है। मै एक हिंदू हूँ। और हिन्दुओ के विरुद्ध ये बाते है—हिन्दुओ की भावनाओ, 'जज़बात' को ठोकर लगाने वाली ये बाते, उनके खून को उबालने वाली ये बाते—और तब भी वह इन्हे मुझसे कहता है। यह पाकिस्तान है और मुसलमान होने के नाते उसे मेरा भय नही है, क्या इस लिए, या मेरा अपमान करने के उद्देश्य मे वह ये सब बाते कर रहा है ?

"या सचमुच मुझे मित्र मानकर ही आप बीती अच्छी-बुरी बाते वह सुना रहा है। उसे सिर नीचा करने का तो कोई सवाल ही नही है। उसने तो हिंदू लडकी भगाई है। वह तो गर्व करेगा ही। या वह सचमुच उदार विचारो का नेक मुसलमान है। सब उँगलियाँ बराबर नही होती। खैर मैं अहमद साहब को ठीक से समझने का प्रयत्न करूँगा। मैं भी महाराष्ट्रीय हूँ, इससे मेरी पीडा और अधिक है। यह ठीक है कि मेरी उससे मित्रता थी, इससे वह खुल गया है। हाँ किसी कारणवश जब मनुष्य एक बार खुल जाता है तो उसका स्वभाव होता है कि फिर पूरी तरह खुलकर ही दम लेता है। कुछ लोग अहसान के बधन को बहुत मानते है। अहसान तो मेरे उस पर अनेक है ही। पर एक यवन का भरोसा क्या ! और क्या रेखा जी के सचमुच सिर मे दर्द था ? या वह लज्जा और संकोच के कारण मेरे सामने होने से भागी थी ? क्या उन्हे मानसिक ग्लानि नही होगी ? क्या सचमुच रेखा अपने पति को सच्चा प्रेम करती होगी ? मेरी समझ मे तो भारतवर्ष से दूर, अपनी जाति, अपने परिवार से दूर यह बेचारी लडकी अपनी भूलो के लिए अपने मन ही मन गल रही होगी। कोई उपाय अब शेष नही है, यह समझकर क्या वह अपने भाग्य से, अपनी परिस्थितियो से, अपने

वातावरण से समझौता करने को बाध्य नही हुई है ? क्या उसकी वाह्य शान्ति भीतरी अशान्ति, हाहाकार और ज्वाला को छिपाए नही है ? क्या आज भी यदि ससम्मान हिंदू-समाज, महाराष्ट्र-समाज, अपने परिवार मे यह भारतीय कन्या ले ली जाय, अपना ली जाय, तो उसकी वह इच्छुक, लालायित न होगी ?

खैर मुझे पूरी जानकारी हो जाने दो । रेखा जी के निकट आने का अवसर मुझे मिला है, कदाचित् भविष्य मे भी अवसर मिले । मै इन दोनो का बारीकी से अध्ययन करूँगा । स्वय या अपनी पत्नी से घनिष्टता बढवा कर उसके द्वारा रेखा जी के मस्तिष्क और हृदय की बाते पढने-जानने का प्रयत्न करूँगा । क्या मै रेखा जी के लिए कुछ नही कर सकता ? क्या सदा के लिए उसके भाग्य पर मुहर लग गई, सील लग चुकी ? कदाचित् ऐसा ही है । कितनी दर्दनाक परिस्थिति है कितनी मार्मिक, कितनी दयनीय ।

हाय री जवानी, हाय री भावनाओ की शक्ति और तीव्र प्रवाह, हाय रे प्रेम और रोमास के स्वाद, हाय रे हमारी लाचारियाँ, हाय रे हमारे माता-पिता, गुरुजनो और समाज की अनुदारता, अज्ञानता, मूर्खता तथा कट्टरता, हाय रे स्त्री का विश्वासपूर्ण, ममता और स्नेह से पूर्ण, बलिदान का इच्छुक, कष्ट-सहिष्णु हृदय ! हाय री निर्बल नारी, प्रेम की प्रतिमूर्ति अबला, हाय री वह छुटी उच्छृखलता, पश्चिमीय विचारो और रीति-रिवाजो की अंधा-धुध नकल, अध-श्रद्धा और कुप्रभाव, हाय रे हमारा परिस्थितियो तथा वातावरण पर हाथ न होना, बस न होना और हमारे भगवान की माया और भाग्य का खेल !

जाने क्या-क्या सोचता घर पहुँचा । अपनी पत्नी से सदा की भाँति सब कुछ बताया । मेरा तो हृदय ही रोता रहा पर मेरी पत्नी का हृदय और आँखे दोनो रोई । मैंने अपनी पत्नी से कहा "इस रेखा के लिए तुम्हे भी बहुत कुछ बलिदान करना होगा, मेरा साथ देना होगा ।"

रेखा जी पर थी। एक ओर अपने वकीलो के पास रेखा जी के पिता जी, नाना जी, देशपाडेय और उनके दीगर हमदर्द बैठे थे। दूसरी ओर अपने वकीलो के साथ वालिद, मैं और हम लोगो के हमदर्द बैठे थे। कई मिल-मालिक भी बैठे थे। कान दी आवाज सुनाई नही देती थी। अपने पास के लोगो से लोग कानाफूसी कर रहे थे। सब के चेहरो पर एक जोश, एक बेचैनी थी।

"मैजिस्ट्रेट ने मेज पर हाथ पटक कर सबसे खामोश रहने को कहा। एकदम सन्नाटा हो गया। पहले कचहरी की 'फारमेलटीज' (बाधे-बँधाए नियमो-सम्बन्धी शिष्टाचार) पूरी की गई। रेखा जी से गगा जी, भगवान या कुरान की कसम खाने को कहा गया कि वह जो छ कहेगो सच-सच कहेगी। उन्होने गगा जी की कमम खाई। फिर उन्हे अपना बयान देने का हुक्म हुआ।

"रेखा जी के उठते ही सब की निगाहे उन पर उठ गई। सब के दिलो की धडकने बढ गई क्योकि यह अब मेरा और रेखा का मामला न रह कर हिंदू-मुसलमान का मसला हो गया था। मेरे, मेरे हमदर्दो और रेखा जी के हमदर्दो के कान उनका बयान सुनने को तैयार हो गए।

"रेखा जी ने कहना शुरू किया जिसका खुलासा और मुख्तसर मैं आपको बताऊँगा। उन्होने कहा "कोर्ट के समक्ष अब तक की समस्त घटनाये सक्षेप मे किन्तु पूर्ण सत्य रूप मे कहूँगी।"

"इसके बाद रेखा जी ने मेरे तथा उनके कालिज के परिचय होने से घनिष्ट होने तक का वर्णन करते हुए कहा था:—

'मै स्वीकार करती हूँ कि यह ज्ञान और अनुभव मुझे बाद मे हुआ कि स्त्री ने जहा जरा सी ढील पुरुष को दी कि वह धीरे-धीरे अपने को आत्म-समर्पण करने के लिए बाध्य होती जाती है, मन से या बेमन से। कुछ सकोच, कुछ मित्रता का ध्यान, कुछ अपनी निजी कमजोरियाँ—स्त्री मकडी के जाले मे मक्खी की नरह फँसती जाती है। मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ।"

"उन्होने मेरे साथ पहली बार हमबिस्तर होने तक की सारी बाते बताते हुए, और मेरे माफी माँगने और उस वहशियाना हरकत के लिए मेरे शर्मिंदा होने की बात बताते हुए कोर्ट के सामने बयान दिया था —

'पर मै तो लुट चुकी थी। मेरे भाग्य का तो सदा-सर्वदा को फैसला हो चुका था। मै तुरत वहाँ से अकेले चल दी। मार्ग भर मै यही सोचती आई—इसे आप चाहे तो मेरा 'सेंटीमेंट' (भावना) कह सकते है या मेरी मान्यता और विश्वास पर आस्था कि 'सेक्स' (यौन संबंध) तो अब किसी दूसरे पुरुष को 'एलाऊ' (स्वीकृति देना) कर ही नही सकती अन्यथा मै कुलटा हो जाऊँगी। अत विवाह तो मै इनके अतिरिक्त अब और किसी से कर ही नही सकती। और यह हिंदू यदि नही होते तो अपना हिंदू-धर्म बचाने के लिए मै सदा अविवाहित रहूँगी।

"कोर्ट के सामने अपनी लज्जा और सकोच को तिलाजलि दे कर मै अक्षर-अक्षर सत्य बता रही हूँ, लिखित बयान पढ रही हूँ। अत: कोर्ट यह समझ ले कि मेरा कौमार्य मेरी इच्छा के विरुद्ध, जबरदस्ती पशुबल के आधार पर भग किया गया। मै सदा अविवाहित रहती और रहना चाहती थी किन्तु मेरे माता-पिता तथा अन्य सम्बधी मेरी भावनाओ को नही समझे, नही समझते है। खैर इस बारे मै बाद मे कहूँगी।

"हाँ तो मैं रास्ते भर सोचती आई कि अहमद से अब मैं कभी भी नही मिलूँ-बोलूँगी यह भी सोचा कि यह केवल मन समझाने की बात है। कौमार्य यदि भग न भी होता तो भी जब निरतर मै चुम्बित-आलिगिन होती हूँ तो शरीर ओर मन की पवित्रता कहाँ रही; मेरा स्त्रीत्व, मेरा सतीत्व, मेरी पवित्रता—चाहे जो नाम दिया जाय—तो उसी दिन ही समाप्त होगई थी जिस दिन इन्होने मेरा प्रथम चुम्बन लिया था। पर खैर चाहे जो हो अहमद से मै सम्पर्क न रखूँगी। कम से कम उनसे एकान्त में नही मिलूँगी। पर मै अपना यह निश्चय आगे चलकर निभा न सकी।'"

"इसके बाद अपने जज़बात के बारे मे रोशनी डालते हुए उन्होने कहा था —

'पर धीरे-धीरे उन पर से क्रोध और घृणा मेरी हटने लगी। यह अवश्य सोचा करती कि जब भी कोई ईसाई लडकी का किसी हिंदू या मुसलमान से प्रेम हो जाता है तो निन्नानबे प्रतिशत हिंदू या मुसलिम पुरुष को ही इसाई धर्म अपनाना पडता है, ईसाई लडकी कभी हिंदू या मुसलमान नही बनती। वैसे ही जब भी किसी मुसलमान से हिंदू लडकी का प्रेम हो जाता है तो मुसलमान पुरुष कभी भी हिंदू नही बनता। हिंदू लडकी को ही मुसलमान होना पडता है। हिंदू लडकी और ईसाई लडकी मे कितना अतर है। मैं ईसाई लडकी की दृढता की तारीफ करती हूँ और निश्चय करती हूँ कि मैं भी हिंदू ही रहूँगी। पर मेरे तजुरबे ने मुझे बताया कि ईसाई लडकी की पीठ के पीछे उसका ईसाई-समाज होता है जो उसको दृढ रहने मे प्रोत्साहन देता है और हिंदू लडकी का बैरी अनुदार हिंदू-समाज ही होता है जो उसे मुसलमान हो जाने को बाध्य करता है। हिंदुओ की एक सबसे बडी कमजोरी यह है कि यदि कोई ईसाई या मुसलमान हिंदू हो जाय तो उसे किस नियम तथा हिसाब से ब्राह्मण, क्षत्री, शूद्र किस वर्ण या जाति मे रखेगे, यह निश्चित नही है। यह वर्ण-व्यवस्था, यह जात-पॉत सब से बडी बाधा हिंदू-समाज मे है। इसका जितना शीघ्र लोप हो जाय, उतना ही हिंदू-धर्म के लिए अच्छा है। कभी वर्ण-व्यवस्था, जात-पाँत की उपयोगिता रही होगी, उस युग की आवश्यकता के अनुसार, पर आज के युग की माँग, आवश्यकता, जात-पॉत के समाप्त कर देने मे ही है, यदि हम हिंदू-धर्म की रक्षा करना चाहते है। जैसे अछूतो की एक अलग ही जाति है, वैसे ही अन्य धर्मो से परिवर्तित हिंदू बने व्यक्तियो को भी हिंदू-समाज अछूतो की भॉति समझता है, उनकी एक अलग ही जाति जैसे बन जाती है, तो फिर किस आकर्षण से कोई अन्य धर्मावलम्बी हिंदू-धर्म स्वीकार करे। उस परिवर्तित हिंदू की लडकी

का विवाह किस जाति मे किया जाय ? कोई भी हिंदू उस परिवर्तित हिंदू की लडकी को लेने को तैयार नही होता। काश यह भेद-भाव, यह ऊँच-नीच, यह जात-पाँत हिंदुओ मे भी ईसाइयो, मुसलमानो, बौद्धो आदि की भाँति न होती तो आज हिंदू-समाज काफी उन्नति पर होता।

"खैर मै अपने विषय पर आती हूँ। मेरे हृदय मे उनके प्रति प्रेम तो था ही। मैंने उनसे कहा 'आप प्रायश्चित करना चाहते है ? तो आप प्रायश्चित-स्वरूप हिंदू हो जाइए।

"उन्होने कहा कि इसके अतिरिक्त आप जो भी आज्ञा करेगी मै सिर-आँखो पर कबूल करूँगा। यह फिलहाल तो सभव नही है। जब तक मै मात-पिता के आश्रित हूँ और स्वय कमाने नही लगता। पर मैने आपको वचन दिया है कि इस प्रश्न पर गभीरतापूर्वक विचार करूँगा।

"यदि वह बिल्कुल साफ कह देते कि हिंदू नही ही हूंगा तो मे दूसरा रुख अखतियार करती पर वह तो गोल बात कह कर मुझे आशा की झलक भी दिखाते रहे, मुझे आश्वासन देते रहे कि गभीरतापूर्वक मेरी बात पर विचार करेगे। इससे मेरी आन्तरिक दशा सघर्षमय रहती है, अनिश्चतता की स्थिति मे है।"

फिर मेरे बीमार होने पर मुझे देखने आने से लेकर मेरी दूसरी बार की जबरदस्ती का जिक्र करते हुए उन्होने कहा था:—

"हाय रे प्रेम करने वाली स्त्री का हृदय! स्त्री मे कोमलता और ममत्व अधिक होता है। वह रोगी, पीडित, दुखी की ओर विशेष रूप से दयार्द्र हो उठती है, उसका हृदय सहानुभूति, त्याग और सेवा के लिए स्वत प्रेरित हो जाता है। मेरी बुद्धि और हृदय मे संघर्ष हुआ और मेरे प्रेम ने विजय पाई। अब तक मैं अपने मन को समझा चुकी थी कि अपनी प्रेमिका को अकेले मे पाकर वह अपने को रोक नही सके तो उनकी कमजोरी हो सकती है नीचता नही। आखिर तो हम सब कमजोर मनुष्य है। प्रेम तो करते ही है वह मुझे।

"मुझे अंग्रेजी के प्रसिद्ध कवि शैली की एक कविता बार-बार याद आती जिसमे उन्होने कहा है कि जब दो मे प्रेम होता है तो, स्त्री हो या पुरुष, जो अधिक हृदय का कमजोर तथा भावुक होता है, वही कष्ट उठाता है। प्रेम का मारा निर्बल व्यक्ति प्रेम के दुष्परिणाम को भोगता है। और प्राय: स्त्री ही इस मामले मे घाटे मे रहती है। वही अधिक ममतामयी होती है। खैर यही कहूँगी कि मेरी अक्ल पत्थर पड गए थे जो मैने इनकी बात पर विश्वास किया और इनके यहाँ इन्हे देखने गई।"

दूसरी बार मैंने अपना वादा तोडा उसके आगे-पीछे की बाते बताते हुए रेखा जी ने कहा था —

"मै लुटी-पिटी व्याकुल अपने घर लौटी। मार्ग भर सोचती रही कि खैर जो हुआ सो हुआ। स्त्री शारीरिक बल मे कमजोर होती है पुरुष से। अत उसे कभी भी अधिक स्वतत्र, उच्छृखल तथा पुरुष के अधिक निकट और एकात मे नही होना चाहिए, यदि वह अपनी शारीरिक पवित्रता को खतरे मे नही डालना चाहती। मैने फिर सोचा कि अधिक पापिनी मै आज के कार्य से नही हुई हूँ। जैसे एक बार हमबिस्तर हुई वैसे दो बार। इसमे अधिक क्या बिगडा। पर भगवान न करे कही मै 'प्रेगनेट' (गर्भवती) हो जाऊँ तो सदा-सर्वदा को बेबस हो जाऊँ। प्रकृति की दी इस कमजोरी के फल को केवल स्त्री ही को भोगना पडता है, इसीसे तो 'सेक्स' के मामले मे स्त्रियाँ अधिक डरती है। पुरुषो को यदि ऐसा भय होता तो कदाचित् वे भी डरते। उन्हे क्या अपने काम से काम—अब भोगेगी तो स्त्रियाँ गर्भ का झंझट भोगेगी, पुरुष इस कार्य के बाद फिर निर्द्वन्द है।"

आगे के वाकयात बताते हुए उन्होने देशपाडेय के बारे मे कहा था:—

"यदि उसी समय मेरे विरोध करने पर भी बलपूर्वक मेरा जबरदस्ती विवाह देशपाडेय से कर दिया जाता—जैसा आगे चल कर किया गया, जो मैं आगे बताऊँगी—तो आज मुझे इस कोर्ट मे खडे होने की नौबत न आती। पर मैंने कहा न कि मुझे विश्वास हो गया है कि किसी

अदृश्य शक्ति का हमारे कार्यों पर नियन्त्रण है, हम पर नियन्त्रण है, और उसकी इच्छा के अनुसार ही समस्त घटनाओ और परिस्थितियों का जन्म होता है।

"हाँ तो देशपाडेय की दो-तीन शर्ते थी। यदि गर्भपात न भी हो तो बच्चा होने पर या तो उसे अनाथालय आदि मे दे दिया जाय या किसी और को दे दिया जाय और उसे हिंदू की भाँति पाला पोसा जाय। मेरी माता जी उसे किसी तदबीर से मरवा डालने के पक्ष मे थी। पर मार डालने या मरवा देने और अनाथालय या किसी और को देने को मै किसी हालत मे तैयार न थी, और यह मैने साफ कह दिया था। दूसरी शर्त उनकी यह थी कि विवाह के पूर्व या बाद, जैसा भी उचित समझा जाय, किलेदार पर मुकदमा चलाया अवश्य जाय और वास्तविकता को आवश्यकता पडे तो ऐसे तोडा-मरोडा, घटाया-बढाया जाय कि किलेदार को जेल भिजवाया जा सके, भले ही कितनी ही बदनामी क्यो न हो, ताकि मुसलमानो को एक शिक्षा दी जाय। वह मामले को छिपाने के पक्ष मे न थे। क्योकि तब अपराधी बच जायगा और यवनो को ऐसे काम करने को और प्रोत्साहन मिलेगा। इस झूठे सकोच और लज्जा को वह हिंदुओ की बुज़दिली, कायरता कहते थे। मै इसके सख्त खिलाफ़ थी। मेरा कहना था कि ऐसे तो थोडे लोग ही जानते है, ऐसे कचहरी मे मुझे सबकी घृणापूर्ण आँखे देखना पडेंगी और मुझे लेकर समाज मे काफ़ी थू-थू होगी और कीचड उछलेगी। पर होनी बलवान है। कोर्ट मे मुझे आना ही पडा।"

तीसरी बार मेरे यहाँ आने के पहले और आ जाने और मेरे साथ जबरदस्ती किए हुए विवाह के सिलसिले मे सब वाकयात बताते हुए रेखा जी ने कहा था:—

"मै इस चीज की स्वप्न मे भी कल्पना नही कर सकती थी कि यह जाल मेरे लिए पहले से तैयार है और किलेदार मुझे फँसाने को, धोखा देने को कमर कसे है। मेरा दुर्भाग्य! मैं इनके साथ इनके घर गई।

'पहले तो मुझे काफी समझाया-बुझाया गया, फिर डराया-धमकाया गया, और बाद मे जबरदस्ती मेरा निकाह इनसे करा दिया गया। चूँकि निकाह स्त्री-पुरुष दोनो मुसलमान हो तभी सभव होता है, अतः मुझे मुसलमान पहले बनाने का ढोग रचा गया, कलमा पढा गया—एकतरफा डिग्री थी क्योकि मैंने कोई भाग लिया ही नही उसमे, न कुछ कहा, न पढा, न किया। जिसे जो जबरदस्ती करना-कराना था वह उसने किया। इस तरह से मैं मुसलमान हूँ ही नही। इन लोगों ने अपने दिल को तसल्ली देने के बाद कि मैं मुसलमान बन गई, फिर ऐसे ही जबरदस्ती निकाह की रस्म पूरी हुई। मेरे हाथ-पैर लोग पकडे थे, मेरा मुँह दाबे थे। रस्म इस तरह से पूरी हुई। दो मोलवी बुला लिए गए थे। मैंने कहा न कि पहले ही से इस जाल की तैयारी थी। निकाह की शर्ते कुछ होती है—मियाँ और बीबी की रजामदी—मेरी रजामदी थी ही नही। फिर मेरे माँ-बाप या सरक्षक को इस रस्म मे उपस्थित हो कर मेरी स्वीकृति लेना तथा मध्यस्थ बनना आवश्यक था। निकाह के समय वहाँ कौन था और होता भी क्यो और कैसे ? इससे न मै मुसलमान हुई हूँ और न मेरा जायज निकाह हुआ है। इन लोगो का कहना है कि निकाह के पहले मेरी रजामदी और मेरे माता-पिता आदि के मध्यस्थ होने की बात यह लोग ढक लेगे। मेरे कालिज की कुछ मेरी मुसलमान सहेलियों से यह काम ये लोग बाद मे करवा लेगे, कागज पर हस्ताक्षर करवा लेगे। जालसाजी तो है ही सब। पर इन लोगो का विचार था कि मैं मुसलमानी कानून को क्या जानूं, मै समझूँगी कि निकाह हो गया है ठीक और जायज़, और तब पटा कर बैठ रहूँगी। इन लोगो का ख्याल था कि मुकदमेबाजी की नौबत ही न आवे कदाचित्।

"पर मुझे बाद मे देशपाडेय जी से इन सब बातों के सम्बध में पूरा ज्ञान हुआ। कहना यही है कि मै इनके यहाँ क्या गई मेरा दुर्भाग्य ही मुझे वहाँ ले गया। इसके बाद मेरी बेबसी, मेरी पीडा, मेरे कलपने का अदाजा लगाया जा सकता है। मै रात भर रोई-तडपी और किलेदार

जी के साथ उनके कमरे मे जबरदस्ती रखी गई और यह समझा ही जा सकता है कि मजहब की रस्म के नाम पर इन्होने सोहागरात मनाई और मेरे शब्दो मे 'रेप' (बलात्कार) तीसरी बार किया। किसी को गैरकानूनी ढग से रोकने, बद करने का जुर्म भी इन लोगो ने किया और मेरे साथ बलात्कार भी। मेरे आँसू भी इन्हे मुझे हमबिस्तर करने से रोक नही सके।

"कोर्ट से मुझे कहना यही है कि जो कुछ इस बार और सेक्स-सम्बधी दो बार पूर्व घटनाये हुई वे सब जबरदस्ती पशुबल से और मेरी इच्छा के विरुद्ध हुई।

"रात भर मै रोई और रात भर मैने सोचा और फिर इस फेसले पर पहुँची कि जबरदस्ती सही, मर्जी के खिलाफ सही, पर विवाह तो मेरा हो ही चुका है इनसे—हिन्दू-कानून मे भी तो पैशाचिक-विवाह का नाम आता है। मेरे शरीर का उपभोग भी यह कर ही चुके है। इनसे ही बच्चे को मै पेट मे लिए हूँ। अब मेरा हाथ-पैर मारना बेकार है। जो होना था वह हो चुका। अब इनकी पत्नी ही रहूँगी। इनकी सेवा करके, इन्हे प्रसन्न करके देखूँगी कि इन्हे हिदू बना सकती हूँ या नही—यद्यपि यह केवल मृगतृष्णा है। विवाह हो जाने के बाद यह भला क्यो इस्लाम धर्म छोडने लगे। पर अपनी तक़दीर के आगे चुपचाप सिर झुकाने का मैंने निश्चय कर लिया।"

कोर्ट का 'एटमासफियर' (वातावरण) बहुत 'टेंस' (उत्तेजनापूर्ण) था। हिंदू लोग क्रोध और अपमान से दाँत पीस रहे थे। हम लोग मुकदमा हारेगे इसमे तो कोई शक था ही नही, अब तो यह भी तय था कि मुझे, मेरे वालिद तथा वालिदा को सजा भी मिल सकती है। बिल्कुल गैरकानूनी कई काम हम लोगो ने किए थे।

"खैर रेखा जी ने फिर कहना जारी रखा—"किलेदार जी ने मुझसे कहा था आज तो मेरा-आपका निकाह हो गया। निकाह हो जाय, इसके लिए हर जा और बेजा तरकीब का मैंने सहारा लिया। अगर आप मेरा

पूरा यकीन करे तो मै कहूँ कि मै आपसे सच्ची मोहब्बत करता था और आपको चाहे जैसे हो अपनी बीवी बनाना चाहता था क्योंकि यह नामुमकिन था कि मैं बिना आपके सुखी रह सकता । आज से अगर कभी आपसे झूठ बोलूँ या आप को धोखा दूं तो खुदा का कहर मुझ पर बरपा हो, मुझ पर कयायत फटे । अब आप मेरे बस मे है । पर मै वादा करता हूँ कि कानूनन हक होने पर भी 'सेक्स' बिना आपकी मर्जी के न होगा—आप मेरी बात की सच्चाई देख लीजिएगा । गोकि आप खुद ही अब मुझे इस बात के लिए नही रोकेगी ।

"मैं हिंदू तो नही बनूँगा, यह तयशुदा है, मगर मै आपको यकीन दिलाता हूँ कि मै अपने माँ-बाप से भी लोहा लूँगा अगर उन्होने आप को मुसलमानी रिवाज मानने पर मजबूर किया, मसलन पहनाव-उढाव-रहन-सहन, खान-पान या नमाज आदि पढने की पाबदी । आप चाहेगी तो अपनी रामायण, गीता वगैरह मजहबी किताबे पढ सकती है । आप चाहेगी तो अलग पूजा-पाठ भी हिंदू ढंग से कर सकती है । मै आपको मुकम्मिल अजादी दूँगा । मै एक सच्चा आशिक था, और अब से एक सच्चा, नेक और ईमानदार खाविंद हूँगा । अब चाहे तो अपने को हिंदू ही मन मे समझे । मजहबी कोई सख्ती या पाबंदी आप पर लागू न होगी । आप खुशी से हम लोगो के त्योहार ईद,बकरीद, मोहर्रम वगैरह मे शरीक हो सकती है मगर आपको होली, दशहरा, दिवाली वगैरह सब हिंदू-त्योहार मनाने की छूट रहेगी ।

"मजहब के मामले मे और अपने लडके की खुशी के ख्याल से वालिद-वालिदा ने आपके साथ सख्ती का बर्ताव किया और धोखा भी दिया मगर ऐसा उन्हे खास मसलहतन ही करना पडा था । अब आप देखेगी कि वे निहायत नेक, दिल के पाक-साफ, शरीफ और जिम्मेदार बलदैन है । वे आपको आँख की पुतली की तरह रखेगे —हाँ अगर आपने भागने की कोशिश नही की तो ।"

"अभी हम लोग बातचीत कर ही रहे थे कि पुलिस ने हम दोनो

को इनके घर से प्रात· गिरफ्तार कर लिया। जब सायकाल तक मै अपने घर वापस न लौटी थी तो मेरे सभी हितैषी पूर्ण रूप से निश्चित-मत थे कि सिवा अहमद के यहाँ होने के अलावा मैं और कही नही हूँगी। उसके बाद बहुत कुछ हाल तो प्राय लोग जानते ही है क्योकि पत्र-पत्रिकाओ इस सम्बन्ध मे पर्याप्त छपा है। पिता जी मुझे जमानत पर छुड़ा ले गए। मुझे घर ले जाने पर बेहद मारा-पीटा गया और जब मैने जबरदस्ती निकाह वाली बात बता दी तो सब ने अपने सिर पीट लिए। देशपाडेय जी ने कहा 'निकाह नाजायज है इसमे कानून कभी तुम्हे किलेदार की बीबी न मानेगा।'

"माँ-बाप, नाना-नानी, मामा-मामी, आदि की सलाह से देशपाडेय तुरत मुझसे विवाह करने को प्रस्तुत हो गए। स्वय उनका भी यही विचार था कि मेरा किलेदार मे सदा को सम्बध समाप्त करन को केवल यही उपाय शेष है। अत तनिक भी समय खोना या देशपांडेय मे विवाह स्थगित रखना हानिप्रद हो सकता है। सब कुछ जान कर भी बलिदान की भावना से प्रेरित होकर, हिंदू-स्त्री को मुसलमान होने से बचाने के लिए देशपाडेय जी मुझसे तुरत विवाह करने को प्रस्तुत और सहमत हो गए। मेरे लाख रोने-धोने, सिर पीटने और यह कहने पर भी कि, जब मैं एक की पत्नी हो चुकी हूँ तो दूसरे की पत्नी कैसे बन सकती हूँ ?, 'ऐसे तो मेरा एक ही से शारीरिक सम्पर्क था अब यदि दूसरे पुरुष से होगा तो मै कुलटा कहलाऊँगी, वेश्या कहलाऊँगी,' 'मैं कसम खाती हूँ भगवान की, धर्म की, अपनी कि अगर मुझे परेशान न किया जायगा तो मैं किलेदार के पास जाने, वहाँ भागकर जाने का प्रयत्न नही करूँगी 'आदि, पर मेरी किसी ने भी बात नही सुनी, मेरा विश्वास किसी ने नही किया।

"जैसे जबरदस्ती पशुबल से मेरी इच्छा के विरुद्ध निकाह किया गया था, वैसे ही दूसरा विवाह भी उतनी ही जबरदस्ती और पशुबल से किया गया। विवाह की धार्मिक-विधियो तथा पूजा-पाठ मे मैने स्वय

कोई भाग स्वतः नही लिया, सब काम मुझसे जबरदस्ती करवाये गए या मेरी ओर से स्वयं पडित आदि ने किए। अत. विधिवत् और कानूनन हिंदू-विवाह भी मेरा देशपाडेय जी से नही हुआ। अगर जबरदस्ती और मेरी मर्जी के खिलाफ होने से प्रथम विवाह नाजायज है, गैरकानूनी है तो उतना ही दूसरा—मुझे केवल यही कहना है।'

"यह कह कर रेखा जी कुछ रुकी। उनकी ओर के लोगो के चेहरे कुछ गुस्सा, कुछ परेशानी और कुछ नफरत से भरे थे। हम लोगो के ऊपर ही नही, रेखा जी पर भी उन लोगो को गुस्सा था। कोर्ट मे 'पिन-ड्राप साइलेस' (पूर्ण सन्नाटा) थी। लोग कानाफूसी कर रहे थे कि इतना दिलचस्प और पेचीदा केस इसके पहले इस कोर्ट मे पहले शायद ही आया हो। आखिर यह लडकी चाहती क्या है।

"फिर रेखा जी ने विवाह के बाद देशपाडेय जी के साथ पहली रात की बातो का जिक्र किया। अपनी अस्मत बचाने की तरकीब और देशपाडेय जी के आत्म-नियत्रण की तारीफ करते हुए उन्होने कहा —

"और इस पुरुष ने संयम से काम लिया। विवाह के बाद कई बार यह मेरे साथ अकेले रात मे रहे पर इन्होने 'सेक्स' के लिए प्रयत्न नही किया। इस तरह से किलेदार जी से ही केवल मेरा 'सेक्स' रहा है। चुम्बन-आलिगन के आगे देशपाडेय जी बढे ही नही। इनके सयम, चरित्र, बलिदान की भावना और सद्-विचारो से मैं बहुत प्रभावित हुई।

"हो सकता है मै इनकी पत्नी बाद मे बनी रहती। पर मेरे भाग्य को यह मजूर न था। मै बम्बई से बाहर भेज दी गई। दूसरो की भावनाओ को पढने मे, जानने मे लोग कितनी गलती करते है और फिर कैसे उल्टे-पुल्टे काम करते है।

"देशपाडेय जी आर० एस० एस० के कार्यकर्त्ता है। बम्बई छोड कर मेरे पास रहने को यह तैयार कैसे होते क्योकि अपने जीवन को यह आर० एस० एस० को अर्पित कर चुके थे। और बम्बई मे मुझे

रखना उचित नही समझा गया। मानव-प्रकृति को देशपाडेय जी ने नही समझा। मै हाड-मास की स्त्री हूँ, मेरे हृदय मे भावनाये है, मै मशीन नही हूँ। इन्हे कुछ दिन मुझे अपने साथ रखना था, या रहना था। इन्होने मुझसे कहा "मै बीच-बीच मे तुमसे मिल जाया करूँगा। अपने साथ रख कर मैं अभी खतरा नही उठाना चाहता। आर० एम० एस० के काम के अलावा उस मुसलमान-परिवार पर मुकदमा भी दायर कर दिया गया है और मुकदमे के सिलसिले मे भी मुझे वहाँ रहना है।"

"देशपाडेय जी का भी दोष नही है। वह बेचारे भी अपनी परिस्थितियो के बस मे थे। जैसा होने को होता है वैसी ही परिस्थितिया ताना-बाना बुनती जाती है।

"देशपाडेय मुझे किलेदार के विरुद्ध झूठा पढाया-सिखाया बयान देने पर जोर देते रहे, जब और यदि उसकी नौबत कभी आवे। मै झूठ बयान देने को तैयार न थी। पर उनका बर्त्ताव मेरे साथ अच्छा था।

"पर मेरी माँ का बर्त्ताव मेरे साथ अत्यन्त क्रूर, क्षोभ उत्पन्न करनेवाला और दुखदाई था। मैं नजरबद तो थी ही। वह बात-बात मे हर समय मारपीट, गाली-गलौज, शिकवा-शिकायत करती रहती। हर समय मुझे कोचती-भोकती और कहने-न कहने वाली बाते करती और कहती। हर चीज की एक सीमा होती है। सहन करने की भी एक सीमा होती है। जो हो चुका है वह यदि वह भूल जाती तो कदाचित् मुझे फिर अपने कैदखाने से न भागना पडता।"

"इसके बाद रेखा जी ने पूरे विस्तार के साथ माँ के बर्त्ताव और उस वक्त के अपने खयालात और जजबात को कोर्ट के सामने बयान किया। आप्टे जी! मुझे अपनी मोहब्बत की कहानी का एक-एक लफ्ज याद है। इसीसे मैंने आपको इतना खुलासा करके बताया है। इस बताने मे बहुत से वाकयात को एक तरह से मुझे दोहराना पड़ा है। पर मैंने जान-बूझ कर ऐसा किया है क्योकि मैं चाहता था जो भी बयान कोर्ट मे रेखा जी ने दिया था वह हूबहू मैं आपको बता सकूँ।

"आप यकीन करे कि रेखा जी को बीबी की सूरत मे फिर से पाने के बाद आप पहले इसान हैं जिनसे मैंने यह सब खोल कर बताया है। बाते करने मे वक्त का अदाजा नही लगा। अब तो आप ऊब गए होगे।"

मैने कहा "किलेदार साहब बिलकुल नही ! चाहे जितनी रात हो जाय कोर्ट मे दिया रेखा जी का पूरा बयान आपसे सुन लेने के पूर्व मै आपको यहाँ से जाने न दूंगा। आप यही भोजन न कर ले। हा, अब आप आगे कहे।"

किलेदार ने कहा "खाना पूछने के लिए शुक्रिया। खाना तो घर पर ही खाऊंगा। पर ठीक है कोर्ट का पूरा बयान खत्म करके मैं जाऊँगा। इसके माने यह है कि आप पूरी दिलचस्पी ले रहे है। और अब ज्यादा मुझे कहना भी नही है।

"खैर, रेखा जी ने बताया—"उन अत्याचारो से ऊब कर मै वहा से भागने की फिक्र मे थी और मैंने तय कर लिया था कि मैं अपनी खुशी से किलेदार जी के पास रहूँगी। माँ-बाप मुझसे कह चुके है कि यदि तूने भागने का प्रयत्न किया तो मुझे ज़िदा गाड दिया जायगा या ज़हर देकर मार डाला जायगा।

"मैं जानती हूँ कि जिंदगी भर मेरी माँ मुझे ऐसे ही कोचेगी-भोकेगी। मेरे जीवन को नरक बना देंगी। देशपाँडेय जी कर्त्तव्य के नाते मेरे ऊपर दया, करुणा करेगे, पर वैसा सच्चा-प्रेम जैसा मुझे किलेदार से मिला है इनसे प्राप्त न होगा। वहाँ मैं बदिनी के रूप मे रहूँगी, असम्मानपूर्ण जीवन व्यतीत करना पड़ेगा, मेरे जीवन मे कोई रस न रहेगा। मेरे मनबहलाव, मेरी दिलबस्तगी का कोई साधन वहाँ नही होगा। जब कि किलेदार जी के पास मुझे सम्मान, प्रेम और प्रसन्नता मिलेगी। किलेदार के यहाँ मैं आजाद रहूँगी, सुख-भोग के साधन मुझे यहाँ प्राप्त होगे।

"यही सब सोच-समझ कर मैं एक दिन अवसर पाकर वहा से भागी

थी। अच्छा ही हुआ कि मै विक्टोरिया-टर्मिनस पर पकड ली गई। नही तो मैं सीधे किलेदार के ही पास जाती और तब मानी हुई बात थी कि एहतियात के लिए मुकदमे के दौरान मे उनके वालिद मुझे कही बाहर भेज कर छिपा देते। पर इसके लिए मै तैयार होकर आयी थी।

"हिंदू लोग अपनी स्त्रियो को एक गलती करने पर भी क्षमा करना नहीं चाहते। पुरुषो को सैकडो गलतियाँ करने की छूट है। वे अनुदार विचारों के हैं। वे समझते है कि हम धर्मात्मा है और अपने हिंदू-धर्म की रक्षा कर रहे है पर हिंदू-धर्म का नाश ऐसे ही नासमझ और कट्टर-पथी करते है जैसे मेरे माँ-बाप। मेरे नाना और देशपाडेय से लोग ही सच्चे हिंदू है और हिंदू-धर्म की रक्षा कर सकते है। खैर इन बातो से यहाँ क्या मतलब है। मुझे केवल यही कहना है कि मेरे मुसलमान होने का कारण यदि कोई होगा तो वह केवल मेरी माता होगी। उनका मुझ पर किया अत्याचार, घृणा होगी।

"पिता जी के साथ इस बार मैने जाना स्वीकार नही किया क्योकि मुझे अपनी जान का खतरा है। यह लोग मुझे मार डालेगे। और यदि इसमे सफलता न मिली तो इस सीमा तक मुझे पीडा और कष्ट देगे, मारे-पीटेगे कि मुझे स्वय आत्महत्या करने को बाध्य होना पड़ेगा। इस लिए कोर्ट से मैं साफ-साफ कह देना चाहती हूँ कि मैं बालिग हूँ और अपने ऊपर मुझे अधिकार है। मैं कभी अपने पिता जी, नाना जी, या देशपाडेय जी के यहाँ जाने को तैयार नही हूँ। क्योकि तीनो के यहाँ जाने के अर्थ है कि पिता जी-माता जी मुझे छोडेगे नही। मै किसी के भी आश्वासन पर उन तीनो के यहाँ नही जाऊँगी, न और कही। मै अपनी खुशी से किलेदार जी यहाँ और उनके पास जाना और रहना चाहती हूँ। अब निकाह कानूनन ठीक हो या न हो मै अपने को उनकी पत्नी मान चुकी हूँ। यदि देशपाडेय जी से मेरा यौन-सबध हो जाता और मेरी बात न मान कर वह ऐसा कर ही लेते तब दूसरी सूरत होती। तब अपनी तकदीर को ठोक कर मै उनके साथ ही कदाचित्

रहती चाहे जितना माता-पिता मुझे कष्ट देते । पर अब दूसरी बात है । देशपाडेय जी या मेरे माता-पिता कहेगे कि मेरा देशपांडेय जी से विधिवत् बिवाह हुआ है, तो यह झूठ बात है । यह मैं पहले ही कह चुकी हूँ ।

"मैं पुलिस—प्रोटेक्शन' (पुलिस द्वारा सुरक्षा और सरक्षण) चाहती हूँ क्योकि किलेदार जी के यहाँ जाने मे लोग बाधा डाल सकते है। इसमे अधिक मुझे कुछ नही कहना है ।"

"अब बयान का करीब-करीब खात्मा था। जब खुद औरत ही अपनी मर्जी से मेरे घर आने को रजामद थी, तब 'मियाँ-बीबी राजी क्या करेगे काजी' वाली बात हुई । मुकदमे मे अब जान ही क्या रह गई थी । अब वकीलो मे क्या-क्या बहसे हुई , जिरह हुई, दोनो पार्टियो के लोगो ने क्या-क्या कोशिशे की, इनका जिक्र बेसूद भी है और इस वक्त तो उसे मुल्तवी रखा ही जाय । ऐसा ही आपको शौक होगा तो फिर कभी आपको बताऊँगा ।

"मुख्तसर यह है कि बमुश्किल तमाम वालिद की तमाम कोशिशो के बाद रेखा जी की जमानत वगैरह हम लोगो के ज़रिये हुई और रेखा जी आखिर मे मेरे घर गई और नेक बीबी की तरह रहने लगी। मुकदमा काफी दिन फिर नही चल सका। रेखा जी के बयान और उनके मेरे यहाँ रहने के बाद मुकदमे मे जान ही नही रह गई थी । थोडे मे कहना यह है कि दोनो ही मुकदमे खत्म हो गए और न किसी को जुर्माना हुआ न कैद, न और कुछ । मगर हिंदू-मुसलिम-टेंशन (विरोध की भावना) बहुत बढ गया । पर थोडे दिनो मे ऊपरी तौर से वह भी दब गया गोकि अदर ही अदर आग सुलगती रही । एक बात कह कर आज की गुफ्तगू खत्म करता हूँ । मेरी और रेखा जी की जान के दुश्मन आर० एस० एस० वाले हो गए और मेरा बम्बई मे रहना उन लोगो ने दुश्वार कर दिया । मुझे हर वक्त अपनी मौत का डर रहने लगा कि कही मौका पाकर ये लोग मुझे कत्ल न कर दे ।

मेरी वजह से रेखा जी भी परेशान रहने लगी। मगर आज यही तक। आज आपका बहुत, बेशकीमती वक्त मैंने लिया। अब इजाजत दीजिए।"

किलेदार के चले जाने के पश्चात् मेरी पत्नी बैठके मे आई और बोली "मैने छिप कर एक-एक शब्द किलेदार का सुना है।"

: ९ :

अगले दिन शनिवार को वादे के अनुसार मै दफ्तर से छुट्टी पाने के बाद किलेदार के यहाँ पहुँचा। परन्तु वह अभी तक दफ्तर से न आए थे। मेरे आवाज देने पर रेखा जी ने झाँका और मुझे देख कर प्रसन्नता और लज्जा-सकोच के एक साथ जो भाव उनके चेहर पर आए वे मेरी दृष्टि से छिप न सके। उन्होने कहा "वह अभी आए नही है आते ही होगे। आप जब तक आकर अदर बैठें।

मुझे अकेले बठने मे कुछ सकोच हुआ यद्यपि किलेदार स्वयं वैसा करने को कह चुके थे। मैने कहा "मैं अभी दस-पन्द्रह मिनट मे आ जाऊँगा, जब तक बाहर इधर-उधर टहलता हूँ।"

रेखा जी ने आग्रहपूर्वक कहा "यह कैसे हो सकता है? आप सकोचवश भीतर नही आना चाहते। वह नही सही, परतु मै तो हूँ। आप तो भाई बन चुके है फिर यह व्यर्थ सकोच कैसा? चलिए अदर।"

और कुछ सकुचाता हुआ मैं अदर गया और ड्राइंग-रूम के एक कोच पर बैठ गया। पहली चीज जिस पर मैंने विशेष ध्यान दिया वह थी रेखा जी का पूरा महाराष्ट्रीय हिन्दुआना सधवा का पहनावा-उढावा।

वह महाराष्ट्र ढग से धोती मे लाँग बाँधे थी। माथे मे बिंदी, माँग में सेंदुर का हल्की लकीर सी थी। नाक मे कील, कान मे टाप्स तथा हाथ मे चूडियाँ थी।

यद्यपि किलेदार जी दो-सौ-ढाई सौ मासिक ही लगभग पाते होंगे, पर वह टिपटाप रहते थे और उनका ड्राइगरूम अँग्रेजी ढग से सजा था। यह इस बात का प्रमाण था कि ये दोनो पति-पत्नी सफाई-पसद, करीने के है, और इनका 'टेस्ट' (रुचि) अच्छा और कलात्मक है।

रेखा जी ने छोटी टेबुल पर सिगरट का डिब्बा, दियासलाई और ऐश-ट्रे रखते हुए कहा "आप मुझे दो मिनट का समय दीजिए। मै आपके लिए पान ले आऊँ।"

मैने कहा "कोई विशेष आवश्यकता पान की नही है।"

रेखा जी ने कोई उत्तर नही दिया पर वह भीतर चली गई। उनका पुत्र ड्राइगरूम मे ही बैठा खिलौने खेल रहा था। मैने उसे गोद मे ले लिया। उसने पहले तो मुझसे छूटने का प्रयत्न किया पर जब मैने अपना फाउटेनपेन, मनीबेग और ताली का गुच्छा दिया तो वह मेरी गोद मे ही खेलता रहा। और मै उसे प्यार करता रहा। मै सोच रहा था ये बच्चे कितने भोले, दूध से निर्मल और निष्कपट तथा भगवान के स्वरूप होते है। कितना भोला बच्चा है। इन्हे ही परिवार तथा समाज वाले जहर भरी बाते सिखा कर, बता कर ताअस्सुबी और कट्टरपथी बना देंगे। इस बच्चे मे हिदू और मुसलमान दोनो ही का रुधिर है। पर यह अपनी माता की भावनाओ का ध्यान नही रखेगा, अपने पिता ही के मार्ग पर जायगा। पर अपने पिता के ही स्वभाव पर जाय और उदार विचारो का इसाफपसद मुसलमान भी रहे तब तक दमगनीमत है। पर अपने पिता से अपने जन्म के पूर्व की समस्त घटनाये सुन कर भी यह हिदुओ का शत्रु नही होगा, यह कौन कह सकता है।

जिस प्रकार रेखा जी के सम्बध मे किलेदार जी से बाते सुन कर मेरा रुधिर भीतर ही भीतर उबाल खाता है, वैसे ही क्या इसका खून

भी उबाल नही खायेगा ।अन्तर इतना ही होगा की मुझे हिंदू-हित का ध्यान है और इसे मुस्लिम-हित का ध्यान होगा ।

यह सब सोच ही रहा था कि रेखा जी एक तश्तरी मे पान का सब सामान रखे हुए आई । महाराष्ट्र मे उत्तरी-भारत की भाँति लगी-लगाई पान की गिलौरी देने का रिवाज नही है, वरन् सब सामान मे पूर्ण तश्तरी से प्रत्येक मनुष्य अपने लिए स्वयं पान लगा लेता है । पर रेखा जी ने स्वय पान लगा कर मुझे दे दिए। इसके बाद एक-दो मिनट तक कमरे मे सन्नाटा रहा । न मेरी समझ मे आता था न उनकी समझ मे कि क्या और कैसे बोले । पर यह सन्नाटा तो, यह गुपचुप रहना तो अशोभनीय सा था, इससे मैंने कुछ न कुछ बोलने का प्रयत्न किया । यह निश्चय था कि मै न बोलता तो सभवतः रेखा जी ही शान्ति भग करती और कुछ ऐसे ही व्यर्थ के प्रश्न मुझसे करती कि आपको किसी और वस्तु की आवश्यकता है या आपका चित्त तो प्रसन्न है, आदि ?

मैंने कहा "मै यदि आप को बहिन जी या मान ले रेखा जी कहूँ तो आपको कोई आपत्ति तो नही होगी, आप बुरा तो नही मानेगी ?"

"इसमे बुरा मानने की क्या बात होगी । वरन् अपना पुराना रेखा नाम सुन कर मुझे अत्यन्त हर्ष और सतोष होगा, क्योंकि वर्षो से यह नाम मैंने नही सुना है । और जैसे अपना यह नाम ही मै भूल गई थी ।" वह भावना-प्रधान हो गई थी और उनकी पलके कुछ गीली हो गई थी ।

"रेखा जी ! आपके सम्बध मे किलेदार साहब मुझे पिछले कई दिनो से बता रहे है । और आपका गत-जीवन—अर्थात् आपके बी० ए० प्रीवियस के विद्यार्थी-जीवन से लेकर आपके कोर्ट तक के दिए हुए बयान तक के विषय मे उन्होने विस्तार से मुझे बताया है । सम्भवत उन्होने आपसे यह बताया भी हो ।"

रेखा जी का चेहरा लज्जा से लाल हो गया । सभव है कुछ ग्लनि,

कुछ लज्जा या सकोच भी उन्हे हुआ हो कि मै हिंदू हूँ और उनके गत-जीवन से मुझे मानसिक कष्ट या क्षोभ हुआ हो। सिर नीचा कर के उन्होने केवल इतना कहा "मुझे ज्ञात है। यह मुझसे कहते थे कि थोड़ा-बहुत आपको बताया है पर यहाँ तक इन्होने बताया है विस्तार से, यह मुझे आज आपने बताया।"

मैने कहा "अच्छा रेखा जी! एक बात सच बताइयेगा! आप को किलेदार जी का ऐसा करना अच्छा तो नही लगा होगा ?"

कुछ देर वह चुप रही। सिर नीचा किए कुछ सोचती रही। फिर बोली "बुरा तो खैर नही लगा। लगता भी क्यो, क्योकि आप उनके मित्र हे। आपसे कहने का उन्हे अधिकार है। पर‥ पर ‥।"

"पर क्या, बोलिये न!"

कुछ देर वह बोली नही। कदाचित् अपनी लज्जा और सकोच को दूर करने मे उन्होने कुछ बल लगाया हो, साहस अपने हृदय मे भरा हो। फिर बोली "पर ‥आपने सच कहने को कहा है ‥‥‥ पर मुझे कुछ आत्मग्लानि अवश्य हुई थी। मैने सोचा था कि आपने मुझे न जाने कैसी स्त्री समझा हो। कदाचित् आपकी दृष्टि मे मै बहुत नीचे गिर गई हूँ! और ‥आप्टे भाई साहब! अब मुझे क्षमा कर दे, आगे मै क्या कहूँ!"

"बहिन रेखा जी! क्या आप अपने इस बडे भाई का विश्वास करेगी ? हो सकता है दो-चार ही वर्ष आपसे बडा हूँ। हो सकता हे साल-छै महीने बडा हूँ, या इतना ही छोटा भी हो सकता हूँ, पर मेरा अनुमान है कि मै बडा ही हूँ। कम से कम मुझे यही मान लेने दीजिए। यदि मै आपसे दिल खोल कर बाते करूँ तो आप बुरा तो नही मानेगी ? मै अभी आपसे परिचित नही हूँ ठीक से, न आप मुझसे। और किलेदार जी से भी अभी मेरी कितनी जानकारी (ज्ञान, घनिष्टता) है। और अभी तो आपकी पूरी जीवनी सुन भी नही पाया हूँ। क्या आप चाहती है कि मै आपके जीवन से परिचित हो सकूँ या नही

चाहती हैं ? न चाहती हो तो बता दे। मै प्रतिज्ञा करता हूँ कि आप-का नाम भी वह नही जान पावेगे और किसी बहाने से मै उन्हे कथा सी कहने से रोक दूँगा—हाँ अगर वह जबरदस्ती सुनाने पर उतारू ही न हो गए।"

"आप मेरे बडे भाई है आज से यह सदा-सर्वदा को निश्चित हो गया। आप पहले महाराष्ट्र सज्जन है जिनसे मैने इतना निकट का परि-चय पाया है। इधर तीन-चार वर्षो मे। यह मेरे पूर्वजन्म का पुण्य है, उस पुण्य का फल है। मै आपका विश्वास नही करूँगी तो जिसका करूँगी। मै आपका अपने से अधिक विश्वास अब करती हूँ और करूँगी। पर बडे भाई आप बने है तो अपनी छोटी बहिन को एक भीख दीजिए। देगे न ? पर पहले आप के प्रश्नो के उत्तर दे दूँ। आप मुझसे खुले दिल से बाते करेंगे तो बुरा क्यो मनूँगी, वरन् आपसे प्रार्थना है कि आज से मुझसे खुले दिल ही से बातें करे। भाई साहब! मेरा विश्वास है जैसे बेसहारा समुद्र मे डूबने वाले को कोई नाव दिख जाय और वह उस पर चढ कर अपने जीवन को सुरक्षित समझ सके, आपका मेरे या हम-लोगो के जीवन मे प्रवेश मुझे ऐसा ही सहारा है, बल है। काश मै अपने हृदय की भावनाओ को अपको दिखा पाती! आप उनसे मेरे विषय मे सब कुछ सुनिये, अवश्य सुनिये। आप मुझे अधिक से अधिक जाने, निकट से समझे, यह मेरी हार्दिक इच्छा है। पर भगवान से प्रार्थना है कि आप मुझे समझने मे कही भ्रम या गलतफहमी मे न पड जायँ। मेरा जीवन है भी ऐसी ही पेचीदगी से भरा। पर एक बात सच बता-इये! आपको मेरे हाथ की छुई चीजे खाने मे परहेज तो नही है ? मुझें ठेस न लगे इससे बेमन से खा-पी लेते है। परहेज हो तो बतादे मैं भविष्य मे ध्यान रखूँगी कि ऐसा यथासभव न हो। आखिर मै मुसलमान हूँ।"

"नही, मेरी बहिन, नही! तुम मुसलमान हो या चाहे जो कुछ हो, पर मै तुम्हे, क्षमा करे, आपको हिंदू से अधिक पवित्र समझता हूँ।

मैं आपके साथ खा सकता हूँ, आपका जूठा खा सकता हूँ। मै किसी से भी परहेज कर सकता हूँ पर आपसे नही। मैं सदा को आपका भ्रम मिटा देना चाहता हूँ। मैं बडे भाई के नाते जो आज्ञा दूँगा पालन करेगी ? प्रतिज्ञा कीजिए पहले ! यह आपके कहने की आवश्यकता नही है कि 'यदि उचित हुई, मानने योग्य हुई,' क्योकि यदि कोई ऐसी बात मैंने आपसे कही जो मानने योग्य न हो या आपको सकोच हो उसे मानने मे, तो फिर बडे भाई का पवित्र सम्बध ही कहाँ रहा ? बोलिए, पहले इसका उतर दे।"

तीव्र भावनाओ के प्रवाह मे हम दोनो बह रहे थे। रेखा जी के आँसू बराबर बह रहे थे। पहले तो उन्होने उसे पोछने, छिपाने का का प्रयत्न किया था पर अब उन्होने वह प्रयत्न छोड दिया और अपने निकलते आँसू मुझे देख लेने दिए। काफी देर वह चुप रही। फिर शान्ति-पूर्ण वाणी मे कहा "अच्छा मै प्रतिज्ञा करती हूँ। आपकी आज्ञाओ का पालन करने का प्रयत्न करूँगी। 'प्रयत्न' इसलिए कहती हूँ' कि सभव है इच्छा रखते हुए भी पालन न कर सकूँ। पर मेरी वाणी के पीछे जो सत्यता है आप उसे समझे। पर आप मुझे 'आप' नही कह पायेगे। बडे भाई छोटी बहिन को 'आप' नही कहते।"

मैंने कहा "मुझे अत्यन्त संतोष हुआ बहिन ! 'तुम' ही सही। मै सदा को तुम्हारा भ्रम और सकोच मिटा देना चाहता हूँ। इस पान के बीडे को आप आधा काट ले।" यह कह कर मैने उन्हे एक पान का बीडा दिया।

पान का बीडा हाथ मे ले तो उन्होंने लिया पर मेरा मशा आखिर क्या है यह वह नही समझ सकी। उन्होने जिज्ञासापूर्ण नेत्रो से मुझे देखते हुए पूछा "यह आप क्यो चाहते है ?"

"आपने आज्ञापालन की प्रतिज्ञा की है। प्रत्येक आज्ञा देने के पूर्व मुझे 'इक्सप्लेनेशन' (व्याख्या) देना पडेगी, यह शर्त नही है। जो कहता हूँ करिए।"

मुझे देखते हुए, कुछ परेशान सी हुई उन्होने धीरे से कुछ टुकडा उस गिलौरी से काट लिया। मैंने कहा "इसे इस तश्तरी मे रख दें।

"पर यह तो जूठा है।"

"आप अच्छी बहिन नही है। ठीक से आज्ञा-पालन नही करती हे। लाइये" कहकर मैंने उनके हाथ से एक प्रकार से बीडा छीन सा लिया और तुरत उसे खा गया। भावनाओ की तीव्रता मे अकसर जो काम हो जाते है उन्हे बाद मे सोचकर आश्चर्य होता है।

"अरे—अरे—यह आप क्या करते है ? यह आपने क्या किया ? यह तो आपने ठीक नही किया। यह तो 'अनहाईजीनिक' (अस्वास्थ्य-प्रद) भी है।"

"यह आपका सदा को भ्रम मिटाने के लिए मैने किया हे। यो भी हम लोग जो अँग्रेजी पढ लिखे है छुआ-छूत और खान-पान मे परहेज नही मानते। कम से कम एक साथ खाने पीने मे आज के पढे-लिखे हिंदू-मुसलमान मे कोई परहेज किसी को नही है। मै तो पहले भी परहेज नही मानता था। फिर भी आप तो मेरी बहिन हे। मै अगर आपको हिंदू समझूँ तो आपको कोई आपत्ति नही होगी ?"

एक मुरझाई हुई मुस्कराहट उनके चेहरे पर आई—वह मुस्कान जिसे देखकर दया को भी दया आ जाय। बोली "यदि आपको इसी से प्रसन्नता होती हो तो मुझे आपत्ति नही है। इन्हे आपत्ति हो तो नही कह सकती। पर हूँ तो मुसलमान ही।"

"क्या सच्चे हृदय से ? वास्तविक हृदय से ? यह मेरी आपकी निजी बाते है। किलेदार जी को बीच मे न घसीटे।"

रेखा जी ने उत्तर नही दिया। केवल अपने आँसू पोछ लिए। बाज दफे 'मौन' का उत्तर 'वाणी' के उत्तर से कही अधिक शक्तिपूर्ण, प्रभावशाली होता है।

मैने कहा "मुझे उत्तर मिल गया। क्या आपको मेरे साथ भोजन करने मे आपत्ति होगी ?"

"आपका तो जूठा भी खाने मे मुझे परहेज नही होगा। जब आप आज तुले ही हुए है ऐसी हृदय हिला देने वाली बाते करने पर तो फिर आज सदा के लिए ऐसी बाते समाप्त ही हो जाँय।" कह कर उन्होने एक और पान का बीडा मुझे पकडा दिया। मैं उनके मतलब को समझ गया। मैने आधा पान कुतर कर उन्हे दे दिया और उन्होने उसे खा लिया।

मैने कहा "चलिए एक झगड़ा तो आज निपट गया। आप मेरी हिंदू बहिन है—छोटी बहिन—यह भी सदा को निश्चित हो गया। आप मेरी सदा आज्ञा का पालन करेगी बिना प्रश्न किए, यह भी तय हो गया ? एक प्रश्न और—मै आज आपको हर प्रकार से बाँध लूँगा—मै जो भी पूछूँगा उसका उत्तर आप सही-सही देगी ?—ऐसे प्रश्न जो कि बडा भाई छोटी बहिन से कर सकता है।"

"मेरे उत्तर न देने पर भी आप तक मेरा उत्तर पहुँच गया है। खैर तो उत्तर तो मै सही-सही ही दूँगी। पर जिस बात का उत्तर न देना चाहूँगा उसके बारे मे आपसे साफ-साफ कह दूँगी कि इसका उतर नही दूँगी या बाद मे दूँगी या फिलहाल देना सभव नही है। किन्तु जिनके भी उत्तर दूँगी वे सत्य उत्तर ही होगे। पर मैंने आपसे भीख माँगी थी ?"

"भीख नही रेखा बहिन !—रेखा जी कहने पर आप बुरा नही मानेगी—आपका मुझपर अधिकार है, उस अधिकार के बल पर जो कहना हो कहे। मुझसे सब कुछ माँगने का हक है आपको। यदि सभव हुआ तो यथाशक्ति मै आपकी इच्छा पूर्ण करूँगा। बोलिए।"

"आपसे यह भीख माँगती हूँ कि आप मुझे कभी भूलेगे नही, यहा रहे या मेरे दुर्भाग्य से दूर चले जाँय। या मै यहाँ रहूँ या मेरा भाग्य मुझे आपसे दूर कर दे। और दूसरी बात यह कि आप आवश्यकता पड़ने पर मेरा उचित मार्ग-प्रदर्शन करेगे, मेरी सहायता करेगे, मुझे सहयोग देगे, उचित परामर्श देगे। और मुझे 'रेखा जी' नही 'रेखा' पुकारें, 'आप' नही 'तुम'।"

"मेरी रेखा बहिन! मैं अपनी रेखा बहिन की ही सौगंध खाकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं आपको कभी नही भूलूँगा। पर यह तो आपका बचपन है जो आपने ऐसी चीज भीख मे माँगी। आपको भीख माँगना भी नही आई। यदि प्रतिज्ञा न भी करूँ तो क्या यह मेरे या आपके किसी हितैषी के लिए सभव है कि आपको भूल जाय। खैर मै यहा रहूँ या न रहूँ, आपको पत्र लिखूँ या न लिखूँ—और कदाचित् पत्र लिखने के मामले मे मै अत्याधिक आलसी हूँ, और प्रत्येक मित्र और सम्बन्धी मेरे इस दोष पर अत्याधिक अप्रसन्न है—आपका मुझे कोई समाचार मिले या न मिले पर मैं आपको कभी नही भूलूँगा, भूल सकता ही नही। और आप अपने भाई का विश्वास करे कि मै आपका प्रत्येक प्रकार से सहयोग, सहायता, परामर्श, अपनी समझ मे उचित मार्ग-प्रदर्शन का यथाशक्ति प्रयत्न करूँगा। मै आपके किसी भी काम आ सकूँ—अपनी रेखा बहिन के काम!"

अत्यन्त भावनापूर्ण होकर मैने रेखा जी का हाथ कोमलता से पकड लिया और प्रसन्नतापूर्वक उसने अपना हाथ मेरे हाथो मे रहने दिया। मैंने कहा "एक भाई ने अपनी बहिन का हाथ पकडा है, वह अपनी बहिन का हाथ कभी नही छोडेगा। रेखा जी! · · अच्छा नही रेखा! आप · · नही · ··· तुम · · धीरे-धीरे यह गलतीनही होगी—राखी का त्योहार आ रहा है, तब तो तुम मेरे हाथ मे राखी बाँधोगी ही। आज ही क्यो न मेरे हाथ मे राखी बाध कर सदा के लिए तुम मुझे बाँध लो, राखीबंद भाई बना लो। तुम कहोगी मौलो है, पर कोई भी तागा मौली नही है, यदि भावनाओ से बाँधा गया है। जाओ अभी-अभी कोई चिट, तागा जो मिले ले आओ। मुझे देखो नहीं, जाओ।"

रेखा जी उठ गई। वह कुछ देर बाद एक पीला तागा, एक प्याले मे दही और कुछ चावल लाई। बोली "कुछ कच्चा सूत घर मे पडा था। उसे हल्दी से रँग लाई हूँ।"

उसने मेरे दाहिने हाथ की कलाई मे वह तागा बाँध दिया और उसका एक आँसू टप से मेरी बाँह पर गिरा। मैंने कहा "बहिन इन्हे पोछना नही, इन अमूल्य मोतियो को मुझे देखने दो। यह तुम्हारा सबसे बडा उपहार मेरे लिए है—प्रेम के अश्रु, स्नेह के अश्रु।"

रेखा ने आँसू पोछे नही, वह उसकी आँखो मे झलमलाते रहे। उसने मेरे माथे मे दही का टीका लगा कर उस पर चावल लगा दिए। और फिर तुरत झुक कर मेरे पैरो को छू कर अपने हाथ अपने माथे पर लगा लिए, मै हाँ-हाँ करता ही रहा। मैने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा "मेरा आशीर्वाद लो—भगवान करे तुम्हे आत्मिक शान्ति और सतोष प्राप्त हो। भगवान करे तुम्हारा मानसिक क्षोभ और हाहाकार, यदि हो, तो मिट जाय। तुम्हे कुछ भेंट देना है। पर वह मै क़िलेदार जी के द्वारा या उनकी मौजूदगी मे दूँगा। मुझे तुमसे बहुत बाते करना है। पर किलेदार साहब नही आए। उन्होने तो शीघ्र ही आ जाने की प्रतिज्ञा की थी। आज तो शनिवार है, और भी शीघ्र दफ्तर से आ जाना चाहिए था।"

"कुछ आश्चर्य तो मुझे भी है, विशेष कर जब वह आपको चाय पर घर पर निमन्त्रित कर चुके हो। हो सकता है किमी आवश्यक काम मे फँस गए हो।

"या यह तो नही है कि उन्होने जानबूझ कर देर की हो, मुझको-आपको अवसर दिया हो कि हमलोग अकेले मे भी मिल सके—अपना विश्वास मुझे दिखाने। को वह आपके अकेलेपन, एकाकीपन को दूर करने मे प्रयत्नशील है, मुझे ऐसा आभास होता है। आप सच बताओ वह आपको सच्चे हृदय से प्यार करते है? वह नेक और ईमानदार पति है? मै उन पर अविश्वास नही करता। पर तो भी आपके मुँह से सुनना चाहता हूँ।"

"हो सकता है जानबूझ कर भी उन्होने मुझे आपसे एकात मे मिलने का अवसर दिया हो। और यह अच्छा ही हुआ। मुझे एक सगे

भाई से अधिक समर्थ, योग्य, भला और स्नेही भाई आज से मिल गया। यह बात तो निश्चय है कि वह सच्चे हृदय से मुझे प्रेम करते है। वह एक नेक और ईमानदार पति है। मेरी भावनाओ, मेरे सुखो का वह प्रत्येक क्षण ध्यान रखते है। मेरी जो इच्छा होती है, मै जो कहती हूँ वह पूरा करते है। केवल अपने मजहब के बारे मे, धार्मिक विश्वासो के बारे मे दृढ है, सख्त है, कठोर है, और उसमे वह मेरी क्या, किसी की नही सुनते। परन्तु वह उदार विचारो के है, हृदय के साफ और पाक है। शराब, जुआ, तमाशबीनी, दुश्चरित्रता, फिजूलखर्ची कुछ उनमे नही है। एक प्रकार से मै उनसे सतुष्ट हूँ।"

"क्या आप अपने वर्त्तमान जीवन से तुष्ट हैं? इनकी पत्नी बन कर क्या आपको किसी प्रकार का असतोष, ग्लानि—मानसिक या आत्मिक ग्लानि—नही है अब? देखिए सच-सच बताने को आप वचन-बद्ध हैं।"

रेखा जी बोली नही। मैने फिर जोर दिया उत्तर देने को। काफी देर बाद वह बोली—कई बार बोलते-बोलते वह रुक चुकी थी—"इसका उत्तर अभी मत पूछिये।" और वह यह कह कर तेजी से उठ कर चली गई। अपनी जोर की रुलाई रोकना उनके लिए असंभव हो गया था। मुझे बहुत कुछ उत्तर इससे मिल गया था। कुछ देर बाद वह मुँह धो कर आई। अपने को उन्होने सयमित कर लिया था। मुझसे कहा "अपनी भाभी से मिलने, उनके शीघ्र दर्शन करने की मेरी प्रबल इच्छा है। क्या वह मुझसे मिलने मे अपना अपमान तो नही अनुभव करेंगी या मुझे घृणा की दृष्टि से नही देखेंगी? यदि मिलेगी भी, तो भी न वह मेरे हाथ का छुआ खा सकती है, न अपने बर्तनो को मुझे छूने देगी—वह हिंदू हैं और मैं मुसलमान।" रेखा जी की वाणी काँप रही थी। ४-५ वर्ष बाद एक हिंदू से उन्हे बातचीत करने का अवसर मिला था।

मैने कहा "तो मेरे प्रश्न का उत्तर स्थगित रहा। उत्तर मैं आपसे

लूँगा ही। पर यदि आपको कहने मे विशेष कष्ट या सकोच या ग्लानि हो तो बिल्कुल बाध्य नही करूँगा। आप तो मेरी पत्नी की ननँद है। वह स्वय आपसे मिलने को उत्सुक है। कल रविवार है अत सभवतः कल उनसे आपसे भेंट होगी ही। पर वह आपकी भाँति शिक्षित नही है। एक सीधी-सादी गँवार सी औरत है। आपका सा 'टेस्ट' (रुचि) उसमे कहाँ। पर वह पतिव्रता है—आपकी ही तरह—इसमे कोई सन्देह नही। उन्हे पाकर मुझे अपने भाग्य पर गर्व है। जरा वह पूजा-पाठ अधिक करती है, पर आपको घृणा करे, अपना अपमान आपसे मिलने मे समझे, यह तो बिल्कुल असभव है, वरन् वह आपसे दिल खोल कर मिलेगी। उनमे मनुष्यता का अश पर्याप्त मात्रा मे है। पर हाँ छुआ-छूत के मामले मे वह तनिक पिछडे विचार की हो सकती है। हाँ एक बात आपको बता दूँ, क्या लाभ है छिपाने से। जो-जो मुझे आपके सम्बन्ध मे ज्ञात हुआ है वह मैने अक्षर-अक्षर उनसे बता दिया है। यह मैने बुरा किया है। है न? पर आप नही चाहेगी तो अब से नही कहूँगा। पर चाहता अवश्य हूँ कि आप रोक न लगावे।"

सभव है रेखा जी को कुछ यह सोचकर कष्ट हुआ हो कि एक समय मै महाराष्ट्र ब्राह्मण थी। आज मेरे हाथ का छुआ कोई हिंदू नही खायगा, मुझे अपने बर्तन छूने नही देगा। उन्होने कहा "आप जो न भी बताते तो भी मै जानती थी कि जब आपको मेरे बारे मे जानकारी है तो भाभी जी से अवश्य कहा होगा। आप उनसे सब कुछ कहते रहे। जब थोडा जानती ही है तो फिर पूरा ही जान जाने दे। पर यह बताइये कि मेरे बारे मे जानकर उन पर क्या प्रतिक्रिया हुई? मेरे बारे मे वह क्या कहती थी? मेरे बारे मे उनकी क्या सम्मति है?"

"इसका उत्तर स्थगित रहा। इस समय इतना ही कि आपके बारे मे सुन-सुन कर मैं काफी परेशान हुआ हूँ, मेरा दिल रोया है। और आपकी भाभी मुझसे अधिक परेशान हुई है और उनका दिल और

आँखे दोनो रोई है, और बहुत । पर यह बातें फिर कभी । एक घटे से अधिक मुझे ही हो गया होगा, अब मुझें जाने की आज्ञा दीजिए । हो सकता है कि वह किसी आवश्यक काम मे फँस गए हो ।"

"तो चाय पीकर जाइए ।"

"अब चाय रहने दीजिए ।"

"क्या यह आप सचमुच सोच सकते है कि मैं बिना नाश्ता कराए आपको जाने दे सकती हूँ ।"

"तो चाय-वाय का झझट न कीजिए । जो हो थोडा-बहुत ला दीजिए ।"

"अच्छा आधा घटा और प्रतीक्षा कर ले । आध घटे के बाद आपका मन हो तो चले जाइयेगा । मैं जब तक चाय बनाने जाती हूँ ।" यह कह कर ज्यो ही वह उठने को हुई जूते की आवाज सी आई और किलेदार जी की आवाज आई 'बेगम !'

कमरे मे आते ही मुझे देखकर बोले "भाईजान मुझे माफ कीजियेगा । लगता है आपको मेरा बहुत इतजार करना पडा । क्या बताऊँ एक ऐसे जरूरी काम मे फँस गया कि कोशिश करने के बावजूद और जल्दी आना मुमकिन नही हो सका । मै निहायत शर्मिन्दा हूँ । अरे बेगम ! कुछ इन्हे खिलाया-पिलाया भी ? कितनी देर आपको आए हुई ? पहले तो आपसे मुआफी का तलबगार हूँ ।"

रेखा जी ने कहा "लगभग एक घटा आपको आए हुआ । आप तो आते ही फौरन वापस जा रहे थे जब आपको पता चला कि आप अभी दफ्तर से नही आए है । पर मैंने आपकी प्रतीक्षा करने को रोक लिया । अब आप जाने ही वाले थे कि आप आ गए । आपके बिना आप्टे जी कुछ खाने को तैयार ही नही हुए तो मैं क्या करती ।"

किलेदार ने कहा "तुम बहुत समझदार हो बेगम ! अगर तुम इन्हे मेरी गैरहाजिरी मे चले जाने देती तो मैं तुम्हे कभी मुआफ न करता । और देखो खाने-पीने के मुआमले मे तुम इनकी सुना ही मत करो ।

तश्तरी मे सामने लाकर रख दो, खाँयगे कैसे नही, कोई मजाक है। भाई बने है और दोस्त बने है तो मुझे-तुम्हे कुछ हक भी हासिल हुए है। जाओ चाय-वाय कुछ लाओ जल्दी से।"

रेखा जी जाने को हुई तो मैंने कहा "जरा आप रुकिये। पहले मैं कुछ शिकायत आपकी कर लूँ तब आप जाइयेगा। देखिये किलेदार साहब! आपने राखीबद भाई के बारे मे हिस्ट्री मे सुना-पढा होगा—मसलन हुमायूँ को राखीबद भाई बनाने की बात। हमारे हिंदुओ के यहाँ राखी का एक त्योहार भी होता है, जिसे रक्षा-बधन कहते है, और जिसमे भाइयो की कलाइयो मे बहिने राखी बाँधती है।"

किलेदार ने कहा "हा-हा-बखूबी! आखिर मेरी बीबी हिंदू थी और मै कभी हिंदुस्तान का बाशिंदा था। मगर आपका मतलब?"

मैंने अपनी कलाई और माथा दिखाते हुए कहा "यह देखिए मेरी कलाई पर यह राखी मेरी बहिन ने बाँधी है। मुझे आज से बड़ा भाई, राखीबद भाई इन्होने सदा के लिए बना लिया है। यह देखिए मेरा माथा। इस पर इन्होने दही का टीका और चावल लगाये है। मैने इनसे पूछा है कि मै आपको रेखा बहिन कहूँ तो कोई हरज तो नही है? इन्होने आप पर इसका उत्तर छोड दिया है। हमारे यहाँ ऐसा रस्म होता है कि बहिन के राखी बाँधने पर भाई कुछ बहिन को देता है। इन्हे क्या दूँ यह मैं आपकी राय पर छोडता हूँ।"

किलेदार ने मुस्करा कर कहा "मैं आपको मुबारकबाद देता हूँ। बेगम! इस खुशी मे तुम्हे चाय नाश्ते के अलावा, अलग से मेरा मुँह मीठा कराना होगा। मगर पहले यह बताइए कि घटा भर किस ज़बान मे गुफ्तगू हुई है? और इन्हे देने के लिए मेरी राय माँगी है तो कोई खोटी इकन्नी-दुअन्नी हो इन्हे दे दीजिए। आप इन्हे रेखा जी कहना चाहते है तो अगर इन्हे एतराज़ न हो और आपको इसी मे खुशी हो तो खैर आपके लिए इतनी रियायत कर सकता हूं—'रेखा' ही सही। तो यह कहिए मेरी गैरहाजिरी मे आपको बहिन मिल गई, इन्हे भाई। घाटे मे

मै ही रहा। काश ! मुझे भी ऐसी ही कोई बहिन मिल जाती। पर मैं इतना खुश किस्मत कहाँ हूँ। हमीद को आपने जिस दिन से बचाया है हम दोनो ही .. ..।"

मुझे क्रोधपूर्ण नजरो से अपनी ओर देखने पर किलेदार ने अपना वाक्य पूरा नही किया। रेखा जी भी मुस्करा दी। मैंने कहा "मुँह आप अवश्य मीठा कीजिए। परन्तु मित्र के रिश्ते से आधी मिठाई मैं लड़-झगड कर आपसे बटा लूँगा। तो रेखा बहिन—मुझे यह कहने का अधिकार मिल गया है—पहले चाय के साथ वाली नाश्ते की मिठाई खत्म हो जाय तब बाद मे दूसरी मुँह मीठा करवाने वाली मिठाई लाइ-येगा। सयानपना आपको नही करने दूँगा। हम लोगो ने मराठी ही मे बातें की है, आप इत्मीनान रखें। और आपने मेरी छोटी बहिन की बहुत इज्जत की है खोटी इकन्नी-दुअन्नी देने की सलाह देकर। मै कल कोई तोहफा (भेट) जो इन्हे दूँगा उसमे आपने अगर एतराज किया तो मेरी आपकी लडाई हो जायगी। लडाई का इरादा हो तो कल के बजाय आज ही लड लीजिए। चलिए एक काम खत्म हो जाय। भगवान ने चाहा तो कल आपका घाटा पूरा कर दिया जायगा। आपके लिए ढूँढूँगा। कदाचित् कोई बहिन दस्तियाब (प्राप्त) हो सके। देर तो सच-मुच आपने बहुत लगाई।"

किलेदार ने कहा—"उसके लिए तो माफी माँग ही चुका हूँ। पर अगर आप चले गए होते तो उल्टे आपको माफी माँगना पडती और मुझे काफी सोचना पडता कि माफ करूँ या नही। मै तो शायद माफ न करता, हाँ बेगम अगर आपकी शिफारिश करती तो शायद मानना पड़ता। बीबी के सामने अपनी कमजोरी मानने से वह शेर हो जाती है—ऐसा बुजुर्गों ने कहा है। पर आप बेगम से ख़ुद पूछ लीजिए मैं इनसे कितना डरता हूँ।"

मैने कहा—"रेखा बहिन! आप जाइए चाय लाने, नही तो क़िले-दार साहब बहुत डर जायँगे।"

रेखा जी मुस्कराती हुई चली गई । उनके जाने के बाद किलेदार ने कहा "सालो के बाद आज मैने ठीक से और भरपूर मुस्कराहट बेग म के चेहरे पर देखी है । उनके चेहरे पर मसर्रत, सुकून, खुशी, इतमीनान आज मुझे दिखाई दिया है । मैं अजहद खुश हूँ । आपसे मिलने के बाद अगर यह अपने तीन-चार साल पहले की ख ुशमिजाजी, चुहल और चुस्ती-फुर्ती दस्तियाब कर सके तो मुझे बहुत ख ुशी हो, एक तरह की फिक्र से मैं छूट जाऊँ । मै हरचद कोशिश करता हूँ कि इन्हे ख ुश रखूँ पर इनकी तबियत गिरी-गिरी सी, बुझी-बुझी सी रहती है, शायद इस लिए कि अपने मुल्क, अपने रिश्तेदारो, अपने मजहब, अपने पिछले जान-पहचान वालो से हमेशा के लिए इनका ताअल्लुक छूट गया है । मेरा यह अदाजा ही अदाजा है । मैं पूछता हूँ तो कुछ सबब बताती भी तो नही है । यही कहती है कि 'कोई बात भी हो तब तो बताऊँ । तुम्हे मै परेशान ओर बीमार ही इसलिए दिखाई देती हूँ क्योकि तुम मुझे बेहद प्रेम करते हो ।' पर जब से यह मेरे साथ है मेरे आराम, मेरी सहूलियतो, मेरे जजबात का इतना खयाल रखती है, इस हद तक मुझे तस्कीनबक्श तरीको से, खिदमतो मे अपने नेक बीवी होने के सबूत देती है कि मै कभी-कभी तो यह सोचता हूँ कि ख ुदा न करे मेरी जिदगी मे ऐसा मौका आवे, पर अगर यह न रही तो मै क्या करूँगा, कैसे रहूँगा ?"

इधर-उधर की बातें होती रही । रेखा जी चाय और नाश्ता लाई । और चाय-नाश्ते के बाद जब मैं उठने सा लगा तो उन्होने कहा "थोडा और रुकना पडेगा, अभी आई ।"

वह भीतर चली गई और लगभग पाँच मिनट के बाद दो बडी तश्तरियो मे मिठाई और नमकीन आदि काफी तादाद मे रख कर लाई । बोली "यह मुँह मीठा करने का सामान है । अब तो मैंने सयान-पन नही किया ।"

मैंने कहा "आज का खाना तो ख ैर खत्म ही हुआ समझो, पर

इतना अधिक खाना कैसे सभव हो सकता है। किलेदार साहब ने तो केवल मज़ाक किया था।"

रेखा ने कहा "खाइए, नही तो बाद मे कहिएगा मुझे बहुत देर हो गई है। लाकर वापस ले जाने की मेरी आदत नही है।"

बहरहाल मुझे और किलेदार साहब को खाना पडा। और किलेदार के जोर देने पर रेखा जी ने भी कुछ खाया। हम सबने एक ही तश्तरी मे रखी मिठाई खाई।

खाने-पीने मे काफी देर हो चुकी थी। अतः मैं चलने को हुआ। किलेदार ने कहा "मै भी साथ चलता हूं। पैदल ही चलेगे। रास्ते मे बाते होती रहेगी।"

मैने उन्हे मना भी किया पर वह माने नही। और हम दोनो साइकिल हाथ मे लिए पैदल चल दिए।

: १० :

किलेदार जी ने आगे का हाल बताते हुए कहा "रेखा जी मेरे घर आ गई। उनकी हर तरह से खातिर की जाने लगी। वालिद-वालिदा ने उनके हर तरह के आराम का खयाल रखा। अपनी बेटी की तरह उन्हे चाहा। हर तरह के आराइश के सामान उनके लिए मुहैय्या किए गए। अपनी मोहब्बत से मैने उन्हे सराबोर कर दिया। घर मे हर एक का बर्त्ताव उनके साथ माकूल और मोहब्बताना था। शुरू मे उन्हे वह नए तौर-तरीके अपनाने मे, वह खाने-पीने के बदले हुए ढग को अख्तियार करने मे और नए साँचे मे अपने को ढालने में जरूर कुछ

दिक्कत परेशानी और मुमकिन है झुँझलाहट हुई हो। मगर उन्होने धीरे-धीरे अपने को उसका आदी बना लिया। उनकी जरूरतो, उनके 'टेस्ट' (रुचियो), उनके जजबात का पूरा ध्यान रखा जाता था जिसमे किसी तरह की गैरियत को महसूस करने का उन्हे मौका ही न मिले। शुरू मे हम लोगो ने मसलहतन ऐसा किया जिससे बेगम का मन यहाँ बहला रहे, लग जाय। उन्हे कोई काम करने न दिया जाता था, और न उसकी जरूरत ही थी। हम लोगो की माली-हालत अच्छी थी, नौकरो-नौकरानियो की इफरात थी। मै अपने बाप का अब इकलौता लड़का था, इसलिए मेरे वालदैन का प्यार बँटाने वाला कोई और न था। मेरे एक भाई और एक बहिन थी पर उसकी हाल ही मे मौत हो गई थी।

"यह कहने की जरूरत नही है कि अब उन्हे मुझसे कोई भी क्या उज्र होता, एतराज होता। मगर करीब उनका आठवाँ-नवाँ महीना था। इसलिए मै खुद एतहियात बर्तता था और बिना उनकी मर्जी के पत्ता तक न हिलता था।

"मैने आई० सी० एस० का इमतिहान दिया, पी० सी० एस० के भी 'कम्पटीशन' मे बैठा, मगर नाकामयाबी हुई। उसके बाद सेन्ट्रल गवर्नमेन्ट की कस्टम्स डिपार्टमेन्ट की नौकरी मे ले लिया गया। और करीब एक साल के बम्बई ही मे नौकरी करता रहा। इसी दरमियान मे रेखा जी से इसी बच्चे की पैदायश हुई—आपके भतीजे हमीद की। वालिद-वालिदा को कितनी खुशी हुई पोता पाकर, यह बताना मुमकिन नही है। सौर घर पर ही हुई। अच्छी से अच्छी लेडी-डाक्टर की खिदयात मुहैय्या की गई, हर तरह की मेडिकल सहूलियते दस्तयाब थी। मेरी खुशी का भी अदाजा आप लगा सकते है। मै सिर्फ इसलिए ही खुश नही था कि यह मेरा बच्चा है, बल्कि इसलिए और भी था कि अगर बेगम मेरे यहाँ फिर वापस न आती तो कौन जाने इस मुसलमान बच्चे के साथ क्या होता, यह जिदा भी रहता या नही, और जिदा भी रहता तो कैसे और किस हालत मे।

"बेगम के हर आराम, सुख और सहूलियत का ख्याल रखा जाता था यह तो आपसे कह ही चुका हूँ, मगर तो भी वह उदास-उदास सी रहती, मुरझाई-मुरझाई सी रहती, खास कर अकेले मे। मेरी बाहो मे आकर मेरी मोहब्बत पाकर, मेरे साथ होने पर वह निहाल हो जाती, मगर कभी कभी ऐसा भी होता कि वह निहायत खुश है और बिना किसी बाहरी सबब के होते हुए भी वह कुछ उदास, गमगीन सी हो जाती न जाने किन खयालातो मे खो सी जाती।

"मै हदतुलइमकान सबब जानने की कोशिश करता, मगर वह कहती कि बच्चा होने के दिन बहुत करीब है, सभव नही वरन् निश्चय ही इसी कारण कदाचित् ऐसा होता है।

"मगर मेरा यह खयाल है कि बेगम को अपने वालदैन और अपने पिछले साथियो का खयाल कभी-कभी सताता होगा और ऐसा होना लाजमी भी था।

"पर बच्चा हो जाने के बाद यह बच्चे मे इस तरह से खो गई या उन्होंने गम गलत करने को, अपने को भुलाने को यह रवैया अखतियार किया हो। और फिर माँ की ममता थी ही।

"जब तक वह तालिब-इल्म थी तितली की तरह चचल, फिडकी की तरह उचकने-फुदकने वाली लडकी थी। वह निहायत खुशमिजाज, खुश दिल, हाजिरजवाब और हँसमुख थी। मगर जब से उन्हें हमल रहा, उनकी चँचलता खत्म हो गयी थी, सजीदगी ने उनकी खुशमिजाजी की जगह ले ली थी, वह खोई-खोई सी रहने लगी थी। और ऐसा होता भी क्यो नही। वही तो वक्त था जब उन पर आँधियाँ तेजी से गुजरी थी। मेरा खयाल था कि अपने को 'एडाप्ट' (वातावरण के अनुकूल ढालना) कर लेने के बाद, अपनी नई दुनियाँ मे अपने को ढाल लेने के बाद उनका हँसमुखपन, चचलता और बातूनीपन वापस लौट आयेगा। मगर मेरे साथ जब वह रहने लगी तब भी वह पहले सी रेखा नही हो पाईं।

"जरूर ही उन्हे यह खयाल उनकी खुशी और चंचलपन को दूर करने

का बायस होगा कि जबरदस्ती उनकी मर्जी के खिलाफ, उन्हे धोखा देकर हम-बिस्तर किया गया, निकाह किया गया, हिंदू मजहब छुडाया गया। मैं समझता था कि साल-दो-साल के बाद वह तब्दील हो जायँगी। आगे चलकर कुछ तो तब्दील वह जरूर हुई मगर उस सूरत मे नही, उस हद तक नही जितनी मै उम्मीद करता था, जैसा मै चाहता था।

"बच्चा हो जाने के बाद जरूर वह खुशखुर्रम और मुतमइन दिखाई देने लगी, मगर यह हालत चंद महीनो ही रही। हा चौबीस घटे अपने बच्चो मे वह खोई रहती और या फिर किताबे पढती रहती। मेरे साथ जब से वह रही तब से पढना ही उनका शग्ल था, मनबहलाव था। किताबे ही उनकी दोस्त थी। किताबो की मदद से ही वह गम गलत करती थी। मैने हर तरह की हिंदू, उर्दू, मराठी और अँग्रेजी की किताबे उनके लिए बराबर खरीदी। अच्छी-खासी उन्होने अपनी लाइब्रेरी कर ली थी।

"वह जरूरत से ज्यादा 'सेसटिव' (सवेदनशील) और 'सेंटीमेटल' (भावना-प्रधान) तो पहले ही से फितरतन थी। अपने तालिबइल्म होने के वक्त भी वह ऐसी ही थी। और जबसे हमल, निकाह ओर उसके आगे-पीछे के वाकयात गुजरे और वह मेरे यहा मुसलसल-सी रहने लगी तब से वह और 'सेंसटिव' और 'सेटीमेटल' हो गई। मेरी फितरत इसके बरखिलाफ थी—मै 'खाओ, पियो, मस्त रहो' वाले इसानो मे था। तो भी बेगम का दिल मेरी किसी हरकत से न दुख जाय इसका मै खयाल रखता था, उनके किसी 'सेटीमेट' को धक्का न लग जाय इसका मुझे हमेशा ध्यान रहता था।

"एक हिंदू ओरत को मैं ला सका हूँ इससे घर और बाहर के मुसलमान मुझसे खुश थे। और बेगम की इसी वजह से और भी खातिर-तवाजा होती थी क्योकि वह हिंदू थी, और मुसलमान हुई है इससे उन्हे रज न हो बल्कि खुशी हो, राहत हो।

'वालिद और वालिदा ने रेखा जी के मेरी बीबी की सूरत मे रहने

लगने के बाद मुझसे जल्द ही एक दिन कहा कि बहू का नाम हमें बदलना है। चुनाचे जोहरा बेगम के नाम से उन्हे वे लोग पुकारने लगे। रेखा जी को इससे सख्त छिपी तकलीफ हुई। मगर रोज-रोज एक ही बात होने पर आदमी उसका आदी हो जाता है, फिर पहले की भी तकलीफ उसे उसी बात से नही होती।

रेखा जी ने कहा "क्या अब यह भी आवश्यक है कि मेरा नाम भी बदल दिया जाय। क्या रेखा नाम कहने से कोई पाप आप लोगो को लगेगा।"

मैने कहा "खैर बजायखुद मै रेखा ही कह दिया करूँगा, पर वालदैन इसके लिए तयार न होगे।"

"मै कभी रेखा, कभी जोहरा कह कर उन्हे पुकारता, पर बेगम तो दोनो ही नाम के आगे लगा रहता। 'जोहरा बेगम' नाम सुनकर न जाने कैसा-कैसा उन्हे लगता था। उनकी शक्ल से, आँखो से उनके दिल की बात अयाँ होती। खैर यो ही लस्टम-पस्टम जिंदगी गुजरने लगी। शादी के बाद रेखा जी को अपने पूरे कब्जे मे कर लेने के बाद, मैने उनसे साफ बता दिया, "मुझसे हिंदू बनने को कहना बेकार ही नही हिमाकत भी है। मैने कहा जरूर था कि इस मसले पर गौर करूँगा, मगर यह सब तुम्हे खुश करने और तुम्हे जीतने और पाने के लिए था। मैने ख्वाब मे भी नही सोचा था कि मै कभी भी इस्लाम मजहब छोड़ूँगा। बुरा मत मानना, मै तुम्हे छोड सकता था अपना मज़हब नही।"

"इसके बाद बेगम मुझसे क्या कहती। अब तो वह फँस गई थी—वह ऐसा ही समझती।

"अब मै आपको घरेलू बातें तो बता चुका। अब दीगर बाहरी परेशानियाँ और बताना है। आर. एस. एस. वाले मेरी और मेरे वालिद की जिंदगी के दुश्मन हो गए थे। मेरी ज़िदगी उन लोगो ने दूभर कर दी थी। मुझे ऐसा लगता था कि कोई न कोई उनका आदमी मेरे पीछे लगा ही रहता है। कई बार मैने खुद सुना कि कोई किसी से कह

रहा है देख लो, पहचान लो, यही किलेदार मुसल्टा है जिसने हिंदू-स्त्री को भगाया है।"

"दो बार मुझे मौका पाकर कई आदमियो ने घेरने की भी कोशिश की। मानी हुई बात थी कि मैं काफी डरा हुआ था। मेरी जान का खतरा था। मुझे लगता था देशपाडेय ने मुझे खत्म कर देने की या कम से कम मेरी जिदगी दुश्वार कर देने की बात तय कर ली थी। मैं सब कुछ रेखा जी से और अपने वालदैन मे बताता रहता। रेखा जी कुछ भी मन मे क्यो न नाखुश हो मगर वह जानती थी कि आखिर मैं उनका खामिद हूँ और उन्हे मेरे ही साथ जिदगी की गाडी घसीटना है। मेरे लिए वह भी परेशान और फिक्रमद थी। मै आपसे कई बार कह चुका हूँ कि वह निहायत नेक और सच्ची बीबी है और उनकी इस खासियत, इस खूबी ने ही मुझे उनका गुलाम बना दिया है और मै उनकी ख्वाहिश और खुशी का हद भर खयाल करता हूँ।

"यह वह वक्त था जब हिन्दुस्तान और पाकिस्तान बनने की बात कॉग्रेस और मुसलिम-लीग ने मान ली थी और हिंदू-मुसलिम-'टैंशन' (सघर्ष-भाव) अपनी पूरी बुलदी पर था। मेरे वालिद ने भी यही मुनासिब समझा कि खामख्वाह क्यो अहमद की जान का खतरा मोल लिया जाय। कुछ दिनो के लिए अगर इसका तबादला बम्बई के बाहर करवा दिया जाय तो अच्छा होगा। चुनाचे उन्होने इसके लिए कोशिशे की।

"हिंदू-मुसलिम-झगडे भी हिंदुस्तान के बहुत से हिस्सो मे छोटे और बडे पैमाने पर बीच-बीच मे सुनाई पडते थे। खुद बम्बई मे हिंदू-मुसलमान झगडे कई बार हुए और आइदा होने के भी इमकानात थे। और अगर झगडे का आलम हुआ तो मुझे कत्ल कर देने का आर. एस. एस. वालो का मसूबा पूरा हो सकता है, इसमे शकोशुबहा की गुजाइश कहाँ थी। बाद मे चाहे जो कुछ होता। फिर चाहे मुसलमान सारे हिन्दुओ को ही काट डालते, मगर वालिद तो मुझे खो ही देते। खुद रेखा जी भी बम्बई के 'एटमासफियर' (माहौल) से घबरा गई थी। उनका

बहुत कुछ दूर हो गया, ऐसा मेरा ख्याल था। मगर यह मेरा ख्याल ही था। मुझे बम्बई से दिल्ली के लिए ट्रेन पर बैठने पर कुछ काली टोपियाँ दिखाई दी थी—आर० एस० एस० वाले अपनी काली टोपियो से जल्दी पहचान लिए जाते है। मगर कोई ध्यान, गौर मैने नही किया था। मगर आपको सुन कर ताअज्जुब होगा कि दिल्ली मे एक दिन मुझे देशपाडेय की झलक दिखाई दी। मैने देखा उसके साथ कई आर० एस० एस० के और भी आदमी है और वह उनसे मेरी तरफ इशारा कर रहा है।

"अब मेरी समझ मे आ गया कि किसी तरह से मेरी नौकरी के ट्रासफर की बात और मै फलाँ ट्रेन से बम्बई जा रहा हूँ यह उन्हे भी मालूम हो गया था। देशपाडेय रोज स्टेशन पर मँडराते होगे। और जिस दिन मै दिल्ली को रवाना हुआ उसी दिन वह भी दिल्ली आ गए होगे। तो मेरा पीछा यहाँ भी आर० एस० एस० वाले कर रहे है।

"मानी हुई बात है कि मै बेहद डर गया। बम्बई तो खैर अपना शहर था, पर दिल्ली मे तो मै एक परदेसी सा ही हूँ। बम्बई मे तो खास तौर से आर० एस० एस० वालो का दुश्मन था। महज मुसलमान हूँ इसी लिए वे लोग मेरे पीछे नही पडे थे। मगर दिल्ली की भी फिजा मौजूँ नही थी। मुसलिम-लीग के 'डाइरेक्ट ऐक्शन' और पाकिस्तान-हिंदुस्तान बनने के पेश्तर और बाद के खूनी वाकयातो के बाद, दिल्ली, कलकत्ता, बम्बई बडे शहर ही क्या, पूरे मुल्क की हालत ही बम फटने की सी थी। बहुत नाजुक दौर से मुल्क गुजर रहा था। हिंदू-मुसलमान दोनो एक-दूसरे के खून के प्यासे हो रहे थे। मुसलमानो के जानी दुश्मन सिक्ख और हिंदू थे। पाकिस्तान बनने के पहले और बाद गाँधी जी को चैन नही मिल पा रही थी, कभी उन्हे नोआखाली, कभी कलकत्ता, कभी बिहार, कभी दिल्ली इस दरमियान मे रहना पडा था।

"पाकिस्तान बनने के फौरन बाद ही जो वहाँ हिंदू और सिक्खो का कत्लेआम हुआ उसके 'रिऐक्शन' (प्रतिक्रिया) मे जो दिल्ली

वगैरह मे मुसलमान काटे गए, शायद ऐसे वाकयात तवारीख मे कभी नही हुए है।

"उस वक्त तो लगता था कि हिंदुस्तान मे मुसलमानो का और पाकिस्तान मे हिंदू-सिक्खो का नाम-निशान भी बाकी नही रहेगा। पाकिस्तान से हिंदू-सिक्ख शरणार्थी हिन्दुस्तान से लाखो की तादाद मे भाग रहे थे और हिन्दुस्तान से मुसलमान पाकिस्तान को। जो सरकारी मुलाजिम थे उन्होने अपने लिए तय कर लिया था कि वे हिन्दुस्तान मे रहेगे या पाकिस्तान मे। ज्यादातर मुसलमान सरकारी मुलाजिम पाकिस्तान के लिए अपने को दर्ज करवा चुके थे और भाग रहे थे। और उसी तरह से पाकिस्तान से हिंदू-सरकारी-मुलाजिम हिन्दुस्तान को। आखो ने जो उस वक्त देखा, कानो ने उस वक्त जो सुना वैसा न पहले कभी देखा-सुना गया था और शायद फिर कभी न देखा-सुना जाय। कुछ हिंदू-मुसलिम लीडरान दोनो मे प्रेम और एतकाद पैदा करने की कोशिशे कर रहे थे, मगर आम जनता हिंदू और मुसलिम दो ब्लाको मे बँट कर एक दूसरे की दुश्मन बनी हुई थी। दिल्ली मे जो मुसलमानो का कत्ले-आम हुआ वह बयान से बाहर है।

"एक दिन मै भी हिंदुओ से घेर लिया गया और मैंने आर० एस० एस० वालो को भी उसमे पाया। देशपाडेय तो नही था उनमें। हो सकता है वह मुझे पहिचनवा कर बम्बई वापस चला गया हो। यह यकीनी बात थी कि मैं उस दिन कत्ल कर दिया जाता, मगर यह मेरी खुश-किस्मती थी कि खुदा को मुझे बचाना मजूर था। न जाने कैसे खुद प० जवाहर लाल नेहरू उस ओर आ निकले। एक सिक्ख के हाथ से उन्होने तलवार छीन ली। कितनी बहादुरी का काम था। नेहरू जी को देख सारे हिंदू-सिक्ख इधर-उधर तितिर-बितिर हो गए और जो दो-तीन बदकिस्मत मुसलमान घिर गए थे, न सिर्फ उनकी जिदगी बच गई बल्कि उन्हे पडित जी ने उनके घरो को सही-सलामती पहुँचाने का इन्तज़ाम कर दिया।

"जिस वक्त मै पडित जी का शख्सियत को सोचता हूँ तो दग रह जाता हूँ। दुनिया भर की और गवर्नमेट्स का कौन ऐसा प्राइम-मिनि-स्टर होगा जो जलती हुई आग मे इस तरह से निडर होकर फॉद पडेगा। मानी हुई बात है कि नेहरू जी के लिए ही नही कुछ और भी हिंदू ऐसे है, जिनसे मेरा काम पडा। उनके लिए मेरे दिल मे जो इज्जत है, जो जगह वह बयान से बाहर है। मुसलमानो मे भी कुछ देवता है और हिंदुओ मे भी।

"पाकिस्तान के लिए मैने भी सर्विस ट्रासफर करवा ली थी। और एक 'मर्सी-प्लेन' (रहम के नाम पर विशेष वायुयान जो पाकिस्तान से हिंदू-सिक्खो को भारत लाते थे और भारत से किसी तरह मुसलमानो को पाकिस्तान ले जाते थे) पर किसी तरह कोशिश करके अपनी बीबी, बच्चे और वालिदा के साथ मैं भाग कर जान बचाने मे कामयाब हुआ। ओफ कितने खौफनाक वे दिन थे। पर कुछ मीठी यादगारे भी मेरे साथ है।

"खैर सही-सलामती हम लोग पाकिस्तान पहुँच गए। शायद हमेशा के लिए मेरा और बेगम का रिश्ता हिंदुस्तान से खत्म हो गया। बम्बई से तो पहले ही खत्म हो चुका था। मै करॉची-पोर्ट मे 'कस्टम्स' के दफ्तर मे तब से मुलाजिम हूँ। बेगम जब से यहाँ आई है तब से ज्यादा गमगीन और खोई-खोई सी रहती हैं। अपने मुल्क और खानदान वालो की याद उन्हे सताती होगी। मुझे बम्बई की याद न आती हो यह कैसे मुमकिन हो सकता हे, मगर मै मुतमइन हूँ।

"आपके घर के करीब हम लोग पहुँच चुके हे। अब अपनी दास्तान हमे खत्म कर देना मुनासिब है—कल तक के लिए। सिर्फ इतना और अर्ज कर दूँ कि पाकिस्तान आने के कुछ दिनो बाद ही वालिदा का टाई-फाइड से इन्तकाल हो गया। हर मुमकिन इलाज किया गया। पर मर्ज का इलाज है मौत का नही। वालिदा के इन्तकाल ने मेरे हाथ-पैर बिलकुल तोड दिए। मगर आपकी रेखा बहिन ने मुझे इस तरह से ढाढस

बँधाया और मुझे राहत पहुँचाई है कि मुझे बेअखतियार यही कहना पडता है कि अगर हिंदू औरत इतना ज्यादा पतिभक्त, पतिव्रता और सतीत्व की हिफाजत करने वाली हो सकती है तो मै हिंदू-औरतो को अपना सलाम भेजता हूँ। उनके लिए जो इज्जत मेरे दिल मे है उसका बयान करना मेरे लिए मुमकिन ही नही है। हिंदू औरतो का मुझे खास तजुरबा नही है। सुनी-सुनाई, पढी-पढाई बातो तक ही मेरी जानकारी है। पर रेखा जी को तो देखा है, परखा है। अपने पति के लिए उन्होने कैसे अपने को मिटा लिया, अपने वजूद, अपने 'अस्तित्व' को ही भूल गई है। यह अगर मैंने खुद न महसूस किया होता, देखा होता, मेरी खुद बीबी अगर रेखा जी न होती, तो अगर कोई मुझसे एक हिंदू औरत की ऐसी तारीफ करता तो शायद मै कभी भी यकीन न करता।

"रेखा जी औरत नही है देवी है। वह मेरी बीवी ही नही अच्छा दोस्त है, साथी है, सलाहकार है। वह मेरा वैसा ही ख्याल रखती है जैसे मेरी वालिदा रखती थी। रेखा जी के लिए मेरे दिल मे कितनी इज्जत है, कितनी जगह है मै आपसे कह नही सकता। वह मुजस्सिम देवी है। इसीलिए उनको खुश रखने के लिए, उनकी दिलबस्तगी के लिए मैने उन्हे आप-सा भाई दिया है। आप हिंदू है मगर मैंने मुसलमान होकर भी आपका मुसलमान से ज्यादा यकीन किया है। आपसे मिलकर शायद वह अपने मुल्क और भाई-बधों का जो छूटने का गम है, उसमे शायद कुछ कमी कर पाये।

"यहाँ आकर उन्हे थोडी आजादी भी मिली है। बम्बई मे तो हम मुसलिम सख्त पर्दे के मानने वाले है, और बम्बई मे तो उन्हे और उनकी जिदगी को और भी आर० एस० एस० वालो से बचाना था। इससे वह अपने को घर पर कैद सा समझती थी। जो हमेशा पर्दे के बाहर रहा हो उस उडती हुई चिडिया को तग पिंजडे मे बद कर दो और उसके परवाज की ताकत, उसकी मसरेत, उसकी आजादी खत्म

हो जाती है, और वह किस तरस से तडफडाती है ! आप बेगम की तक-लीफ का अदाजा लगा सकते है। लेकिन माहौल (परिस्थितियो) के मुताबिक अपने को ढाल लेने की उनमे अजीब ताकत है। उन्होने दिलेरी से यह तकलीफ सही। सियासी मामलात भी मुल्क मे ऐसे थे और फिजाँ भी इतनी गैरमौजूँ थी कि दिल्ली मे भी उन्हे पर्दे मे बद रहना पडा। यहाँ आकर वह सख्ती पर्दे की नही है। मगर मै उनके साथ सुसाइटी मे बाहर कम ही 'मूव' (आता-जाता) करता हूँ। वह खुद इसे पसद नही करती। पर्दे के बाहर रहने वाली रेखा पर्दे के अदर रहना पसद करने लगी है, अपने मन से। यो मेरी ओर से उन्हे पूरी छूट है। इसीलिए वह आपके सामने बेपर्दा हो सकी।

"पर देखिये मै गुफ्तगू खत्म करने की बात कहकर भी गुफ्तगू करता ही जाता हूँ। अच्छा अब कल तक के लिए खुदाहाफिज।"

मैने कहा "तो कल आप कितने बजे मेरे यहाँ आ रहे है—रेखा बहिन और मेरे भतीजे के साथ ? कल मैरे दिन भर के कैदी आप लोग है। प्रात काल कितने बजे आ जाइयेगा ? आप तो स्वय ही बहुत शुद्ध हिंदी बोल-समझ लेते है। इसी से हिंदी-शब्दो का प्रयोग हो जाता है। सलीस उर्दू क्या, उर्दू बोलने की भी महारत मुझे नही है। पर उर्दू पढी है, पढना पडी है, और वह तो कहिये आप लोगो का नियाज हासिल होता है इससे टूटी-फूटी उर्दू बोल-समझ भी लेता हूँ।"

किलेदार ने हँसकर कहा "मुझे हिंदी का विद्वान और बहुत बातो मे हिंदू रेखा जी ने बना दिया। और आप सुबह आने की बात पूछ रहे है। इजाजत हो तो रात को ही हम दोनो अपने-अपने बिस्तरे लेकर हाजिर हो जायँ। आप कल के लिए क्यो, हमेशा के लिए हम दोनो को कैदी क्यो नही बना लेते ?"

मैने कहा "भगवान ने चाहा तो यही प्रयत्न करूँगा।"

"खुदा आपकी मुबारक ख्वाहिश को पूरा करे" कहकर वह चले गए। घर जाकर मैने पत्नी से कहा "भोजन करना तो आज असभव

है, इतना अधिक वहाँ से खा-पी कर आया हूँ।" पर बिना थोडा बहुत खिलाए वह मानी नही।

फिर मैने पूरे विस्तार से आज की समस्त घटनाये और रेखा जी तथा किलेदार जी से हुई बाते अक्षरत सत्य बता दी। मैने पूछा "रेखा जी का क्या उद्धार हो सकता है ? हो भी सकता है या नही ? और हो सकता है तो क्यो कर ? इस पर तुम भी सोचना, मै भी सोचूँगा। मुझे तो अब कोई मार्ग दिखाई नही देता। पर एक काम तुम कर सकती हो। लाख रेखा ने मुझे भाई मान लिया है और मुझसे खुली है, पर जितना एक स्त्री दूसरी स्त्री से खुल सकती है, गुप्त-प्रकट सब बाते कर सकती है, उतना पुरुष से नही। तुम उससे आत्मीयता बढाकर, प्रेम प्रदर्शित करके, उसका हृदय जीत कर उससे छिपी से छिपी बाते मालूम करो। देखो ! तुम उसकी नीरस बजड जिदगी मे कुछ सरसता ला सकती हो, उसे कुछ सुख, शाति, सान्त्वना पहुँचा सकती हो ? आखिर वह महाराष्ट्र ब्राह्मण ही थी और तुम्हारी अपनी जाति और प्रान्त की है। तुम्हारी बहिन ही है। आज अपने दुर्भाग्य से वह मुसलमान है तो इससे तो तुम्हे उस पर और दयालु-कृपालु होना चाहिए।

"कल वे लोग भोजन करने आ रहे है। तुम्हारी छुआछूत तो बडी बाधा उत्पन्न करेगी। और किलेदार की कलाई मे राखी बाँधकर तुम भी उसे भाई बना लेना। ज्यादा सम्बन्ध बढाने के लिए हम लोगों को बार-बार मिलना और खान-पान मे सम्मिलित होना पडेगा।"

"अपने बर्त्तनो मे तो उन लोगो को भोजन नही करने दूँगी। न रेखा के हाथ का छुआ खाऊँगी। इसके अतिरिक्त तुम जो आज्ञा दोगे करूँगी। राखी मै बाँध दूँगी, इसमे क्या हानि है।"

मैने समझाया "देखो मै तो उन लोगो के एक साथ खाता-पीता हूँ। मैने तो रेखा का जूठा पान तक खाया है। मुझे छोडोगी ?"

"तुम पुरुषो की क्या ! तुम लोग हम लोगो का कहना मानते हो। कौन मैं तुम्हारे पीछे-पीछे घूमती हूँ कि देखूँ तुम कहाँ जाते हो, क्या

करते हो । पुरुष जाति तो बहता जल है, पवित्र है चाहे जो करे, पर हम स्त्रियाँ तो अपना धर्म-कर्म नही छोड सकती है । तुम चाहे जो करो तुम्हे कैसे छोडा जा सकता है ।"

"तुम मेरे साथ खाती-पीती हो या नही ? मेरा जूठा खाती हो या नही ? तुम कहोगी 'तुमसे बस नही है, तुम तो पति हो । तुमसे छुटकारा नही है ।' भाई, यह तो गुड खाँय, गुलगुलो से परहेज वाली बात हुई । तुम उसके साथ खाना नही खाओगी, अपने बर्त्तन उसे छूने नही दोगी तो फिर वह कभी तुम्हारे निकट नही आ पावेगी । अच्छा एक काम करो । किलेदार को जरूर चीनी के बर्तनो मे खाना दो । हम दोनो पुरुष एक साथ खाँय । तुम कहना हम दोनो बहिने अलग एक साथ खायँगी । तब कैसा हो ? रेखा को केवल अपने साथ अपने बर्तनो मे खाने दो ।"

"तुम तर्क मुझसे मत करो । मुझे उसके साथ खाकर मुसलमान नही होना है ।"

मुझे एक मजाक सूझा । पत्नी को मैने घसीट लिया और उसके ओठो का चुम्बन ही नही लिया, अपने ओठो से उसके ओठ दबाये चूसता रहा । मुझे धक्का देकर वह अलग होती हुई बोली "मुझे तुम्हारा इतराना अच्छा नही लगता है ।"

मैंने कहा "इन्ही ओठो और मुँह से मैने रेखा का जूठा पान खाया था । और मैने जान-बूझ कर अभी ऐसा किया है । मेरे ओठ और जिह्वा तुम्हारे ओठ और मुख से मिले है । अब तो तुम मुसलमानिन हो गई । अब तो रेखा के साथ खाने मे तुम्हारी आपत्ति व्यर्थ है ।"

"जी नही, पति चाहे जो करे स्त्री को उससे कोई हानि नही है ।"

"मेरी मजुला बहुत अच्छी है । वह अपने पति की बात कभी नही टालेगी । नही मानोगी तो फिर वही करता हूँ । मजुला ! मेरी हिंदू-भावना मुझे रेखा के लिए उकसा रही है ।"

"जाओ तुम ! तुम मुझे बहुत दबाते हो । इनके कारण धर्म-कर्म भी मुझे छोडना पड़ेगे । मुझसे यह सब नही होगा ।"

पर मै जान गया कि मेरे लिए मजुला सब कुछ करेगी ।

: ११ :

लगभग नौ बजे सुबह रविवार को श्री किलेदार अपनी पत्नी और पुत्र के साथ एक रिक्शा द्वारा मेरे यहाँ आए । हम लोग तो प्रतीक्षा कर ही रहे थे । मैने बनावटी क्रोध से कहा "यह जनाब का प्रात काल है । हम लोग समझते थे हद से हद आप सात बजे आ जाँयगे, इससे छै बजे से बैठके मे बैठे प्रतीक्षा कर रहे हैं । भगवान झूठ न बुलवाये तो पन्द्रह-बीस बार उठ-उठ कर बाहर झाँक गए है । इतनी जल्दी क्यो आए, तनिक और देर करते ।"

किलेदार ने मुझसे न कह कर अपनी पत्नी से कहा "तुम्हारी वजह से मुझे हर जगह डाँट खानी पडती है । कहता था कि जल्दी चलो मगर · ······ ··।" फिर मेरी तरफ घूम कर कहा "बेगम साहबा यही कहती रही कि किसी भले आदमी के यहाँ इतनी जल्दी जाकर उसे परेशान करना मुनासिब नही है । मैं जोर न देता तो यह अभी भी आने को तैयार न थी, कहती थी दस तक चलना ।"

मैंने कहा "तो बेकार आने की जहमत (कष्ट उठाना) की, कोई बहाना बना देते । खैर चलिये भीतर तो तशरीफ ले चलिए । अब यह भी क्यों बाकी रह जाय, यह भी कह दीजिए कि नाश्ता करके आए हैं । यहाँ छै बजे से बैठे-बैठे अब तक बदन अकड गया और भूखे-प्यासे बैठे है ।"

किलेदार ने कहा "बेगम ! अब तुमही इसका जवाब दो । तुमने

तो आज आप्टे जी से पिटवाने का कस्द कर ही लिया था। अब झूठ बोलो कि नाश्ता नही किया है तब जान बचेगी।"

रेखा जी मुस्करा दी। हम लोग बैठके मे बिछे तख्त पर बैठ गए। अपनी पत्नी को मैने आवाज दी। उनके आने पर मैंने कहा "यह है रेखा बहिन जी, श्रीमती अहमद हुसैन किलेदार और रेखा जी! यह है तुम्हारी भाभी श्रीमती मजुला आप्टे।"

मेरी पत्नी ने रेखा को गले से लगा लिया और उन्हे भीतर ले जाने लगी। मैंने किलेदार जी से कहा "देख लीजिए भाई साहब! यह औरतें कितनी स्वार्थी और जल्दबाज होती है। मजुला को अपनी बहिन मिल गई और उसे लेकर वह चलने को तैयार हो गई। हम लोगो से जैसे कोई मतलब ही नही है। अरे भलीमानुस! पहले परिचय तो करा देने दे। यह है मेरे मित्र और भाई श्री अहमद हुसैन किलेदार जी।"

पत्नी ने हाथ जोडकर उन्हे नमस्कार किया। फिर मुझसे बोली "जल्दी कैसे न हो? नौ बज गया है। नाश्ता तैयार करने मे कुछ समय लगेगा या नही? चलो बहिन! किलेदार जी से परिचित थी मैं।"

मैंने कहा "किलेदार जी! आपकी बीबी आठ-दस घटे के लिए तो इन्होने छीन ही ली अब समझिये। और मजुला! पूछ लो नाश्ता करके आए हों ये लोग तो चलो नाश्ता ही बचा—कुछ ही पैसे सही। नाश्ता तो किलेदार साहब करना ही नही है आपको?'

उन्होने सदीजगी से कहा "नही भाई, नाश्ता न करके रहेगे कहाँ? रही बेगम की छीने जाने की बात, तो बखुदा मै खुश हूँ। भाभी साहबा अपने ही पास इन्हे रख ले, तो मँहगाई के ज़माने मे खाना-कपडा ही बचेगा।"

दोनो स्त्रियाँ मुस्कराती हुई भीतर चली गई। चाय का पानी तो बहुत देर मे पहले ही चढा था। नाश्ता पहले ही से तैयार था। इमसे पाँच मिनट से अधिक समय नाश्ता बनाने मे नही लगा। नाश्ते मे

बिस्कुट तथा बाजारू मिठाई-नमकीन न होकर शुद्ध मराठी चीजें बनी थी—चिउडा और जिलबी।

दोनो स्त्रियाँ भीतर से नाश्ता-चाय आदि दो बार मे जाकर ले आईं। और हम लोग नाश्ता करने को बैठ गए। रेखा जी ने परम तृप्ति से महाराष्ट्रीय भोज्य-पदार्थ खाए—उन्हे मानसिक प्रसन्नता हो रही थी। मेरे घर मे वह महाराष्ट्रीय वातावरण पा रही थी। इसमे लगता है वह कल्पना-लोक मे कही की कही पहुँच गई थी। किलेदार जी ने भी रुचि तथा स्वाभाविकता से पदार्थ खाए। इससे यह सिद्ध होता था कि महा-राष्ट्र-भोजन खाने के वह अभ्यस्त है और रेखा जी कभी-कभी अपने घर पर ऐसा भोजन बनाती रहती होगी। केवल इतना बोले "आप लोग बडी जल्दी खाना खा लेते है।" और फिर मुस्करा दिए थे।

मैंने पत्नी से कहा "तुम्हे मेहमान से भी काम कराने मे लज्जा नही आई। रेखा जी मेहमान है और पहले दफे आई है इसका तो ध्यान रखती।"

पत्नी ने कहा "रेखा जी तुम्हारी मेहमान होगी मेरी नही। मेरी वह अब से सगी छोटी बहिन है। यह घर इनका है। मेहमान होगे आप, रेखा जी क्यो होने लगी। अपने घर का काम कौन नही करता।"

मैंने किलेदार से कहा "आप देख रहे हैं मेरी औरत कितनी चालाक है। दूसरे से काम कराने के लिए कैसी फँसाने वाली बाते कर रही है।"

किलेदार ने कहा "आपके और भाभी साहबा के झगडे मे मैं बीच मे नही पडूँगा। आप दोनो ही निपट ले। पर भाभी साहबा कहती तो ठीक है।"

मैंने साँस लेकर कहा "अच्छे आप मेरे दोस्त है। बजाय मेरा पक्ष लेने के अपनी भाभी का ही पक्ष ले रहे है।"

किलेदार ने कहा "अभी तो दस भी नही बजा है कि खाकर निपट गए। अब क्या प्रोग्राम (कार्यक्रम) है?"

मैंने कहा "जनाब नाश्ते को खाना कह रहे हैं, बहुत भोले हैं न

आप ! खाना बारह-एक तक आवेगा, जब तक अगर आप चाहे तो दो-तीन घटे का समय है। हम-आप बाहर चले, कुछ सैर-सपाटा हो जाय—घूमने का मूड है आज। बाजार से कुछ खरीदारी करनी है। रेखा बहिन को कुछ भेट देनी है।"

किलेदार बोले "अरे हटाइये भी भेट-वेट। आपका सच्चा प्यार हम लोगो को मिल गया है, यह किसी भेट से कम कीमती है ?"

मैंने कहा "नही भाई ! यह तो नियम होता है राखी बाँधने के बाद। यह हो सकता है कि आज न सही कल सही। अगर टाइम दे आप कल के लिए।"

दोनो स्त्रियाँ भीतर जा चुकी थी।

किलेदार ने कहा "आप खैर नही मानते तो कल पर मुल्तवी करे। कल आप मेरे यहाँ शाम को दफ्तर के बाद चाय पिये और फिर इत-मीनान से 'शापिग' (खरीदारी) होगी।"

"ठीक है, कल मैं आपके यहाँ दफ्तर से आ जाऊँगा, सीधे आपके घर। परन्तु आप भी दफ्तर से सीधे आइयेगा।"

"मजूर"।

फिर हम लोग इधर-उधर की बाते करते रहे। मैंने पूछा "किलेदार साहब ! लगभग दो-तीन वर्ष तो आपको पाकिस्तान मे हो गए है। इस बीच आप हिन्दुस्तान नही गए ?"

"नही जा सका भाई ! इरादा कई बार किया मगर कोई न कोई झझट बीच मे ऐसा आ पडा कि जाने का ख्याल मुल्तवी करना पडा। परसाल चाचा जान आ गए थे। हर साल कोई न कोई रिश्तेदार या जान-पहचान वाला आ ही जाता है हिन्दुस्तान से। आखिर जडे तो हमारी वही है। मेरे बहुत से रिश्तेदार यहाँ आ गए है, और बहुत से यही रह गए। बेगम का कहना है कि वह भी जरूर मेरे साथ बम्बई जायँगी। और मेरी फितरत से आपको वाकफियत है ही। अपनी महबूबा की दिलशिकनी नही करना चाहता, उनकी कोई बात

टालना मेरे लिए नामुमकिन है, इससे अकेला जाऊँगा नही। इसलिए शायद अभी एक साल के पहले जाना किसी तरह से भी मुमकिन नही है।"

"आपका मन तो हिन्दुस्तान मे जाने का होता है? अच्छा अगर हिन्दुस्तान मे आपका रहना मुमकिन हो तो आप पाकिस्तान छोडना पसन्द करेगे? और रेखा जी का मन बम्बई मे रहने का होता है या नही?"

"भाई जान! हिन्दुस्तान मे मै पैदा हुआ, वही तालीम पाई, बच्चे से जवान हुआ। अपना वतन, अपने पैदाइश की जगह किसे याद नही आती, किसका उसे देखने को मन नही होता? पर अब पाकिस्तान का छोडना और फिर से हिन्दुस्तान मे बसना पसन्द नही करूगा। अब वहाँ का आशियाना उजड चुका है और नया आशियाना मैने बनाया है, और मुझे इससे लगाव भी हो गया है। फिर मै नोकरपेशा हूँ। नामुमकिन चीजो को सोचने मे क्या फायदा? अब तो 'नेशनेलटी', (राष्ट्रीयता) बदल ही चुकी है। नौकरी छोड कर कहाँ जा सकता हूँ, जाना भी नही चाहता। जरूर बम्बई की याद मुझे आती है, और कभी-कभी वहाँ जाने की तबियत जरूर होती रहेगी। आपकी रेखा बहिन की बात—तो उनका मन बम्बई जाने को होता जरूर है। पर फिर कभी यह भी कहती है 'बम्बई जाकर भी क्या करूँगी? कौन मेरा वहाँ अपना है? मेरे 'अपने' तो सिर्फ आप है। आप पाकिस्तान-हिन्दुस्तान जहाँ भी रहेंगे, मुझे वही जगह अजीज है।"

मैंने मन मे सोचा रेखा के हृदय की व्यथा मै समझता हूँ। बम्बई की सडके और मकान देखने उन्हे नही जाना है। जब उनका घर-बार, परिवार और अपने छूट गए है, उनके सब होते हुए भी कोई उनका नही है तो फिर बम्बई जाकर तो उनके हृदय में और हूक उठेगी। मैं रेखा जी के हृदय की हूक को जितना समझ सकता हूँ

कदाचित् किलेदार भी न समझ सके क्योंकि अपनी हृदय-गत भावनाओं को रेखा ने कदाचित् मेरे ही सामने प्रकट किया है—किलेदार से वह कह नही सकती। उससे लाभ तो विशेष होता नही, हानि की ही सम्भावना थी। ओह! कितनी पीडा होगी रेखा को। यदि वह अत्याधिक भावुक और सवेदनशील न होती तो उसे इतनी पीडा न होती पर वह अत्यन्त मननशील प्रकृति की है, और उसकी अन्तर्मुखी प्रवृत्ति, उसकी गहराई तक जाने-सोचने की क्षमता, उसकी आदर्शवादिता उसके लिए अब श्राप है, अभिशाप है, वरदान नही। वह अपनी आदर्शवादी प्रकृति, दृढ-निश्चयता और शुशीलता को क्या करें। कहाँ बेचारी एक भूल कर बैठी, मन के बहकावे मे आ गई और उसकी अनुभवहीनता ने उसे जीवन भर के लिए घुटने और रोने को छोड़ दिया। उसके अन्तर्द्वन्द का अन्त न था। किलेदार को वह अत्याधिक प्रेम करती थी। उन्हे वह छोडना नही चाहती थी। अब भी प्रेम करती है वैसा ही, अब भी उन्हे छोडना नही चाहती है। और उधर वह किसी भी तरह से पतिव्रत-धर्म छोड़ना नही चाहती थी, दूसरे से विवाह करके दुश्चरित्र नही होना चाहती थी। और साथ ही साथ किसी भी प्रकार अपना हिन्दू-धर्म वह त्यागना, बदलना नही चाहती थी। इन दो विपरीत दिशाओ मे वह चलने को बाध्य थी, किन्तु कही ऐसा भी होता है। बाध्य हो गई वह या परिस्थितियों और उसकी सज्जनोचित्त प्रकृति ने उसे बाध्य कर दिया कि वह एक ही दिशा की ओर बढे। वह यह भी तो नही कर सकी कि किसी भी दिशा की ओर न बढकर उसी स्थान पर जम कर बैठ जाय, आगे-पीछे न हिले-डुले। खैर जो होना था वह हो चुका। पर आज भी अपनी पूर्ण आत्मा से हिन्दू-धर्म मे वापस आना चाहती है, महाराष्ट्र-समाज और भारतवर्ष की बनना चाहती है। वह किलेदार को छोड सकती है इसके लिए, पर उनसे वह दगाबाजी नही कर सकती, हृदय से विमुख नही हो सकती। रेखा की विचित्र स्थिति को हर एक समझ ही कैसे सकता है।

मेरी पत्नी तथा रेखा एक साथ आई। पत्नी एक तश्तरी मे कुछ मिठाई लिए थी और रेखा जी एक फूल की छोटी थाली लिए थी जिसमे दही, रोली, पान, चावल, फूल तथा दो-एक अन्य चीजें रखी थी। मैने किलेदार जी से कहा "आपके लिए मैंने एक छोटी बहिन ढूँढ दी है। आपको शिकायत थी कि आपके कोई बहिन नही है।"

किलेदार भी समझ गए। मेरी पत्नी ने रेखा जी से थाली लेकर एक चौकी पर रख दी। फिर रगीन तागा किलेदार जी की कलाई मे बाँध दिया। फिर उनके माथे पर रोली का टीका लगा कर चावल लगा दिए। एक गरी का गोला, दही, पान के दो बीडे और मिठाई देते हुए उनसे कहा "आप दही और मिठाई खा लीजिए। यह शगुन होता है। आज से आप मेरे बडे भाई हुए।"

रेखा जी की आँखों मे ही आँसू नही झाँक रहे थे, किलेदार जी को भी अपनी गीली आँखो को पोछने के लिए बहाने से मुँह फेरना पडा था। कुछ खो कर, अभाव-ग्रस्त हो कर ही किसी वस्तु का मूल्य ज्ञात होता है। आत्मीयता, अपनापन और प्रेम के तरसे हुए किलेदार तथा रेखा दोनो ही थे दो-तीन वर्षों से। सिनेमा-सरकस, खेल-तमाशा तथा काफी-हाउज वाले दोस्त तो बहुत मिलते है, मिल सकते है। उनसे मन-बहलाव हो सकता है पर आत्म-तुष्टि नही। पाकिस्तान मे रहते हुए भी वे अपने को अकेला अनुभव करते थे। अत: हम दोनो की सच्ची आत्मीयता से दोनो भावना-मग्न हो गए और विशेष रूप से रेखा जी। रेखा जी की विशेष मन स्थिति ही कारण न थी—स्त्रियाँ यो भी अधिक भावुक और सवेदनशील होती है।

काँपती हुई आवाज मे किलेदार ने कहा "कौन कहता है हिंदू-मुसलिम भाई-भाई नही है ? मेरी छोटी बहिन मजुला भी आज सच-मुच, आज से मेरी छोटी बहिन हुई—मेरे कोई सगी बहिन नही थी, चचेरी बहिने यो मेरे कई है। आप सगी से ज्यादा हुई। आप एवज़

मे अपने भाई से क्या कुछ न चाहेगी ? आप्टे जो ! आपने मुझे बेदाम का गुलाम कर लिया है।"

मैंने कहा " ऐसा मत कहे मेरे भाई ! यह प्रेम कभी समाप्त न हो और इसमे पवित्रता रहे तब तो हम लोग सच्चे मनुष्य होगे।"

पत्नी ने कहा " एक बार जिसके हाथ मे एक हिंदू स्त्री राखी बाँध देती है वह उसके जीवन भर के लिए उसका सगे भाई सा अपना हो जाता है। यह सम्बध अमिट होता है। आप यदि मुझे कुछ देना ही चाहते हैं तो दो चीज़े माँगती हूँ। एक तो यह कि मेरे जीवन-पर्यन्त जो एक बडे भाई का छोटी बहिन के प्रति कर्त्तव्य हो सकता है वह आप निभावेगे। आप छोटी बहिन को जो स्नेह प्रदान किया जाता है वह सदा देंगें और हम दोनो को याद रखेंगे। और दूसरी बात यह माँगती हूँ कि मेरी रेखा बहिन की भावनाओ का आप सदा ध्यान रखेगे और इन्हे किसी प्रकार का मानसिक कष्ट नही होने देगे, शारिरिक कष्ट तो नही होने देते ही है'।"

किलेदार ने कहा "मेरी छोटी बहिन ! खुदा को हाज़िर-नाजिर जान-मान कर मै कुरान और खुदा की कसम खा कर वादा करता हूँ कि जो फर्ज़ एक बडे भाई का छोटी बहिन के लिए हो सकता है मैं उसे ताज़िदगी निभाने की अपनी ताकत भर कोशिश करूँगा। आपको और आप्टे जी को भूलने का तो सवाल ही नही है। और आपकी दूसरी बात की निस्बत मुझे यह अर्ज़ करना है कि अपनी जान मे आपकी रेखा बहिन को मैंने कोई तकलीफ नहीं होने दी है—इन्हे कोई शारीरिक ही नही मानसिक कष्ट भी न होने पावे इसका मैंने हमेशा ध्यान रखा है। खुदा इस बात का गवाह है। तो भी मैं वादा करता हूँ कि अगर मेरी जान की भी जरूरत आपकी रेखा जी को होगी तो वह भी देने मे मुझे उज्र न होगा। यह मुझसे जो भी मुनासिब चीज कहेगी उसे मै हदतुल-इमकान पूरी करने की कोशिश करूँगा। मैंने सिर्फ एक कहना इनका नही माना है और वह किसी भी हालत मे नही मानूँगा—मेरे हिंदू बन

जाने के इनके इसरार को। इसके अलावा इनका हर कहना मानने की कोशिश करूँगा। यो जो मेरे करीब है मेरे मुसलमान दोस्त वे मजाक मे मुझे पडित अहमद हुसैन कहते है। वे मुझे हिंदू कह कर चिढाते है।"

मैने कहा " भाई ईमानदारी की तो बात यह है कि आजकल नई रोशनी के पढे-लिखे व्यक्ति, हिंदू हो या मुसलमान हो, एक से है। न एक-दूसरे के साथ खाने मे एतराज, न एक साथ काम करने या रहने मे। राजनीति के कारण ही उनमे इतना अधिक वैमनस्य है। नही तो आप अपने ढग से इबादत करे, रहे-सहे, खॉय-पियें, हम अपने ढग से। इसमे लडाई-झगडा क्यो ? आखिर क्या फर्क होता है दोनो मे जब वे भगवान के यहाँ से जन्म लेते है ? क्या असमानता उनमे होती है ? "

किलेदार बोले "आप ठीक कहते हे मेरे भाई।....मगर बहिन जी ! आपने अपने बर्तन रेखा जी को छू लेने दिए हैं, अब तो ये नापाक हो गए होगे। मै तो यही जानता हूँ कि हिंदू लोग अपने बर्तन, खाना वगैरह हम लोगो को नही छूने देते। मै 'स्पोर्ट्समैन' रहा हूँ। मेरे ज्यादातर दोस्त हिंदू ही थे और उनकी ' फेमलीज ' (परिवारो) मे मेरा बराबर आना-जाना रहता था। आदमी छुआछूत भले ही न माने मगर औरते तो इस बात मे बहुत सख्त और पाबद होती है। ,,

पत्नी ने कहा " भविष्य में आप ऐसी बात मत कहियेगा। रेखा जी मुसलमान या हिंदू बाद मे है, मेरी छोटी बहिन पहले है। इस घर पर अब उसका भी उतना ही अधिकार है जितना मेरा, मुझ पर भी उसका अधिकार है। "

रेखा जी की आँखो से प्रेमाश्रु बह रहे थे। इतनी आशा तो वह क्या, स्वय मै भी अपनी पत्नी से नही करता था। अपनी पत्नी के प्रति मेरी श्रद्धा अत्याधिक बढ गई। मेरी स्त्री ने अपनी उदारता, निश्छल प्रेम और सच्ची आत्मीयता से रेखा जी का हृदय जीत लिया होगा, यह निर्विवाद है। एक पति-परायणा, समझदार और भली पत्नी कितनी बडी प्रेरणा पति की होती है, उसे महान से महान कार्य करनें मे कितनी

प्रेरक शक्ति देती है, इसे मै आज ठीक अनुभव कर रहा हूँ । जो महान व्यक्ति हुए है, उनकी महानता के पीछे उनकी महान पत्नियो का कितना बडा हाथ होता है यद्यापि इसे दुनिया देख नही पाती, समझ नही पाती !

मुझें पूर्ण विश्वास है कि तीन-चार वर्षो मे इतनी निकटता, आत्मीयता, इतना प्रेम रेखा ने किसी से न पाया होगा । आज रेखा जी ने अनुभव किया होगा कि वह बिल्कुल अपने ही आत्मीयो, सम्बधियो के बीच मे है, अपनों के बीच मे है । हिदू-परिवार, मे इस घुले-मिले रूप मे अपने को पाकर रेखा जी के सतोष, शान्ति और सुख का वारापार न होगा । सभवत. वह स्वप्न मे भी आशा न करती होंगी कि मै एक हिंदु-परिवार, महाराष्ट्र-परिवार और बम्बई की ही एक स्त्री के इतने निकट कभी आऊँगी । मेरी पत्नी बम्बई की ही थी । रेखा जी के विचारो को, भावनाओ को मै पढ़ सकता हूँ, समझ सकता हूँ । रेखा जी के चेहरे पर आज एक उल्लास था, सतोष था; हीन-भावना मेरी पत्नी ने उनमे पैदा होने ही नही दी होगी अपने व्यर्वहार से । किलेदार भी मन मे अत्यन्त प्रसन्न होगे रेखा जी को प्रफुल्लित देख कर क्योकि उन्होने कहा "बख़ुदा मैने इतना ज्यादा ख़ुश बेगम को तीन-चार बरस मे नही देखा था ।"

मेरी पत्नी रेखा जी के हाथ मे हाथ डाले खडी थी । बोली "चलो रेखा बहिन ! भोजन और शेष तैयार करना है तुम्हे । भाई साहब ! रेखा जी आपसे आज अपने घर पर मेरी बहुत शिकायत करेगी कि ख़ुद तो दूर बैठी रही और आरभ से अत तक सब मुझसे ही रसोई की मेहनत करवाई । जितना खिलाया उससे चौगुना काम करा कर मार डाला । अब अपनी बडी बहिन के इस व्यवहार के कारण कदाचित् वह फिर मेरे यहाँ आने को तैयार न हो ।"

रेखा जी हाथ छुडा कर भाग गई । कदाचित् अपने सुख और प्रेम के आँसू और सिसकियाँ रोकने मे वह असमर्थ हो गई थी ।

किलेदार ने कहा "आप देवी है, फरिश्ता है, और क्या कहूँ । इधर

तीन-चार साल मे आज का सा मुबारक दिन मेरी जिदगी मे कभी नही आया। अपनी अज़हद खुशी को मै बयान कर सकूँ, मै कितना मशकूर और ममनून हूँ इसे लफ्जो मे अदा कर सकूँ, यह नामुमकिन है।"

मेरी पत्नी भी भीतर चली गई। हमीद मेरे बच्चो के साथ खेल रहा था, कभी भीतर कभी बाहर। कुछ देर हम दोनो चुप बैठे रहे। दोनो ही भावनाओ मे बह रहे थे। प्रेम, हास्य, सात्विकता आदि भी सक्रामक होते है।

मैने कहा "आपसे कुछ पूछूँ तो आप बुरा तो नही मानेगे ?"

वह बोले "नही मेरे भाई! तुम्हे आज मै पूरा हक देता हूँ तुम मुझसे बिना झिझक के जो चाहे पूछ लिया करो। खबरदार अब से मुझे आप न कहना।"

मैने कहा "कोर्ट मे बयान देने के बाद जब से रेखा जी आपके यहाँ रहने लगी थी उन्होने कोई इच्छा प्रकट की थी कि वह किसी सम्बधी के यहाँ जाना चाहती है? या उनके किसी सम्बधी ने उनसे या आपसे मिलने का प्रयत्न किया ?"

"रेखा जी ने अपने बम्बई के रहने के दौरान मे कभी किसी से मिलने की खास ख्वाहिश जाहिर नहीं की। मुझे तो लगता है अपने माँ-बाप, नाना-नानी, मामा-मामी वगैरह से मिलने की ख्वाहिश उनकी जरूर होगी। मगर वह इस हद तक माँ-बाप और आर० एस० एम० वालो से डरी हुई थी और यह सोच कर इतनी मायूस थी कि कोई उनकी सूरत देखने को भी रवादार नही होगा, तो उनकी हिम्मत ही न पडती होगी कि किसी से मिले। अपने नाना जी से मिलने की ख्वा-हिश उन्होंने मुझसे जरूर जाहिर की थी। मैंने कहा था कि तुम्हे उनके यहाँ भेजने का खतरा तो मैं नही उठा सकता, पर अगर तुम्हारे नाना जी खुद तुमसे मिलने आना चाहे तो उनका इस घर मे इस्तकबाल किया जायगा। तुम चाहो तो उन्हे खत लिख सकती हो।"

"शायद एक खत उन्होने अपने वालिद को भी लिखा था पर

उन्होने उसका जवाब नही दिया। नाना जी को उन्होने एक खत लिखा था और उसमे अपनी ख्वाहिश उनके दर्शन करने की लिखी थी।

"नाना जी ने जवाब भी दिया था पर काफी दिनो बाद। शायद उन्होने काफी सोचा-विचारा हो। और उनकी ममता ने उन्हे रेखा से मिलने को बेबस किया हो। नाना जी ने लिखा था कि मै तुमसे मिलने आ सकता हूँ अगर मेरे साथ कोई बदसलूकी या बेइज्जती का बरताव न किया जाय और मुझे तुमसे ठीक से अकेले मे बातचीत करने मे कोई रोक-टोक न हो।

"मैंने आपसे बताया न था कि नाना जी उन्हे बेहद प्यार करते थे। बेगम ने तब मुझसे पूछा। मैंने कहा था "नाना जी आपके बुजुर्ग है तो मेरे भी बुजुर्ग हुए। उनके साथ बाइज्जत तरीके से पेश आया जायगा। उनकी पूरी इज्जत की जायगी। वह तुमसे जितनी देर चाहे, जो चाहे, जैसे चाहे बाते कर सकते है।"

"चुनाचे बेगम ने उन्हे खत लिख दिया। और हमीद के पैदा होने के करीब दो महीने बाद नाना जी मेरे यहाँ आए थे। मेरे कमरे मे इज्जत के साथ उन्हे बैठाया गया था और करीब तीन-चार घटे वह बेगम मे गुफ्तगू करते रहे थे। बराबर उनके गले से लगी हुई रेखा जी रोती रही थी और वह उनके आँसू भी पोछते रहे थे और खुद भी रोते रहे थे। रेखा जी का कहना है कि उन्होने उनसे आगे-पीछे की सारी बाते बिलकुल सच-सच, जो तीन-चार घटो मे मुमकिन थी की थी। उनमे पता चला कि रेखा जी के वालिद उनसे मिलने को तैयार नही थे, और वह कभी नही मिले। देशपाडेय भी उनसे मिलना चाहता था, यह नाना जी ने बताया। पर न रेखा जी इसके लिए तैयार हुई, और वह तैयार भी होती तो मै और मेरे वालदैन कतई तैयार न होते।

"मैने रेखा जी से कहा था कि नाना जी जब चाहे तुमसे मिल सकते है। उनके लिए इस घर के दरवाजे हमेशा को खुले है।

"मेरे वालिद से भी उन्होने बातचीत की थी और दो-चार मिनट मुझसे भी। वह मिल कर बहुत उदास और दुखी होकर गए थे। उनकी नवासी हमेशा के लिए उनसे अलग हो गई और गैर-मजहब मे हो गई। इससे उन्हे दिली सदमा था। बम्बई के कयास में वह एक या दो बार रेखा से वह जरूर मिले थे। और वह जब आते थे हमीद और रेखा के लिए उनकी मोटर मे खिलौने, मिठाई, कपडे, जवाहरात, गहने वगैरह बहुत से तोहफे अपनी नवासी के लिए होते थे। एक या दो बार जब वह मेरे यहाँ आए और जब तक रेखा के पास रहे उसे गले लगाते सिर पर हाथ फेरते मुसलसल खुद रोते रहे और रेखा जी भी रोती रही थी। मैने कमरे की ओर से गुजरने पर यह नज्जारा देखा था और यकीन कीजिए बेसाख्ता मेरे आँसू निकल पडे थे। रेखा जी और नाना जी के अश्क उनके जजबात को नुमायाँ कर रहे थे।

"नाना जी के अलावा नानी, मामी, मामा, वालिदा, भाई, बहिन, वालिद कोई भी उनसे मिलने नही आया। रेखा जी को नाना ने अपने घर नही बुलाया। खुद ही मेरे घर आकर मिल गए। अगर बुलाते भी तो शायद मै ओर मेरे वालिद उन्हे भेजने को तैयार न होते।

"जब मै बम्बई छोड रहा था तो वह स्टेशन पर हम लोगो को मिले और विक्टोरिया टर्मिनस से दादर तक ट्रेन मे साथ आए थे। वह सचमुच निहायत मुअज्जिज़ और नेक तबियत के इसान थे। और उनके लिए रेखा जी के ही नही, मेरे दिल मे भी इज्जत है, जगह है। पर जब से हम लोग पाकिस्तान आए है तब से शायद न रेखा जी ने उन्हे खत लिखा है और न उन्होने ही इन्हे लिखा है। वह कैसे है यह हमलोग नही जानते। हो सकता है अगर हम लोग कभी बम्बई गए तो शायद नाना जी से बेगम जरूर मिलना चाहेगी और मै भी उनसे मिलना पसद करूँगा।"

मैने पूछा "पर आप क्यो कह रहे थे कि कदाचित् एक वर्ष तक बम्बई जाने का प्रश्न ही नही है।"

"बेगम को शायद चौथा या पाँचवाँ महीना है। बच्चा होने के बाद जब तक वह पाँच-छै महीने का न हो जायगा, उसे लेकर कहीं जाना बहुत दिक्कततलब होगा।"

"मैं आपको इस शुभ समाचार के लिए मुबारकबाद देता हूँ। एक बात बताइए—आपका क्या ख्याल है, क्या रेखा बहिन बहुत ज्यादा 'सेंसटिव' (संवेदन-शील) और 'सेंटीमेंटल' (भावात्मक) है?"

"निहायत, बेइन्तिहा! यों तो मैं भी थोड़ा-बहुत हूँ। मगर वह तो हद से ज्यादा है। मसलन यही बात आप लें। कुछ पुराने मराठी जबान के "मैगजीन" (पत्रिकायें) इनके पास रखे हैं। मैंने इनसे पचासों बार कहा कि फेंको इन्हें। क्या कूड़ा-कबाड़ा भर रखा है। अरे बेच दो रद्दी-वाले के हाथ तो चार-छै आने ही मिल जायेंगे। मगर यह उसे छाती से चिपकाए ही रहती है। न जाने उसमें क्या है कि बार-बार उन्हीं सालों पुराने अखबारों को पढ़ती हैं, और इनकी तबियत भी नहीं ऊबती। एक-एक पेज उसका ऐसा सँवार-सँभाल कर रखेगी, जैसे माल हो, दौलत हो। है न 'सेंटीमेंटलिज्म' (भावुकता)?"

मैं सोचता रहा कि यह व्यक्ति रेखा जी के विचारों, उनके हृदय की भावनाओं को भला क्या समझ सकता है। मराठी भाषा की पत्र-पत्रिकायें हैं—यह 'जबान' (भाषा) का अपनापन क्या कम है। महा-राष्ट्र-समाज, महाराष्ट्र-भूमि, जन्म-स्थान, पुराने परिचित और सहेलियाँ माँ-बाप, सम्बन्धी, देश, धर्म सभी तो सदा के लिए छूट गए बेचारी से। इन सबकी कमी को, जैसे वह मराठी भाषा के निर्जीव अखबारों को कलेजे में लगाकर पूरा करती है। वे उससे मराठी जबान में मूक भाषण करते हैं। अपनी स्मृति को वह इनके द्वारा भोजन देती है। अपनी कल्पना में उड़कर वह अपने माँ-बाप, हिंदू-धर्म और महाराष्ट्र-समाज में पहुँचती होगी—अब केवल यह जरिया उसके पास शेष रह गया होगा। उसके लिए तो ये पुराने मराठी के मैगजीन इस समय बहुमूल्य वस्तुएँ हैं, अनमोल खजाना है। हिंदू होने के नाते

जितना मै रेखा जी को समझ सकता हूँ उतना किलेदार नही।

मै काफी देर चुप रहा तो किलेदार ने कहा "क्या सोच रहे है भाई जान ?"

मैने कहा "कुछ विशेष तो नही। अच्छा आपका और रेखा जी का साधारणतया क्या दैनिक कार्यक्रम रहता है और क्या मनबहलाव के साधन है ? आप लोग सैर-सपाटे या सिनेमा आदि जाते है या नही ?"

किलेदार ने कहा "सुबह का वक्त तो घर-गृहस्थी, खाने-पीने मे चला जाता है, पाँच बजे तक दफ्तर, उसके बाद अगर किसी यार-दोस्त के यहाँ न चला गया तो फिर घर मे चाय-नाश्ता, और फिर अगर किसी के यहाँ चला गया तो वहाँ गप-शप। नौ बजे के करीब खाना खाता हूँ। फिर ग्यारह बजे तक सोना। कोई भी अहम बात नही है मेरे टाइमटेबुल मे।

"इतवार के दिन तो आप जानते ही है नौकरपेशा आदमी के सभी काम उस दिन के लिए मुल्तवी रहते हैं। उस दिन तो खाने को भी ठीक वक्त पर नही मिलता। रेखा जी दस-ग्यारह तक तो खाने-पकाने, खिलाने-खाने वगैरह मे सर्फ करती है। फिर पाँच बजे शाम तक सिलाई-कढाई, रेडियो या किताबो-अखबारो के पढने मे खर्च करती है। पाँच बजे के बाद फिर चाय-नाश्ता, खाना पकाना, खिलाना-खाना वगैरह।

"अब अपनी दिलबस्तगी के जरिये मै क्या कहूँ। खेल वगैरह मेरे करीब-करीब छूट ही गए है , कभी-कभी शाम को टेनिस या बैडमिटन किसी दोस्त के साथ जहाँ वह जाता है खेलने, खेल लेता हूँ या चार दोस्तो मे ब्रिज, फ्लश, रमी ताश वगैरह। पढने-लिखने का मुझे पहले भी कोई खास शौक नही था—अखबार को छोडकर। म्यूजिक (गायन) और पेटिग (चित्रकला) मे कोरा हूँ। शायरी से भी मेरा कोई खास लगाव नही है, हाँ अच्छे मुशायरो मे शरीक होना मै पसद करता हूँ। सिनेमा वगैरह कम ही जाता हूँ—सबब है पैसे की कमी। सैर-सपाटे को आम तौर से नही जाता। यो जब करांची नया-नया आया था तो

बेगम को साथ लेकर करॉची की देखने वाली जगहो को काफी घूम लिया हूँ—मसलन करांची का बन्दरगाह मुझे और रेखा जी को भी पसद है। समुद्र को देख कर हम लोगो को बम्बई का समुद्र याद आ जाता है। कमोरी डाक्स मुझे बहुत पसद है। ड्रीग रोड, एरोड्रोम, फ्रेडरिक केफटीरिया होटल वगैरह भी उन्हे मैने दिखाए है। मगोपीर पर पिक-निक पर भी उनके साथ गया हूँ। बोलन मार्केट, रामास्वामी क्वार्टर्स, रामबाग, गाडीखेवा, प्रीडी स्ट्रीट, सदर बाजार, विक्टोरिया स्ट्रीट, जहॉगीर कालोनी, बदर रोड, इक्सटेंशन वगैरह खास सडके और मुकाम, एमेम्बली, कोर्ट्स, मौरीपुर साल्ट्स वर्क्स वगैरह देखने लायक चीजे भी रेखा जी को घुमा चुका हूँ। तो अब बार-बार उन्हे ही देखने मे न मुझे कुछ लुत्फ आता है न रेखा जी को। और वाकया तो यह है कि उन्हे तो घूमना अच्छा ही नही लगता। बहुत जोर देने पर मैं ही उन्हे घसीट ले जाया करता था।

"करॉची के बाहर दूर जगहो मे जाने और पाकिस्तान के दीगर बडे शहरो को देखने-घूमने को मेरे पास पैसा ही नही है। रेखा जी तो बहुत कहने पर भी सिनेमा-थियेटर नही जाती, न चहलकदमी करने बाग-बगीचो तक। पढने-लिखने का उन्हे कुछ शौक बढा था इधर, मगर किताबो की कमी से वह अपना शौक पूरा नही कर पाती। वही रखी हुई किताबे कहॉ-कहाँ तक कोई पढे। उनके मनबहलाव का जरिया या उनका बच्चा है या खुद मै। कभी-कभी रेडियो जरूर सुन लेती है।

"तरह-तरह की खाने की चीजे पकाने का उन्हे शौक है। खाना वह अच्छा पकाती है, मगर महाराष्ट्रीय भोजन ही वह अकसर बनाती है। मगर उन्हे गोश्त, मछली, अडा वगैरह खाने मे कभी एतराज नही रहा। वैसा खाना भी वह पकाती रहती है। वह बताती थी कि महा-राष्ट्र लोग दो तरह के है, खाने-पीने के मामलो मे। एक तो वे जो गोश्त वगैरह खाते हैं, बहुत फारवर्ड, अँग्रेजीदॉ, कुछ लोग गोश्त नहीं खाते। मैं तो गोश्त वगैरह पहले ही से खाती थी। मेरी नानी और

माँ अपने बर्तनो मे गोश्त पकाने तक न देती थी, न खुद पका देती थी, पर मेरे नाना, पिता तथा मामा सब गोश्त खाते है। गोश्त के उन लोगो के अलग बर्तन है और वे लोग मन होने पर नौकरो से करवा लेते थे। मैं भी उन लोगो के साथ गोश्त खाती थी, क्योकि मेरी मा और नानी मुझसे इस बात पर अत्यन्त अप्रसन्न रहती थी। भाभी भी नई रोशनी की है, इससे वह भी खाती थी। इससे मुझे और सुविधा थी खाने मे।"

"आपके यहाँ तो बशौक आज जा गई। वरना खुशामद करने पर भी घर से बाहर निकलने की तबियत ही इनकी नही होती। मै कहता हूं 'वल्लाह क्या तबियत आपने भी पाई है। घर से बाहर निकलने को कसम खाई है क्या ? मेरे दोस्त-अहबाब अपने घर तुम्हे बुलाते है और तुम 'ना' के अलावा 'हाँ' सीखी ही नही हो, ओर मेरे दोस्त फिकरे मुझपर कसते है, कहते है 'बेगम साहबा तो आना चाहती है तुम ही बहानाबाजी करते हो।' वह हँस देती है बस। मेरा ख्याल है उन्हे म्यूजिक और और पढाई-लिखाई मे शौक है। यो कोई खास शग्ल उनका नही है। न वह ताश खेले न किसी से मिल जुले। मुझे जब इनकी इन बातो पर बहुत झुंझलाहट होती है तो उन्हे बूढी अम्माँ-दादी कह देता हूँ। पर पता नही वह कैसे इतनी जल्दी आप और भाभी साहबा से घुल-मिल गई।"

"अब मुसलमान मजहब अपना लेने के बाद रोजा-नमाज आदि की तो वह पाबंद होगी ?"

"अब आप दोस्त है। आपसे आड क्या ! नमाज वह क्या पढेगी, मैं खुद ही रोज और हर वक्त की नमाज बँधे हुए वक्तो पर नही पढता। जहा तक रोजे का सवाल है न मै ही रोजे रख पाता हूँ, न बेगम रखती है। जरा और उम्रदराज हो जाऊँ तो फिर मजहब को अहमियत दूँगा। अभी तो ऐसे ही चलने दो। रेखा जी ने इस्लाम मजहब जरूर कबूल कर लिया है पर मेरा ख्याल है कि न उन्हे ठीक से नमाज

ही, आती है न वह पढती ही है, और न कभी उन्होने रोजे रक्खे। मज़हब के उसूलो की पाबदी हम पढे-लिखे नई रोशनी के नौजवानो से जरा कम ही हो पाती है ख्वाह वह हिंदू हो या मुसलमान।"

और भी इधर-उधर की बाते होती रही। किलेदार ने बताया "जाडा हो, गर्मी हो या बरसात हो, बेगम नहायेगी जरूर और वह भी ठडे पानी से और अलल-सुबह। मेरे मना करने पर भी कि जाडे मे इतने सुबह तो न नहाया करो या कम से कम ठंडे पानी से नही, पर वह मानती नही है। उनके पास कुछ किताबे है। उनमे बाइबिल, कुरान, रामायण और गीता भी है। गीता की कई किताबे उनके पास है। लोकमान्य तिलक, गाँधी जी की, आचार्य विनोबा भावे की—और इन किताबो को मैने उन्हे अक्सर पढते देखा है। समर्थ रामदास की दासबोध, सत ज्ञान-देव की ज्ञानेश्वरी, सत तुकाराम की तुकारामची-गाथा तथा सत एकनाथ की एक नाथी भागवत भी उनके पास है। हो सकता है वह रोज पढती हो इन किताबो को। जैसे हिंदू औरते सेंदूर की बिदी और माँग मे सेंदूर लगाती है और चूडियाँ पहनती है, आम-तौर से वह भी यही करती है। जूडे मे वह फूल लगाती है। गले मे वह एक ताबीज सा पहनती है जिसे वह मगल-सूत्र कहती है। पोशाक तो आपने उनकी देखी ही है, या साडी और जम्पर या वह मराठी ढग की धोती पहनती है। पैजामा वह नही पहनती। बुरका भी वह नही ओढती। मुख्तसर यह है कि मुसलमान है मगर तौर-तरीके अब भी उनके बहुत कुछ हिंदुआना है। कुछ महाराष्ट्रीय त्यौहार है जिनके नाम उन्होने मुझे बताये है मसलन चैत्र गौरी का हल्दी कुकू, सक्रान्ति का हल्दी कुकू ओर श्रावणी शुक्रवार का हल्दी कुकू, होली, दिवाली, दशहरा, रक्षाबधन या श्रावणी और गणेश-उत्सव वगैरह। और इन्ही सब त्योहारो पर वह कुछ न कुछ खास तरह के खाने बनाती है, मगर और रोजो से इन त्योहारो पर वह ज्यादा रजीदा दिखाई देती है।

"श्रीखण्ड, पूरनपोडी, चिउडा, साखर-भात, साटोरी, पिरोटा, करजी,

जिलबी, मोतीचूर, वासुदी, शेवया, फेण्या, गोडच्या, पोड्या, लाड्डू आदि महाराष्ट्र-भोज्य-पदार्थो तथा मिठाइयो को भी वह कभी-कभी बनाती है। उनकी वजह से मै हिदुओ के बहुत से त्योहारो, रीति-रिवाजो, रहन-सहन, खान-पान, पहनावे-उढावे वगैरह के बारे मे भी जान गया हूँ।

"मैं कभी उनकी बातो मे दखलन्दाजी नही करता, खास तौर से वालिदा के इन्तकाल के बाद।"

ऐसी ही बाते होती रही। लगभग बारह के बाद मेरी पत्नी आई और उसने फर्श के कुछ भाग को साफ कर के एक चटाई बिछा दी और हम लोगो से खाने के लिए तैयार होने को कहा। किलेदार ने कहा भी 'अभी तो भूख बिल्कुल नही है।'

पत्नी ने कहा ' घर से नाश्ता कर के चलियेगा तो भूख कहाँ से होगी। उस गल्ती की सजा कौन भुगतेगा ? "

किलेदार ने कहा " इशाअल्लाहताला आइदा ऐसी गल्ती कभी न होगी।"

मैंने पत्नी से कहा " देख लो ! आगे का भी इन्तजाम किस होशियारी से कर रहे है। "

रेखा जी भी आ गई थी। सब हँसने लगे। रेखा जी को हँसते देख कर किलेदार जी को तो खुशी हुई ही, हम लोगो को भी अत्यन्त प्रसन्नता हुई, क्योकि मेरी पत्नी भी मुझसे जान गई थी कि रेखा जी सदा उदास रहती है।

खाना खाया गया। भोजन बिल्कुल महाराष्ट्रीय था और महाराष्ट्रीय ढग से परोसा भी गया और खाया भी गया—किलेदार जी मुझे देख कर हूबहू वैसा ही करते थे। पत्नी ने बताया " आज का सब कुछ रेखा बहिन ने ही बनाया है। वह कितना स्वादिष्ट भोजन तथा विविध प्रकार के व्यजन बना सकती है, इसे कहने की आवश्यकता मुझे नही है। हम लोग बराबर बाते भी करते रहे है।"

सब बच्चे भी खा रहे थे। पहले चावल-दाल से प्रारभ हुआ, फिर

रोटी और आखिर मे दही-चावल खाकर भोजन समाप्त हुआ। तिल की चटनी मुझे बहुत पसद आई। भोजन अत्याधिक स्वदिष्ट बना था। हम लोगो को खिला कर दोनो अदर चली गई। पत्नी ने कहा था "हम दोनो बहिने भीतर अलग खाँयगे।" लगभग आध घटे बाद वे दोनो बैठके मे आ गई।

थोडी देर इधर-उधर की बाते होती रही। मैंने रेखा जी के बनाये भोजन की बडी तारीफ की। सब ने अपने हाथो से पान लगा कर खाये और वे दोनो फिर अदर चली गई। हम दोनो तख्त पर ही लेट कर आराम करने लगे। कुछ देर को सो भी गए।

लगभग दो बजे दोनो स्त्रियाँ फिर बैठके मे आ गई। हम दोनो भी उठ बैठे थे। पत्नी ने ग्रामोफून बजाना प्रारभ किया। प्राय: मराठी भाषा मे गाने थे। हम सब ध्यान दे रहे थे कि महाराष्ट्रीय गीतो को सुन कर रेखा जी आत्म-विभोर, आत्म विस्मृति की दशा मे हो जाती है। हल्के-फुल्के और शास्त्रीय दोनो प्रकार के सगीत के रिकार्ड बजाये गये, सिनेमा म्यूजिक के भी कुछ रेकार्ड बजे। कुछ हिदी के भी, कुछ उर्दू की गजलो के भी। पर रेखा जी सदा मराठी भाषा के रिकार्डो को सुन-सुन कर खो सी जाती थी। सभव है पूरे महाराष्ट्रीय वातावरण मे आज उन्होने अपने को तीन-चार वर्षो के बाद पाया है—महाराष्ट्रीय-परिवार, मराठी भाषा, महाराष्ट्रीय भोजन और महाराष्ट्रीय ढग के आचार-व्यवहार। तीन-चार वर्ष बाद आज उन्होने अपने को हिंदू-वातावरण मे पूर्ण रूप से पाया हो। भोजन बनाने के समय पत्नी की दी हुई महाराष्ट्रीय ढग से पहनी हुई धोती मे वह अब तक सुशोभित थी।

फिर हम चारो ताश खेलते रहे। कैसे छै बज गया यह पता ही नही चला। छै बजे यह दोनो स्त्रियाँ फिर भीतर चली गई, और थोडी देर बाद चाय-नाश्ते का सामान ले कर आई। चाय के बाद किलेदार ने कहा अब इजाजत दीजिये। चलो बेगम।"

रेखा जी बोली "चलूँ कैसे। मेरी साडी तो मजुला बहिन जी ने

कही छिपा कर रख दी है। कहती है आज की दिन भर की शर्त है। नौ बजे रात को खाना खाकर ये लोग जाने देगे।"

किलेदार ने कहा " यह भी पूछ लो कि क्या सुबह के नाश्ते के लिए रात को यहाँ सोने का भी हुक्म तो नही है। ऐसे खिलाने वाले अगर रोज मिल जॉय तो बिना हाज्मे की दवा खाये इतनी तादाद मे खाना हज्म करना गैर-मुमकिन हो जाय।" फिर मुझसे बोले "चलो भाई कुछ टहल आया जाय, विक्टोरिया-स्ट्रीट तक या किसी बाग मे। आखिर पेट मे कुछ जगह तो बनानी ही पडेगी।"

हम दोनो ही निकट के एक सरकारी बाग मे जाकर बैठ गए। किलेदार जी अपने तथा रेखा जी के विद्यार्थी-जीवन के खिलाडी-जीवन के बारे मे विस्तार से बताते रहे। यह भी बताया कि 'कप्स', सार्टीफिकेट वगैरह जो भी बेगम ने स्पोर्ट्स मे दस्तियाब किये थे वे भी एक बार उनके नाना जी मेरे यहाँ दे गए थे उन्हे और उनकी कुछ खास चीजे भी। कभी आपको वह सब चीजे दिखाऊँगा और अपने भी इनामात जो मैंने पाये थे। मगर अब तो बेगम ने शादी के बाद से, शायद पहले हमल के बाद से ही, बैडमिटन का बल्ला तक नही पकडा है। मैंने उनसे कहा भी कि मै घर पर ही इन्तजाम कर दूँ और नेट वगैरह लगा कर तुम्हारे साथ खेला करूँ, पर वह किसी तरह से खेलने को तैयार ही नही है। कहती है अब मै बिल्कुल भूल गई हूँगी और अब तबियत भी नही होती है।

"न जाने क्यो उन्होने सब कुछ छोड दिया है। जैसे उनकी तबियत किसी चीज मे लगती ही नही, और उखडी-उखडी सी रहती है। पच्चीस साल की उम्र मे ही वह इतनी 'डल' (सुस्त, अचचल) और 'सीरियस' (गंभीर) हो गई है, इतना कम बोलती है—सिर्फ जरूरत भर का—कि जैसे वह बुजुर्ग हो गई हों। मुझे तो अमूमन यही खौफ बना रहता है कि यह अगर ऐसी ही गुमसुम बनी रही तो यह कही बीमार न पड जायँ, कोई बीमारी इन्हे न घेर ले। मगर मुश्किल यह

है कि यह अपनी दिली तकलीफ या राज बताती भी नही है। इसीसे मैने आपसे कई बार अर्ज किया है कि आज जितनी खुश वह नजर आ रही है, तीन-चार साल से वह नही थी। न वह लटका हुआ, उदास और गमगीन चेहरा ही है न 'डलनेस' (अचलता)। अपनी बीबी को इस हालत मे देख कर मुझे इतनी खुशी हुई है कि क्या कहूँ। उनकी सेहत के लिए कितना अच्छा हो कि रोज ऐसी ही रह सके। अच्छा हो कि वह आपके घर अकसर आ जाय या बहिन जी ही हमारे यहा आएँ, कभी-कभी तुम भी उनसे मिल लिया करो, इससे उनकी मनहूसियत तो दूर होगी। शायद अपने महाराष्ट्र भाई-बहिनो और फिजा (वातावरण) को पा कर वह इतनी खुश हो पाई है।"

बात सच थी। मुझे निश्चय हो गया, आज की सारी बातो मे जो मैने किलेदार से सुनी, कि अपने माँ-बाप, नाना-नानी मे छुटने का गम और हिंदूधर्म के परित्याग और इस्लाम-धर्म मे दीक्षित होने के लिए बाध्य होने पर उनका पश्चाताप उन्हे खाये जाता है। वह अपने को मिटाने पर तुली है। इसी से अपने प्रति इतनी उपेक्षा, इतना उदासीनता दिखाती है। अगर यही उनकी मनोदशा रही तो कहो उन्हे टी० बी० न हो जाय या सोचने-सोचते उनका सिर ही फट-सा न जाय और वह पागल हो जाँय। पर वह हृदय से किलेदार को चाहती ह और एक आदर्श हिंदू नारी की की भाँति 'एक बार जिसकी हो गई, हो गई' के सिद्धान्त को निभाना चाहती ह। अपनी भूल, नामर्जी और अपने पर जोर-जबरदस्ती को वह अपने 'भाग्य का लेखा' और 'पूर्वजन्म के पापो का फल' तथा 'इस जन्म मे किया भीषण अपराध' मानती है। वह स्वय अपने आपको अब इस दलदल मे निकालना नही चाहती या निकाल नही पाती क्योकि न जाने कैसे एक मान्यता उनके मन मे यह घुस गई हैं कि हमबिस्तार कर के किलेदार ने मुझ को अपनी पत्नी बनने पर मुझे बाध्य कर दिया।

यह उनकी एक थोथी भावना ही सही, पर बद्धमूल होकर उनके

हृदय मे गहरी समाई हुई है, समा चुकी है। ऐसा नही है कि अगर वह चाहे तो अपने को छुटकारा दिला ही नही सकती है—लाख दुस्साध्य सही, पर प्रयत्न तो वह कर ही सकती है। वह पढी-लिखी है, फारवर्ड है। पर वह तो अभाग्यवश यह समझने लगी है कि मेरे तो सदा के लिए हाथ-पैर बाँध दिए जा चुके है। अब तो वह स्वय हाथ-पैर हिलाना ही नही चाहती। नही तो उन्हे छुटकारे के अवसर मिले और उन्होने जानबूझ कर बार-बार अपने को फँसाया। यह उनकी थोथी भावना ही उनका उद्धार न करने देगी उन्हे, और उन्हे इसी तरह से घुट-घुटकर अपना यह जीवन काटना पडेगा। और किलेदार यह कभी भी नही समझ पायेगे।

मैने अपनी पत्नी मे समझा तो ठीक से दिया है कि रेखा से क्या-क्या पूछे, उसे क्या-क्या समझावे। पर पहले रेखा की यह थोथी भावना तो मिटे तब कुछ उसके लिए यह सोचा जाय कि उसके लिए कुछ किया जा सकता है या नही। मुझे तो असभव ही लगता है। तो फिर आज ही की भाँति सुख-शान्ति पहुँचाई जाय ? पर कही ओस चाटे से प्यास बुझती है। यहाँ से जाने के बाद देख लीजिएगा रेखा और अधिक उदास हो जायगी क्योकि उसे अपनी वास्तविक स्थिति का ज्ञान होगा, वह अपने वर्तमान जगत मे, वास्तविक दुनिया मे फिर आ जायगी, जिससे उनकी यह दृढ और निश्चय धारणा कि 'अब जो होना था हो चुका है और कोई मार्ग खुला ही शेष नही रह गया है, प्रयत्न करना, हाथ-पैर फेकना व्यर्थ है। भाग्य सदा को निर्णय कर चुका है' दूर होगी ही नही।

"आप्टे-भाई ! वापस चला, जाय आठ के करीब होगा।"

हम दोनो घर वापस आए। तीनो लडके तखत पर सो चुके थे। पता चला उन्हे खिला-पिला दिया गया है। भीतर से कलछुल और बर्त्त-नो की आवाजे तथा छौकने आदि की ध्वनियाँ आती रही। मै किलेदार जी को अपनी विशेष चीजे—पुस्तके, फोटो-अलबम, सिक्को का, पत्तियो

का और टिकटो आदि का कलेक्शन दिखाता रहा। तानपूरा और तबला देखकर उन्होने पूछा "आप दखल रखते है इसमे ? आप तो माहिर होगे इस फन मे। रेखा को पक्के गानो का शौक है—वह समझती भी है शास्त्रीय सगीत। मैने 'स्टूडेंट लाइफ' (छात्र-जीवन) मे इनका गाना सुना भी था, अच्छा गाती है, मगर इधर तीन-चार सालो से गाना छोड शायद गुनगुनाया भी नही है। बाथ-रूम सिगर (स्नानगृह मे गाने वाले) तो मैं तक हूँ—फटे बाँस से गले वाला—पर रेखा तो 'बाथ-रूम' मे भी नही गुगगुनाती। उसने तो जैसे गाना गाने, हँसने-मुस्कराने की कसम खा ली है।"

मैने कहा "देखिये प्रयत्न करूँगा उनकी कसम आज तुडाने की। गाना-गाने पर जोर दूँगा उन्हे।"

"खुदा आपको कामयाबी दे।"

"अच्छा जरा भीतर जाकर देख आऊँ भोजन आदि बनने मे कितनी देर है।"

मैं भीतर गया। देखा कि रेखा जी चूल्हे के पास बैठी रोटियाँ बेल कर तवे पर सेक रही है और पत्नी ऊपर-धरी का काम कर रही हे। मैने कहा "रेखा जी! अच्छी मुसीबत मे आप फँसी। अभी किलेदार साहब को बुला कर दिखाता हूँ।"

रेखा ने कहा "रहने दीजिए।"

पर मै बैठक मे गया। और हाथ पकडकर उठाते हुए किलेदार से बोला "चलिए भीतर आपको दिखाऊँ आपकी बेचारी बीबी किस हालत मे है।"

वह समझ नही सके घसिटते चले आए। उन्हे रोटी करते कुछ देर तक देखते रहे फिर बोले "अपने चूल्हे-चौके मे भी आपने इन्हे जाने दिया, इनके हाथ का परोसा-बनाया खाया, बर्त्तन-पानी-अनाज सब छूने दिया इन्हे—आप पर तो इतना नही पर आपकी बेगम साहबा पर मुझे अजहद ताज्जुब है। आपकी रेखा बहन तो आधी-हिंदू आधी-मुसलमान

थी ही या सच तो यह है कि बरायनाम यह मुसलमान थी वह भी मेरी सबब से, मेरी बीबी होने के नाते, कलमा पढ लेने की वजह से, पर दरअस्ल मे दिल से यह हिंदू थी। पर मै आज से जरूर आधा-हिंदू, आधा मुसलमान हो गया। दिल से मुसलमान मगर अपनी बीबी और अपनी भाभी साहबा की वजह से आधा हिंदू। हिंदू और मुसलमान के इस प्रेम का, इस मोहब्बत का, इस भाई-चारे का नमूना क्या इससे भी ज्यादा, इससे भी अच्छा कही और देखने को मिल सकेगा।"

मैने कहा "तो आप मजूर करते है कि आज से आधे हिंदू हो गए—कम से कम अपने दिल मे।"

वह बोले "खुद नही हो गया हूँ, आपने और भाभी साहबा ने जबरदस्ती कर लिया है आज से। सरकारी रजिस्टरो मे तो मुसलमान ही दर्ज रहूँगा मगर दिल से आधा हिंदू हू आखिर हिंदू खून कुछ तो है ही मेरी रगो मे—दादा मरहूम कभी हिंदू ही थे, कभी मेरी बीवी हिंदू ही थी और मेरा ख्याल है अपने को दिल से वह हिंदू ही समझती है। समझती है, मुसलमान तो जबरदस्ती की गई हूँ। बेगम! अब तो तुम्हे कुछ तस्कीन होना चाहिए, खुश होना चाहिए, कुछ इनाम मुझे देना चाहिए।"

हम दोनो बैठके मे वापस आए। पर हम दोनो ने पत्नी को चुपके मे रेखा से कहते सुना "बहिन तुमसे आज रात को वह बिना इनाम लिए मानेगे नही। उस इनाम देने की बात समझ रखो।"

रेखा बोली "जाओ भी बहिन तुम!"

बैठके मे मैंने कहा "किलेदार साहब दोनो की बाते सुन ली! याने आज बहिन जी की खैर नही है।"

वह बोले "अरे भाई सहेलियो की बाते है यह आपस की।"

मैने बैठक से ही आवाज दी "मजुला जल्दी खाना करके दोनो यहाँ आना, हाथ-मुँह धोकर इतमीनान से बैठने को। खाना कुछ देर बाद खायँगे। जल्दी करना।"

लगभग आध घटे मे वे दोनो आ गई । मैने रेखा जी से कहा -"देखिए मै बडा भाई हूँ । मेरी आज्ञा का पालन करने को आप बचन-बद्ध है । मुझे पता चल गया है कि आपने तीन-चार वर्ष से नही गाया है पर आप अच्छा गाती थी—आपका सगीत मे दखल है । तानपूरा मिलाइये । तबला मै बजाता जाऊँगा" कहकर नानपूरा मैने उनके हाथ मे रख दिया ।

तनपूरा पृथ्वी पर रखते हुए रेखा बोली "आप भी इनकी बातो मे आ गए । मैं गाना-वाना क्या जानूँ । सुनने का शौक अवश्य है । आपके यहाँ बाजे है, तबला आप बजाने जा ही रहे थे, इसके अर्थ है कि आप दोनो का प्रवेश सगीत मे है । मै सुनूँगी अवश्य । चार वर्ष बाद मैने आज इतनी देर मराठी भाषा मे गाने सुने है ।"

"खैर मै गा तो दूँगा क्योकि आपकी आज्ञा है । पर गाना-वाना मै क्या जानूँ, रो लेना हूँ पर तबला जब तक साथ मे नही बजेगा गा कैसे पाऊँगा । मजुला तबला बजाना जानती नही है । आप तबला बजा दे तो ।"

रेखा काफी देर सिर नीचा किए सोचा की । उनके हृदय के अन्त-र्द्वन्द को मै समझ रहा था । बोली "तबला बजाना मै क्या जानूँ, पर सादा-सादा ठेका भी कदाचित् न दे पाऊँगी । चार वर्षो से मैने तबले की सूरत नही देखी थी । आज यो ही गाइये ।"

मैने कहा "यो तो मै न गा पाऊँगा बिना ताल का सहारा पाये । तो फिर रहने दीजिये ।"

फिर रेखा कुछ सोचने-विचारने लगी । कदाचित् न गाने-बजाने का वह निश्चय किए थी । फिर बोली "प्रथम तो मैं बजा नही पाती थी और फिर चार वर्षो से तो छुआ भी नही है । अब अगर तबले मे खिल-वाड करूँगी तो आप गा तो क्या पावेगे, और आपको झुँझलाहट होगी । मुझे कोसेगे । मजाक की चीज मै हूँगी ही, आपको बेसुरे न होना पडे कही ।"

मैने कहा "आप मेरे बेसुरे होने की चिता न करे। न मै झुँझला-ऊँगा, न आप मजाक का सामान बनेगी। बजाना पडेगा आपको।"

मैने तानपूरा मिलाया, ठीक किया। फिर रेखा जी के हाथो मे देकर बोला "जरा तार छेडती जाइये, तबला ठीक करूँ, मिला लूँ। रेखा जी ने कातर दृष्टि से मुझे देखा—वह दृष्टि जो सीधे हृदय को चीर दे। कदाचित् सोच रही होगी कि जो मैने प्रतिज्ञा कर ली थी कि गाने-बजाने से कोई सरोकार नही रखूँगी आपके कारण वह भी नहीं रख पा रही हूँ। मैने तानपूरा उन्हे पकडा दिया। प्रारभ मे उनकी उँगलियाँ काँपी होगी पर बाद मे वह तारो को ठीक से छेडने लगी। कोई भी समझ सकता था कि तानपूरा यह बजाती रही है, उनके लिए नई चीज नही है।

मैने तबला ठीक किया और फिर तबला उनके आगे रख दिया। बोला "तीन ताल।" तानपूरा लेकर मैने स्वर साधा और फिर एक गाना गाया। अच्छा खासा मतलब भर का तबला रेखा जी बजा लेती है। किलेदार की फरमाइश पर एक ठुमरी और रेखा की फरमाइश पर एक दुर्गा राग पर गाना और गाना पडा। प्रथम गाना मैने मराठी का गाया था, शेष दो हिन्दी के। गाने तीनो ही वियोग शृगार के थे। रेखा जी के आँसू निकलते रहे और बीच-बीच मे तबला रोक कर उन्हे अपनी साडी का पल्ला पकडना पडा।

तानपूरा पृथ्वी पर रख कर मैने कहा—"आप कितनी झूठी है। चार वर्षो से अभ्यास नही था और इतना अच्छा तबला बजाती रही। लीजिये तानपूरा और गाइये। अब और झूठ न बोलियेगा। आपका विश्वास अब मै नही करूँगा जो गाने से इकार या बहाना किया।"

बहुत दयनीय भाषा मे रेखा ने कहा "भैया मुझे बाध्य मत करो मै गा नही पाऊँगी। गाना जानती थी भी नही ठीक से। 'बाथ-रूम-सिगर' थी। चार वर्षों से जो नही गायेगा वह बेसुरा और बेताला होगा, इतना तो आप मानेंगे ही।"

मैने कहा—"नही, नही मानूँगा। गाना तो आपको पडेगा ही। व्यर्थ स्वय परेशान हो रही है और मुझे परेशान कर रही है। याद है न आपको मैने आज्ञा दी है, प्रार्थना नही की है। भाई साहब आप भी तो कुछ कहिये।"

किलेदार ने कहा "भाई मेरे! मै तो घटा भर मे मन ही मन खुदा से आपकी कामयाबी के लिए दुआ माँग रहा था। यह मेरा कहना टाल सकती है, अपने राखीबद भाई का नही। गाओ बेगम! क्यो देर करती हो, घर भी चलना है। तुम्हे यह छोडेगे नही।"

रेखा ने देखा छुटकारा असम्भव है। तानपूरा उसने बजाना प्रारभ किया। प्रारम्भ मे उनका गला लडखडाया और मुझे उन्होने बहुत मायूस नजरों से देखा कि मुझे छोड दो तो बडी कृपा हो, पर मैने दृष्टि नीची कर ली। मैं रेखा की व्यथा समझता था और पुरुष न होना तो सभव है मै भी अपने आँसू न रोक पाता।

रेखा जी ने गाना जारी रखा और कुछ क्षणो बाद ही अपने गले और उससे अधिक अपनी भावनाओ को नियत्रित करके वह अच्छा खासा गाती रही। अभ्यास छुटा होने के कारण गाने मे शास्त्रीय-'टच्च' तो वह अधिक नही दे पाई, पर वह न बेसुरी हुई और न कहीं बेताल।

गाना समाप्त होने पर मैने उनसे कहा "मै आपको अधिक परे-शान नही करूँगा। कितने आँसू आज आपने बहाये है, प्रयत्न करने पर भी आप हम लोगो से छिपाने मे असमर्थ रही है। केवल एक गाना और—वह भी मराठी ही। भगवान ने आपको इतना सुरीला गला दिया है, इतना दर्द आपके गले मे है, मैं इसकी कल्पना भी नही कर सकता था। किलेदार साहब! चार वर्षो मे इनका अभ्यास छुटा है। ओर गवैया चार दिन भी न गाये तो क्या हो जाता है—इसे समझकर आप जरा गौर कीजियेगा।"

रेखा जी ने फिर इकार नही किया। एक वियोग का मराठी भाषा का गाना उन्होने गाया। सचमुच गाने की महफिल खूब जमी। गाना

समाप्त होने पर मैंने किलेदार से कहा "आप कितने खुशकिस्मत हे रेखा जी सी पत्नी पाकर, काश इसे आप समझ पाते । मैं आपको इसके लिए मुबारकबाद देता हूँ । और रेखा बहिन ! तुमने आज मुझे भैया कहा है फिर कभी भाई साहब न कहना ।"

किलेदार ने कहा "जबानी शुक्रिया कहने पर तसल्ली नही होगी मुझे, मगर और फिर क्या करूँ या कहूँ नही जानता । और रेखा जी को पाकर मै कितना खुशकिस्मत हूँ, खुदा गवाह है कि यह तो चार सालो मे शायद हर घडी सोचा है, महसूस किया हे । मै ही इनके नाकाबिल था । मै इन्हे कुछ भी नही दे सका सिवा अपनी सच्ची मोहब्बत के । और बेगम जो आज तुमने अपने इतने कीमती मोती लुटाये है उन पर मेरे जजबात और खयालात मुझमे क्या कह रहे है मैं खुद इसे समझ पाने की कोशिश करने पर भी समझ नही पा रहा हू ।"

रेखा जी अपने आँसू छिपाने को फिर अन्दर भागी । मैने पत्नी से कहा "अपनी बहिन के पास जाओ ओर खाना लाओ । इस बार हम चारो एक जगह एक साथ खायेगे ।" पत्नी चली गई ।

किलेदार ने कहा 'जो मै न करवा पाता वह आज आप दोनो ने रेखा जी से करवा लिया । आज से रेखा जितनी मेरी है, उतनी ही आप दोनो की है ।"

चारो ने भोजन किया । रात के ग्यारह बज चुके थे । पैदल ही दोनो अपने घर को चले गये । हमीद किलेदार के कधे से लगा सो रहा था । न किसी तरह मुझे अपने साथ चलने दिया न रात का मेरे यहाँ सोने को तैयार हुए ।

जाने के कुछ पूर्व जब दोनो स्त्रियाँ भीतर थी किलेदार साहब मेरे साथ भीतर गए क्योकि हमीद भीतर लिटा दिया गया था । पत्नी रेखा से फुसफुसा कर मजाक कर रही थी 'आज क्यो किलेदार साहब यहाँ नही रहना चाहते, मै समझती हूँ' और उन्होने रेखा के चुटकी काटी थी ।

रेखा जी ने उसी क्षण उत्तर दिया था "जी नही, किलेदार साहब समझदार है। भैया उन्हे रात भर गालियाँ न दे आपकी याद मे, इसी से वह नही रह रहे है।"

किलेदार मेरी बाँह हिला कर मुस्कराये थे। मेरी पत्नी ने मराठी भाषा के प्रसिद्ध लेखक वि० स० खाडेकर के दो उपन्यास उन्हे पढने को दिये थे—सभवत "पहला प्यार" और 'सूना मन्दिर।"

: १२ :

किलेदार और रेखा के जाने के पश्चात् मैने अपनी पत्नी से कहा "हमारे धर्म-ग्रन्थो मे कहा गया है कि यदि किसी की भी आत्मा और मन को शान्ति और सुख पहुंचाया जा सके भले ही वह क्षण भर को, तो वह पुण्य कार्य है। तुमने आज अपनी वाणी और व्यवहार से जो मानसिक सुख और अगाध शान्ति रेखा जी को पहुँचाई है वह तुम्हारी ऐसी देवी के ही उपयुक्त है। मेरी तो पत्नी हो मै तुम्हारी तारीफ क्या करूँ, पर स्वय किलेदार जी ने तुम्हे फरिश्ता अर्थात् देवदूत कहा है। सोचो इस बडे पुण्य की अपेक्षा व्यर्थ की छुआछून के पचडे को यदि तुम लिए रहती तो रेखा के हृदय को इतनी सरलता से न जीत पाती। जो उनका सबसे निर्बल, पीडित तथा मर्मस्थल था तुमने अपने ही व्यवहार से उस पर मरहम लगाया है, वाणी से 'अमृत छिडका है। कितनी ऊँची धारणा तुम्हारे विषय मे रेखा ले गई है, इसे सोचो तुम। मुझे तुम पर गर्व है। तुम पति की भावनाओ का कितना ध्यान रखती हो। 'मानवता' तुममे कितनी है, और 'मनुष्यता' इस छुआछून-

"क्या आप अपने वर्तमान जीवन से, वर्तमान परिवार से, पति से, वर्तमान परिस्थितियो से प्रसन्न है, सतुष्ट है ?"

"मेरा तो ऐसा ही विचार है कि मै प्रसन्न हूँ, सतुष्ठ हूँ ।"

"क्या आप कोई परिवर्तन नही चाहती इस स्थिति मे अब ?"

"आपका प्रश्न जटिल है । मै प्रश्न ही नही समझी, आपके पूछने का उद्देश्य ही नही समझी, तो फिर क्या उत्तर दूँ । तो भी साधारणतया मैं कोई परिवर्तन-विशेष नही चाहती ।"

पहले तो रेखाजी ने स्पष्ट उत्तर नही दिए, गोलमोल उत्तर दिए, बनकर, बचकर । ठीक से नही खुली । पर कुछ देर बाद उन्होने स्पष्ट और खुले उत्तर दिए । उन्होने बताया "सक्षेप मे मै आपसे बता दूँ क्या हुआ और मै क्या चाहती थी और क्या चाहती हूँ । मै प्रेम तो इन्हे करती थी । अब भी प्रेम करती हूँ । प्रेम यह भी मुझे करते थे । अब भी मुझे करते है । मै पत्नी तो इन्ही की रहना चाहती हूँ पर मै सदा से यही चाहती रही हूँ कि हिंदू-धर्म मे वापस आ जाऊँ और यह भी हिन्दू हो जॉय । मै चाहती हूँ अपना महाराष्ट्र-समाज, महाराष्ट्र-भूमि, अपनी जन्मभूमि, अपना देश, अपने पिता-माता-नाना-नानी-भाई-बहिन और पहले वाले समस्त मित्र, सम्बन्धी, सहेलियाँ वैसे ही मेरे हो जाँय जैसे पहले थे । मै चाहती हूँ मैं ससम्मान समाज मे स्थान पाऊँ । यदि यह सम्भव न हो तो मैं इनकी पत्नी हिन्दू बन कर रहूँ और यह मुसलमान रहे इसके बजाय मै यह चाहती हूँ कि मै हिन्दू-धर्म मे परिवर्तित हो जाऊँ, और मे एक विधवा या पति-परित्यक्ता सा जीवन व्यतीत करूँ । पर यह चिर-जीव रहे । इनके बिना मैं रहने को तैयार हूँ—चार वर्ष पहले भी तैयार थी, पर दूसरा पति न तब सहन कर सकती थी, न अब या कभी चाहती या चाहूँगी । मुसलमान पति से अधिक मैं हिन्दू-धर्म ही चाहूँगी । पहले भी यही चाहती थी । बताइये इसमे क्या हरज था । पर माता-पिता ने यह नही होने दिया ।

"उन्होने मेरा विश्वास नही किया । वह समझते थे मैं इनके बिना रह

नही सकूँगी, मुसलमान होना पसद करूँगी। मै पहले भी बिना पति के रह सकती थी, अब भी रह सकती हूँ। पर पति यदि चाहूँगी तो इन्हे ही। आप मेरा ठीक से भाव समझ रही है या नही? यदि मैं इनसे अलग रहती तो इन्हे प्रेम करती थी, प्रेम तो करती ही रहती—इन्हे सदा-सर्वथा आलिगन-चुम्बन तक अधिकार देती, यौन-सम्बन्ध का नही। पर जब इन्होने जबरदस्ती यौन-सम्बन्ध स्थापित कर लिया तो सभव है यौन-सम्बन्ध भी इन्हे स्थापित करने देती—बाध्य होकर—पर इनसे विधिवत् विवाह न करती, रहती हिन्दू ही।

"इन्होने जबरदस्ती मेरा कौमार्य भग कर सम्वध न स्थापित कर लिया होता तो कभी भी इन्हे अपनी प्रसन्नता से ऐसा न करने देती। जबरदस्ती इन्होने निकाह पढा लिया था। तब भी मै इनसे अलग रहने को तैयार थी यदि मेरा जबरदस्ती देशपांडेय से न विवाह कर दिया जाता और मै आगे-पीछे उनसे यौन-सबध स्थापित करने को बाध्य न की जाती।

"यदि माताजी मुझ पर जुल्म न करती, मेरा जीवन नरक न कर देती! मुझे यदि जीवन का खतरा उन लोगो के द्वारा न होता तो निकाह हो जाने के बाद भी मै किलेदार से दूर, अकेले मे रहने मे सुख मानती, सनुष्ट रहती। पता नही क्यो जबरदस्ती मेरा विवाह अन्य से करके उस नये मनुष्य से यौन-सबध स्थापित करवाने पर ये लोग तुले हुए थे। संभवत मुझ पर, स्त्री जाति पर, उसकी सयम की शक्ति पर, उसकी बात पर इन लोगो को विश्वास न था। साधारण लडकियाँ वैसी हो सकती हे, होती भी है, पर मै असाधारण लडकी थी। मुझे आत्म-विश्वाम था। भविष्य के बारे मे यो तो गारटी कोई नही दे सकता। पर मेरा विचार हे मैं आत्म-सयम कर सकती हूँ। विषय-वासना की ओर मेरा ध्यान विशेष न था—यो तो आखिर हाड-मास का शरीर पाये मै भी निर्बल मनुष्य हूँ, नारी हूँ।

"अब आप पूछ सकती है कि मेने आलिगन-चुम्बन ही क्यो दिया? मैने प्रेम ही क्यो किया किसी यवन से? तो इसका उत्तर यह है कि प्रेम

तर्क नही जानता । यह इत्तिफाक था या भाग्य, मै इनके सम्पर्क मे आई और मै इन्हे प्रेम करने लगी । ऐसा नही है कि मेरे मन ने मुझे इस बात के लिए धिक्कारा न हो । नही सैकडो बार धिक्कारा । मैने इन्हे भूलने का प्रयत्न किया, पर इन्हे प्रेम करना न छोड सकी । अपने मन से मै हार गई । यह भी साधारण मनुष्य से कुछ ऊँचे हे । आप इनके निकट रहिएगा । इनका अध्ययन कीजिएगा तो आप स्वय यह बात जान लीजिएगा । और यह कहने की बात है कि इन्हे प्रेम करती रहती, इन्हे कहने देती कि यह मुझ पर जान देते है, और इन्हे कर स्पर्श न करने देती । और फिर असम्भव था कि यह मुझे आलिगन न करते या चुम्बन न करते, और मैं इन्हे बाधा दे सकती । आलिंगन-चुम्बन तक मैंने इतना बुरा भी न माना था, इसे अधिक चारित्रिक पतन भी न माना था ।

"पर मै स्वीकार करती हूँ अपने वर्तमान जीवन, अपनी वर्तमान परिस्थिति, अपनी दीन अवस्था से सतुष्ट नही हूँ । निकाह मेरा जबरदस्ती हुआ, वह भी एक तरह 'निकाह' था ही नही । कौमार्य मेरा जबरदस्ती भंग किया गया पर बाद मे कलमा मैने अपनी मर्जी से पढा और अब मै बाकायदा मुसलमान हूँ । पहले कलमा भी मेरा जबरदस्ती पढवाया गया था, वह भी 'कलमा' का मजाक था । पर जब पाकिस्तान मे मै आ गई और यह मैने समझ लिया कि अब इस जीवन मे किसी प्रकार के परिवर्तन की आशा व्यर्थ है तो मैंने सोचा कि सरकारी कागजो मे भी लिखी-समझी मुसलमान ही जाती हूँ तो इससे बहतर है कि ठीक से कलमा पढवाकर मुसलमान हो जाऊँ, इससे कानूनी सरक्षण की इनसे दावेदार हो जाऊँगी । अतः आत्म-सरक्षण की भावना से दूसरी बार अपने मन से कलमा पढवाकर मुसलमान हुई । इनका बराबर हठ भी रहता था मुसलमान होने का । सोचा पति को प्रसन्न करने से लाभ ही मेरा होगा । इसे आप मेरी कमजोरी, मेरी दृढता की कमी कह सकती है—पर कलमा पढना या न पढना सब बराबर था विशेषकर जब मै पाकिस्तान मे इनके साथ आ चुकी थी और जैसा कहा था कि यहां म

इस जिन्दगी मे छुटकारा मैने असभव समझ लिया था। मै एक तरह से मुसलमान तो थी ही, मन समझाने को चाहे जो कहती। यह अप्रसन्न भी मुझसे रहते थे। मैने कहा—चलो कलमा ही सही, लाओ इन्हे प्रसन्न कर दू। विशेष हानि अब और क्या होगी ? हानि होने मे शेष रह ही क्या गया है ?

"मै समझती हूॅ मै रखैल हूॅ, इनकी वेश्या हूॅ, इन्हे अपनी सेक्सपूर्ति के लिए एक नारी की आवश्यकता हे, और इन्होने मुझे पा लिया हे। चलो ऐसा ही सही। इनके प्रेम से मै सतुष्ट थी और हूॅ पर मुझे जबर-दस्ती अपने कब्जे मे रखने वाले इनके व्यवहार से नही, मुझसे जबरदस्ती सेक्स, जवरदस्ती निकाह, जबरदस्ती गर्भवती करना और गर्भ न गिरने देना, जबरदस्ती अपने सुख, अपने प्रेम, अपनी वासना के लिए मुझे रखना, मुझे जबरदस्ती कलमा पढाना—इन बातो से नही। इन बातो के कारण यह मेरी निगाहो से गिरे हुए है। मै इस दृष्टि से इन्हे आदर्श पुरुष नही मानती। यह मुसलमान पहले है. पति और प्रेमी बाद मे। मै भी चाहती थी और हूं, हिन्दू पहले और पत्नी और प्रेमिका बाद मे। अन्तर इतना ही है कि इन्हे सफलता मिल गई और मै असफल हो गई। यह मुसल-मान बने रहे, मै हिन्दू बनी नही रह सकी।

"अब आपके समस्त प्रश्नो का उत्तर हो गया। मै परिवर्तन चाहती हूँ तथा और क्या चाहती हूॅ यह मैने आपको बता दिया। मै किस रूप मे वर्तमान परिवार, पति तथा परिस्थितियो से असतुष्ट हूं, यह भी बता दिया।

"एक बात आपको और बता दू। जब मैने देख लिया है कि मेरा उद्धार असभव है तो मैने प्रायश्चित, जीवन भर प्रायश्चित करने की बात सोची। मैंने निश्चय कर लिया कि मै सगीत, नृत्य, गान, सिनेमा, थियेटर, क्लब, सुसाइटी, सैर-सपाटा तथा अन्य शारीरिक ओर मानसिक सुखो से अपने को दूर रखूंगी। मै नही चाहती कि मेरे गर्भ से और यवन पैदा हो। मैंने अपने स्वास्थ्य के बहाने इनसे यह कहा, यह भी बताया कि

लेडी-डाक्टर ने मुझसे कहा है कि यदि बच्चा कभी हुआ तो मेरी जान का खतरा है। और इनसे अपील की कि मै गर्भवती न हो पाऊं, यह 'चेक मेथड्स' (गर्भ-नियत्रण-प्रसाधन) प्रयोग मे लावे, क्योकि जब पति है तो सेक्स तो होगा ही।

"इन्होने यही कहा कि हद भर यही ध्यान रखूँगा। और यो जीवन और मृत्यु के विषय मे कोई भविष्यवाणी नही कर सकता। खैर एक लडका और हो जाने दो, फिर तुम्हारी इच्छा के अनुसार मै तुम्हारा आपरेशन कराकर बच्चेदानी निकलवा दूँगा।

'और बहिन इसकी नौबत आ गई है ।" शर्माकर रेखा जी ने आखे नीची कर ली। मैने रेखा को गले से लगाकर चूम लिया और प्यार से उसके गाल थपथपाते हुए बोली थी "बहिन! मै समझ गई तुम्हारा मतलब! खैर एक और सही। तुम्हारे विचार बहुत स्तुत्य है, बहुत अच्छे है, बहुत ऊँचे है, एक आदर्श रमणी के योग्य है। मै सब कुछ इनसे बता दूँगी। यह तो मै तुमसे न भी कहूँ तो भी तुम जानती हो। और देखूँगी यह या मै क्या कुछ कर भी सकते है? लगता तो सम्भव नही है, केवल सहानुभूति और सच्चा प्रेम छोडकर।"

रेखा ने कहा "इतना ही बहिन क्या कम है? यदि इतना आप लोगो से सदा मिलता जाय, यदि सदा ही आप लोगो से ऐसा ही सम्पर्क बना रहे तो मै समझूँगी मुझे स्वर्ग का खजाना मिल गया। मेरी सारी कमियाँ, सारी हानियाँ पूरी हो गई। मेरी जिन्दगी रहने योग्य हो जायगी, मै जीना चाहकर जी सकूँगी। तुम दोनो मे अपना धर्म, अपना राष्ट्र, अपना परिवार मुझे मिल जायगा।"

मैने कहा "अच्छा बहिन यह तो तुम मानती हो कि तुम मुसलमान हो गई हो और जब मुसलमान हो तो तुम पर इस्लाम के सब नियम लागू होते है। जब जबरदस्ती निकाह कराया गया तो यह सच्चा निकाह हुआ ही नही, यह तुमने कहा। और फिर तुम्हारे यहाँ तलाक जायज़ है। तुम तलाक अगर दे दो तो कोई अधर्म का काम नही करोगी, शरअ

के खिलाफ नही जाओगी। तुम इन्हे तलाक दे सकती हो तो दे दो।"

रेखा ने पूछा "बहिन! सच बताओ क्या यह केवल तुम्हारी आवाज है या सिखाई-पढाई बात?"

मै बोली "यह मेरी और इनकी सम्मिलित आवाज है, न खाली मेरी न खाली इनकी। और भविष्य मे मेरी समस्त बात इसी रूप मे देखना, लेना।"

"अच्छा मान लो इनको तलाक दे भी दूँ, अगर यह सम्भव हो, तो भी उससे लाभ? तो उसके बाद? किस उद्देश्य के लिए ऐसा कराया जायगा?"

"तलाक के बाद एक मुसलमान स्त्री-पुरुष को दूसरे से विवाह करने का जायज हक है, उसमे पाप या दुश्चरित्रता नही होती। एक से यौन-सम्बन्ध हो चुका हो, तो दूसरे से तलाक के बाद हो सकता है धार्मिक विधि मे, यह मेरा कहना है—तलाक के बाद दूसरे से विवाह होने पर। तुम्हारा यह कहना, यह तर्क कि यौन-सम्बन्ध अब किसी से होना अधर्म होगा, मै यह नही मानती—तलाक के बाद दूसरे से विवाह होने पर।"

रेखा ने कहा "अच्छा बहिन अगर मै कहूँ कि हृदय से, मन से, आत्मा से मै हिंदू ही हूँ तो?"

मैने कहा "तो फिर एक से यौन-सम्बन्ध के बाद समाज दूसरे से यौन-सम्बन्ध विशेष परिस्थितियो मे स्थापित करने की स्वीकृति देता है। मान लो एक हिंदू स्त्री विधवा हो जाती है। और अब विधवा-विवाह की समाज मे खुली छूट है। वह अधर्म का कार्य नहीं समझा जाता। मै उस बात को नही कहूँगी कि बचपन मे एक कुमारी का भूल से पैर फिसल जाने पर दूसरो से उसका विवाह कर ही दिया जाता है—आदर्श बात यह नही है, पर व्यवहार मे तो ऐसी घटनाये घटती ही है।"

"तुम्हारी बात मान लो मैने ठीक मान ली। पर तुम कहना क्या चाहती हो इसे खोलकर कहो।"

"तुम देशपाडेय से भी विवाहित हो चुकी हो। मानलो अब भी तुम्हे पत्नी के रूप मे स्वीकार करने को प्रस्तुत हो जायँ तो तुम इन्हे तलाक देकर उसकी पत्नी बन सकती हो। 'मानलो' की बात यहाँ हो रही है। मान लो पहली रात देशपाडेय तुम्हारे बहकावे मे न आकर तुम्हे अकशायिनी कर ही लेता तब ?"

'तब तो मै कह ही चुकी हूँ कि मन मे अपने को, दुश्चरित्रा समझती, किलेदार के 'रेप' (बलात्कार) के कारण, पर तब मै देशपाडेय की ही हो कर रहती, चाहे जितनी सख्ती मुझपर होती। तब किलेदार के पास नही ही वापस आती। क्योकि तब जिस चीज को बचाने की मेरी हठधर्मी थी जब वह चीज ही नही रही तो हठधर्मी किस बात पर करती। पर मै मजूर करती हूँ कि देशपाडेय को महान और चरित्रवान इतना न समझती पर मै हिदू की हिदू बनी रहती और मेरा परिवार और समाज वर्ष-छै मास मे मेरी समस्त पिछली गल्तियाँ भूल जाता।"

मैने कहा "बाज दफे आदर्शवाद भी बुरा होता है—बिना सोचा-समझा आदर्शवाद। बाज दफे व्यवहार-कुशलता और व्यावहारिक (प्रैक्टिकल) होना ही समझदारी है। देशपाडेय के उदाहरण से यह स्पष्ट हो गया। उसने तुम्हे अकशायिनी न करके भारी भूल की। बेचारा भोला और भला देशपाडेय!"

"पर तुम मुझे उसकी पत्नी ही क्यो बनाना चाहती हो? मानलो वह राजी भी हो जाय, मान लो मै भी राजी हो जाऊँ—यद्यपि यह सभव नही है।"

"देखो रेखा बहिन! आदर्शलोक मे नही, इस ठोस जगत मे रहो। स्त्री को विशेष कर तुम्हारी ऐसी स्त्री को एक सबल की आवश्यकता है। तुम्हे समाज, धर्म और व्यक्तियो के व्यग्य, तानो, शिकवे-शिकायतो, प्रहारो से बचाने के लिए, तुम्हे आत्म-सम्मान-पूर्ण ढग से रहने देने के लिए,

जिसमे तुम सिर उठाकर समाज के सामने बैठ सको, चल सको इसलिए एक बलवान तथा क्षमतावान पुरुष के आश्रय, के सहारे की आवश्यकता है और देशपाडेय इस दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ है। अच्छा तुम अपने नाना जी, पिता जी तथा देशपाडेय जी का नाम-पता ठीक से दे सकती हो ?''

रेखा ने कहा ''ठीक नाम-पता देने मे मेरा क्या लगता है पर तुम गडे मुर्दे न उखाडो। चार वर्ष बाद जब सब मुझे भूल कर बैठ चुके है तब क्यो उनकी, मेरी, देशपाडेय की शान्ति भग करती हो। उसमे कोई लाभ नही होगा, हानि अधिक होगी। किसी को कुछ मत लिखो। कही ऐसा न हो कि उनमे से कोई इन्हे लिख दे और मेरे ऊपर इनका विश्वास समाप्त हो जाय। यह मुझे मारे-पीटे और बधन मे रखे, और छूट पाना तो गैरमुमकिन है ही और यहाँ से छूटे बिना तो हिंदू बनना भी असभव है ; और हिंदू बन भी जाऊँ तो कहाँ रहूँगी, क्या करूँगी, कौन मुझे अपनाने, पास बैठाने को तैयार होगा ?''

मैने कहा ''रेखा बहिन ! पाकिस्तान मे रहकर तुम चाहो भी, हम लोग चाहे भी तो शुद्धी करवा कर तुम्हे हिंदू बनवाना असभव है। तब कदाचित् तुम्हे तो काटकर किलेदार जमीन मे गाड ही देगे। हम लोगो के प्राण लेने मे भी वह कोई कोर-कसर न उठा रखेगे। यह जो आज प्रेम और हिंदू-मुसिलम एकता का नाटक तुमने देखा है, इसके धुर्रे एक क्षण मे उड जायगे। भावनाओ मे बहकर ही आज का मधुर दृश्य हुआ है और भावनाओ मे बहकर ही वह प्राणघातक भीषण दृश्य भी होगा। रहा हिंदू बनने पर कौन तुम्हे अपनावेगा, कौन तुम्हे पास बैठाने का रवादार होगा तो बहिन ! मै तुम्हे सिर-आखो पर रखूगी ; यह तुम्हे आँखो की पुतली की भाँति रखेगे। हिंदू बनकर तुम मेरे साथ रहोगी। मुसलमान होने पर भी मै तुम्हे अपने पास रख सकती हूं पर तब समाज के सामने कुछ बाते बनानी पडेगी, कुछ डरना पडेगा, कुछ छल-कपट करना पडेगा। तुमसे मै सच-सच ही कह रही हूँ।''

रेखा ने कहा ''मै तुम्हारा पूरा विश्वास करती हूँ। और तुम दोनो

सचमुच मेरे साथ ऐसा ही करोगे। इसमे तनिक भी सदेह नही है। और भी जो तुमने कहा है ठीक है पर बहिन ! ऐसी बाते करना खतरनाक है, दीवारो के भी कान होते है।"

मैने कहा "यद्यपि हम लोग कानाफूसी कर रहे है अत यह लोग जानते भी हो तो भी सुन नही सकते और मै निश्चयपूर्वक कहती हूँ कि इस समय दोनो खाकर सो रहे है।"

और मै उठकर बैठने मे आप दोनो को सोते देख आई थी।

मैंने कहा था "बहिन ! हम लोगो पर विश्वास करो। हम लोगो से कोई अकल्याण तुम्हारा नही हो पावेगा। यो भाग्य और भगवान की बात मै नही जानती। पर हम लोग जो चाहे, करने दो, जो चाहे, सोचने दो। पर मै तुमसे राई-रत्ती बता दिया करूँगी या यह बता देगे। पर तुम मुझसे बराबर मिलती रहना—यह बहुत आवश्यक है।"

रेखा ने कहा "जैसा आप लोग चाहे करे। मेरी तो यही सच्ची राय है कि मुझे मेरे भाग्य पर छोड दे इसी हालत मे रहने दे। राई-रत्ती को तो मै भी आप दोनो को बता देती रहूँगी। रहा मिलना, तो मै तो रोज चाहती हूँ बहिन ! तुम दोनो से मिलूँ—अधिक से अधिक समय तक। पर मै इनके आधीन हूँ। मिल जब ही पाऊँगी जब यह चाहेगे। यद्यपि मै मिलने का प्रयत्न सदा करूँगी। इच्छा तो मेरी होती है कि तुम लोगो के साथ ही सदा रहूँ। तो भी खैर अगले इतवार को तो मुलाकात होगी ही क्योकि मेरे यहाँ आप लोगो का निमत्रण है ही। मैने तो गल्ती की ही है, पर आप अगर छै बजे प्रात मेरे यहाँ न पहुँच गई उस दिन तो मे आपसे खूब लडूँगी भी और क्षमा भी नही करूँगी।"

"अच्छा बहिन ! जब तुम्हे इनके साथ प्रारभ मे रहना पडा होगा तो खान-पान, रहन-सहन मे कैसा लगा होगा ? क्या तुमने कभी यह सोचा होगा कि देशपाडेय के पास से भाग आने मे गल्ती की ?"

"मंजुला बहिन ! देशपाडेय जी ने मुझसे कहा था—

'श्रेयान स्वधर्मो विगुण: परधर्मात्स्व नुष्ठितात् ।
स्वधर्मे निधन श्रेय· परधर्मो भयावह ॥

स्वधर्म का आचरण मनुष्य करे। क्योंकि अच्छे प्रकार आचरण किए हुए दूसरे के धर्म से गुणरहित भी अपना धर्म अति उत्तम है, अपने धर्म मे मरना भी कल्याणकारक है और दूसरे का धर्म भय को देने वाला है। उनके कहे गीता के इस श्लोक का तथा इस श्लोक की विस्तृत व्याख्या को तब मैनही समझी थी। पर इस श्लोक का वास्तविक अर्थ, देशपाडेय की इस श्लोक को आधार बनाकर समझाई हुई समस्त बाते बाद मे मेरी समझ मे आई —तब जब तीर हाथ से छूट चुका था। माँ की डॉट-डपट-अत्याचार—यदि अत्याचार उसे कहूँ भी, क्योंकि अब मै समझती हूँ कि वह माँ का अतीव स्नेह, अपनत्व और उनका धार्मिक विश्वास था जो उनके 'अत्याचार' मे निहित था—भी यदि था, तो साल-छै महीन के बाद वह पटा कर बैठ जाती। कहाँ तक डाटती-डपटती। पर मनुष्य मे धीरज, समझदारी और सहनशीलता की मात्रा कम ही होती है। मै अत्याधिक भावुक हूँ, भावुक थी और भावुकता और बौद्धिकता मे अन्तर होता है। फिर गदहा-पच्चीसी तो प्रसिद्ध है ही। आज जो तिल-तिल मुझे घुटना पड रहा है, क्षण-क्षण जो मुझे मनमार कर रहना, खाना-पीना, व्यवहार करना पड रहा है—यह क्या कम अत्याचार है मुझ पर—जीवन-पर्यन्त इसका क्रम ऐसे ही रहेगा। पर तब इसका ज्ञान न था।

"और बहिन! प्रारम्भ मे तो मुझे इनके यहाँ के बर्तनो और भोजन को खाने मे क्या, देखकर भी उबकाई आती थी, पर पापी पेट से लाचार थी। धीरे-धीरे अभ्यस्त हो गई वैसे ही खान-पान, रहन-सहन की। मैं मानती हूँ कि जब धर्म-भावना मेरी ज़ोर मारती है, मारी है, तो मैं कई बार सोचने पर मजबूर हुई हूँ कि मैने अत्यन्त भारी भूल की, पाप किया जो देशपाडेय को छोडा। धर्म छोडने की तुलना मे थोडी सी मेरी दुश्चरित्रता हल्की ही होती। देशपाडेय की अकशायिनी बनकर भी

मुझे हिंदू-धर्म को बचाना था। पर तब तो मुझे अपने प्रेम पर गर्व और विश्वास था कि किलेदार अन्त मे मेरे आगे झुकेगे ही।

"पर मेरी अधिक भूल, पाप इससे नही है कि मै अत तक आशा करती रही कि किलेदार को अपने प्रेम की शक्ति से हिंदू बना पाने मे देर-सबेर, समर्थ हूँगी। और उन लोगो की भी भारी भूल थी कि या तो मुझे देशपाडेय से विवाहना न था—मुझे अविवाहित रहने देते—या देश-पाडेय को मुझे जबरदस्ती अकशायिनी करना था। पर बहिन आज यही तक। अब उस रविवार को बाते होगी।"

मैने कहा "अगले रविवार को तुम उनसे बाते कर लो। फिर हम लोग अपना कार्यक्रम बनायेगे।"

: १३ :

अगले दिन मै तनिक जल्दी ही आफिस से चल दिया और रेखा जी के यहाँ पहुँचा ताकि मुझे अकेले मे उनसे मिलने का अवसर मिले। मैने रेखाजी से कहा "आपसे मुझसे जो बाते शनिवार को हुई थी उसके विषय मे न किलेदार जी ने मुझसे पूछा और न मैने बताई। अगर पूछते तो सारी बाते उन्हे न बताता। हो सकता हे उन्हे कुछ बुरा लगता। उदाहरणार्थ आपका इस सीमा तक मेरे निकट हो जाना कि आपका जूठा पान मेरा खा लेना और मेरा जूठा आपका खा लेना, आपकी मेरे पैर छूना, मेरा आपका भाई के स्नेह के नाते पवित्र भाव से हाथ पकड लेना और आपकी भावनाओ के विषय मे इतना खुलकर बाते करना।

"वह कट्टर मुसलमान है यह तो आपने कहा ही है। और हिंदू होने

के नाते मुझे क्षोभ है ही जो आप एक मुसलमान के पास है। मै अपनी कष्टप्रद भावनाओ को छिपाऊँगा नही। मुझे पीडा होती है यह सोचकर कि आप यवन है। आशा है मेरी स्पष्टवादिता को आप क्षमा करेगी। आप बुरा तो नही मान रही है ?

"अच्छा, आपसे किलेदार ने पूछा था कि क्या-क्या बाते उनकी गैर-हाजिरी मे मुझसे आपसे हुई ? क्या आप कुछ अनुमान कर सकती है कि उन्हें कुछ मन मे बुरा लगा हो, यद्यपि उन्होने छिपाने का उसे प्रयत्न किया हो ? मेरा विचार है कि अगर हम दोनो अकेले न होते तो कदाचित् इतना खुल कर बाते न कर पाते, न हम आप इतना निकट आ पाते। क्या आप पसद करती है या करेगी कि कभी-कभी हम-आप अकेले मे मिले और अपनी व्यथा को आप कह सके, मै कुछ पूछ-सुन सकू ? क्या इससे कोई लाभ हो सकता है या आपको शान्ति मिल सकती है ? क्या आपका विचार है कि हम किलेदार जी के सामने कभी भी इतना खुल कर बाते कर सकते है ? और यदि करेगे तो उन्हे यह पसद होगा ? आपको रेखाजी कहने की अनुमति मुझे दी थी पर कदाचित् उनको यह पसद नही था। आपका क्या विचार है ?"

रेखाजी ने कहा "मेरा विचार है कि आपने उनसे जो-जो बाते पिछले शनिवार को अकेले मे मुझमे—आपमे हुई और जो भावनाओ का आदान-प्रदान हुआ, उनके बारे मे नही कहा यह ठीक ही हुआ। सभव है वह पसद न करते कि मै इस सीमा तक आपके निकट हूँ। कुछ भी हो आप हिंदू है। लाख वह उदार विचारो के हो, मुझे प्रेम करते हो, पर वह मुसलमान है। वह मुझे छोड सकते है, छोड सकते थे, पर इस्लाम नही। मै भी इसीसे सोचती हूँ तो मै भी क्यो नही उन्हे छोड सकती हूँ हिन्दू-धर्म के लिए। यह हम स्त्रियो की कमजोरी है—मेरा मतलब उन हिन्दू-स्त्रियो से है जिनका यवनो से सम्बन्ध हो जाता है—कि यदि वह स्त्री के लिए धर्म नही छोड सकते तो स्त्री उनके लिए क्यों धर्म छोड़े।

"मेरी लाचारियो से आप परिचित हो चुके है। मै बेबस कर दी गई थी। नही तो प्रेम के लिए भी धर्म छोडने को मै तैयार नही थी। पर मेरा विचार है कि प्रत्येक हिंदू स्त्री का जिसका किसी यवन से सबध होता है यही हश्र होता है, यही अन्त होता है, हो सकता है थोडा-बहुत रूप-परिवर्तन होता हो उन घटनाओ मे जो मेरे साथ गुजरी। बाद मे हिंदू स्त्री को यदि वह भावुक हुई, शिक्षित हुई तो जीवन भर पछताना पडता है, घुटना पडता है। पर वह रो नही सकती, किसी से कुछ कह नही सकती। मन ही मन उसे घुटना पडता है। आपने उस दिन मुझसे पूछा था, तुम सतुष्ट हो अपने वर्तमान जीवन से? मैने आपको उत्तर नही दिया था। अपने माँ-बाप सम्बधियो, धर्म, जाति तथा देश से छूट-कर कौन व्यक्ति सुखी, शान्त और सतुष्ट रह सकता होगा, विशेषकर स्त्री। बचपन से लेकर जवानी तक जो आचार-व्यवहार हिंदू-स्त्री ने अपनाया है, जिस वातावरण मे वह पैदा हुई, पाली-पोसी गई और बडी हुई, उसके बिल्कुल विपरीत वातावरण और सस्कृति मे यकायक रहने पर उसका दम घुटने लगता है—जहाँ रग-ढग, मान्यताये, त्योहार, खान-पान, बोलचाल, रहन-सहन सब भिन्न हो। इसी से तो भगवान कृष्ण ने सत्य कहा है—

श्रेयान स्वधर्मो विगुण परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।
स्वधर्मे निधन श्रेय परधर्मो भयावहः॥

काश इसका अर्थ पहले समझती होती, इसके अर्थ का पहले अनुभव कर पाती—यही मैने मजुला बहिन से कल कहा था।

"यो मुझे वह प्रेम करते है, शरीफ तबियत पाई है, वह सुन्दर है, स्वस्थ है, शिक्षित है। मुझे खाने-पीने-रहने, रुपये-पैसे का कष्ट नही है। पर केवल यही सब कुछ तो जीवन मे आवश्यक नही होता। मैं बस अच्छा खा-पी सकती हूँ, उनसे सेक्स का सुख पा सकती हूँ बस। पर यह सब भी उसी समय तक जब तक मै दबी हुई मुसलमान बनी रहती हूँ, उनकी मर्जी के खिलाफ नही, विशेषकर धर्म के मामले मे। और यो

भी पुरुष सदा से स्त्री पर 'डामीनेट' करता रहा है, आधिपत्य उसका ही रहता है, 'ओवररूल' वही करता है, स्त्री सबधी समानता की बात का लाख वह ढिढोरा ससार मे पीटता रहे। अपनी इस 'पुरुष' वाली प्रवृत्ति को, जो सनातन है, वह कभी नही छोड सकता, नही छोडना चाहता। स्त्री बस मे रही है पुरुष के और रहेगी। इसके लिए रोना या शिकायत व्यर्थ है।

"और फिर धर्म के मामले मे मैं विरोध कर भी क्या सकती हूं ? उससे लाभ भी क्या होगा ? तो फिर केवल अपने का सन्तुष्ट दिखाने के अतिरिक्त किया ही क्या जा सकता है। मेरे सस्कार दूसरे थे, उनके सस्कार दूसरे थे। दो जातियो के, दो प्रान्तो के, दो देशो के, दो विभिन्न धर्मो के लोगो मे वर्ष, दो वर्ष, चार वर्ष जब तक रोमास या प्रेम का नया जोश रहता है तब तक तो यह मतभेद रहता हुआ भी उभर नही पाता, यह मतभेद दिखाई नही देता, या यो कहा जाय इसकी तरफ ध्यान ही नही जाता, प्रेम के नशे के कारण, पर नशा उतरते ही, ज्वार के उतरते ही, बाढ के घटते ही, वास्तविक जगत मे अनुभूति-प्रधान कल्पना के लोक मे उतरने पर ये सस्कारो के मतभेद कलेजा चीरने लगते है। पर बिना व्यक्तिगत अनुभव हुए पहले से स्त्री समझे कैसे ? कोरी शिक्षा, मौखिक उपदेश काम नही आते। उनकी उपयोगिता, विशेषता, व्यावहारिकता समझ मे आवे कैसे ? बिना पैर फटे बिवाँई के दर्द की कल्पना कैसे मनुष्य कर सके ? तब मनुष्य का आत्मसंतोष आत्मसतोष नही होता, आत्महत्या होती है।"

मैने कहा "तो इसका अर्थ स्पष्ट है। आपका जीवन क्यो दुखी, निराश-पूर्ण, सूना-सूना और पश्चाताप है यह मै समझ गया हूँ। कल मै आपकी भावनाओ को समझ रहा था क्यो आप गाना नही चाहती थी पर बहिन ! मै तुम्हे ऐसे घुट-घुटकर मरने नही दे सकता। मुझे तुम्हारी उदासी, ग्लानि छुटानी ही पडेगी—कम से कम प्रयत्न तो करूँगा ही।

"मै जानता हूँ बचपन और जवानी की भूल के सुधार के जब सब मार्ग बद हो जाते है, घुटन से छुटकारा पाने को जब समस्त आशाएँ निराशा मे बदल जाती है तो जीवन मे हाहाकार और अधकार के अतिरिक्त रह ही क्या जाता है।"

रेखा ने कहा "आपको मेरे लिए दर्द है, दया है, करुणा हे, मै जानती हूँ। मेरे लिए आपके हृदय मे पीडा है, व्याकुलता है, इसका मुझे ज्ञान है। काश मैं हिंदू होती, यवन न होती—आप यह समझकर दुखी होते होगे। मेरे पश्चाताप के प्रति आपकी सहानुभूति होगी; अगर आप फिर मुझे अपने परिवार, जन्मभूमि, धर्म और पुराने हितैषियो से मिला सके तो कितनी अधिक प्रसन्नता आपको होगी, मै जानती हूँ। और चूँकि ऐसा असभव है इससे आपका हृदय खून के आँसू रोता होगा, मैं जानती हूँ।

"खैर, किलेदार ने सदेह के कारण नही, ईर्ष्या के कारण नही, जिज्ञासा के कारण अवश्य मुझसे पूछा था कि क्या-क्या बाते हुई। मैने टाल दिया था, कहा था, 'राजनीति की, घर-गृहस्थी की, इधर-उधर की बाते होती रही। दो आदमी बैठेगे तो कुछ तो बोलेगे ही। कोई खास बाते नही हुई, इसके बाद वह पूछते भी क्या! पर यदि उन्हे ज्ञात हो जाय उस दिन क्या बाते हुई या आज क्या बाते हुई तो सदा-सर्वदा को आपका मुझसे मिलना बद कर देगे और सभव है मुझ पर भी कुछ सख्ती और पाबदियाँ हो। अत' उनसे अपनी-आपकी बाते तो छिपाऊँगी ही। वह क्यो इतना मेरा-आपके परिवार मे, हिलना-मिलना पसद करते है, स्वय अवसर देते है इसका कारण तो आप स्पष्ट रूप से जानते ही है—मेरी मानसिक अस्वस्थता दूर हो। यो सभी पति अपने पत्नियो के प्रति शकालु हो उठते है जब वह गैर से मिलती है।

"मेरा विचार है उन्हे बुरा नही लगा था। क्योकि इसमे कोई सदेह नही कि वह मुझे प्रसन्नचित्त और स्वस्थ देखना चाहते है, और आपसे परिचय पाने पर मुझे प्रसन्नता हुई है, मिलने पर प्रसन्नता होती है। अत:

मुझे प्रसन्न देखने के लिए वह आपसे मुझे मिलने-बोलने मे बढावा देते है। उसकी रियायत का बस यही भेद है, राज है। आप बिल्कुल ठीक कहते है कि यदि हम लोग अकेले मे न मिले होते तो कभी इतना खुलकर बाते न कर पाते।

"निश्चय ही मै अपने स्वार्थ के लिए चाहती हूँ कि कभी-कभी मेरी आपकी अकेले मे वार्त्तालाप हो, मुलाकात हो। मै आपसे कहकर अपना दिल हल्का कर सकूँगी और तो कोई विशेष लाभ नही होगा, पर हाँ दिल का गुबार निकालने का अवसर अवश्य प्राप्त होगा। किलेदार के सामने तो भूलकर भी ऐसी बाते न करूँगी। ठीक है आपका कहना कि आपका मुझे 'रेखाजी' कहना उन्हे नागवार है क्योकि इससे मै भूल जाऊगी कि मै मुसलमान हूँ या अपने हिंदू-जीवन की पिछली बातो की मुझे याद आ जाया करेगी। पर पता नही उन्होने कैसे इसे स्वीकार लिया। आप्टे भाई! औरत बहुत कमजोर होती है। मर्द उसे अपनी चल सम्पत्ति से अधिक कुछ नही समझते, किलेदार जी भी नही।"

मैने पूछा "एक बात सच बताइयेगा, देखिये शरमाइयेगा नही। किसी दूसरे हिन्दू की पत्नी बनना आपने अधिक पाप समझा था या हिन्दू-धर्म छोडना, जब किलेदारजी से आपका शारीरिक-सम्बन्ध हो चुका था? मै एक साधारण बात कर रहा हूँ। बहुत सी अविवाहित लडकियो का अनुचित सम्बन्ध अपने प्रेमी-पुरुषो से हो जाता है, और किसी दूसरे व्यक्ति से उनका विवाह हो जाता है। आपने यही क्यो नही सोचा? जब आपके साथ 'रेप' (बलात्कार) हुआ तो आप कहाँ पापिनी हुई? सच बताइये आप किलेदार से प्रेम करती थी क्या इसीलिए तो आपने अपने लाभ के लिए स्वार्थ के लिए यह आदर्श वाली बात नही कही थी कि अब शारीरिक सम्बन्ध दूसरे पुरुष से नही होने देंगी। देखिये मुझे ऐसे प्रश्न करते बडा सकोच होता है, लज्जा लगती है। अत जिस रूप मे प्रश्न रखना चाहिए ठीक से नही रख पा रहा हूँ, पर आप मेरा मशा ठीक से समझ ले। देखिये सकोच नही, उत्तर दीजिए। आपको मैं चुप रहने नही दूँगा।"

रेखा जी काफी देर तक सिर नीचा किए रही। फिर बोली "सचमुच मेरी सनक, खब्त, मान्यता, विश्वास जो चाहे नाम दे पर सोचती यही थी कि जब मेरे साथ एक का सम्बन्ध हो गया—जोर-जबरदस्ती' ही सही तो फिर मै दूसरे से 'सेक्स' कैसे स्वीकार कर सकती हूँ। हो सकता है कि चूकि मै किलेदार से प्रेम करती थी इससे मेरे अन्तर्मन मे उन्ही की होने की चाह हो और उस अन्तर्मन की प्रेरणा इस खब्त या सनक के रूप मे प्रकट हुई हो। पर आज मै स्वीकार करती हूँ कि मुझे हिंदू-धर्म त्यागना नही था। देशपाडेय के साथ रहना स्वीकार कर लेना था। धर्म छोडना भी पाप था और दो पुरुषो से सेक्स भी पाप था, पर तो भी यदि मै दूसरे व्यक्ति से विवाह कर लेती तो अधिक उचित होता।

"पर मैने आपसे स्वीकार किया है कि मै किलेदार के प्रेम मे अधी हो रही थी। माँ ने सख्ती की पर कितनी और अधिक करती। देशपाडेय के साथ देर-सबेर जब विश्वासपात्र बन जाने के बाद सदा उनके साथ रहती तो फिर माँ सताने कहाँ से आती। एक यवन से प्रेम करना सब से बडी भूल थी और मै अधी हो चुकी थी। उस भूल को देशपाडेय की बनकर सुधारा जा सकता था। पर मेरे सिर पर तो भूत सवार था। मुझे तो धर्म द्रोहिणी बनना था। आज मै जो कुछ आपसे कह रही हूँ वह इसलिए कि सब कुछ गवाँकर मेरी आँखे खुली है, जब खुलना न खुलना एक सा है।"

मैने पूछा "अच्छा एक बात बताओ क्या तुमने इस्लाम धर्म प्रसन्नता मे स्वय कबूल किया है ?"

रेखा ने कहा "देखिए भाई साहब! जब मैं मुसलमान की पत्नी हूँ, निकाह के ढोग के बाद जब रेखा रानी के स्थान पर जोहरा बेगम हूँ तब मुसलमान तो हूँ ही। अपने दिल मे मैं अपने को चाहे जो समझूँ चाहे जो मन को समझा लूँ पर वास्तविकता वास्तविकता है। कलमा पढती या न पढती लोग मुसलमानिन ही कहते समझते। मुसलमान के साथ खाती-पीती, रहती-सोती, हर बात मे शरीक होती हूँ तो मुसलमान

तो हूँ ही। इन्होने जोर-जबरदस्ती तो नही की कि अब बाकायदा कलमा पढकर मुसलमान बन जाऊँ पर यह इस बात पर मुझसे अप्रसन्न और असतुष्ट रहने लगे। इनका इतना हठ था और उस हठ को वह 'समझाना-बुझाना' कहते थे, कि मै इस्लाम धर्म सच्चे मन से कबूल कर लू ; और मे नही करती थी। यह बराबर मुझे कोचते-भोकते। अपने पिछले वादे को यह भूल गए। मजुला बहिन को यह सब बता चुकी हूँ।

"कुछ दिन तो मै अपनी जिद्द पर अडी रही, पर जब पाकिस्तान आ गए तो बाकायदा कलमा पढवाकर इन्होने मुझे मुसलमान करवा लिया। मैंने कहा यहाँ सब काम ऐसे ही जबरदस्ती होगे। तो फिर समझिये अपनी स्पष्ट स्वीकृति मैने दे दी, या कहिये कि बाध्य थी ऐसा करने को। जब पाकिस्तान आ गई तो अब प्राणान्त होने पर ही इनसे छुटकारा होगा तो फिर व्यर्थ मे इन्हे अप्रसन्न क्यो करूँ, यही सोचा था।

"यो न कुरानशरीफ पढती हूँ न पहले ही कभी बाकायदा पढी, न नमाज की कभी, न करती हूँ—सच तो यह है कि नमाज करना आता ही नही मुझे। मै जो थी वही रही, वही हूँ, वही रहूँगी। इन्हे खुश हो लेने दो कलमा पढवा कर। मेरे जीवन मे उससे क्या और विशेष अन्तर आता है—कलमा पढकर यवन बनूँ या बिना कलमा पढे ही यवन रहूँ। यवन तो मै हूँ ही। हाँ जब से इनका कहना मानकर कलमा पढ लिया तब से यह मुझ पर बहुत सदय हो गए है। मेरा बहुत ध्यान रखते है। मुझे स्वयं आश्चर्य है कि 'रेखा' कहने की आज्ञा कैसे इन्होने दे दी। यही नही आप लोगो के साथ मे कभी-कभी स्वय भी रेखा कह जाते हैं।

"जब हिदू थी तब भी रामायण और गीता धर्मभाव से न पढती थी। हिंदुओ मे धार्मिक-शिक्षा का अभाव है, यह बहुत बुरी बात है। मुसलमानों के यहाँ प्रत्येक यवन बालक को कुरानशरीफ पढना पढती है। यो इनके कहने से मैने कुरानशरीफ पढी और मेरे कहने पर इन्होने गीता और रामायण पढी। मै अच्छी हिदी और उर्दू तथा यह भी अच्छी हिदी इसी बहाने से जान गए। उर्दू तो इनकी जबान ही है। नमाज

पढते तो है, यह पर बहुत सख्ती से पाबद नही है उसके कि प्रत्येक दिन पढे या प्रत्येक दिन मे नियमित समय पर पढे। प्रारभ मे जोर-जबरदस्ती इन्होंने कुछ दिन मुझसे नमाज करवाई भी। पर बाद में यह इस प्रयत्न मे उदासीन हो गए।

"पर एक बात मैने आपको हृदय की बता दी कि मेरा निकाह हुआ, मैने कलमा पढा, जोहरा बेगम और मिसेज किलेदार बनी, मुसलमानी खान-पान-रहन-सहन अपनाने को बाध्य हुई पर हृदय से हिंदू ही हूँ। मुझे कही भी अतर नही दिखाई देता कि मेरे निकाह के पहले और निकाह के बाद काई परिवर्तन हुआ हो।"

"रेखा बहिन! आज हम लोग बहुत खुलकर बाते कर रहे है। अच्छा अगर देशपाडेय तुम्हे अब भी अपनाने को तैयार हो जायँ तो क्या तुम उनकी पत्नी बनना स्वीकार करोगी ? यदि तुम्हे अब भी हिंदू-धर्म मे सम्मिलित कर लिया जाय शुद्धी करके, तो क्या तुम हिंदू होना स्वीकार करोगी ?"

रेखा ने कहा "लगभग ऐसे ही कुछ प्रश्न बहिन ने मुझसे किए थे और आज आप दूसरे शब्दो मे मगर लगभग वही प्रश्न मुझसे पूछ रहे हैं। पर आप्टे भाई इन व्यर्थ के प्रश्नो मे क्या लाभ है ? क्या यह सभव लगता है ? मैं चार साल से बराबर एक के साथ हमबिस्तर हो रही हू, अब देशपाडेय मुझे अपनाना भी क्यो चाहेगे, या कोई भी और क्यो चाहेगा। पर वह या कोई अपनाना भी चाहेगा तो कदाचित् मै तैयार नही हूँगी। क्या स्त्री के लिए यह आवश्यक है कि वह किसी की पत्नी होकर रहे ही ? यह सत्य है कि बिना पुरुष के अवलम्ब के स्त्री रह ही नही सकती—वह भाई हो, पिता हो, पति हो, प्रेमी हो, पुत्र हो या कोई गैर हो। पर विधवा और विधवा और बेसहारा स्त्री भी तो रो-पीटकर, कष्ट उठाकर रहती ही है। पर यह कहना कि स्त्री बिना सेक्स के रह ही नही सकती यह उसका अपमान है।

"किसी दूसरे पुरुष से विवाह करके उसकी अकशायिनी होना मै

पसद नही करूँगी । पर हाँ यदि हिंदू-समाज ससम्मान मुझे अपने अचल मे ले ले तो सभव हे सोचूँ कुछ । पर हिंदू-समाज ऐसा कभी नही कर सकता । कभी नही करेगा । यो तो मै बी० ए० हूँ । यदि प्रयत्न करके भारत मे मुझे कोई नौकरी दिलवा दी जाय, मै बम्बई नगर या नासिक या जहाँ कही भी मेरे माता-पिता या नाना-नानी हो वहाँ रह सकूँ, उनमे पूर्ववत प्यार-दुलार और आत्मीयता पा सकूँ तो मै उस पुरानी हालत मे लौटना पसद करूँगी । पर यह असभव है । वे मुझे अधिक से अधिक दया, करुणा की दृष्टि से देख सकते है, पिछला प्रेम, पिछली आत्मीयता असभव है । हिंदू समाज मुझे फिर से सम्मानित स्थान नही देगा ।

"भाई साहब ! ऐसा कष्टप्रद प्रश्न क्यो करते है ? जो असभव है उसका जिक्र करके लालच क्यो देते है कि बेसूद तडपू । मै आपसे ही पूछती हूँ मान लीजिए मै कहती हूं मैं हिंदू बनने को तैयार हूँ तो क्या यह सभव है कि मुझे आप हिंदू बनवा सके ? पाकिस्तान से निकल भागना क्या सभव है ? किलेदार जी को यदि पता चल जाय तो वह मार कर खोद कर गाड दे इसके पहले कि मैं यहा से भाग सकूँ या हिंदू बन सकूँ ।

"शेखचिल्ली की कहानी बुझाने से क्या लाभ है ? मान लीजिए यहाँ से भाग भी सकूँ—मैं औरत-जात हूँ, यह सोच लीजिए—तो बम्बई मे कहाँ टिकूँगी, किसके पास जाऊँगी, कैसे जाऊँगी, और क्यो वह मुझे, जिसके पास मै जाऊँगी, प्रयत्न करके मुझे हिंदू बनावेगा ? माँ-बाप, सहेलियो, सम्बन्धियो, नाना-नानी के घर का द्वार मेरे लिए बद हो चुका है ।

"मैं जानती हूँ ऐसे प्रश्न करने का आपका उद्देश्य क्या है ? आप मेरी हृदयगत भावनाये जानना चाहते थे । तो खैर आपने जान ली । नही, आप्टे भाई, नही ! अब इस जीवन मे जोहरा कभी रेखा नही बन सकती । अब मुझे किलेदार के लिए बच्चे पैदा करने दे ताकि मुझ

अभागी, मूर्खा और पापिनी हिंदू माँ की सताने हिंदुओ का विरोध कर सके उन्हे कष्ट पहुँचा सके। किलेदार के पास खाना, कपडा, रहना और सेक्स तो मुझे मिलता है। अब इस मुसलमानिन का उद्धार केवल मृत्यु करेगी। मैं पच्चीस वर्ष की हूँ पर मेरे जीवन मे कोई आन्तरिक और मानसिक सुख, आशा, इच्छा नही रह गई है। जी रही हूँ क्योकि साँस का बोझ ढोना है जब तक मौत नही आती।

"अब कुछ मत पूछियेगा। आप इस समय मेरे हृदय की, मस्तिष्क की दशा काश देख सकते! आपने ये प्रश्न क्यो किए मुझे रुलाने को? जो व्रण नासूर हो चुके है उन्हे और भी कुरेद कर पीडा ही तो आप बढा रहे है या और कुछ? आप मेरी शुद्धी करवा सकते है? मुझे पूर्ववत परिवार और समाज मे स्थान दिलवा सकते है? मुझे अपनी जन्मभूमि पहुँचा सकते है? देशपाडेय की पत्नी मुझे बनवा सकते है? कीजिए प्रयत्न! मै प्रस्तुत हूँ। किलेदार से भले ही मुझे लगाव हो कुछ, पर इस्लाम-धर्म से नही, उसे न अपनाना चाहा था, न चाहती हूँ।" रेखा जी यह कह कर तेजी से अदर चली गई।

उनकी झुँझलाहट मुझ पर स्पष्ट थी। पर यह झुँझलाहट उनकी मुझपर न हो कर स्वय उन्हे अपने ही पर थी। जब तक किसी के लिए कुछ कर सकने की क्षमता और शक्ति न हो तथा वास्तविक हार्दिक इच्छा न हो, तब तक उसके अभाव को खोद-खोद कर न पूछना चाहिए। यह उसका अपमान करना है।

मै जानता था रेखा रो रही है, बुरी तरह से रो रही है। उन्होने जो कुछ मुझ से कहा था वह उनकी चुनौती थी। मैने उन्हे इसके लिए बाध्य किया था। मै बिलकुल असमर्थ था, साधनहीन था, मैं कुछ भी नही कर सकता था। जब सचमुच ही असभव है यह सब तो फिर व्यर्थ मे दबे हुए घावो को कुरेदने से लाभ क्या हुआ? ऐसे तो अपने दुर्भाग्य पर सब्र करके उन्होने परिस्थितियो से समझौता कर लिया था, अपनी लाचारी समझकर, अपनी बेबसी समझकर, अपनी पिछली भूलो को

प्रायश्चित और सजा के रूप मे उन्होंने ग्रहण कर लिया था। अब मैंने यह बाते क्यो की ?

कितना भीषण हाहाकार इस रमणी के हृदय मे है, कितनी भीषण आंधी इसके अदर चल रही है, इसे मैने देख लिया है, समझ लिया है। हे भगवान ! काश मुझमे सामर्थ्य होती कि मै कुछ रेखा की सहायता कर सकता—प्राण देकर भी—तो मै अपने को कितना भाग्यवान समझता। क्या मै कुछ कर सकता हूं रेखा जी के लिए ? असम्भव है। एक व्यक्ति के लिए कोन ओर क्यो कोई सर-दर्द लेगा ? ओर मै सर-दर्द लेना चाहता भी हूँ तो भी कैसे ले सकता हू ? क्या करूं कि रेखा जी का कष्ट दूर कर सकूं ? मै क्यो आया रेखा आर किलेदार के बीच--उनके जीवन मे ? ऐसे रेखा ने जैसे अपने चार वर्ष काटे थे शेष जीवन भी काट लेती। मैने आकर उसे भूली हुई कहानी फिर से याद दिला दी, उसकी भूली हुई पीडा की फिर स्मृति दिलवाई। पीडा मे घटा सकने से तो अक्षम्य हूं, हाँ अपनी भावुकता से मैने उसमे वृद्धि अवश्य कर दी है। अन्धे को अधा कह कर मैने उसे चिढाया है, उसके मानसिक क्षोभ को जगाया है, उसके दुर्भाग्य को कोंच-कोंच कर जगाया है, उसके समक्ष फिर किया है।

मै सिर को हथेलियो पर रखे आँखे नीची किये व्यथा की मूर्ति बना सोच रहा था। रेखा जी फिर अपने को संयमित करके आईं। ओह ! स्त्री कितनी सहनशील होती है, कितनी व्यथा को पीने की शक्ति, क्षमता उसमे होती है, अपनी पीडा का गोपन करके वह हसने, मुस्कराने का नाट्य कर सकती है जबकि उसका हृदय जार-जार खून के आंसू रो रहा हो। रेखा जी के आने का पता मुझे तब चला जब उन्होने मेरे सिर पर हाथ रक्खा। मैने सिर उठाया। मेरी आंखो मे आँसू थे। जल्दी मे उन्हे पोछने का प्रयत्न किया। पर रेखा उसे देख चुकी थी। बोली "भैया ! यह आँसू क्यो ? यह तो हम स्त्रियो के लिए छोड दो। पुरुषो के लिए यह नही है। मै कितनी कठोर हूँ, स्वार्थी हूँ नीच हूं, मैने तुम्हे कितनी कठोर बाते कही है, मैने ।"

मैने रेखा के दोनो हाथ पकड लिए और बीच मे टोक कर बोला "रेखा बहिन मुझे क्षमा करो। मैने तुम्हे भावुकता मे बहकर पीडा पहुँचाई है, कष्ट पहुँचाया है अपनी मूर्खता से, अपनी नासमझी से, अपनी दिखावटी सहानुभूति से। जब मै कुछ कर नही सकता किसी की पीडा दूर करने मे तो मुझे उससे उसकी पीडा को पूछने का क्या नैतिक अधिकार था, उसकी पीडा की याद दिलाने की आवश्यकता क्या थी।

"तुम भले ही मुझे क्षमा कर दो पर भगवान मुझे कभी क्षमा नही करेगे। सचमुच बहिन! मै निर्बल, अशक्त, साधनहीन हूँ। तुम्हारी चुनौती को स्वीकार करने की शक्ति, क्षमता और बुद्धि मुझमे नही है। मै पेट पालने वाला एक क्लर्क हूँ। पर बहिन यदि भगवान मेरे प्राण लेकर भी तुम्हे सुखी बना सके, तुम्हे शान्ति दे सके तो मुझे कितनी प्रसन्नता होगी, यह कैसे हृदय चीरकर दिखाऊं। पर यह भी फिर बच्चो वाली बात मैने की। भगवान कुछ करने नही आते। करता मनुष्य ही है। मैने आज बडा पाप किया है, अपराध किया है बहिन!"

रेखा जी ने अपने आँसू बरबस रोके और कहा "भैया तुम अपने को क्यो कोस रहे हो। तुम देवता हो। मनुष्यता तुममे कूट-कूट कर भरी है। इस पच्चीस वर्ष के जीवन मे आज तक मुझे किसी ने इतना स्नेह नही दिया। इतनी सहानुभूति, इतनी सच्ची ममता, इतनी आत्मीयता नही दिखाई जितनी तुमने। मेरा विश्वास करो यह मेरे हृदय की आवाज है कि तुम मेरे निकट आए यह मेरे न जाने कितने पूर्व-जन्मो का सचित फल हो। तुम मेरे लिए क्या नही करना चाहते हो। पर मनुष्य की शक्ति और क्षमता की सीमा होती है। कौन दूसरे के लिए इतनी चिन्ता करता है, इतना सोचता-विचारता है जितना तुम मेरे लिए कर रहे हो। जिन परिस्थितियो और वातावरण मे तुम हो और मै हूँ उसमे न तुम मेरे लिए कर सकते हो या न मै अपने लिए कुछ कर सकती हूँ। मनुष्य परिस्थितियो का दास है, उसके बस मे है। भैया! फिर तुम्हारे आँसू हे। मुझे देखो मेरे तो आँसू नही है।"

और फिर रेखा के आँसू इतनी बुरी तरह से बहने लगे कि वह उन्हे रोकने मे केवल असमर्थ ही नही हुई, और सिसकने भी लगी। मेरे पास ही वह कोच पर बैठ गई और अपना मुँह उसने मेरे सीने मे छिपा लिया। मै उसके सिर के बालो को सहलाता रहा। जो सान्त्वना मेरी वाणी उन्हे न दे सकती वह मेरे इस सहृदय व्यवहार ने दी। मैने कहा "अब हम लोग आज कोई भी बात इस सम्बन्ध मे नही करेगे। जाओ बहिन मुँह धो आओ। इस स्थिति मे बैठे यदि इत्तिफाक से किरोदार जी देख लेगे तो मन मे न जाने क्या समझेगे—वास्तविकता तो वह जानेगे नही। और बहिन आज मुझे बिना उनसे मिले जाने दो। आज इतना भावना से परिपूर्ण मस्तिष्क और व्यथा से पूर्ण हृदय लेकर मेरा उनसे न मिलना ही अच्छा है। अपने को मै उनके सामने प्रकृतस्थ न रख पाऊँगा।"

रेखा जी फिर चली गई। थोडी देर बाद फिर कदाचित् मुँह आदि धोकर आई थी। बोली—"मै चाहती तो हूँ कि आप चौबीस घन्टे मेरे सामने रहे बस। एक धैर्य, एक सान्त्वना, एक कष्ट सहने का साहस, एक नैतिक बल आपके अस्तित्व से पाती हूँ। पर आपका कहना भी ठीक है, आप ऐसी मनोदशा को लेकर उनके सामने होना नही चाहते तो ठीक है। हो सकता है आपकी मौजूदगी मे मै भी अपने सवेग और उद्गारो को दबा न पाऊँ। यद्यपि मै अभ्यस्त हो गई हूँ ऐसा करने मे, तीन-चार वर्ष से यही तो कर रही हूँ। पर बिना चाय और नाश्ता कराए मै आपको जाने न दूँगी। दस-पन्द्रह मिनट से अधिक चाय बनाने मे न लगेगे। मै कह दूँगी काफी देर आपकी प्रतीक्षा की। उन्हे कार्य था तो चले गए। फिर मिलने को कह गए है। पर मैने उन्हे चाय पिला दी है। बहिन जी से जो मेरी बाते कल हुई थी वह तो उन्होने आपसे बता ही दी होगी। मेरा विचार है कि बिना कुछ छिपाए मैने उन्हे सब कुछ बता दिया है। उसमे बहुत-कुछ आप जान चुके होगे। आज की बाते आप उनसे कहेगे। यह भी जानती हूँ।

फिर चाय-नाश्ते के बाद रेखा जी ने मुझे आने दिया, और उस समय तक कदाचित् मुझे देखती रही होगी जब तक मै आँखो से ओझल न हो गया हूँगा। मै थोडी दूर पहुँचा हूँगा कि किलेदार तेजी से आते दिखाई दिए। मुझे वापस जाते देखकर उन्होने मुझे गले से लगा लिया और बोले—"अब माफी माँगने का मुँह नही है क्योकि आप कहेगे कि यह तो रोज-रोज ऐसा ही करता है। मेरे घर से ही आप आ रहे होगे। एक शरीफ आदमी कहाँ तक इन्तजार करे। क्या बताऊँ भाई, दफ्तर मे कुछ ऐसा ज्यादा और जरूरी काम आ गया कि मै क्या छोटे क्या बडे करीब-करीब सभी रुके, रुके क्या रुकना पडा। अब घर तक आ गया हूँ तो बेगम से कह भर दूँ फिर आपके साथ खरीद-फरोख्त करने चलता हूँ। थोडी जहमत और कीजिए वापस लौटने की।"

मेरा हाथ पकडकर वह तेजी से बढे। बोले—"जरा आप दरवाजे पर ही छिपे रहिए।"

द्वार पर उन्होने जोर से 'बेगम' कह कर आवाज दी और भीतर घुसते ही कहा—"अरे आप्टे भाई आ गया, जरा माफ •।"

रेखा ने कहा—"वह अभी-अभी गए है। रास्ते मे आपको नही मिले।"

किलेदार बोले—"तुम बडी नालायक हो, क्यो जाने दिया उन्हे जो मुझे जरा देर हो गई, थोडा और नही बैठा सकती थी?"

रेखा ने कहा—"घटे-डेढ घटे मे वह बैठे थे। एक शरीफ आदमी से वादा करते है और खुद वक्त पर नही आते है, उल्टे मुझे नालायक कहते है। रोका क्यो नही मैने! नही माने तो क्या पैरो मे जजीर डाल देती। एक भला आदमी कब तक बैठेगा।"

"तुमने उसे चाय-वाय भी कुछ पिलाई या योही भगा दिया बेचारे को। बाते करके, नाश्ता करवाकर, कोई किताब वगैरह देकर चाहती तो जरूर तुम रोक सकती थी। मेरा कहना चाहे न भी माने, पर तुम तो उससे कहो तो तुम्हारे लिए वह आसमान के तारे भी तोड लावे।"

"अब तुमने तो मुझे नालायक करार दे ही दिया है। इतनी भी समझ मुझमे नही है कि उन्हे बिना नाश्ता कराए जाने देती। यह और कहना तुम्हारा बाकी रह गया कि कुछ खिलौने, झुनझुने वगैरह उन्ह देकर बहला के रखती। एक तुम मेरे लिए आसमान के तारे तोड ला देते हो एक वह तोड ला देगे।"

किलेदार ने कहा—"अरे बेगम! क्यो खफा होती हो इस खाक-सार से।"

रेखा जी खफा होकर भीतर जाने लगी थी। तभी मै भीतर हंसता हुआ पहुँचा। बोला—"किलेदार साहब! आप माफी मांगिए रहिन जी से। मुझे दरवाजे पर खडे रखवाकर रेखा जी को डाँटते है।"

किलेदार ने हँसकर कहा—'बेगम! अपने इस नाचीज खाकसार को कुछ जुर्माना वगैरह लेकर माफ कर दो। अच्छा चाय और कुछ पिलाओगी कि इनके साथ कारा शापिग (खरीदारी) करने जाऊ?"

मुस्कराती और बनावटी क्रोध मे किलेदार को देखती हुई भीतर चली गई और लगभग दस मिनट के बाद चाय आदि ले आई। मैने कहा—"मै तो नाश्ता कर चुका हूं, फिर क्यो?"

किलेदार ने कहा—"यह इनका बेजा पक्षपात है—पक्षपात ही ना कहते हे न। मुझे इनका बस चले तो एक बार भी नाश्ता न करायें और आपके लिए दो-दो बार। तकदीर की बात है, खाइए साहब!"

इन्कार न करके मैने खाना प्रारम्भ कर दिया और किलेदार ने रेखा को जबरदस्ती पकड कर बैठा लिया और नाश्ता करने को मजबूर किया यद्यपि मेरे साथ मेरी जिद पर वह नाश्ता कर चुकी थी।

मैने कहा—"आज रूठी हुई रेखा जी को मनाने मे देखिए आपको कितनी मेहनत पडती है।"

किलेदार ने कहा—"जानता हूँ भाई! हो सके तो कुछ शिफारिस किए जाओ।"

मै रेखा जी को देखकर हस दिया। वह भी मुस्करा दी।

हम दोनो चले गए दूकानदारी करने। प्रीडी स्ट्रीट, विक्टोरिया स्ट्रीट, बोल्टन मार्केट, सदर बाजार आदि चीजे पसद करने के लिए घूमे-फिरे। अन्त मे हम दोनो ने उपहार खरीद लिए। उन्होने रेखा जी के लिए भी एक साडी मोल ली। उस दिन वह अपने दफ्तर की परेशानियो पर ही बाते करते रहे।

मैंने भी उनसे बताया "सभव है कल या परसो दो-चार दिन के लिए हाई-कमिश्नर साहब डॉ० सीताराम के साथ मुझे जाना पडे। वह दौरे पर जाएँगे तथा कुछ औरो के साथ मुझे भी साथ चलने की आज्ञा हुई है। जिस दिन वापस लौटा तुरन्त आपसे मिलूँगा नही तो इतवार को तो मिलना ही है। अगर नही गया तो भी आपको बता ही दूँगा। प्रेजेंट (उपहार) अगले इतवार को दिए जायँगे, मै यहाँ रहूँ या न रहूँ।"

: १४ :

मुझे मगल के दिन पाकिस्तान मे भारत के हाई कमिश्नर के दौरे मे साथ जाना पडा और मै शुक्र को फिर कराँची लौटा। शनिवार को मैंने टेलीफून पर किलेदार को उनके दफ्तर मे बता दिया कि मै आ गया हूँ। रिपोर्ट आदि तैयार करनी है अत आज तो मुलाकात सभव नही है रविवार को प्रात सपत्नीक आऊँगा।

शुक्रवार ओर शनिवार को मेरी रेखा के सम्बन्ध मे पत्नी से वार्त्तालाप हुई। मैंने निम्न-लिखित सुझाव पत्नी को दिए और कहा कि तुम रेखा जी से पूछ लेना यदि उन्हे कोई आपत्ति न हो तो प्रयत्न करूँ। वे सुझाव ये थे—

(१) नाना जी को पत्र लिखूँ और रेखा जी की विचारधारा और इच्छा उन्हे लिखूँ। उनसे सलाह भी मागूँ और सहायता भी। (२) देश-पाडेय का पता नाना जी से मँगवाऊँ और उन्हे भी रेखा जी के सम्बन्ध मे वही पूरी सूचना दूँ जो नाना जी को दी है। या फिर नाना जी स ही प्रार्थना की जाय कि यदि वह अनुचित न समझे तो अपना पत्र उन्हे दिखा दे। देशपाडेय को भी सहायता और सलाह को लिखा जाय। (३) पत्र डाक से भेजे जाएँ, या यदि किसी कारण भय हो इसमे तो किसी अपने विश्वासपात्र के द्वारा पत्र भेजा या भेजे जाएँ जो भारतवर्ष जा रहा हो। या तो वह भारत पहुँचकर वहाँ किसी पोस्ट-बाक्स मे डाल दे या यदि वह बम्बई तक जाय तो डायरेक्ट नाना जी मे, और यदि सभव हो तो देशपाडेय से भी मिल ले। (४) रेखा जी, किलेदार, आप्टे हिदू, मुसलमान, धर्म-परिवर्तन आदि शब्दो के लिए कुछ साकेतिक शब्द गढ लिए जाएँ और उन काल्पनिक निश्चित शब्दो का प्रयोग किया जाय (५) देशपाडेय तथा नाना जी को लिखा जाय कि किसी वकील से पूछकर लिखा जाय कि जो निकाह का नाटक किया गया है, वह नाजा-यज तो है ही, पर प्रमाण मे केवल रेखा जी का वक्तव्य ही पर्याप्त होगा या और कुछ सामग्री उस सम्बन्ध मे आवश्यक होगी, और उसके लिए क्या प्रयत्न किया जाय (६) यदि रेखा जी देशपाडेय के साथ पत्नी के रूप मे रहने को प्रस्तुत नही है, या देशपाडेय यदि अभी अविवाहित हे पर रेखा जी को पत्नी के रूप मे ग्रहण करने को तैयार नही है, तो रेखा जी का बिना परेशान किए स्वतत्र रहने दिया जाय। (७) रेखा जी को हिदू धर्म मे परिवर्तित किया जाय और उनके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार हो। (८) रेखा जी किलेदार को छोड दे। (९) वकील से वह लोग यह भी पूछ ले कि क्या तलाक देना आवश्यक है या अनावश्यक है—क्योकि निकाह ही नही हुआ है वास्तव मे—पर यदि आवश्यक हो भी तो किस तरीके से दे सकती है जो कानूनन ठीक हो (१०) रेखा जी गर्भवती है। इस सतान के हो जाने के पश्चात् ही जहा तक सभव हो उन्हे यहाँ से ले

जाने का प्रबन्ध हो। (११) रेखा जी अपनी दोनो सतानो (होने वाली समेत) का मोह छोडने को प्रस्तुत हो। (१२) पाकिस्तान से वह कैसे भागे इसका निर्णय मुझ पर छोड दिया जाय जो परिस्थितियो के आधार पर किया जायगा - हाँ पूरी सूचना इस सम्बन्ध मे रेखा जी को दी जाती रहेगी। (१३) यदि सभव हो तो भारत के हिंदू बड़े नेताओ से वहाँ सहायता और सलाह ली जाय ओर यहाँ हाई-कमिश्नर आदि की सहायता और सहयोग का गुप्त रीति से प्रयत्न किया जाय --यदि सभव और उचित हो। (१४) रेखा जी की समस्त बाते जब तक वह भारत की सीमा मे न पहुँच जायँ बिल्कुल गुप्त रखी जायं। (१५) भारत मे रखा जी के लिए किसी सर्विस का प्रबन्ध करना होगा या कोई अन्य उपाय किया जाय ताकि कम स कम दो सौ रुपए मासिक उन्हे नियमित रूप से मिल सके। (१६) उनके माता-पिता, भाई-बहिन, नाना-नानी, मामा-मामी, आदि उन्हे पूर्ववत अपने मे मिला ले और अपने परिवार का अग समझे। (१७) रेखा जी की सुरक्षा का भार उनके परिवारवाले, हितैषी तथा आर० एस० एस० वाले अपने ऊपर ले लें। (१८) पाकिस्तान से भारत भागने मे देशपाडेय जी क्या और कैसे सहयोग दे सकते है, इस पर गभीरतापूर्वक सोचे, क्योकि काम बहुत खतरे का और कठिन है। (१९) कोई अन्य बात जो रेखा जी सुझाव के रूप मे रखें या हम लोगो की समझ मे बाद मे आए या देशपाडेय जी, नाना जी आदि सुझावे या परिस्थितियाँ सामने लावे। (२०) रेखा जी जो अन्य सूचनार्थ उपयोगी सामग्री दे सके, मुझे दे। (२१) यदि आवश्यकता पडे तो मै नोकरी छोडकर भारत भी इसी कार्य के लिए जा सकता हूँ—रेखा जी के उद्धार के लिए हम लोग हर सभव उपाय करे। (२२) श्री घोरपडे को अपना विश्वासपात्र बनाया जाय, पर धीरे-धीरे ओर उनकी पूरी परीक्षा ले लेने के पश्चात ही—क्योकि अकेले इतना बडा काम मै कर सकूँगा बिना अन्य वाह्य सहायता के कठिन ही लगता है।

× × × ×

इतवार को पत्नी मजुला तथा दोनो बच्चो को लेकर मैं पैदल ही टहलता रेखा जी के घर तक आया। मेरे घर से उनका घर लगभग छ-मान फर्लाङ्ग की दूरी पर होगा। मेरे आवाज देते ही दोना पति-पत्नी द्वार पर आ गए और रेखा जी तुरत मजुला को दरवाजे से घसीट कर उनके गले मे चिपट गई। बोली "एक-एक मिनट मैंने यह सप्ताह गिनकर काटा है। ऐसा लगता था जैसे समय काटे ही नही कट रहा हे।" यह कह कर वह उन्हे भीतर घसीट ले गई। मै तथा दोनो बच्चे किले-दार के साथ उनके ड्राइग-रूम मे गए। हमीद भी वहो था।

मैने कहा "तुम तीनो बच्चे घर भर मे जहाँ मन हो वहाँ खेलो।"

बच्चे भी अपनी आयु के बच्चो मे प्रसन्न रहते हे। तीनो बच्चे आपस मे खेलने लगे। मेरा एक पुत्र सात वर्ष का तथा दूसरा पुत्र तीन वर्ष का था। किलेदार जी ने मेरे एक सप्ताह का कार्यक्रम पूछा। ओर मैने अपनी समस्त यात्रा का वर्णन किया किन्तु उन बातो को छिपा गया जिनका सम्बध राजनीति से था तथा जिस उद्देश्य-विशेष से यात्रा की गई थी। फिर किलेदार ने अपने एक सप्ताह के कार्यक्रम का साधा-रण वर्णन किया। बोले "आप दोना ने तो हम दोनो के ऊपर ऐसा जादू फेरा है कि आप लोगो की याद मे, खुदा कसम तडपना पडा है हम लोगो को। तबियत ही नही लगती थी। भाई! लगातार एक सप्ताह तक हम लोग एक-दूसरे से बराबर मिले हे—आदत तो बिगड चुकी थी। ओर फिर एकदम एक सप्ताह तक बिल्कुल सन्नाटा। बेगम भी बेचैन थी। कई दफे बहुत जोरो से तबियत हुई कि आप नही है न सही, हम दोनो आपकी गैर हाजिरी मे ही बहिन जी के यहाँ पहुंचकर चाय-वाय को गुल मचावे तो कुछ मिलेगा ही पर बहिन जी कुछ बुरा न माने इसी डर से नही गए हम लोग।"

मैने कहा "आपने निहायत बडी गलती की है। मै नही था तो आपकी बहिन जी तो थी। वह आपका हृदय से आदर-सत्कार करती। आप

दोनो के बारे मे वह बराबर पूछा करती है। आप दोनो की शिकायत मै मजुला से करता हूँ।"

इधर-उधर की बाते होती रही। आज किलेदार जी ने अपने जन्म से लेकर बी० ए० करने तक का वर्णन—रेखा जी से मिलने के पहले का अपना वर्णन किया। उसमे विशेष रुचि मुझे न थी पर शिष्टाचार के नाते मुझे वह भी धीरज से सुनना पडा। आठ बजे के लगभग चाय-नाश्ता आया। कहना न होगा नाश्ते मे महाराष्ट्र-परिवार मे बनने वाले भोज्य पदार्थ थे—चिउडा (करारे सूखे चने-चिवडे का बना नमकीन भोज्य-पदार्थ) पोहे (चिउडा का बना गीला भोज्य-पदार्थ) तथा जिलबी (जलेबी) आदि, तब हम सब एकसाथ एकत्रित हुए।

नाश्ता प्रारभ करने के पूर्व एक सोने की जजीर रेखा के गले मे पहनाते हुए मजुला ने कहा "यह तुम्हारे भैया ने तुम्हे भेट दी है। मुझसे पहना देने का उनका आदेश था। तुम्हे कुछ मराठी भाषा की पुस्तके यह भेट करना चाहते है पर वह यहाँ मिली नही है। वह अभी उधार समझो।"

उधर रेखा ने मजुला के दोनो हाथो मे दो-दो सोने की चूडियाँ पहनाते हुए कहा "यह भेट तुम्हारे नए भाई साहब ने तुम्हे मेरे द्वारा दी है।"

रेडियो बजता रहा। हम लोग हँसते खाते-पीते रहे। पेट तो सब के नाश्ते ही मे पूरे भर गए। नो बजे के लगभग वे दोनो भीतर गई। कुछ देर बाद किलेदार ने कहा "चलिए आपको अदर से अपना घर दिखाऊँ। पैतालीस रुपया महीना किराया है। है तो कुछ ज्यादा, पर जितना बडा मकान है, हवादार, खुला और आराम के ख्याल से बना हुआ, उसे देखते किराया ज्यादा नही है। आराइश के सामान मैने रेखा जी की सलाह से मुहैय्या किए है। मै चाहता हूँ कि आपको पूरी वाक-फियत मेरे निस्बत हो जाय और मेरी जिदगी के हर पहलू को आप देख-समझ ले—रेखा जी के भी। मै भी आपसे यही उम्मीद अपने लिए करूँगा। आज का सारा वक्त मै रेखा जी से मिलने के पहले वाली अपनी जिन्दगी को बताने मे सर्फ करूँगा, और अगर वक्त मिला तो

पाकिस्तान म बस जाने के बाद से आज तक के वाकयात और जिदगी बताऊगा—जितना भी मुमकिन होगा आज, नही तो अगली मीटिंग के लिए उस मुल्तवी रखूँगा, मौकूफ करना होगा ।"

घर और कमरो की सफाई, व्यवस्था, वस्तुओ को क्रम मे, करीने से सजावट ओर चुनाव गृहणी की सुघरता, कलात्मकता, उसकी सफाई-पसन्द आदतो के रहस्य को प्रकट करती थी। रेखा के इस रूप को भी मैने ठीक से देखने-समझने का प्रयत्न किया। आखिर वह एक करोडपती की नातिन थी, एक ऊँचे सरकारी अफसर की कन्या थी, उसमे 'कल्चर' (सस्कृति) और सुघरता तो जन्मजात ही होगी। दो कमरे थे एक छोटा एक बडा। बडे कमरे मे सोने आदि का, पढने-लिखने आदि का प्रबध था और छोट कमरे मे अधिकतर बक्स, सिलाई की मशीन, शीशे और तश्तरी के बर्तन आदि कायदे मे चुने हुए थे। वही रेफरी-जियेटर, गाड्रिज की एक रुपया-पैसा-गहना आदि रखने की इलमारी के अतिरिक्त एक अन्य बडी इलमारी रखी हुई थी। किलेदार ने बताया "यह इलमारी खास रेखा जी की है। खोलकर दिखाता हूँ। यह देखिए इसमे किताबे वगैरह रखी है, और वह मराठी मैगजीन वगैरह जिनका जिक्र मैने किया था। यह चौकी है जिस पर आमतौर से बैठ कर वह पढती-पढाती है।"

मैंने मराठी मेगजीन उलट-पुलट कर देखे। सब चार-छै साल पुराने मासिक थे, किताबे भी पलटी। हिदी, उर्दू तथा अँग्रेजी की कम पर मराठी की पुस्तके अधिक थी—अधिकतर उपन्यास और कहानी-सग्रह। श्री नारायण सीताराम फडके के जादूगर, कुलान्याची दाँडी तथा आशा, वि स खाण्डेकर के उल्का, दोनध्रुव तथा दोनमने और मामा वरेरकर का पेटलेपाणी के मराठी उपन्यास भी वहाँ देखे। सत ज्ञानेश्वर की ज्ञानेश्वरी, समर्थ रामदास स्वामी की दासबोध, सत एकनाथ की भागवत्, सत तुकाराम की तुकरामचीगाथा तथा नामदेव की एक पुस्तक भी थी। प्राय प्रत्येक मैगजीन पर लिखा था—"कुमारी रेखा

साने' और तारीख पडी थी—संभवतः खरीदने की । कुछ पुस्तको पर केवल तारीखे पडी थी और नाम की जगह केवल 'रेखा' । न किसी पर मैने 'श्रीमती रेखा किलेदार' लिखा देखा न 'बेगम जोहरा किलेदार ।'

कदाचित् विवाह के पश्चात की खरीदी पुस्तको पर केवल रेखा लिखा होगा । रेखा की इस विशेष मनोवृत्ति का अर्थ स्पष्ट था । अपने को साने कहने का उनका अधिकार समाप्त हो गया था, पर मुसलिम की पत्नी होते हुए भी इसे घोषित करना या मानना जैसे उनका हृदय न चाहता हो । इसीलिये उनके नाम के आगे 'किलेदार' न था और 'जोहरा' नाम तो कभी भी उन्होने स्वीकार नही किया—हाँ उन्हे जोहरा और बेगम सम्बोधन पर बोलना पडता है यह उनकी लाचारी है। स्पष्ट है कि उनका मन उन्हे हिंदू समझता है या कम से कम समझना चाहता है । मुसलमान तो उन्हे केवल उनका दुर्भाग्य बनाए हुए है । साथ ही वह हिंदू होना चाहती है, बनना चाहती है—औरो की निगाहो मे, दुनिया के सामने, अपने हृदय मे तो है ही वह । इसके लिए वह किलेदार जी को भी छोड सकती है । भले ही बेमन से । चौकी पर बैठकर कदाचित् वह रामायण, गीता, तथा अन्य हिंदू-धर्म से सम्बन्धित पुस्तके पढती हो, कदाचित् मानसिक जाप और पूजा-पाठ भी करती हो, कौन जानता है । यदि वह हिंदू होती तो सभव है नई रोशनी की होने के कारण पूजा-पाठ का वह भी मजाक उडाती, पर मुसलमान हो जाने के बाद – हिन्दुत्व के अभाव मे—पूजा-पाठ वह हृदय से करती होगी—मानव-प्रकृति की इस विशेषता का कारण मनोवैज्ञानिक है । यदि वह मुसलमान की पत्नी न होती तो सभव है पूजापाठ को ओर उनका ध्यान ही न जाता—वह मार्डन गर्ल (नई रोशनी की कन्या) थी, पर इन परिस्थितियो मे पूजा-पाठ सभवत उन्हे मानसिक शान्ति देता होगा ।

न जाने क्या-क्या सोचता मै भाव-मग्न हो गया । अच्छा ही हुआ जो यह सब देखने का मुझे अवसर मिला । इससे मैं रेखा जी को, उनके हृदय के भावो को, उनकी हार्दिक इच्छा को, उनके गहरे निराशा के भाव

को स्वय देखने का, अनुभव करने का अवसर पा सका। विचारो की धारा किलेदार की वाणी से टूटी—"आइए आप्टे भाई साहब! अब आपको रेखा जी का बावर्चीखाना दिखाऊँ। इस पर उनका पूरा राज्य है—सभी औरतो का होता है—इसके अन्दर तो जूता पहने मैं भी कदम नही रख सकता। वह हाईजीन (स्वास्थ्य के नियमो) की बहुत कायल है। यह बाथरूम और यह फ्लश लैट्रिन है।"

मैं रसोई घर के सन्मुख खडा हो गया। घर देख कर, विशेष कर रसोई-घर देख कर, कोई भी नही कह सकता है कि यह हिंदू का घर नही है, हिंदू का चौका नही है। मुसलमानो के यहाँ बँधना, दो-चार मिट्टी के बर्त्तन और कलईदार थोडे से बर्त्तनो की बाते हम सुनते आए है। यवनो के यहा की गृहस्थी मे चीजे इनी-गिनी होती है और सफाई तो बिल्कुल होती ही नही, ऐसा सुनने मे आता रहा है। यह भी कि दो-चार टूटे सदूक और दो-चार और जरूरी चीजे ही उनकी गृहस्थी मे होती हैं।

पर मैने तो चमचमाते, करीने से रखे और सजे, लोहे, पीतल, ताँबे, फूल और आलमोनियम के बर्तन, तवा, कढाई, लोटे, गिलास, अपने यहाँ गृहस्थी मे पाई जानेवाली ढग की कटोरियाँ, प्याले, तश्तरिया, थालियाँ ही वहाँ देखी। मिट्टी के साफ पानी से भरे घडे भी और पीतल की कलसिया और बडी बालटियाँ भी पानी से भरी रखी देखी। दो-एक बँधने भी देखे पर वे भी चमाचम थे। पतीलियाँ, बटुइयाँ आदि से रसोई-घर भरा-पुरा था। भोजन रखने की लोहे की जालीदार इलमारी के पास एक अन्य इलमारी मे शीशियो मे सभवत: मसाला भरा रखा था। कई अचारदान भी वहाँ रखे देखे। गृहस्थी बिल्कुल भरीपुरी थी। आवश्यकता से अधिक ही पर्याप्त मात्रा मे अन्य वस्तुएँ भी सग्रहीत थी। यह तो एक हिंदू-स्त्री की गृहस्थी थी—यह घर की प्रत्येक वस्तु बोल रही है।

मैने किलेदार से कहा "क्षमा कीजिएगा। यदि आपके चौके-मात्र को, रसोईघर-मात्र को कोई अजनबी देखे तो तुरत यही कहेगा कि यह

तो हिंदू का घर है । मुझे अपने घर और इस घर की चीजो और रगढग मे अतर दिखाई नही देता है । साथ ही रेखा जी और आपका 'रिफाइड-टेस्ट' (सुरुचिपूर्ण पसदगी) का भी पता चलता है ।"

किलेदार ने कहा "आप ठीक कहते है । तभी तो मैने आप से कहा था कि चौके-चूल्हे पर बेगम का ही राज्य है । मेरे लिए तो 'नो एड-मिशन विधआउट परमिशन' (बिना आज्ञा प्रवेश निषिद्ध है) ही यहाँ के लिए समझिए । वालिदा के इन्तकाल के बाद से तो इन्होने चूल्हे-चौके की सूरत ही तब्दील कर दी है । एक खब्त और उनका बताऊँ—वर्त्तन भी खुद ही माँजती है, चौका खुद ही लीपती है, घर की सफाई खुद ही करती है । सोने वक्त तो जरूर यह लाचारी मे पडी, आराम करती दिखाई देगी बस, वरना दिन-रात मे एक मिनट की मोहलत भी इन्हे घर-गृहस्थी से ही नही मिलती । मुझे तो लगता है कि यह अपने को काम मे डुबाये रखना चाहती है । वालिदा के सामने एक नौकरानी थी, मगर उनके गुजरते ही इन्होने उसे जवाब दे दिया ।

'अब मेरा इनका करीब-करीब रोज झगडा होता है, मगर यह जिद्दिन बेवकूफ मानती ही नही है । मै कहता हूँ "भली औरत ! तू काम करते-करते मरी जाती है, आखिर एक आया क्यो नही रखने देती, जब खुदा के फज्ल से मै इस काबिल हूँ कि नौकर रख सकूँ । अपनी सेहत का तो ध्यान रखो ।

"और यह जिद्दिन कहती है "वाह ! नौकर रख कर तुम मेरी सेहत चौपट करना चाहते हो । ऐसे काम करती हूँ तो हाथ-पैर चलते हे कुछ वरजिश (व्यायाम) ही हो जाती है, नही तो घर मे पडे-पडे खाना भी ठीक से हज्म न हो । मुझे इसी मे सुख मिलता है । मुझे जब कोई तकलीफ हो तब न !"

मै कहता हूँ "भलीमानुस ! बर्तन-चौके के माँजने-साफ करने के लिए तो एक टहलनी रख लेने दे" तो यह कहती है "नही, मुझे किसी का काम पसद नही आयेगा ।"

"मै बेगम से इसी से बहुत नाखुश हूँ। इससे कह चुका हूँ "जब तू मरा कहना ही नही मानती है तो जा फिर मर।"

किलेदार कैसे समझते कि कार्य के बोझ मे वह अपने को भूली रखना चाहती है। उसे कुछ सोचने का अवसर ही न मिले, इमीसे वह अपने ऊपर इतना कार्य ओढे है। फिर यहाँ मिलेगी मुसलिम नौकरानी ही। और रेखा जी अपने बर्तन आदि उमसे नही छुआना चाहती। इस बात को न वह कह सकती है ओर न खुद किलेदार समझ सकते है। मैने मन मे कहा कि मुसलमान होने के नाते तुम रेखा के हृदय की बाते नही समझ सकते, उनके स्वभाव की विशेपताये नही जान सकते जितना हिन्दू होने के नाते मै समझ-जान सकता हूँ। तुम तो पति हो, तुमसे तो उसका छुटकारा नही है, पर अन्य मुसलमान से वह किसी प्रकार का सम्पर्क नही रख सकती, नही रखना चाहती।

मजुला ने कल मुझसे भारी आपत्ति की थी "खैर रेखा के हाथ का बना भोजन तो मैने कर लिया, पर मुमलमान के घर बर्तनो मे तो मै भोजन नही करूंगी। अच्छा तो यही होता कि मे वहाँ जाती ही नही, पर केवल तुम्हारे ही कहने से नही, मै स्वय अपनी आखो से रेखा की गृहस्थी उसका घरेलू जीवन देखना-समझना चाहती हूं, इससे मै जाऊँगी। मुझे स्वय रेखा से प्रेम, लगाव हो गया है। एक भेट मे ही वह मुझे बहुत ही प्रिय हो गई है। वह स्वभाव से विनम्र, मीठी और भली है, और या उसके दुर्भाग्य ने ही उसे ऐसा बना दिया है। ऐसी लडकी एक मुसलमान से फँस कैसे गई, आश्चर्य तो यही होता है। यह केवल उसके पूर्वजन्म के पापो का फल है। जो हो, कल जाऊँगी, कोई न कोई बहाना करूँगी कि वहाँ के भोजन से बच जाऊँ, नही तो अपने कर्मो को रोऊँगी। तुम हँस रहे हो तो मेरे शरीर मे आग लग जाती है। यह मेरी सब परेशानी तुम्हारे कारण ही हुई है। मुझे सीधी पा गए हो, इसी से इतना दबाते हो।"

पर मेरा विचार है कि रेखा की गृहस्थी, विशेष कर उसके बर्तनो

और चौका-चूल्हा देख कर मजुला का बहुत कुछ क्षोभ और विरोध स्वय मिट गया होगा ।

न जाने क्या-क्या और सोचता तभी मजुला की आवाज आई "इतनी दूर क्या आप दोनों खडे है ! तनिक निकट आइए । यह रेखा तो मुझसे बहुत झगड रही है । पिछले इतवार का बदला मुझसे ले रही है । इसने कसम खाने को जो तनिक सा काम किया हो नाश्ता तैयार करने मे । अब कहती है 'पूरी रसोई तुम्हे ही बनानी पडेगी, मेरे हाथ मे दर्द है ।' झूठी कहीं की ! इसके दर्द-वर्द कुछ नही है । यह इसकी बहानेबाजी है । मुझे परेशान करने की एक तरकीब है । और जो पूछती हूँ 'भलीमानुस ! यह तो बता कि क्या-क्या बनेगा ?' तो गूंगी-बहरी ऐसी बैठी है—कहती है "मुझे नही मालूम है जो मन मे हो बनाओ । बताइए भाई साहब, आप ही फैसला कीजिए, इसे समझाइए । देखिए कैसी गभीर सूरत बनाए बैठी है । पर मै जानती हूँ भीतर ही भीतर यह हँस रही होगी ।"

किलेदार बहुत हँसे और बोले "मै आपकी रेखा की जगह होता तो यहाँ बैठता भी नही । कहता 'मिर्च-मसाला-नमक-शक्कर भी अपने आप ढूढो और करो ।"

मजुला ने कहा "आप भी अपनी पत्नी का ही पक्ष लेते है । यह नही कि न्याय की बात कहे । तुम्ही कुछ कहो ।"

मैने कहा "मैं क्या कहूँ । यह तो जैसे को तैसा है । तुम्हारे यहाँ रेखा आई थी तो तुमने उसे नही बैल की तरह जोता था । तब तो आराम से हाथ पर हाथ धरे बैठी रही थी ।"

मजुला ने कहा "अरे तो इससे यह तो कहो कि मुझे बतावे तो क्या-क्या बनाऊँ ? अब कान पकडे जो इसके यहाँ फिर कभी आई । कहती है—चीजे जो-जो माँगोगी देती जाऊँगी, शेष मैं कुछ नही जानती ।"

मैंने कहा "आइए भाई साहब ! चलिए अपने ड्राइग-रूम मे । इन दोनो बहिनो को लडने-झगडने दीजिए ।"

मकसद था, यही तो आप नही सोचते है ! जबरदस्ती शादी करना भी इसी वजह से था, मोहब्बत तो एक बहाना था ! आप यकीन करे ऐसा कतई नही था ।

"इस्लाम मजहब मे एक और शरीक होगा इस ख्याल मे मुझे खुशी थी और बाद मे वह शरीक भी हुई इससे मुझे निहायत खुशी हुई, इसमे कोई शक नही । एक हिंदू औरत को मै बीबी बना सका इसका भी मुझे फक्र रहा है और यह मै कबूल भी करता हूँ । पर इस्लाम के नाम पर, इस्लाम के लिए, उसकी रौनक-अफजाई के लिए मैने उनसे मोहब्बत नही की, जबरदस्ती शादी का खेल नही रचा यह भी सच है । असली सबब था मेरा सच्चा प्रेम, वाकई मेरी मोहब्बत ।

"और रेखा जी से प्रेम करने के बाद फिर कोई भी दूसरी औरत मेरी जिन्दगी मे आ ही कैसे सकती थी । न फिर मैंने किसी औरत को मोहब्बत की निगाह से देखा और न किसी से मेरा ताल्लुक हुआ, जिसे आप यौन-सम्बध कहते है । मेरा ध्यान ही इस तरफ नही गया । आपने जो पूछा भी नही वह भी मैं आपको बताता हूँ । "मै शराबी तो कभी नही रहा, पर मैने सुसाइटी मे कभी-कभी 'ड्रिंक' (मदिरा-पान) किया है—'स्पोर्ट्समैन' जो था और 'खिलाडी' अकसर सुसाइटी मे शराब पी लेते है । मैंने मगर रेखा जी से इसे छिपाया नही है । पर शादी के बाद शराब मेरे लिए हराम है । रेखा जी ने मना कर दिया था और उनके खिलाफ जा सकूँ, इतनी मजाल मेरी नही है या यूँ कहूँ मेरी तबियत ही इस तरफ नही होती । मेरे लिए रेखा जी हूर, परी से ज्यादा है ।

"पर रेखा जी से मोहब्बत के पहले जरूर मेरा दो मुसलिम लडकियो से ताअल्लुक हो चुका था । दो-तीन बार तालिबइल्मो और साथी खिलाड़ियो के साथ तवायफो के यहाँ भी तफरीह, गाना सुनने और मजाक-मजाक मे गया हूँ, एक-दो बार वहाँ सेक्स भी हुआ है, मगर यह सब रेखा जी के मेरी जिन्दगी मे आने के पहले । लेकिन मै बदचलन नही

था, बदफेल नही था। और रेखा जी की मोहब्बत के बाद तो मेरा चाल-चलन बहुत अच्छा रहा। फ्लश या रमी वगैरह जरूर कभी-कभी सुनारटी मे खेल लेता हूँ। पसद यह भी उन्हे नही है, पर उन्होने इतनी छूट मुझे दे दी है। पर आपको एक बात बता दूँ। रेखा जी से प्रेम करने के पहले की अपनी सारी हरकतो के बाबत मैने ईमानदारी से उन्हे बता दिया है।"

मैने पूछा "रेखा जी के आप से सम्पर्क मे आने के पूर्व का आप उनका जीवन और चरित्र जानते है?"

किलेदार ने कहा "उतना जितना उन्होने खुद बताया है, और इससे ज्यादा जानना मेरे लिए न मुमकिन ही था और न मैने जरूरत ही कभी इसकी महसूस की। मगर मुझे उन पर पूरा भरोसा और यकीन है। उन्होने मुझसे कभी कुछ नही छिपाया होगा। उनकी जिंदगी ऐश और सुख से भरीपुरी थी क्योकि उनके वालिद भी ऊँची पोस्ट पर थे, घर के अमीर थे और उनके नाना तो लखपती-करोडपती थे ही। रेखा जी का चालचलन, चरित्र दूध की तरह पाक और साफ रहा है जहाँ तक मुझे मालूम है, और इसमे शक की कोई गुंजाइश नही है। और यह भी मान लीजिए उनका ताअल्लुक किसी से रहा भी हो, मेरी मोहब्बत के पहले, तो भी मै क्या एतराज कर सकता हूँ। मै खुद ही कौन दूध का धोया रेखा जी के आने के पहले रहा था। पर रेखा जी के लिए यह गैरमुमकिन है। वह दूसरी धातु की बनी औरत है। उनकी इज्जत मेरी निगाहो मे बहुत है। उनकी सच्चरित्रता, ऊँचे चाल-चलन का इससे बडा सबूत और क्या हो सकता है कि मेरे जरिए 'रेप'—वह 'रेप' ही कहती है—के बाद उन्होने अपने जिस्म को मेरे अलावा और किसी को न सौपने का ही अहद कर लिया था और इसी की वजह से, यही सबब है कि आज वह मुसलमान है, मेरी बीबी है।"

बाते करते-करते बारह बज गए थे। भोजन के लिए सूचना मिली। धातु की थालियो और कटोरियो के स्थान पर चीनी की तश्त-

रियाँ, प्यालो, बडी प्लेटो और शीशे के बर्तनो का प्रयोग किया गया था। मेरा विचार है कि मजुला ने यह जानबूझ कर किया होगा। इसमे कोई सदेह नही कि मजुला का त्याग बहुत बडा त्याग था। नई रोशनी की फारवर्ड गर्ल होने कारण रेखा जी तो शादी के पहले भी गोश्त खाती थी यह मुझे ज्ञात था। पर मेरी स्त्री ने मास का स्पर्श भी नही किया था, यद्यपि उन्हे ज्ञात था कि मै कभी-कभी सुसाइटी मे गोश्त खा लेता हूँ। उन्हे यह पसद नही था। दो-एक बार समझाया भी। पर बाद मे 'म्लेच्छ' कह कर मुझे छोड दिया था। वही मंजुला मुसलमान रेखा के बर्तनो और उसके साथ खा सके, यह कितना बडा त्याग है, इसे केवल धर्म-कर्म से रहने वाली हिन्दू स्त्री ही समझ सकती है। उन्होने मुझसे कहा था "रेखा को यदि मै हिन्दू-धर्म मे वापस ला सकी तो मेरा यह पाप भी पुण्य हो जायगा।"

मैं स्वय भी रेखा को फिर हिदू बनाने के लिए सब कुछ करने को तैयार था, इसीसे किलेदार से इतना दूध-पानी की तरह घुल-मिल रहा था। पर वास्तव मे किलेदार एक भला और शरीफ आदमी था और उसके स्वभाव से मै स्वय प्रभावित हुआ था। सोचता था यदि रेखा इसके बजाय किसी दूसरे यवन के पल्ले पडती तो उसका जीवन कितना भीषणतम, कष्टप्रद, अपमानजनक, और क्षोभ और ग्लानि से पूर्ण होता। कोई और मुसलमान होता तो कभी एक हिदू से इतना न घुलता-मिलता।

हम चारो लोग हँसते-बोलते खाते-पीते रहे। मानी हुई बात थी कि शुद्ध महाराष्ट्रीय भोजन के साथ महाराष्ट्रीय मिठाइया आदि चीजे भी रुचि से तैयार की गई थी—साटोरी (आटे मे खोया और रवा मिला कर तैयार की मिठाई), चिरोटा (मैदा को तल कर चाशनी मे डालकर तैयार की गई मिठाई), करजी (खोये, गरी तथा रवे की बनी गुजियाँ जो साधारणतया दिवाली पर बनती है), पूरणपोडी (चने की दाल चाशनी म उबालकर बेल कर बनाई रोटी), साखर भात (केसरिया मीठे

चावल)। रेखा और किलेदार तो भोज्य-पदार्थों की तारीफ करते थकते नही थे। स्त्री को प्रसन्न करना हो तो उसके बनाये भोजन, उसकी सतान तथा स्वयं उसके सौन्दर्य की प्रशसा कर दो, उसकी सतान को प्यार कर लो। और मेरी पत्नी तो रसोई बनाने मे वास्तव मे पटु थी।

मजुला ने मुझसे कहा—"इस रेखा ने तो काम करवा-करवाकर मेरा कचूमर निकाल दिया। खा पी कर घर चलो। मैने तो अपने यहा इसका साथ तो दिया था। मिल-बाट कर भोजन तैयार किया था। यह तो कोने मे मजे मे बैठी हुई मुझे मुँह चिढाती रही है। देख लो अब भी मुस्करा रही है। कहती थी अभी तो रात का भोजन और बनाना है। रो लो चाहे झीको, मै तो करने से रही।"

किलेदार खाते-खाते उठने लगे। हम सबने आश्चर्य और जिज्ञासा से उन्हे देखा। वह मुँह बनाकर बोले—"जरा भीतर मे कुडी मे ताला बन्द कर आऊं। तब दीवार फाँदकर तो बहिन जी जा नही सकेगी।"

हम तीनो ही हँस दिए। आज फिर वही पिछले रविवार सा उल्लास और आत्मीयता का वातावरण रहा। भोजन अत्यन्त सुस्वाद था। और विविधता तो उसमे थी ही। महाराष्ट्र-भोजन खाकर रेखा को आत्मिक शान्ति और सुख मिलना था तभी तो रेखा और किलेदार ने खुले दिल से भोजन की प्रशसा की थी।

भोजनोपरान्त हम दोनो कोचो पर लेट गए और कुछ सो भी लिए। दोनो सहेलियाँ—सहेलियाँ शब्द ही उचित है—जा चुकी थी। निश्चय ही वे दोनो रेखा के कमरे मे उसकी खाट पर लेटी गम्भीरतापूर्वक बाते कर रही होगी।

लगभग ढाई बजे किलेदार ने आवाज दी—"बेगम! अभी सोना या गप्पे लडाना तुम दोनो का खत्म हुआ या नही?"

थोडी देर बाद दोनो ही आ गई। मैने ध्यान दिया दोनो ही के मुँह पर गम्भीरता की छाप थी। निश्चय ही खुल कर बाते हुई होगी। पर शीघ्र ही उन दोनो ने अपने को प्रसन्न मुद्रा मे कर लिया। फिर

हम लोग बैठ गए। ताश होने लगा, बीच-बीच मे हँसी-मजाक भी। लगभग पाँच बजे वे दोनो उठकर चली गई और चाय-नाश्ते के साथ कुछ समय बाद लौटी। चाय के साथ नवीन महाराष्ट्रीय-भोज्य-पदार्थ थे —गुडाच्या पोड्या (गुड की पूडी), मुगाच्या पिठाचे लाडू (मूँग के बेसन के लड्डू) तथा वाटल्या डाडीचे (पिसी दाल के लड्डू)। चाय आदि के बाद हम दोनो तो शतरज मे जुट गए और वे दोनो सभवत भोजन बनाने मे व्यस्त हो गई होगी। हम दोनो तो शतरज मे इतने डूब गए कि लगभग आठ बजे रेखा जी ने शतरज बद करने को कहा। भोजन तैयार था। आज हम दोनो को भीतर ही भोजन करने को बुलाया गया तथा रसोईघर के सामने की दालान मे चटाई बिछा दी गई। 'अभी चलते है, अभी चलते है' सुनकर दो बार रेखा जी लौट गई थी, पर तीसरी बार उन्होने शतरज के मोहरे उलट दिए थे। किलेदार और मैं 'है-है' करते ही रह गए थे और तब हम लोगो को खाने बैठना पडा था।

इस बार हिंदू ढग से पहले हम दोनो को खिला दिया गया। भोजन मे तली पूडी थी तथा कई भाँति की तरकारियाँ। साथ मे मोतीचूर का लड्डू तथा वासुन्दी (औटाये दूध की ढीली रबडी) भी थी। आज लगता था कि मजुला ने अपने पाक-शास्त्र का ज्ञान पूरा यही समाप्त कर दिया। साथ ही इतनी अधिक मात्रा मे तथा विविध भोज्य-पदार्थ तैयार किए थे कि किलेदार-परिवार के लिए वे एक सप्ताह तक चल सकेगे। हम लोग पान खाकर बाहर बैठके मे आ गए। फिर स्त्रियो ने भोजन किया होगा। लगभग दस बजे बडी कठिनाई से हम लोगो को घर आने दिया। इतना अधिक और दिन भर खाना खाया था कि पेट फूल रहा था और खट्टी डकारे आ रही थी।

चलने के पूर्व रेखा जी का एक प्रस्ताव सामने आया कि यदि अगले दो-चार रविवार हम लोग बारी-बारी से इसी भाँति खाँय-पिये तो कितना आनन्द रहे। रविवार को अन्य कार्य भी होते है अत हम लोग

यदि चार बजे शाम से दस बजे रात तक मिले-बोले-खाये-पिये तो अन्य कामो मे भी बाधा नही पडेगी, और सत्सग भी रहेगा। यह समय यदि सुविधाजनक न हो तो प्रात नौ बजे से चार बजे साय तक हम लोग इस काम के लिए समय दे। हम तीनो ने उनको बात का सहर्ष समर्थन किया। पर समय चार शाम से दस बजे रात तक का ही सुविधाजनक समझा गया। बडी कठिनाई से किलेदार जी को साथ मे चलने से रोका गया।

मार्ग मे पत्नी ने बताया – "रेखा आज बहुत फूट-फूटकर रोती रही है। बोली कम है, रोई अधिक है। यह तो निश्चय है कि वह किलेदार से अत्याधिक प्रेम करती है और किलेदार भी रेखा को बहुत चाहते है। साथ ही यह भी निश्चय है कि उसे यवन होने मे घोर ग्लानि है। वह हिदू-धर्म मे लौटने, महाराष्ट्र समाज मे ससम्मान स्थान पाने तथा अपने परिवार वालो से पूर्व सौहाद्र और स्नेह पाने की अभिलाषिनी है। मैंने आपकी सारी बातें उसे बता दी है। उससे यह भी कहा कि यहाँ के किसी ऐसे निवासी को अपना विश्वासपात्र बनाना ही पडेगा जो हमसे-तुमसे सहानुभूति रखता हो, जो हमारा-तुम्हारा राजदाँ (भेद जानने वाला) हो, जो हम सबकी आडे समय मे सहायता करे। ऐसा व्यक्ति केवल श्री घोरपडे है। वह तुम्हारे पति के भी मित्र है और इनके भी। वह ऊंची पोस्ट पर है। महाराष्ट्र है। एक सज्जन और महापुरुष है। वह तुम्हारे हितैषी हो सकते है। तुम्हारी गुप्त बात हम लोगो का आपसी षड्यत्र—यदि तुम षड्यत्र कहो तो भी—जैसे हमलोगो से सुरक्षित है वैसे ही उन लोगो से भी सुरक्षित है। तुम्हारे भैया बचपन नही करेगे। पहले काफी ठोक बजा लेगे तब श्री घोरपडे को राजदाँ बनावेगे।

"मेरे विचार से यदि किलेदार जी ने स्वय ही उनसे कुछ अपनी जीवनी के बारे मे कहा होगा तो सम्भव है वह तुम्हारे बारे मे कुछ पहले ही से जानते होगे।"

रेखा ने कहा—"सम्भवत वह मेरे विषय मे इससे अधिक नही जानते है कि मैं बम्बई की महाराष्ट्र-हिंदू-कन्या थी और स्वेच्छा मे इनके साथ रहती हूँ। क्योंकि इससे अधिक वह जानते होते तो यह मुझे अवश्य बताते। खैर मेरा पूर्वजीवन उन्हे बता दे इसमे तो मुझे विशेष आपत्ति नही है, पर जो आप षड्यन्त्र की बाते कर रही है वह न बताई जाये, कम से कम अभी। हाँ उन्हे विश्वास मे लेना चाहते है तो जैसा भैया उचित समझे। पर यह न भूले कि यदि इन्हे तनिक भी सन्देह हो गया या यह जान गए तो मेरे जीवन की खैर नही है, कम से कम मेरी भयकर दुर्दशा अवश्य होगी।"

मैने रेखा से पूछा था—"किलेदार के कौन-कौन घनिष्ट मित्र है। ओर इस घर मे आते-जाते रहते है? तुम इनके साथ कहा-कहाँ आती-जाती हो या घर मे ही किसके-किसके सामने निकलती हो?"

रेखा ने बताया—"इनके कौन-कौन घनिष्ट मित्र है कौन कोन साधारण परिचित यह तो मे नही जानती। कभी जानने की न आवश्यकता हुई न इच्छा। मै प्राय अपनी गृहस्थी के अतिरिक्त अन्य बातो मे बिलकुल उदासीन रहने लगी हूं। मिलनसार तो यह काफी है। दो एक मुसलमान युवको से इनकी काफी पटती भी है। कभी कभी इनके मिलने वाले यहाँ आते भी हैं। मै चाय आदि तैयार कर देती हूं, यह उठा ले जाते है।

"मुसलमानो के यहाँ यो भी ज्यादा पर्दा होता है। एक इनका मित्र शहरयार खाँ सिद्दीकी है जो इनसे अधिक घनिष्ट है। पर चूंकि मैं रुचि ही नही लेती हूँ, अत थोडा-बहुत जो साधारण परिचय इन्होने उसका मुझे दिया, बस वही जानती हूँ। उसमे कोई विशेष महत्व नही है। वह यही का निवासी है। उसके सामने निकलने को इन्होने मुझे जोर भी दिया, पर मे न उसके सामने निकली न किसी के सामने। उसके यहा जाने का हठ भी इन्होने मुझसे किया, पर मैं गई नही। और मेरे विशेष विरोध पर यह हठ करना छोड देते है। बस एक

यदि चार बजे शाम से दस बजे रात तक मिले-बोले-खाये-पिये तो अन्य कामो मे भी बाधा नही पडेगी, और सत्सग भी रहेगा। यह समय यदि सुविधाजनक न हो तो प्रात नौ बजे से चार बजे साय तक हम लोग इस काम के लिए समय दे। हम तीनो ने उनकी बात का सहर्ष समर्थन किया। पर समय चार शाम से दस बजे रात तक का ही सुविधा-जनक समझा गया। बडी कठिनाई से किलेदार जी को साथ मे चलने से रोका गया।

मार्ग मे पत्नी ने बताया – "रेखा आज बहुत फूट-फूटकर रोती रही है। बोली कम है, रोई अधिक है। यह तो निश्चय है कि वह किलेदार से अत्याधिक प्रेम करती है और किलेदार भी रेखा को बहुत चाहते है। साथ ही यह भी निश्चय है कि उसे यवन होने मे घोर ग्लानि है। वह हिंदू-धर्म मे लौटने, महाराष्ट्र समाज मे ससम्मान स्थान पाने तथा अपने परिवार वालो से पूर्व सौहाद्र और स्नेह पाने की अभिलाषिनी है। मैने आपकी सारी बातें उसे बता दी है। उसने यह भी कहा कि यहाँ के किसी ऐसे निवासी को अपना विश्वासपात्र बनाना ही पडेगा जो हमसे-तुमसे सहानुभूति रखता हो, जो हमारा-तुम्हारा राजदाँ (भेद जानने वाला) हो, जो हम सबकी आडे समय मे सहायता करे। ऐसा व्यक्ति केवल श्री घोरपडे है। वह तुम्हारे पति के भी मित्र है और इनके भी। वह ऊँची पोस्ट पर है। महाराष्ट्र है। एक सज्जन और महापुरुष है। वह तुम्हारे हितैषी हो सकते है। तुम्हारी गुप्त बातें, हम लोगो का आपसी षड्यन्त्र—यदि तुम षड्यन्त्र कहो तो भी—जैसे हमलोगो से सुरक्षित है वैसे ही उन लोगो से भी सुरक्षित है। तुम्हारे भैया बचपन नही करेगे। पहले काफी ठोक बजा लेगे तब श्री घोरपडे को राजदाँ बनावेगे।

"मेरे विचार से यदि किलेदार जी ने स्वय ही उनसे कुछ अपनी जीवनी के बारे मे कहा होगा तो सम्भव है वह तुम्हारे बारे मे कुछ पहले ही से जानते होगे।"

रेखा ने कहा—"सम्भवत वह मेरे विषय मे इससे अधिक नही जानते है कि मै बम्बई की महाराष्ट्र-हिंदू-कन्या थी और स्वेच्छा से इनके साथ रहती हूँ। क्योकि इससे अधिक वह जानते होते तो यह मुझे अवश्य बताते। खैर मेरा पूर्वजीवन उन्हे बता दे इसमे तो मुझे विशेष आपत्ति नही है, पर जो आप षड्यत्र की बाते कर रही है वह न बताई जायं, कम से कम अभी। हाँ उन्हे विश्वास मे लेना चाहते है तो जैसा भैया उचित समझे। पर यह न भूले कि यदि इन्हे तनिक भी सन्देह हो गया या यह जान गए तो मेरे जीवन की खैर नही है, कम से कम मेरी भयकर दुर्दशा अवश्य होगी।"

मैने रेखा से पूछा था—"किलेदार के कौन-कौन घनिष्ट मित्र है। और इस घर मे आते-जाते रहते है? तुम इनके साथ कहाँ-कहाँ आती-जाती हो या घर मे ही किसके-किसके सामने निकलती हो?"

रेखा ने बताया—"इनके कौन-कौन घनिष्ट मित्र है, कौन कौन साधारण परिचित यह तो मै नही जानती। कभी जानने की न आवश्यकता हुई न इच्छा। मै प्राय अपनी गृहस्थी के अतिरिक्त अन्य बातो मे बिलकुल उदासीन रहने लगी हूँ। मिलनसार तो यह काफी है। दो-एक मुसलमान युवको से इनकी काफी पटती भी है। कभी कभी इनके मिलने वाले यहाँ आते भी हैं। मै चाय आदि तैयार कर देती हूँ, यह उठा ले जाते है।

"मुसलमानो के यहाँ यो भी ज्यादा पर्दा होता है। एक उनका मित्र शहरयार खाँ सिद्दीकी है जो इनसे अधिक घनिष्ट है। पर चूंकि मैं रुचि ही नही लेती हूँ, अत थोडा-बहुत जो साधारण परिचय इन्होने उसका मुझे दिया, बस वही जानती हूँ। उसमे कोई विशेष महत्व नही है। वह यही का निवासी है। उसके सामने निकलने को इन्होने मुझे जोर भी दिया, पर मैं न उसके सामने निकली न किसी के सामने। उसके यहा जाने का हठ भी इन्होने मुझसे किया, पर मैं गई नही। और मेरे विशेष विरोध पर यह हठ करना छोड देते है। बस एक

यही गुण या विशेषता इनमे ऐमी है जिसमे मुझ थोडी शान्ति मिन सकी है और मै जीवित रह सकती हूँ, नही तो सम्भव है मै बीमार पड जाती ।

"मैने तुमसे पहले भी बताया था कि मै घर से बाहर प्राय' इनके साथ नही जाती । सिनेमा-थियेटर भी नही । बुर्का मुझसे ओढा नही जाता । और खुले मुँह न मै जाना चाहती हूँ न यही विशेष चाहते है । सिनेमा गई ही न हूँ ऐमा तो नही है पर तीन-चार माल मे कठिनता स दो-तीन बार— वह भी इनके विशेष हठ पर और बेपर्दा । काफी पढ़ी-लिखी मुसलिम लडकियाँ आपको यहाँ बेपर्दा भी दिखाई देगी, जो ऊँचे परिवारो की तथा फारवर्ड है ।"

' सिद्दीकी की बीबी अवश्य एक-दो बार मेरे यहाँ आई पर मैंन उसमे उसके यहा जाने का कभी ठीक से वचन नही दिया । वह मुझ घमडी समझती है, और दोनो मियाँ-बीबी मुझसे प्रसन्न नही है । यह मेर लिए अच्छा ही हुआ । मै इस सीमा तक 'रिजर्व' (सीमित) रहती ह और इससे मेरे स्वास्थ्य पर इतना प्रभाव पडा हे । और यह मेरा इस मीमा तक अधिक ध्यान रखते ह कि मेरा विचार हे कि जब भैया से इनकी मित्रता हुई और भैया का इन्होने मुझसे जिक्र किया तो मै भैया के सामने निकलने को राजी हो गई । इमे ही दमगनीमन जानकर यह काफी प्रसन्न हुए है । आप लोग सज्जन तो हे ही, इसका भी प्रभाव इनपर पडा है । पर एक बात है इनकी सी प्रकृति का पति मिलना किसी भी स्त्री के लिए सौभाग्य की बात हो सकती है । मेरी गति साँप-छछूँदर सी क्यो है, यह तुम ठीक से अब समझ सकती हो ।"

आपकी वह बाईसो बाते, सुझाव रेखा के सामने मैने रखे ही थे । उन्होने मुझे जो उत्तर दिए वे सक्षेप मे इस प्रकार है—

"नाना जी को पत्र लिख सकते है । उनसे मैने चार वर्ष पूर्व स्वय सब कुछ कहा था । इधर जो मेरी विचारधारा और इच्छा है वह चाहे तो लिख सकते है, यदि भैया चाहते ही है । माँगे वह सलाह और सहा-

यता ! पर कुछ होना-हवाना है नही। मेरी साँप-छछूँदर वाली हालत, तो जब नाना जी से किलेदार जी के घर पर मिली थी तब भी थी, विवाह के पूर्व भी थी और आज भी है। यह गुत्थी कभी भी सुलझेगी, मुझे इसमे सदेह है। यह पेचीदगी ही मेरे यवन बनने का कारण हुई थी।

"और इतनी दूर रहकर नाना जी या कोई कुछ नही कर सकता है—और कदाचित् करना चाहेगा भी नही। देशपाडेय का पता मँगवाये या किसी का मुझे आपत्ति नही। नाना जी उन्हे पत्र अपना दिखावे, इसमे भी मेरा क्या बने-बिगड़ेगा, पर यह निश्चय है कि अब वह कदाचित् ही मेरे विषय मे हाथ डालना चाहे। सलाह उनसे ले, मुझे क्या ! मैं भैया की भावनाओ की श्रद्धा करती हूँ, पर उनके प्रयत्नो से होगा कुछ नही।

"डाक से पत्र भेजने और मँगाने की मेरी राय नही है। कोई विश्वासपात्र मनुष्य ही यहाँ से आय-जाय उसी के द्वारा यह कार्य हो। वह मनुष्य पिता जी, नाना जी या देशपाडेय जी से मिले भी तो मेरी क्या हानि है। पर मेरी इस बात पर गौर करो कि जितने आदमियो को इस षड्यत्र की बाते पता चलती जाँयगी, उतनी ही बात फैलेगी और बढेगी। इससे और किसी का कुछ नही बिगडेगा। मत्थे मेरे जायगी। मैंने कहा न कि वकील या किसी से चाहे जो सलाह ली जाय, पर वह असली जगह और असली नामो को छिपाकर। ठीक है यदि सम्मान-पूर्वक मेरे परिवार वाले, महाराष्ट्र-समाज, हिंदू-समाज मुझे ग्रहण कर लेने को प्रस्तुत हो, यदि विवाह आदि के लिए मुझ पर जोर न डाला जाय, या देशपाँडेय के साथ बिना मेरी मर्जी के मुझे रहने को मजबूर न किया जाय, यदि स्वतत्र जीवन व्यतीत करने को मुझे अनुमति और सुविधा मिले, यदि मेरी सुरक्षा का भार माँ-बाप, नाना-नानी, और ठीक है आर० एम० एस० वाले ले ले, यदि मुझे कोई अच्छी सर्विस या काम ऐसा मिल जाय कि मुझे सौ-दो सौ रुपये मासिक की स्थायी आय हो जाय, या कोई अन्य प्रबध रूपयो का हो जाय –जो सम्मानित हो और

जिसे मे स्वीकार कर सकूँ, क्योकि दान और चन्दा लेकर मै जीना पसद नही करूगी, पसद तो नाना जी, पिता जी के रुपयो पर भी निर्भर करना नही होगा, पर मै यहाँ तक झुक जाऊंगी। सोचना यह है कि नाना जी और पिता जी न तो सदा बैठे रहेगे और न सदा आर्थिक सहायता देना उनके लिए सभव होगा। मै उन पर या किसी पर भार नही बनना चाहती।

"तो मै बम्बई या नासिक या जहाँ कही भी नाना जी या पिता जी या देशपाडेय हो रहने को तैयार हो सकती हू, या महाराष्ट्र के किसी भाग मे जहा वे लोग मेरे लिए उचित समझे, पर मेरा भावी जीवन शान्तिमय रहेगा जब इसका आश्वासन मेरा मन मुझे दे देगा।

"इन शर्त्तो का पूरा होना यदि सभव हो तो मै किलेदार को छोड सकती हूँ—हिदू-धर्म के लिए उन्हे छोड सकती हूँ और अपने दोनो बच्चो का मोह छोड सकती हूँ। ये दोनो बाते मेरे लिए कितना बडा बलिदान होगी इसे हो सकता है भैया न समझ पावे पर तुम समझ सकती हो क्योकि तुम एक हिदू-पत्नी हो ओर माता की ममता मन मे सँजोये हो।

"पर पाकिस्तान से मेरा भागना कितनी टेढी खीर होगी यह सभी जानते है। मेरे नाम पर, हिदू-धर्म के नाम पर हाई-कमिश्नर या पाकिस्तान के किसी ऊँचे अफसर से सहायता ली जाय यह मुझे स्वीकार नही है। हॉ उद्देश्य यही रहे पर काम और नाम दोनो छद्म हो, 'रेखा' का जिक्र, 'मुसलमान स्त्री का फिर से हिदू-धर्म मे वापस लेने का' जिक्र न हो, कोई और बहाना हो क्योकि बिना ऐसा किए तो आग से खेलना होगा।

"हॉ-जो उपाय देशपाडेय, हिदू नेता, ऊँचे अफसर भैया, आप, नाना जी आदि करे वे मुझे बता दिए जॉय, कोई कार्य करने के पूर्व मुझे सूचित कर दिया जाय ताकि मै भी उस पर सोच विचार लूँ।

"मेरे विचार से समस्त सूचनाये या मैं दे चुकी हूँ भैया या आपको

था वह किलेदार जी से सब जान चुके है। मुझे अब कुछ बताना शेष नही है, पर तो भी जो प्रश्न आप दोनो पूछेगे उनका सत्य-सत्य उत्तर भविष्य मे भी दूँगी। इस समय तो कोई सुझाव मैं नही दे सकती हूँ। पर मुझ अभागी के लिए भैया नौकरी छोड दे, अपना, आपका और बच्चो का भविष्य अधकारमय बना ले, इसे मै कभी नही स्वीकार करूँगी। हॉ यदि उन्हे भारत मे कोई अच्छी सरकारी नौकरी मिल सके या उनका ट्रासफर (बदली) भारत मे हो सके—यद्यपि अब यह असभव सा लगता है—तो वह यह नौकरी छोड सकते है, मेरे लिए पाकिस्तान छोड सकते है। पर मेरे लिए वह अपने को सकट मे, खतरे मे डाले, यह मै नही चाहती। इतनी कट कर गई है शेष कट ही जायगी।

"इस बार आपरेशन करा कर बच्चेदानी निकलवा दी जायगी अत. और यवन पैदा नही करूँगी। अत यदि बाध्य होकर जीवन भर इनके साथ रहना भी पडा तो विशेष हानि अब और नही है। इस ससार मे एक व्यक्ति की हस्ती ही क्या। न जाने कितने हिंदू पुरुष और स्त्रियाँ यवन हुए है, एक और सही। रेखा इनके पास रखैल सी पडी रहेगी। उनके लिए और सताने तो नही पैदा करूँगी जो मेरे पेट से उत्पन्न होकर हिदुओ की शत्रु बने।"

यही सब बाते रेखा जी से मुझसे हुई। अपने जन्म से लेकर बी० ए० के छात्र होने के पूर्व के अपने समस्त जीवन को सक्षेप मे उन्होने मुझे बताया था। उससे कोई विशेष लाभ इस गुत्थी के सुलझाने मे नही होगा। हाँ वे सब बातें आपकी जानकारी को सत को बता दूँगी। रेखा जी को जो भी बताना था वह बता चुकी। अब बस आपको जो करना हो करिए। उनका मत, उनकी इच्छा स्पष्ट रूप से हम लोग जान चुके है। पर फूँक-फूँक कर कदम रखने की आवश्यकता है। ऐसा न हो कि होम करते हाथ जले। और हाथ जलने के बाद भी न अपना लाभ हो न दूसरे का।"

घर निकट आ गया था। घर मे पहुँचे। सोने के पूर्व रेखा के बच-

पन, किशोरावस्था आदि की सब बाते पत्नी ने मुझे बताई । मै केवल सुनता रहा। इसके फल-स्वरूप मुझ पर क्या प्रतिक्रिया हुई यह मैंने न मजुला को बताया और न बताना सभव ही था। अब तो मुझे अपना कार्यक्रम बनाना था और प्रयत्न करने थे यह स्पष्ट रूप से जानकर कि हिंदू-धर्म मे फिर से पूर्ववत् और सम्मानित स्थान पाने के लिए वह अपने यवन पति और उससे उत्पन्न दोनो बच्चो का मोह त्यागने और पाकिस्तान से भागने को तैयार है ।

केवल एक बात मैंने मजुला से कही—"भविष्य मे क्या होगा, इसका उत्तर तो भविष्य के गर्भ मे है—जो होता जायगा सामने आता जायगा । इस समय तो यह निश्चय कर लो केवल कि रेखा और किलेदार से घनिष्टतम और मीठे घरेलू सम्बन्ध स्थापित करना है और किलेदार को किसी प्रकार भी सदेह न होने पावे यह बात गाँठ मे बाँध लेना हे। ' ' इस विश्व मे कैसी-कैसी विचित्र और अनहोनी सी घटनाये तनिक देर मे घट जाती है । और उनका प्रभाव व्यक्ति और समाज को जीवन भर भुगतना पडता है । रेखा का किलेदार के यहाँ प्रथम बार जाना एक छोटी-सी घटना थी और इस घटना का फल अकेले ही रेखा जी को भुगतना पड रहा है—ऐसे कि पीडा से व्याकुल है पर उफ नही कर सकती हृदय रोता है, पर ऊपर से यही दिखता है कि नित्य-प्रति साधारण कार्य स्वाभाविक रीति से हो रहे है और रेखा को कोई कष्ट नही है । यद्यपि वह पीडा सह नही पा रही है, पर किसी को इसका आभास तक नही होने पाता ।

जिसे मनुष्य प्यार करता है फिर उससे न वह घृणा सह पाता है, पर न उससे फिर स्थाई रूप से घृणा ही कर पाता है, जब घृणा करने के अवसर आते भी है । उसकी दशा बडी विचित्र और दयनीय होती है । मनुष्य चाहता है कि यदि प्यार न करूँ तो घृणा तो न करूँ । साथ ही यह भी चाहता है कि उसे भी यदि कोई प्रेम न करे तो घृणा तो कम से कम न करे । इसीसे किसी को प्यार करते हुए डर भी लगता

है और बिना प्यार किए रहा भी नही जाता। हम रेखा को क्या और क्यो दोष दे। न किसी को घृणा करना अपने बस मे है न प्यार करना। प्यार भी करने को वह बेबस हो जाता है, घृणा करने को भी वह बेबस हो जाता है। जब वैसा होता है, जब जैसा भी होता है, वह उसके बस की बात नही होती, वह वैसा बरबस करने को बाध्य हो जाता है। कोई अदृश्य शक्ति या उसकी प्रबल भावनाये उससे वैसा करवा लेती है।

रेखा का सबसे बडा दुर्भाग्य यह है कि वह दो घोडो पर सवार है और दो घोडो पर ही सवार रहना चाहती है। इससे बडा दुर्भाग्य और कोई नही हो सकता। मनुष्य की सारी इच्छित वस्तुएँ उसी रूप मे पूर्ण नही होती जिस रूप मे वह चाहता है। या तो रेखा को दोनो का मोह छोड कर एक घोडे की ही सवारी करनी पडेगी या उसे चारो खाने चित्त गिरना पडेगा। या वह हिंदू ही बन ले या फिर किलेदार को पति बनाए रहने की इच्छा छोड दे। वह किलेदार से नही चिढती है उसके इस्लाम-धर्म से चिढती है। और जिससे हम चिढते है, घृणा करते है उसके लिए किसी न किसी कोने मे प्यार भी छिपाए रहते है। इस्लाम से चिढ और इस्लाम मानने वाले से प्रेम। बडी विचित्र स्थिति है।

वास्तव मे घृणा और प्रेम एक ही वस्तु के दो पहलू है। कब घृणा प्रेम को जन्म दे देगी और कब प्रेम घृणा को प्रगट कर देगा यह कोई नही कह सकता। रेखा के प्रेम मे घृणा छिपी है और घृणा मे प्रेम। पर वह जिन्दगी से लड रही है। पलायनवादिता का परिचय उसने नही दिया। पर कब तक वह लड सकेगी, लडती रहेगी। ऐसे तो चाहे लडती भी रहती, सहती भी रहती। आँसू छिपाती रहती, जिह्वा सिये रहती पर हम लोगो का सबल पाकर, हम लोगो से आशा की नई-ज्योति की बात सुन कर वह फूट पडेगी, बरस पडेगी। उसका क्षोभ, उसका शोक उसके हृदय मे समाया न रहेगा। वह बरबस स्त्रोत सा धरती फ़ोड कर निकल पड़ेगा।

: १५ :

कराँची के नमक के कारखाने के इजीनियर महाराष्ट्र हिद् सज्जन श्री घोरपडे जो मेरे भी मित्र थे तथा श्री किलेदार के भी, उनमे मै एक दिन उनके घर पर मिला। मैने उनसे कहा "मुझे आपसे एक अत्यन्त गभीर, गुप्त और महत्वपूर्ण विषय पर वार्त्तालाप करना है। विषय अत्यन्त गोपनीय ओर साथ ही साथ खतरे से पूर्ण है। अब जब भी आप दो-चार घटे का एकान्त मे समय दें, मै वार्त्तालाप करना चाहता हूँ।"

घोरपडे ने कहा "सायकाल का समय है, आज ही सही। चलिए हम-आप ऊपर चले। भोजन मेरे यहाँ ही कर लीजिएगा।"

अपने एक नौकर को उन्होने मेरे घर जाकर सूचना दे आने को कहा कि आप्टे जी को आने मे काफी रात हो सकती है। घोरपडे जी के यहाँ है। भोजन वही करेगे। कोई चिन्ता न करे यदि वह ग्यारह-बारह बजे तक घर लौटे।

अपने बच्चो से उन्हे समझा दिया कोई भी चाहे कितने ही महत्वपूर्ण कार्य के लिए आवे, मेरे पास न लाना, न बताना घर पर हूँ। कह देना अस्वस्थ है मिल नही सकते। आप्टे जी यही भोजन करेगे।

हम दोनो ऊपरी खण्ड पर उनके कमरे मे चले गए। मैने कहा "यदि किसी प्रकार भी जरा भी यह बातें प्रकट हो गई तो हम लोगो पर ही नही श्रीमती किलेदार पर भी सकट आ सकता है। आप न केवल सलाह दे वरन् इस कार्य को पूरा होने मे पूरा सक्रिय सहयोग दे। आप महाराष्ट्र सज्जन है। एक महाराष्ट्र स्त्री या पुरुष अपने महाराष्ट्र भाई के पास न जाय तो किसके पास जाय ? श्रीमती किलेदार का उद्धार करना है।"

इसके बाद मैंने स्वय किलेदार तथा उसकी पत्नी से जो कुछ भी सुना था तथा पूछ कर जाना था सारा वृत्तान्त तथा समस्त आवश्यक घटनाये सक्षेप मे कह सुनाई। मेरी पत्नी ने क्या सहयोग दिया

था यह भी सब उन्हे बताया। रेखा जी की समस्त इच्छाएँ, अपने बाइसों प्रस्ताव तथा सुझावो की तथा उसकी प्रतिक्रिया की भी पूरी बात बताई। श्री घोरपडे बहुत गभीरतापूर्वक सब सुनते रहे। इसके बाद उन्होने गभीर वाणी मे मुझसे कहा "सारी बातो तथा सारी स्थिति को मैने ठीक से समझ लिया हैं। ये लडकियाँ पहले तो रोमास मे अधी, नई रोशनी मे भूली, भारी गल्तियाँ करती है, और जब आँखे खुलती है तो हाथ मलती है, पछताती है, और अधिकतर सिर से भूत उतरने के बाद तडपती-पछताती मर जाती है। पहले तो कहेगी "अहँ हम हिंदू-मुसलमान नही मानते, सच्चा प्रेम चाहिए, सब मनुष्य है—जात-पाँति, धर्म, राष्ट्रीयता आदि के भेदो को सोचना सकीर्णता है। पढ-लिख कर भी लोग पता नही क्यो सकीर्ण विचारो के रहते है' आदि। और जब रोमास और वासना का भूत कुछ उतरता है और पग-पग पर खान-पान, रहन-सहन, रीति-रिवाज आदि के कारण उन्हे बाधा पडती है, कष्ट उठाना पडता है, तब घुटती है, छटपटाती है। जब दो सस्कृतियाँ भिन्न-भिन्न है, आचार-विचार, खान-पान, उठने-बैठने का ढग भिन्न-भिन्न है, तो दो भिन्न मतावलबियो मे पटरी कहाँ से बैठेगी। दो-चार-दस दिन की बात हो तो निभा भी ली जाय। विवाह के पश्चात् तो जीवन भर का साथ होता है, उसे ठीक से क्या निभाना कभी सभव भी हो सकता है। पर खैर।

"इस केस मे तुम मुझसे क्या करने को कहते हो ? मुझसे किस तरह की सहायता चाहते हो ? मुझे रेखा क्या, इस प्रकार की प्रत्येक स्त्री से सहानुभूति हो सकती है और है, पर बहुत हाथ-पैर बचाकर काम करना है। हम लोग भारतीय है और हिंदू, और यह है पाकिस्तान और एक मुसलमान का प्रश्न। यहाँ तो हम लोगो को काट कर गाड देगे, और कोई झूठमूठ कारण बताते क्या देर लगती है। मै तो स्वय रेखा जी के जीवन के कल्याण के लिए ही कहता हूँ कि अब उसे यो ही रहने दो। जो चुका वह हो चुका। भारत होता तो सभव था कुछ किया भी जा

सकता। पर जादू की घडी तो, तुम्हारे पास है नही कोई, कि उसके द्वारा तुम रेखा को पाकिस्तान से हिन्दुस्तान भेज सकोगे। यह काम ही असभव है।

"प्रयत्न करने को तुम कर सकते हो। नही तो तुम्हारे मन मे यह खटक रह जायगी कि करते प्रयत्न तो सभव है कुछ हो सकता, घोरपडे ने करने ही नही दिया। पर होना-हवाना कुछ है नही। तुम अत्याधिक भावक हो, भावुक रेखा भी है और भावुक किलेदार भी है। यह इत्तिफाक है कि तुम तीनो भावुक एक साथ मिल गए और तुम्हारे परिवार मे उस परिवार से इतनी आत्मीयता और घनिष्टता हो गई। पर यदि तुम्हारे षड्यत्र का आभास भी किलेदार को न हो तो भी जिस सीमा तक तुम दोनो परिवार घुलमिल चुके हो उससे आगे बढने की सीमा अब समाप्त हो गई है नया परिचय था अत रोज-रोज मिल-भेट भी लिए तुम लोग। अब एक-दूसरे का पूर्ण परिचय पा चुके हो या अति शीघ्र पा लोगे—महीना, पन्द्रह दिन और मेल-मुलाकात, आना-जाना खाना-पीना अधिक हो सकता है फिर कमी निश्चय है, स्वाभाविक भी है।

"तुम देख लेना एक हिंदू और एक मुसलमान का इतना मिलना-जुलना, विशेषकर औरतो का भी, और स्त्री-पुरुषो का आपस मे भी मिलना, इसे किलेदार के अन्य यवन मित्र और परिचित सहन नही कर पावेगे। मेरी बात तुम देख लेना सच होगी। वे उसके कान भरेगे, और तब वह तुमसे सशक भले ही न हो, अपने परिचितो को प्रसन्न रखने को वह तुम लोगो से इतना मिलना-जुलना बद करेगा, विशेषकर तुम्हारा रेखा से मिलना।

"और जब रेखा के लिए प्रयत्न करोगे तो रेखा से तुम्हारा मिलना, और वह भी अकेले मे, आवश्यक होगा। अकेले मे बार-बार मिलना सदेह उत्पन्न करेगा। मुझे तो विश्वास है कि एक पति-व्रत और उसके सतीत्व की बात कोरी भावुकता है; मै उसे झूठी नही बताता। पर कही ऐसा

न हो कि रेखा तुम्हारी ओर खिचते-खिचते तुम्हे प्रेम न करने लगे—बिल्कुल चौको मत। मनोविज्ञान की दृष्टि से विचार करो, उसकी परिस्थितियाँ देखो, उसकी स्थिति को समझदारी से सोचो। मुझे तो लगता है उसका अन्तर्मन तुम्हे चाहने लगा है।

"मेरा तो ऐसा विचार है कि उसके माता-पिता, नाना-नानी, देशपाडेय आदि अब कोई भी इस काम मे हाथ नही डालेगे—इसे व्यर्थ और असभव समझ कर। खैर पत्र उन सब को लिखने मे क्या हानि है, यद्यपि फल जो होगा वह मैं जानता हूँ। और यदि मैं तुम्हे मना करूँगा तो तुम्हे अच्छा भी नही लगेगा, कदाचित् मेरी मानोगे भी नही। मुझे तो लगता है कि सभव है वे लोग उत्तर भी न दे या शिष्टाचार के नाते तुम्हे उत्तर तो दे दे, पर अपनी लाचारी का रोना रोवेगे, और गोलमाल बाते लिखेगे।

"मै बिल्कुल व्यावहारिक आदमी हूँ, व्यावहारिक बात ही कहता हूँ। और इस कार्य को करने के लिए तुम्हे भी व्यावहारिक, बहुत चुश्त, चालाक और सतर्क रहना पडेगा और रेखा को भी। स्त्रियाँ पुरुषो की अपेक्षा अधिक सफल ऐक्टिग कर सकती है, पर जब भावुकता मे बहने लगती है, तो बचपन भी कर बैठती है, भूल कर बैठती है, और मारी जाती है।

"खैर यह तुम्हारी बात मुझे ठीक जॅची कि रेखा, किलेदार, हमीद, अपना, मेरा, मजुला जी का, हिदू, मुसलमान, धर्म-परिवर्तन आदि के लिए साकेतिक चिह्नो का प्रयोग किया जाय। पत्र-व्यवहार तुम्हारे पते से न होकर मेरे भी पते से हो सकता है। यद्यपि तुम हाई कमिश्नर के दफ्तर मे हो। अन्तर्राष्ट्रीय नियमो के अन्तर्गत हाई-कमिश्नर-आफिस का पत्रो का थैला पूर्ण रूप से सुरक्षित रहता है। उन्हे सदेह होने पर खोले जाने का—सी० आई० डी० विभाग द्वारा—भय नही है।

"किलेदार से मेरी जितनी जान-पहचान है उतनी ही रहे उसमे

वृद्धि न की जाय क्योकि यदि षड्यन्त्र मे तुम पकडे भी जाओ तो मेरी ओर सदेह ही न जाय। मेरी-तुम्हारी जितनी घनिष्टता है उसमे भी कमी दिखाई जाय। तुम मुझमे मिलो भी तो कम और अधिकतर छिप कर।

'और रेखा जी को एक बार मै बहुत अच्छी तरह से देख लूँ और पहचान लूँ तथा वह मुझे। उसकी इस समय की कुछ फोटो भी तुम ले लो, आवश्यकता पड सकती है, किलेदार और हमीद की भी, यदि सभव हो, नही तो रेखा जी की तो अवश्य ही।

"मेरा विचार है कि डाक मे पत्र भेजना उचित नही होगा, न 'एम्बेसडर-बैग' मे, विशेष कर कुछ प्रारभिक पत्र क्योकि उसमे तुम बिल्कुल खुलासा कर के और विस्तार के साथ साफ-साफ लिखोगे ही, जाहे साकेचित चिह्न हो। और प्रारभ मे तो कौन साकेतिक चिह्न किस शब्द के लिए है यह तुम लिखोगे ही। आजकल राजनीतिक स्थिति कितनी भयकर है तुम जानते ही हो। हिन्दुस्तान-पाकिस्तान के सम्बध बिगडे हुए है, विशेष कर हैदराबाद स्टेट के समाप्त कर दिए जाने पर यहा के मुसलमान बोखलाए हुए है। सी० आई० डी० विभाग प्राय भारत को भेजे पत्रो को खोल कर पढ लेता है। अत: कोई भारत आता-जाता हो तो पत्र उसके द्वारा भिजवाना ठीक होगा। देर लग सकती है इसमे, पर काम खतरे का हाथ मे यथाशक्ति नही लेना चाहिए। मेरी एक सलाह मानना ही—जल्दबाजी कभी मत करना, और करना उतना ही, बढना उतना ही जितने मे खतरा न हो, काम हो या न हो।

"एक हिंदू के नाते, हिन्दुस्तानी के नाते, महाराष्ट्रीय होने के नाते और सच बात तो यह है कि तुम्हारा मित्र होने के नाते मै इस काम मे रुचि तो ले लूँगा पर अपने को खतरे मे नही डालूँगा—कम से कम जानबूझ कर। क्योकि काम की सिद्धि असभव है। सब से बडा कारण है स्वय रेखा। वह किलेदार के प्रति अपना मोह नही छोडना चाहती।

तुम्हारे ही शब्दो मे दो घोडो पर एक साथ सवारी कैसे सभव है। एक गभीर सलाह और—कृपया मुझे छोड कर सलाह या सहायता पाने के लिए अपने हिंदू मित्रो तथा अफसरो आदि से इस विषय पर वार्त्तालाप न करना। रुचि से सुनेगे सब, पर वास्तविक सहायता और सहयोग कदाचित् ही कोई दे या दे सके। कम से कम बिना मेरी पूर्व-सलाह लिए इस रहस्य को किसी से न खोलना।

"एक और आदेश है मेरा—तुम्हे अपने को बहुत बचाना पडेगा। तुम हाई-कमिश्नर्स-आफिस मे हो। उसमे कुछ प्रतिबध होते है उसके नौकरो के लिए, कुछ बधन होते है। प्रत्येक से इतना मिलने-जुलने की अबाध स्वतत्रता तुम्हे नही है विशेषकर पाकिस्तानी-गवर्नमेट सर्वेटो से। अपने जोश मे कही उन सीमाओ को न नाँघ जाना। यदि तुम्हारे षड्-यत्र का पता चल गया तो उसे राजनीतिक रूप दे दिया जायगा, और तब व्यक्ति तो अलग रह जायेंगे, दोनो सरकारो का प्रश्न ये पाकिस्तानी अखबार वाले बना देगे।

"यो जाने वाला तो मै भी हूँ हिन्दुस्तान। छुट्टी की अर्जी दे चुका हू। पासपोर्ट के लिए प्रयत्न मे हूँ। भारत जाऊँगा तो तुम्हारे कारण बम्बई तक बढ जाऊँगा, नासिक भी हो लूँगा। सब से स्वय बातें भी कर लूँगा। वह अधिक उत्तम रहेगा। कुछ समय लग सकता है। एक महीने भारत मे रहूँगा। पर एक काम तो तुम करो ही। बहुत विस्तार के साथ बिल्कुल सच-सच सब कुछ पत्र मे लिख रखो, और पत्र मुझे दिखा दो। भले हो 'थीसिस' (लम्बा लेख) सा मोटा पत्र हो जाय पर सब कुछ लिखना आवश्यक है। मुझे रेखा के आठ दस फोटो दे देना। रेखा से सब कुछ बराबर बताते रहना। उससे कहना यदि वह भारत मे किसी को भी पत्र लिखना चाहती हो तो लिख दे, और तुम मुझे दे देना।"

मैने कहा "यह कैसा रहे कि इस बार मेरे यहाँ रेखा और किलेदार आवेगे आप भी सपत्नीक आवे और एक बार किलेदार यहाँ भी। यह सब कैसे होगा इसका प्रबध मै कर लूँगा। मेरे ऊपर छोड दीजिए।

किलेदार, रेखा और हमीद की फोटो का जिम्मा भी मुझ पर रहा। रेखा का घर देख लेना आपके लिए भी आवश्यक है। आपका घर और घर तक आने का मार्ग रेखा के लिए भी देख लेना आवश्यक है—इसके लिए सोचना पडेगा कि क्या उपाय किया जाय। खैर अधिक कठिन नही होगा वह भी। क्या आप अपनी पत्नी से सब हाल कहेगे ? पत्र मे आपको लिख कर दूँगा। आपके फोटो भी आवश्यक होगे मेरे, रेखा तथा रेखा के माता-पिता, नाना-नानी के लिए। हमलोगो को पूरा प्रबध कर लेना है।"

घोरपडे जी ने कहा "अब सोचना यह है कि पाकिस्तान से बाहर रेखा जी को निकाल ले चलने का प्रयत्न करना है, तो तुम क्या करोगे ? कुछ योजना है भी तुम्हारे मस्तिष्क मे या सब परीलोक की कहानी ही है ?"

मैने कहा 'इडिया-आफिस मे हूँ अत सभव है मुझे कुछ सरलता पडे इस असभव से काम मे। कोई भारत को हिंदू जाता हुआ तो रेखा जी को उसकी पत्नी बनाकर हवाई जहाज मे यदि उसके साथ उडवा सका तभी यह सभव है, पर इस धोखाधडी मे कितना खतरा है, और यह काम असभव सा है—अभी तो ऐसा ही लगता है। इसी से कहा था कि कुछ बडे हिंदू पदाधिकारियो को अपने विश्वास मे लेना पडेगा। पर यह बाद की बाते है। पहले तो यह देखना है कि मेरा पत्र पाकर प्रतिक्रिया क्या होती है रेखा के सम्बधियो पर। हाँ एक दिन आप मुझे और किलेदार को किसी बहाने चाय पर बुलावे।"

और भी आवश्यक बाते होती रही। दस बजे के लगभग मैने भोजन किया। और फिर सलाह-मशविरा होता रहा।

घोरपडे ने कहा "अपनी पत्नी को कुछ बाते तो मै रेखा के बारे मे बताऊँगा ही क्योकि उसे इस चित्र के बीच मे कही न कही, कभी न कभी तो आना ही पडेगा। किलेदार को मै कल ही साय को चाय पर निमत्रित कर दूँगा। अपने छोटे बच्चे के जन्मदिन का बहाना कर दूँगा। तुम भी आ जाना।"

लगभग साढे ग्यारह बजे मैं उनके घर से चला।

दूसरे दिन मैं घोरपडे जी के यहाँ, सीधा आफिस से पहुँचा। प्राय सदा ही किलेदार को मुझसे दस-पन्द्रह मिनट बाद ही अपना आफिस छोडना पडता था। श्री घोरपडे भी आफिस से आ गए। मुझे बैठे देखा। उनकी पत्नी मुझे पहचानती ही थी अत मुझे ड्राइग-रूम मे बैठा दिया था।

घोरपडे ने कहा "किलेदार को मैंने उसके आफिस मे टेलीफून कर दिया है कि वह आफिस से सीधे मेरे घर आवे। चाय पर उसे तुम भी यहाँ मिलोगे, यह भी कह दिया है। वह आता ही होगा।"

थोडी देर मे किलेदार भी आ गए, और बहुत तपाक से मुझसे और घोरपडे से मिले। मेजबान का छोटा बच्चा अच्छे कपडे पहने उनकी गोद मे खेलने लगा। किलेदार ने उसे गोद मे लेकर चूम लिया और उसके आगे एक कागज का बक्स खोलकर रख दिया जिसमे आठ-दस खिलौने थे। मुझे लगता है कि किलेदार आफिस के बाद इन्हे खरीदते लाए होगे। मैने गल्ती की थी कि कुछ खिलौने नही लाया था। मैने दस रुपए का नोट शिशु को पकडा दिया।

घोरपडे ने किलेदार से कहा "यह सब क्यो किया है ?" और मुझसे कहा "यह नोट क्यो दिया है ? देखो फाडे डालता है।"

किलेदार ने उनसे कहा "बच्चा मेरा है। उसकी सालगिरह जो है। आपको बोलने का कोई अखतियार नही है।"

मैने उनसे कहा "खिलौने के लिए बच्चे की चाची ने रुपया मेरे द्वारा भेजा है। आपको यदि कुछ कहना हो तो उनसे कहिएगा। मेरे ऊपर दया रखिए"

घोरपडे ने कहा "भाई यह तो आप लोगो की थोडी ज्यादती हो गई है। इतने की क्या जरूरत थी। मुझे मालूम होता आप लोग यह करेंगे तो आप लोगो को पहले बताता ही नही। क्यो किलेनार साहब घर तक आने मे कोई परेशानी तो नही हुई ?"

किलेदार—'अच्छा आप यह करते ? तो हम लोग आपका कभी न माफ करते । घर तक आने मे क्या परेशानी होती ।"

घोरपडे बच्चे के भीतर पहुँच आए । पाच मिनट मे चाय और मिठाई-नमकीन की तश्तरियाँ आ गई । महाराष्ट्र मे पर्दा किसी मे भी नही होता है । और घोरपडे तो किलेदार से कुछ थोडी घनिष्टता बढाना चाहते थे—अस्थाई तौर पर । पत्नी से बोले "तुम्हारी प्लेटे कहाँ है ? ये तो केवल हम लोगो के लिए ही है । जाइए लाइए अपने लिए भी ।" क्षण भर तो वह खडी रही । फिर अपने लिए भी ले आई ।

घोरपडे ने कहा "किलेदार साहब ! यह आपकी भाभी हे । और श्रीमती जी, यह मेरे मित्र है श्री अहमद हुसैन किलेदार । आप्टे जी को तो तुम ठीक से जानती ही हो । मेने किलेदार जी तथा आप्टे जी से भी परिचय करा दिया था बहुत पहले ही ।"

किलेदार ने कहा "परिचय आपने ही कराया था जरूर पर अब आप्टे जी मेरे परिचित ही नही रह गए हे । मेरे जिगरी दोस्त ओर सगे भाई बन चुके हे । हमारे मरासिम बढ गए हे ।"

घोरपडे ने कहा "तो मे आप दोनो को इसके लिए मुबारकबाद देता हू । या आप दोनो मेरा मुह इसकी खुशी मे मीठा करावे या फिर मुझसे ही दावत ले ।"

किलेदार ने कहा "इतना ही नही, आपकी और मेरी वाइफ आपस मे बहिने और सहेलियाँ भी बन चुकी हे । ओर मजुला जो मेरी बहिन आर बेगम इनकी बहिन बन चुकी ह । हम दोनो ही राखीबद भाई बन गए हे ।"

घोरपडे बोले "मुझे पता ही नही । तो फिर आप लोग कब दावत दे रहे है ?"

मैने कहा "यो तो कल किलेदार भाई के यहाँ हम और मजुला दावत पर गए थे और इसके पहले वाले इतवार को किलेदार जी अपनी पत्नी के साथ मेरे यहाँ आए थे । मे आपकी बेगम को हिदू नाम 'रेखा जी' कह कर पुकारता हूँ ।"

घोरपडे ने कहा "ठीक है भाई ! मै तो गैर हूँ।"

मैने कहा "कैसी बाते आप करते है ? यो तो किलेदार जी अगले इतवार को मेरे यहाँ मय बीबी-बच्चे की दावत पर आ रहे है। इनकी पत्नी न आती होती तो आपको अवश्य बुलाता पर मुसलमान भाइयो के यहाँ पर्दा होता है न! पर जिस दिन भी आपकी आज्ञा हो मै अपने यहा निमन्त्रित करता हूँ आपको सपत्नीक।"

किलेदार ने कहा "लाख पर्दा होता हो पर आपसे पर्दा क्या। बेगम का खयाल आप मत करे। जरूर उस इतवार को अपने यहाँ बुलावे मुझे निहायत खुशी होगी। मगर इसके बाद वाले इतवार को मेरे यहाँ की दावत आप और भाभी साहबा भी कबूल करे। मै मुसलमान हूँ, भाभी साहबा और आपको हमारे यहाँ के खाने मे एतराज न हो, इससे किबला! खिदमत मे अर्ज नही किया था। मगर एक शर्त है, यह दोनो इतवार हम दोनो के लिए रिजर्व रहे—पूरा वक्त, दोनो वक्त का खाना।'

घोरपडे ने कहा "मुझे तो आप लोग रोज दावत दे तो हम दोनो रोज मजूर करे। मै हिदुस्तान जाने वाला हूँ, अगर न गया पन्द्रह दिन तक, और आशा है पन्द्रह दिन के पूर्व सभव नही होगा तो अवश्य दोनो के यहाँ आऊंगा।"

हम लोगो ने हँसी-खुशी नाश्ता किया—नाश्ता क्या एक तरह से पेट भर भोजन था। फिर मै और किलेदार चल दिए। मार्ग मे किले-दार ने कहा "चलो न मेरे ही यहाँ घटे-आध घटे को। एक बाजी शत-रज की हो जाय।"

मैने कहा "आप तो मुझे बीबी से मार खिलवाने पर तुले है। आज नही, कल जहाँ कहे मुलाकात हो। कहिए आपके आफिस आ जाऊँ या आप मेरे घर आएँ। आपकी फोटो भी खीचूँगा।"

किलेदार ने कहा "मेरे यहाँ ही क्यो न आओ। कैमरा लेते आना। कौन बोझा है। वही खीच लेना। हमीद और बेगम को भी खीच लेना। और अपनी और बहिन जी की फोटो तो दी ही नही तुमने मुझे।"

मैने कहा "आपके यहाँ दफ्तर से कौन आये। मैने प्रतीक्षा करूँगा। जनाब खरामा-खरामा तशरीफ लावेगे।"

किलेदार ने कहा "अरे यार! छोडा भी गुस्सा और शिकायत। कल देर हो तो चाहे जो सजा दे देना। और देर भी हो जाय तो बेगम तो घर पर होगी ही।"

हम दोनो अपने-अपने घर चल दिए।

: १६ :

दूसरे दिन जानबूझ कर कुछ दफ्तर मे पहले ही मै चल दिया ताकि रेखा से अलग मिलने का समय मिल सके। किलेदार अपनी आदत के मुताबिक थोडी देर मे आए थे। रेखा मुझसे बिलकुल सटकर कोच पर बैठ गई और मैने उससे घोरपडे से हुई समस्त बाते, उनकी सलाह और योजनाये बता दी। किलेदार से हुई अपनी और घोरपडे की बाते भी कह दी। पहले तो रेखा ने स्वय कोई पत्र लिखना स्वीकार नही किया पर बाद मे समझाने पर एक-एक पत्र माता, पिता, नाना जी और देशपाडेय को लिखने को मजूर कर लिया। मैने कहा "परसो जैसे होगा ये पत्र मै तुमसे ले जाऊँगा।"

उसके उन्ही घरेलू कपडो म एक फोटो भी मैने उसकी खीच ली। रेखा ने कहा "मुझे आशा नही थी आपके दर्शन इतनी जल्दी होगे। मै अब हर समय आपके तथा बहिन जी के विषय मे सोचती हूँ। आप दोनो ही तो मेरे निराश जीवन के सहारे है।" यह कहकर उसने कोमलता से मेरे हाथो को अपने हाथो मे ले लिया।

उलट कर मैने उसकी मुट्ठियो को अपनी मुट्ठियो मे कोमलता और स्नेह से बन्द करते हुए कहा "रेखा बहिन! मुझे वास्तविक प्रसन्नता तो जब होगी जब तुम्हारी मुक्ति का कोई द्वार खोल लिया जा सकेगा। पर तुम समझती क्यो नही, अपने मन को समझाती क्यो नही रेखा! कि दो घोडो पर सवारी कितनी परेशानी का कारण हो सकती है।"

रेखा ने बहुत करुणापूर्ण दृष्टि से मुझे देखा।

मैने कहा "रेखा! मुझे तुम इस दृष्टि से न देखा करो। मुझसे यह सहन नही होता। मै तुम्हारे हृदय की बात समझता हूँ। पर बाज दफे हृदय को समझाना पडता है।"

रेखा ने उत्तर नही दिया। उसने मेरे सीने मे अपना मुख छिपा लिया। उसके सिर पर हाथ फेरते हुए मैने कहा "तुम चाहती हो पुरुष होकर म रोऊँ तो मेरा बस क्या है! जाओ मुँह धोकर आओ और दूसरी कोच पर बैठो, मेरे पास नही कि किलेदार यदि इस हालत मे तुम्हे देख ले, तो तुम्ही सोचो वह क्या सोचेगे।" जबरदस्ती मैंने उसे खडा कर दिया। वह भीतर ही थी तब ही किलेदार के जूते की आवाज आई।

बोले "ज्यादा देर हुई?"

मैने कहा "नही पॉच-सात-दस मिनट ही हुए होगे। लाइट यो ही कम हो रही है। पहले फोटो खीच लूँ तब आगे बाते होगी।"

किलेदार ने पूछा "बेगम से कह दिया है न?"

मैने कहा "हॉ। उन्होने कहा है कि आप आ जायँगे तब वह कपडा बदलेगी। मुँह हाथ धोने मैने भेज दिया है।"

"अभी आया जरा मुँह-हाथ धोलूँ।" भीतर से आवाज आई "बेगम! जल्दी मे कपडे बदल लो और हमीद को तैयार करो। लाइट (प्रकाश) बहुत कम रह गई है जल्दी करो।"

दस मिनट मे ही सब आ गए। मैने दो हमीद की, दो किलेदार की

और दो रेखा की अलग-अलग पोज मे तस्वीरे ली। फिर रेखा भीतर चली गई। चाय-नाश्ते पर इधर-उधर की बाते होती रही। फिर दो-एक बाजी शतरज और तब मै अपने घर चला आया।

दो दिन बाद मै दफ्तर से छुट्टी के तनिक पहले ही उठकर रेखा के गृह गया और जो एक मोटी कापी मैने दो-तीन दिनो मे लिखकर तैयार की थी—वह पत्र जो घोरपडे जी के द्वारा मै रेखा के नाना जी के पास भेजने को था—उसे दे आया। रेखा ने कहा "पत्र मैने लिखे थे पर फाड डाले। मै किसी को पत्र नही भेजूँगी।"

मैने कहा "तुम मूर्ख हो। कापी मै कल ले जाऊँगा। पत्र तुम सब को लिख रखना, यह मेरी आज्ञा है। समझती कुछ हो नही। भविष्य मे तुमसे सलाह के रूप मे कुछ नही कहा करूँगा। सीधा आदेश दिया करूँगा।"

रेखा ने मुझे रोकना चाहा। मैने कहा "कितना खतरा है। मुझे देख ले किलेदार तो समझ लो सारा खेल आज ही समाप्त हो जाय। पता नही बी० ए० तुमने कैसे पास कर लिया। बेवकूफ कही की!" यह कहकर एक चपत मैने रेखा के मारी और चल दिया। यह कहता आया "यह कापी काफी छिपा कर रखनी होगी। कल ऐसे ही आऊँगा। इसके बाद जब तक घोरपडे जी भारत नही जाते है और जो घटनायें घटती जायँगी तथा इस पत्र मे बढाने योग्य होगी इस कापी मे बढाता जाऊँगा। पर अब तुम्हे कापी फिर देखने को नही मिलेगी। इसमे कुछ घटाना-बढाना हो तो घटा-बढा देना।"

अश्रुपूर्ण नेत्रो से मुझे जाते रेखा देखती रही और धडकते हुए दिल से मै तेजी से साइकिल घर पहुँचा। दूसरे दिन फिर मैने खतरा मोल लिया। रेखा से मैने कहा "ऐसी ही आवश्यकता हुई कि बिना आए काम ही न निकले, तब तो खतरा लेकर आऊगा, अन्यथा बकरे की माँ कब तक खैर मनायेगी।"

उससे कापी ली, उसके पत्र लिए। उसने कहा "जो कुछ कापी मे

घटाना-बढाना था या परिवर्तन करने की मेरी सम्मति थी उसे अलग कागज पर मैने लिख दिया है। इनके दफ्तर जाने के बाद ही आपके काम पर जुट गई थी। अभी-अभी कुछ समय पूर्व कलम रखी है। अब भोजन करूँगी केवल रात को।"

मै जाने को हुआ तो रेखा मुझसे चिपट-सी गई। बोली 'अभी दो मिनट मे वह नही आए जाते है। भैया तुम्हे नही देखती हूँ तो दिन रोता रहता है। चाय पीते जाओ।"

"मेरी अच्छी बहिन" कहकर जबरदस्ती उसे अपने से अलग कर के मै सही-सलामत घर पहुँचा। चाय का उसका इसरार पूरा करना असभव था।

घर जाकर रेखा के पत्र पढे। कोई विशेष बात उन चारो पत्रों मे न थी। देशपाडेय को उसने 'पूज्य देशपाडेय जी' से प्रारम्भ किया था और 'कृपाभिलाषिनी' से समाप्त किया था। पत्र बहुत छोटा था। उसमे क्षमा माँगी थी और लिखा था कि आप्टे जी के पत्र मे सब कुछ लिखा ही है, इसके बाद अलग से लिखने को मुझे रह ही क्या जाता है। आप्टे जी मेरे बडे भाई, सरक्षक, मित्र, सलाहकार, हितैषी सभी है। यह जो भी मेरे विषय मे कहे इन्हे सब कुछ कहने का अधिकार है। इन्हे आप मेरा ही प्रतिनिधि, अग समझ कर बाते करे, कार्य करें आदि।

माँ का पत्र भी छोटा था। क्षमा-प्रार्थना, अपनी भूल की स्वीकृति और फिर अपनाने की प्रार्थना की थी। पिता जी के पत्र मे भी लगभग वही कुछ था जो देशपाडेय के पत्र मे था। नाना जी का पत्र कुछ अधिक लम्बा था और बहुत मर्मस्पर्शिनी भाषा मे लिखा था—अपनी व्यथित भावनाओ को उसमे उनसे थोडा-बहुत लिखा था, शेष देशपाडेय के पत्र की ही भाँति था।

मेरे लिखे पत्र के सम्बन्ध मे दो-चार साधारण सुझाव थे घटाने-बढाने के, पर कोई ऐसी महत्वपूर्ण बात नही थी जिसे वर्णन किया जाय। घर पर ही फिल्म की 'डेवलपिंग' भी कर ली थी और 'प्रिट्स' भी ले लिए थे।

किस प्रकार से मै दो दिन छिपकर रेखा जी से मिला तथा उनके पत्र लाया तथा कापी मे लिखा मेरा पत्र उन्होने पढा, इसे सक्षेप मे उसी कापी पर बढा दिया। रेखा के लिए पिता, नाना तथा देशपाडेय के पत्रो मे एक-एक फोटो-प्रिट रेखा, किलेदार तथा हमीद की रख दी तथा एक-एक अतिरिक्त फोटो भी। अलग से घोरपडे जी, उनकी पत्नी तथा बच्चो के, अपना, मजुला का तथा अपने दोनो बच्चो के फोटो-प्रिट भी एक-एक उन सबको इस लिए और रख दिये थे कि न जाने इसकी आवश्यकता कभी उन लोगो को पडे। हो सकता है इन फोटो से आगे चल कर कोई काम निकले कभी इससे एहतिहात के लिए ये सब फोटो रख दिए थे। घोरपडे जी आदि के फोटो मै उनके यहाँ कैमरा ले जाकर पहले खीच ही लाया था। ये सब सामान लेकर मैं घोरपडे जी के यहाँ गया। उनसे सारा हाल बताया और सब सामान उन्हे सौप कर लौट आया। स्वय घोरपडे जी को रेखा, हमीद, किलेदार, अपना, मजुला तथा दोनो बच्चो के तीन-तीन प्रिट उनके उपयोग के लिए दे आया। उनसे यह कह ही चुका था "इस कापी मे जो और विशेष घटनाये होती जायँगी—आपके भारत रवाना होने के पूर्व—उन्हे आपके यहाँ आकर ही कापी पर बढाता जाऊँगा।"

घोरपडे जी अपनी पत्नी को आवश्यक बाते बता और समझा ही चुके थे। मेरी पत्नी एक-एक अक्षर मुझसे जानती ही जाती थी, और वैसे ही घोरपडे जी की पत्नी भी अपने पति द्वारा। जो पति का लक्ष्य होता है, उद्देश्य होता है, पत्निया उसे ही अपना भी लक्ष्य, कर्त्तव्य, काम जान लेती है।

अगले दिन मैने टेलीफोन से किलेदार को उसके दफ्तर मे बताया कि "प्रिट तैयार हो गए है। दफ्तर से आओ मेरे यहाँ, चाय भी पीना और फोटो भी ले जाना।"

किलेदार ने कहा "मुझे तुम्हारे यहाँ आने मे कोई एतराज नही है, पर बेगम के भी फोटो है। अगर तुम ही मेरे यहा आ जाओ तो कैसा

रहे ?, चाय मेरे साथ ही । मुझे कई दिन इधर छुट्टी नही मिली और जनाब ने भी मिलने की कोशिश नही की । कोई खास बात ? जरा 'बिजी' (व्यस्त) अधिक हूँ । तो फिर मेरे यहाँ आ रहे हो ।"

टेलीफोन उसने रख दिया था। मै यही चाहता भी था—रेखा का आदेश सा था ।

जब पिछली बार मै रेखा से मिला था तो कहा था 'फोटो तैयार है । अगले इतवार को जब मेरे यहाँ आओगी दे दूँगा या किलेदार को दफ्तर भिजवा दूँगा या दे आऊँगा ।"

तब रेखा ने कहा था "जी नही न आप उन्हे स्वय देने जायेंगे, न किसी के द्वारा भिजवायेंगे, न इतवार को उन्हे देना है । आने का अवसर जब है मेरे यहाँ तो चाहे जो उपाय कीजिए मेरे घर आइये रविवार के पूर्व—मै कुछ नही जानती। छोटी बहिन हूँ तो क्या, अब से मै भी तुम्हे 'आर्डर' दिया करूँगी । बस मुझे ही दबाना आता है, मुझे ही ।"

मैने कहा था "अब तुम मुझसे बहुत लडने लगी हो।" मै जानता हूँ कि स्त्रियो को समय काटना एक समस्या होती है । उन्हे मनबहलाव के साधन कम ही होते है घर पर । अत मुझसे मिलकर इसका चित्त बहल जाता है, इसीसे यह मुझसे मिलकर प्रसन्न होती है ।

मेरे गले मे बाहे डालकर वह झूल गई - बच्चो की तरह ठुनठुनाते हुए बोली थी "इतने दिनो बाद, इतनी तपस्या के बाद मे तो मुझे भैया मिला है क्यो न उससे लडूँ । किलेदार के साथ ही न आइयेगा, दस-पाँच मिनट पहले आइयेगा ।"

अत. अगले दिन किलेदार के आने के दस-पन्द्रह मिनट पूर्व ही मै पहुँच गया और मुझे देखते ही 'मेरे भैया' कहकर वह मेरे गले से चिपट गई।

हम दोनो पवित्र सात्त्विक भाव से सगे भाई-बहिन की भाँति मिलते थे। माता-पिता, नाना-नानी के स्नेह से वचित, स्नेह की भूखी वह

अत्याधिक स्नेह के कारण मुझसे ऐसे ही चिपट जाती थी जैसे छोटा बच्चा अपने माता-पिता से ।

मैने कहा "हट चिपटी जाती है । कैसे तेरा कलेजा धड-धड कर रहा है । हट !"

वह बोली "नही हटूँगी, देखूँ तुम क्या करते हो ।"

मैने उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा "मेरी प्रिय बहिन ! ससार पवित्रता, निर्मलता नही देखता । जब से मै तुम्हे क्या मिला हूँ तुम फिर से बच्चा हो गई हो । अच्छा हट, मेरे पास कोच पर नही, अलग कुर्सी पर वैठ । मूर्ख कही की ! "

रेखा ने कहा "मेरे नाना जी भी तुम्हारी ही तरह मुझे डाटते थे । पर जब मै नही छोडती था ती 'भुतनी, चुडैल' कह कर मेरे घूंसे मारा करते थे । नानी जी को भी मैं ऐसे ही दुलराती थी, और बाज दफे जब मुझसे बस नही चलता था तो नाना जी को सहायता के लिए पुकारती थी । नाना जी दूर खडे हँसते थे । कितना स्नेह मेरे नाना जी मुझे करते थे । ओह कितना स्वर्ग-सुख से पूर्ण मेरा चार-पाँच वर्ष का जीवन था और कैसे मेरे दुर्भाग्य और पापो ने मुझे जो एक सुख दिया तो उसके साथ ही उससे सौ गुना दुख भी उसी मे मिला दिया । आपको देखकर, आपको पा कर अपने पाँच-छै वर्ष पूर्व के जीवन का स्वप्न देखने लगती हूँ । वह आपसे पाने का प्रयत्न करती हूँ भैया ! पर सुख जब अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच जाता है तब उसका स्थान दुख ले लेता है । यही पहले भी हुआ और मुझे लगता है यही अब भी होगा । जो सुख और आशा आपसे मिल कर हुई है दुर्भाग्य उसे स्थाई नही रहने देगा । इसीसे जब भी कोई सुख मेरे पास आता है मै सशक हो जाती हूँ, डर जाती हूँ ।"

रेखा की पुतलियाँ आँसुओ मे डूब-उतरा रही थी । मैने कोमलता से उसे अपने से अलग करके सामने दूसरी कुर्सी पर बैठाया । बीच में एक छोटी मेज़ रख दी । कहा "देखो यह फोटो तुम्हारा अलग

से मैंने खीचा था। देख लो इसे। इसे दूँगा नही जिससे व्यर्थ में किलेदार संदेह करे।" फोटो दिखाने के बाद अलग जेब मे रख लिया। फिर अपना, अपनी पत्नी का, दोनो बच्चो का, हमीद, रेखा तथा किलेदार के फोटो दिखाए, घोरपडे, उनके बच्चो तथा उनकी पत्नी मधूलिका के भी। किलेदार के आने की आहट हुई पर रेखा जी कुर्सी से उठी नही, देखती ही रही।

मैने कहा "आज तुमने दस-पॉच मिनट से अधिक प्रतीक्षा नही करवाई, इसके लिए धन्यवाद।"

किलेदार दूसरी कुर्सी घसीट कर रेखा की बगल मे बैठ गए और सब फोटा की सराहना करने लगे। फिर छाँट-छॉट कर मेरा, मजुला, दोनो बच्चो का, घोरपडे, उनकी पत्नी का तथा बच्चो का एक-एक फोटो-प्रिट तथा अपना, हमीद तथा रेखा के दो-दो प्रिट ले लिए।

मैने कहा "तीन-तीन ही सब के प्रिट है। यह नीयत क्यों खराब कर रहे हो, कुछ के दो-दो क्यो उठा लिए है।"

वह बोले नही। रेखा ने कहा "प्रिट्स सब अच्छे है।"

किलेदार ने कहा "बेशक", और छॉटे हुए प्रिट्स रेखा को दे दिए। शेष प्रिट्स मैने अपनी जेब मे रख लिए। मैने कहा "परसो रविवार है। प्रातः छै बजे से रात दस बजे तक—एक मिनट इधर-उधर नही। कुछ सुनना मुझे नही है।"

किलेदार कधे उचका कर रह गए। रेखा जी चाय लेने चली गई। फिर जब रेखा जी जूठे प्याले-तश्तरियाँ आदि ले जा रही थी उसी बीच मे किलेदार ने शतरज बिछा कर मोहरे रखना प्रारभ किया था। रेखा जी ने कमरे मे वापस आकर शतरंज का बोर्ड हाथ मे उठा लिया और मोहरे इधर-उधर लुढक गए। बनावटी क्रोध से बोली—"दिन-भर अकेले मरा करती हूँ। यह नही कि दफ्तर से आएँ, कुछ बोलें-चालें। कोई भी दूसरा आ भर जाय बस ले कर बैठ गए शतरज! मै निगोडी मे आग लगा दूँगी। कोई बात है, भैया आए है, न बात न चोत, बस शतरज। ये दोनो खेले मै उल्लू ऐसी मुँह ताकूँ।"

किलेदार ने कहा "आप्टे जी ! देख लीजिए इनकी गर्वनरी। दफ्तर मे अफसरान की मातहती मे काम करना है और घर मे इनकी मातहती, और वह भी ऐसी कि खुदा की पनाह ! यो तो दिन-रात डाटती ही रहती हो, एक इनके सामने ही डॉटने को रह गया था वह भी कसर पूरी कर ली। यह घर मे जा कर मजुला बहिन से कहेगे कि मै कैसा बोदा खामिद हूँ।"

म तथा रेखा भी मुस्करा दी। अपने दफ्तर के साथियो और अफसरो की तथा घरेलू बाते हम दोनो करते रहे। काफी देर बाद मुझे छोडा।

: १७ :

दूसरे दिन रविवार को प्रात सात के लगभग किलेदार सपरिवार आ गए। मेरे कमर मे घुसते ही मेज पर रखी घडी को देख कर बोले "बडे आलसी हो भाई ! घर मे रेडियो है पर घडी भी नही मिलाते हो। एक घटा तेज है तुम्हारी घडी।"

मैने कहा "अब चुपचाप बैठ जाइए। गलती करके माफी तो मॉगते नही है . . . ।"

हम सब मुस्करा पडे। मजुला आते ही रेखा से लिपट गई। बोली "तुम बहुत दुबली हो गई हो।"

रेखा ने कहा "तुम्हारे भाई तो कहते है दिन पर दिन मोटी होती जाती हूँ।"

किलेदार ने कहा "अरे बेगम ! सुबह-सुबह तो झूठ न बोला करो, यो तो तुम दिन भर बोलोगी ही।"

मजुला ने कहा "आप दोनो पति-पत्नी झूठे है।"

इस पर फिर कहकहा लगा। तात्पर्य यह है कि वातावरण सदा की भाँति—जब भी हम सब एकत्र होते थे—उत्फुल्लता से परिपूर्ण हो गया।

रेखा ने कहा "भीतर घसीटे तो लिए जा रही हो, पर मेरी बडी बहिन! अकेले ही मुझे न मार डालना, नही तो तुम्हारी कसम! सब छोड-छाड कर अकेले ही घर भाग जाऊंगी। मिल-बाँट कर भले बच्चो की तरह काम करना।"

मैने कहा "किलेदार जी! मजुला को पहले बडी बहिन कहा और फिर बच्चा भी बनाया। है न यह बेवकूफ!"

किलेदार बहुत खुश होकर बोले—"आज भाई तुमने मेरा साथ दिया है। अब तो बेगम तुम्हे दो आदमियो ने बेवकूफ कहा है। अब बडी बहिन तुम और कह दो, तो बस यह 'सर्टीफाइड' हो जायें। मेरे शतरंज मे तो एतराज है और खुद सात दिन से रट रही है कि भैया के यहाँ मराठी रेकार्ड सुनूंगी। देखूँगा कैसे सुनती हो।"

मजुला ने कहा—"चलो रेखा अन्दर। अच्छा सब मेरी बहिन के पीछे पडे है! आज तुझे दिन भर मराठी रेकार्ड सुनाऊँगी, देखें भाई-साहब कैसे रोकते है।"

दोनो अन्दर चली गई। आठ बजे के लगभग घोरपडे जी सपरिवार आ गए। आहट पाकर मेरी पत्नी बैठके मे आ गई। बोली—"रेखा जो नही आ रही है।"

किलेदार मेरी बाँह पकडकर भीतर जाने लगे। अन्दर जाकर गभीर स्वर मे कहा "बेगम! तुम बहुत परेशान करती हो। मिसेज घोरपडे मेरे सामने निकलेंगी, तुम क्यो नही उनके सामने निकलोगी? वह अपने ही आदमी है, तुम यह जानती हो। बाज दफे तुम्हारी ज़िद पर बहुत गुस्सा आता है। मौका-महल तो समझा करो।" हाथ पकडकर उन्होने रेखा को उठाया और ले चलने लगे।

रेखा ने कहा—"हाथ छोडो, चल तो रही हूँ।"

किलेदार ने कहा—"तो चलो सीधे से।"

कठिनाई से एक मिनट इस सबमे लगा होगा। मैने कहा—"रेखा बहिन! आप है श्री नारायण केशव घोरपडे, नमक के कारखाने मे इजीनियर है। और आप है श्रीमती मधूलिका घोरपडे। और भाभी जी! आप है रेखा जी के पति श्री अहमद हुसैन किलेदार। मै, किलेदार जी तथा घोरपडे जी घनिष्ट मित्र है। अतः अब रेखा बहिन, मधूलिका बहिन तथा मजुला आप तीनो भी घनिष्ट सहेलियाँ हो जायँ।"

किलेदार ने श्री घोरपडे जी को आदाबअर्ज किया फिर हाथ जोड कर मधूलिका जी से बहिन जी कहकर नमस्ते किया। रेखा ने घोरपडे जी को नमस्कार किया और श्रीमती घोरपडे को वह ठीक से नमस्कार भी नही कर पाई थी कि उन्होने रेखा को गले से लगा लिया और कहा—"ये तीनो मित्र बताते थे कि आप और मजुला बहिन तो बहिने और सहेलियाँ बन चुकी है, तो क्या मै ही इतनी गई-गुजरी हूँ कि बहिन बनने के योग्य नही हूँ। मै तो मजुला, आप्टे जी और किलेदार जी से भी आयु मे बडी हू। अत सबकी बडी बहिन हू।"

सभवत आत्मीयता बढाने का आदेश घोरपडे जी अपनी पत्नी को दे चुके थे।

रेखा ने कहा—"आप मेरी वैसी ही बहिन और पूज्य है जैसे मजुला बहिन।"

मधूलिका ने कहा—"शिष्टाचार के नाते कह रही हो या सच-सच? अच्छा मुझे छूकर कहो।"

रेखा ने उन्हे स्पर्श करके कहा "आज ही आपसे मेरा परिचय हुआ है। पर ऐसा लगता है आप दोनो से मेरा जन्म-जन्मान्तर का सम्बन्ध है। मै आपको स्पर्श करके सत्य कहती हूँ कि आज से आप और मजुला जी मेरी दो बडी बहिने हुई। आप ही अपनी छोटी बहिन को बिसार न दीजिएगा।"

मधूलिका जी ने किलेदार जी से कहा "आप क्या कहते है?"

श्री किलेदार ने कहा "आप तीनो बहिनो के बीच मै कह ही क्या सकता हूँ। मैं सिर्फ अपने मुतल्लिक कह सकता हूं कि जैसे मेरी बहिन मजुला जी है वैसे ही आज से आप भी हुईं।"

मधूलिका जी ने कहा "देखिए इतने आदमियो के बीच कह रहे है। मेरे, तो, सदा को छोटे भाई हो गए।"

श्री किलेदार ने कहा "खुदा चाहेगा तो आपको कभी शिकायत का मौका न मिलेगा। कितनी मोहब्बत मुझे आप सबसे मिलती जाती है। खुदा गवाह है जो जरा भी इस कहने मे बनावट हो कि मेरे हिंदू दोस्त और भाई और बहिनें मुझे अपने मुसलमान दोस्तो से ज्यादा अजीज़ है, करीब है।"

तीनो हाथ मे हाथ डाल कर भीतर चली गई। जो मेरा तथा घोरपडे जी का उद्देश्य था वह पूरा हो गया था। उन्होने न केवल ठीक मे रेखा जी को देख लिया था वरन् निकटता भी प्राप्त कर ली थी, और तीनो स्त्रियाँ भी अधिक निकट आ गई थी। रेडियो बजता था और हम-लोग इधर-उधर की बाते भी करते रहे। उस दिन का पूरा समय बहुत अच्छा गुजरा। अब तो घोरपडे जी के दो पुत्र तथा दो पुत्रियाँ भी वहाँ थे। इससे छोटो-बडो सबको समवयस्क, हमजोली मिल गए थे। नाश्ता, दिन का भोजन, मराठी रेकार्ड, फिर नाश्ता, रात का भोजन और बातचीत मे समय कट गया। ताश और शतरज भी हुआ। एक साथ भी महफिल जमी और स्त्री तथा पुरुषो की अलग-अलग भी।

सब से अधिक तन्मयता रेखा को मराठी रेकार्डों तथा मराठी भोजन मे हुई। आज दोपहर के भोजन के साथ 'शेवया' (सिवइयाँ) तथा रात के भोजन के साथ 'फेण्या' (फेनी) भी हुई। अब तो रेखा को मंजुला तथा मधूलिका जी दो सहेलियो से मराठी भाषा मे वार्त्तालाप करने का अवसर प्राप्त हुआ। अगले रविवार को किलेदार के यहाँ और उसके बादवाले रविवार को घोरपडे जी के यहाँ दावत का

भी जब टेलीफून किया गया।" मै उसकी पीठ थपथपाता रहा। फिर उसे हटाने लगा।

रेखा ने कहा "ऐसे नही, धक्का देकर गिरा दो न !" उसने और कस कर मुझे पकड लिया।

मैने कहा "पगली बहन ! अच्छा कोई नई बात ? मै तो तुम्हे नई बात घोरपडे के भारत से लौटने पर ही बता सकूँगा। अच्छा अब बैठो तो।"

रेखा ने सामने की कुर्सी पर बैठते हुए कहा "तुम्हारी फोटो है मेरे पास। तुम्हारे परिवार की भी और घोरपडेजी-परिवार की भी—यह अच्छा ही है। भैया ! अब अगर मै यहाँ भी श्रीमती किलेदार बनी रह कर रहने को बाध्य होती हूँ तो भी उस समय तक मेरा जीवन स्वर्ग है, सार्थक है जब तक आप दोनो महाराष्ट्र सज्जनो तथा उनके परिवारो से ऐसी ही घनिष्टता-आत्मीयता मेरे परिवार से रहे। आप मुझको वचन दीजिए कि यदि मै पाकिस्तान मे रही तो आप मुझे स्थाई रूप से कभी छोडकर नही जायँगे। बोलिए ?"

मैने कहा "बहिन ! मै भविष्यवाणी कैसे कर सकता हूँ। मनुष्य परिस्थितियो का दास होता है। क्या मालूम अन्न-जल कब कहाँ ले जाय।"

रेखा ने कहा "क्या आप कल्पना कर सकते है कि यदि आप और मजुला बहिन न रहे यहाँ, तो मेरा जीवन, अब तक जो था वह तो खैर था ही, अब क्या हो जायगा ?"

मैने कहा "हाँ बहिन ! पूर्ण रीति से। पर भाग्य का लिखा कौन मेट सकता है। क्या तुम्हे अकेले इस दशा मे छोड कर जाते हुए हम-लोगो को पीडा-व्यथा न होगी ?"

रेखा उठी और मेरे पास बैठ कर मुझसे विनती करती हुई बोली "मै तुम्हे कभी नही जाने दूँगी। जाना ही यदि तुम्हे पडा तो फिर वचन दो कि मुझे जहर की पुडिया ला दोगे।"

' क्या उत्तर देता उसे। उसकी पीडा, उसकी व्यथा भी भला कहने-सुनने की चीज है। वह तो केवल अनुभव ही की जा सकती है। अपने को उससे अलग कर के मै स्वय कुर्सी पर बैठ गया। रेखा भीतर चली गई।

कुछ देर बाद किलेदार आए और बोले "खूब वेगम खूब ! यह नही आते तब तो मुझसे शिकायत करती हो, और जब आ जाते हैं तो पास मे ठीक से बैठती भी नही हो। देखो तुम्हारा काम मैने कर दिया है, इन्हे बुला दिया है। आज जो तुमने शतरज न खेलने दी तो तुम्हे खाट मे रस्सी से बाधना पडेगा।"

चाय आदि के बाद एक-दो बाजी शतरज की और तब वहाँ मे बिदा हुआ।

अगले दिन रविवार को श्री किलेदार के यहाँ चहल-पहल रही ; श्री घोरपडे तथा मधूलिका जी ने किलेदार का घर देख लिया जो उनका उद्देश्य था। घोरपडे-परिवार के फोटो मै रेखा जी को दे ही चका था। तीनो सहेलियों ने इस बार भी हिल-मिल कर भोजन बनाया और निश्चय ही तीनो स्त्रिया और अधिक निकट आ गईं।

इसके बाद किलेदार जी से नियम-पूर्वक भेट न होती थी। कराँची के दर्शनीय किसी न किसी स्थान पर मै और किलेदार यदा-कदा दफ्तर के बाद घूमते हुए चले जाते या किसी बाग-बगीचे मे बैठ कर बाते करते, घूमते-घामते। किलेदार के साथ मगर-पीर या मगोपीर, जो दक्षिण सिन्धु का एक मुस्लिम तीर्थ-स्थान है, वहाँ भी गया। सिन्धु प्रान्त मे मुसलमानो के यो तो अनेक तीर्थ है। पर कराची से उत्तर तीन कोस पर एक पहाडीघाटी है। वही एक मस्जिद, एक ऊष्ण जलाशय, खजूरो के जगल तथा एक झरना है। इस तीर्थ का बडा महत्त्व है। कराँची के निकट मनीरा खण्ड और छोटे-छोटे द्वीप प्रशात महासागर मे फैले है। समुद्र-तट भी कभी-कभी हम लोग गए। कभी-कभी हम तीनो पुरुष किसी न किसी के यहाँ भी एकत्रित हो जाते, पर इसका अवसर

कम ही आता क्योंकि हम तीनो ही अति कार्य-व्यस्त पुरुष थे, विशेष कर घोरपडे।

'यह भी मजुला तथा मधूलिका ने निश्चय कर लिया था चैत्र गौरी के, सक्रान्ति के तथा श्रावणी शुक्रवार के हल्दी कुकू, हतगा (लडकियो का त्योहार), गुडी परवा, गणेशोत्सव, श्रावणी, दशहरा, दिवाली, होली आदि सभी हिन्दू तथा महाराष्ट्र-त्योहारो पर उनमे से कोई न कोई रेखा को अवश्य बुलायेगी। और उन लोगो ने ऐसा किया भी था। रेखा आती भी थी मेरे या घोरपडे जी के यहाँ कुछ ऐसे पर्वो पर, और रेखा ने अत्यन्त तन्मय होकर सुख और दुख के एक साथ आँसू इन पवित्र पर्वो पर बहाए थे—सुख के इसलिए क्योकि महाराष्ट्र-परिवारो मे आत्मीयता के साथ उसे महाराष्ट्र-पर्व मनाने का सौभाग्य प्राप्त था और दुख के इस लिए कि वह अब हिन्दू नही है और ये पर्व स्वतन्त्र रूप से नही मना सकती और इन परिवारो की कृपा पर ही उसे अपने अभाव की पूर्ति करनी पडती है। हिन्दू न होने का अभाव उसे ऐसे अवसरो पर विशेष रूप से टीसन देता।

मै किलेदार के यहाँ की दावत के बाद की बाते करता-करता कहाँ से कहाँ भटक गया। खैर उस दावत के बाद फिर एक सप्ताह तक मैने न मिलने का निश्चय किया। पर भगवान तो कुछ और ही चाहते थे। किलेदार जी की दावत के अगले दिन साय के समय यकायक तबियत खराब हो गई थी और घबरा कर जब और कुछ रेखा को नही सूझा तो एक पडोस के लडके के द्वारा मुझे खबर भेजी। मै तुरन्त ही किलेदार के यहाँ पहुँचा। किलेदार को रह-रह कर उबकाई आती थी और थोडा-थोडा सा बदजायका पानी उनके मुँह से गिरता था। जरा-जरा देर बाद उन्हे टट्टी की भी हाजत होती पर मरोड होता था और टट्टी न होती थी। मै समझा पित्त की खराबी है। पर भय भी हुआ कि कही कोई खतरनाक रोग तो नही है। पेट मे इतना दर्द था कि वह दोहरे हुए जा रहे थे। मै तुरन्त डॉक्टर को

बुला लाया। डॉक्टर के देख कर जाने के बाद मैं नुसखा बँधाने चल दिया। एहतियात के लिए तेजी से घर भी गया और पत्नी से सब हाल बता कर यह भी कह आया कि हो सकता है मैं रात को न आ सकूँ।

दवाये लेकर मैं वापस आया। कालरे का भय निर्मूल था। पर दवाये पीने के बाद भी पेट के दर्द से वह तडपते रहे—हाँ उबकाई मे अवश्य कुछ कमी हुई। उन्होने मुझसे घर जाने को भी कहा कि बहिन जी मार्ग जोहती होगी। पर मै गया नही। रात भर मे तथा रेखा जागते रहे। उन्हे बार-बार हाजत होती थी। इससे बेहद कमजोरी उन्हे आ गई थी। रेखा के भी हाथ-पैर फूले थे।

राम-राम करके प्रात.काल हुआ। मैने दफ्तर से दो दिन की छुट्टी ले ली। डॉक्टर को फिर लाया। उन्होने देखा और कहा "मुझे यकीन है कि यह 'कालिक पेन' का दौरा है। शायद पहली बार हुआ है। कोई भी खतरे की बात नही है। मै इजक्शन देता हू और नई दवा लिखे देता हूँ। ठीक हो जायगा। इतमीनान रखे।"

दवा लाया। हमीद को भी दिखाना था। उसे भी उसके डॉक्टर के पास ले गया और उसको भी दवा लाया। उनकी गृहस्थी के लिए जो फल तथा तरकारियाँ आदि लानी थी वह भी लाया। किलेदार को जब पता चला कि मैने दो दिन की छुट्टी ले ली है तो उन्होने केवल इतना कहा "आपको शुक्रिया अदा करना आपकी बेइज्जती करना होगी। कितने एहसानात है आपके हम लोगो पर।"

मै घर गया और पत्नी से मिल कर फिर वापस आ गया। मुझे किसी तरह रेखा ने अपने घर मे खाने देने की अनुमति नही दी। उस रात को भी वही रहा। कमजोरी जरूर रह गई थी। पर अगले दिन किलेदार की तबियत ठीक हो गई थी। और मै तीसरे दिन अपने आफिस गया और उसके दूसरे दिन किलेदार भी अपने आफिस गए। पर इस घटना से किलेदार के दिल मे मेरे लिए और भी जगह हो गई। वह मुझे अपना हितैषी और सहायक मानने लगे।

एक दिन टेलीफोन कर के किलेदार ने कहा "मै कल शाम को तुम्हारे यहाँ चाय पर आ रहा हूँ। आज जरा काम है नही तो आज ही आता।"

मैने पत्नी को समझा दिया कि "मै जानबूझ कर घर नही आऊँगा। तुम किलेदार को घटे-दो घटे जाने न देना और चाय-नाश्ता कराना। इससे उसे हम लोगो की आत्मीयता और निकटता पर और अभिमान होगा।"

ऐसा ही किया गया। किलेदार को किसी तरह दो घटे तक मजुला ने नही आने दिया। कहा "आपके भाई न सही बडी बहिन तो है घर पर। बिना उनके आए जो आपको जाने दूँगी तो मुझे डाँट पडेगी। तब मुझे बचाने जाइएगा।"

पर जब दो घटे हो गए तो इस शर्त पर उन्हे जाने दिया कि कल वह फिर आयेगे। यह भी कहा कि "इन्हे फोन भी कीजिएगा अपने घर बुलाने का तब भी इन्हे जाने नही दूँगी।"

किलेदार ने कहा "यह तो आपका जुल्म है मुझ पर। आप्टे जी की गल्ती है और उल्टे मुझे ही यहाँ आना पड़ेगा। पर आप्टे जी ने जा खिदमत मेरी की बीमारी मे ।"

पत्नी ने बात काट कर कहा "यही आकर खूब सजा दे दीजिएगा ताकि मै भी हँस सकूँ। आइएगा न ? और भाई तथा मित्र का काम सेवा नही कहलाती है। भविष्य मे कभी ऐसा न कहे।"

वह बोले "इतनी जुर्रत कहाँ है मुझमे कि हुक्मउदूली करूँ।"

मजुला ने मुझे यह सब बताया था। दूसरे दिन किलेदार मेरे यहाँ फिर आए। आज भी कुछ देर मे पहुँचा। बहुत बिगडते रहे, डाँटते रहे। बोले "यह कम से कम सजा है कि कल और परसो तुम मेरे यहाँ आओ।"

मैने बताया "आफिस के काम से मुझे आठ बजे तक फँसे रहना पडा, नही तो मुझसे अपराध न बनता।"

दोनो दिन ही मैं किलेदार के यहाँ गया था और निश्चय ही उनके आने के कुछ पूर्व ही रेखा जी काफी प्रसन्न और सतुष्ट रही। कहती रही "भगवान करे तुम्हे रोज ऐसी ही सजा मिले।"

मैंने कहा था "घोरपडे के घर का मार्ग भी तुम्हे ठीक से समझना है और उनका घर भी ठीक से पहचानना है। यह कागज रखो। इस पर मेरे तथा घोरपडे जी का पूरा नाम-पता लिखा है —कभी आवश्यकता पड सकती है।"

रविवार को घोरपडे जी के यहाँ वैसी ही प्रसन्नता और आत्मीयता के वातावरण मे समय कटा। दो दिन बाद मगल को वह दोपहर की ट्रेन से कराँची से चलने वाले थे। घोरपडे जी ने किलेदार से कहा था "आपको यदि भारत मे किसी के लिए सदेश हो या कोई काम हो तो बताइएगा।"

किलेदार ने कहा "आपको बेकार क्यो जहमत दूँ। क्या आप बम्बई भी जायँगे।"

घोरपडे ने कहा "अवश्य ही। वहाँ का जो काम हो, पत्र हो, कुछ और भेजना हो मुझे बताइये।" फिर मुझसे कहा "आप्टे जी! आप किलेदार जी से जो भी यह दे ले लीजिएगा।"

किलेदार ने कहा "मेरा कदीमी घर बम्बई ही मे है। मेरे चाचाजान मय अपने खानदान उसमे रहते है। कुछ बच्चो के लिए तोहफे और चाचा जान को खत भेज दूँगा। आप्टे जी शाम को मेरे घर आ जाइएगा या मैं खुद आपके यहाँ खिदमत मे हाजिर हूँ?"

रेखा वही थी। उसने छिप कर मुझे देखा और मैंने भी। मैंने उसकी आँखो को भापा स्पष्ट पढ ली कि 'खबरदार अगर तुमने इन्हे अपने घर बुलाया?'

मैंने तुरत कहा "नही, नही मैं अवश्य आऊँगा। पर चाय पिलानी पडेगी और खाली चाय नही।"

मैंने देखा रेखा का चेहरा खिल गया। किलेदार ने कहा "जी नही, यह शर्त्त नामजूर। वाह, मान न मान मैं तेरा मेहमान।"

सब मुस्करा दिए ।

अत सोमवार को मै अकेले मे रेखा जी से मिल पाया । स्त्रियाँ कितने कोमल हृदय की होती है। किलेदार के आने से पहले रेखा बराबर रोती रही थी । उसके भाग्य का बहुत कुछ फैसला घोरपडे अपनी वापसी मे साथ लायेगे ।

मगल को कुछ देर की दफ्तरो से छुट्टी लेकर मै तथा किलेदार दोनो ही घोरपडे-परिवार को बिदा कर आए ।

: १८ :

लगभग एक मास के बाद श्री घोरपडे भारत से पाकिस्तान लौटे । जिस दिन वह करॉची आए उसी दिन उन्होने नौकर के द्वारा मुझे सूचना भिजवा दी । नौकर सायकाल को आया था । अत. मैने उस दिन उनसे मिलना उचित न समझा क्योकि वह लम्बी यात्रा से थके हुए होगे । अत. प्रात काल मै उनसे मिलने गया । उन्होने कहा "तुम्हे भी आफिस दस बजे जाना है और मुझे भी । अत इस समय एक घटे से अधिक वार्त्तालाप का अवसर नही मिलेगा । आज साय का नाश्ता तथा भोजन मेरे यहाँ करना । आफिस से अपने घर जाना और अपनी पत्नी को भी लेते आना । रात को ही बाते ठीक से होगी निश्चिन्तता से । मुझे तो स्वाभाविक ही है कि बाते करने मे अधिक समय लगेगी । इस समय तुम अपना, अपने परिवार का तथा रेखा-परिवार का हाल सुनाओ ।"

मैने कहा "आपकी कृपा से मै सपरिवार सकुशल हूँ और मेरे

परिवार के सम्बध मे कोई विशेष बात सूचनार्थ नही है। रेखा जी और उनके परिवार के सम्बध मे भी कोई विशेष सूचनार्थ नवीन समाचार नही है, सिवा एक महत्त्वपूर्ण समाचार के।

"आपके यहाँ से जाने के बाद मैंने रेखा जी के यहाँ कम से कम जाने का निश्चय किया। आपके जाने के बाद वाले प्रथम रविवार को रेखा तथा किलेदार मेरे यहाँ चार बजे साय आए और रात के दस बजे तक रहे। मैंने उनसे कह दिया है कि जिस दिन भी आपके लौटने के बाद आपसे मिलूँगा उसी दिन तुरत उनके घर सूचनार्थ आ जाऊँगा और फिर उनके साथ आपके यहाँ आऊँगा।

'रेखा अपने को बहुत एकाकी अनुभव करती है अपनी जन्मभूमि, परिवार, धर्म तथा पूर्व-परिचितो से छूट कर। उस दिन चैत्र गौरी के हल्दी कुकू का त्योहार था। अत रेखा जी को मजुला ने बुला लिया था। उस उत्सव पर केवल महाराष्ट्र-स्त्रियाँ ही एक-दूसरे के घर जाकर स्त्रियो से मिलती है। विशेष महाराष्ट्र-पर्व पर विशेप महाराष्ट्र-भोजन घर मे बना था। रेखा किलेदार के सामने तो अपने आँसू रोकती है, पर पत्नी की गोद मे अकेले मे वह सदा मुंह छिपा कर फूट-फूट कर रोती है, विशेप कर जब कभी महाराष्ट्र-त्योहार या पर्व कोई पड जाता है या जब विशेष महाराष्ट्र-पकवान आदि बनते है। यो रेखा को श्रीखड बहुत पसद है और मजुला ने उसे यदा-कदा श्रीखड आदि खिलाया-पिलाया भी है।

"पत्नी प्राय अपने त्योहारो पर या तो उसे बुला लेती है या उसके यहाँ पकवान आदि भेज देती है। यो भी जब कभी वह मेरे यहाँ आई है पत्नी ने इस बात का विशेष ध्यान रखा कि कोई न कोई विशेष महा-राष्ट्रीय-पकवान या भोजन बने और ऐसे अवसरो पर रेखा अपने मे खो सी जाती है, आत्म-विभोर हो जाती है, अपनी विह्वलता वह छिपा नही पाती। एक दिन तो किलेदार के घर मजुला ने प्राय: सभी महा-राष्ट्रीय-पकवान एक दिन ही मे किए थे—रेखा की प्रसन्नता के लिए।

"यो तो मगल-सूत्र, माथे मे कुंकूँ (बिन्दी), चूडी और जूडे मे फूल जो महाराष्ट्रीय सधवा स्त्री के विशेष चिह्न है उसने कभी नही छोडे। माँग, सेंदुर आदि का प्रयोग तथा हिंदू-साज-सज्जा उसने कभी नही छोडी और यवन होने पर उसने न कभी पर्दा किया या बुर्का ओढा। हिंदू-रीति-रिवाज भी अपनाने का वह प्रयत्न करती है। अपने को बेचारी कल्पना के सहारे अपने गत-जीवन मे वापस लाने का प्रयत्न करती है। जब भी मुझसे वह अकेले मे मिलती है, मेरे गले लग-लग कर वह रोती रहती है। कहती है आपमे पिता और नाना को पाती हूँ और मजुला बहिन मे अपनी माता और नानी।

"पत्नी का कहना है कि जब तक वह अकेले मे मेरे पास रहती है मेरी छाती मे, गोद मे सिर डालकर, मुँह छिपाकर अधिक समय रोने मे ही व्यतीत करती है। उसकी पीडा, उसका पश्चाताप, उसके हृदय का हाहाकार देखा नही जाता।

"एक दिन रेखा अपने विद्यार्थी-जीवन की बाते कर रही थी। कहने लगी मेरी एक 'क्लास-फेलो' सुधा जोशी थी। उससे मेरी कोई बात छिपी न थी। वह मुझे बहुत प्यार करती थी। वह मुझे बहुत समझाया करती थी कि तुम एक यवन के पीछे दीवानी होकर बहुत ज्यादा अपने लिए, अपने परिवार के लिए, धर्म के लिए, प्रान्त के लिए, देश के लिए एक बुरा काम कर रही हो, समाज के समक्ष एक बुरा आदर्श रख रही हो। तुम्हे प्रेम ही करना है तो किसी हिंदू युवक को जीवन-साथी क्यो नही चुन लेती?'

मै अधी और मूर्खा हँस कर कहती "प्रेम तर्क नही जानता। जिससे हो गया हो गया। मै हिंदू-मुसलमान-ईसाई का भेद नही मानती; किसी भी पढे-लिखे-समझदार को नही मानना चाहिए। और फिर प्रेम क्या स्वय मे एक 'धर्म' नही है? प्रेम मे हिंदू-मुसलमान क्या! ये सब बेकार की बाते है। तुम नही जानती हो किलेदार कितना भला और ऊँचा तरुण है सकीर्णता, कट्टरता ताअस्सुबपने से दूर, और वह मुझे कितना अधिक प्रेम करता है।"

सुधा कहती "मै तुम्हारी बात का विश्वास करती हूँ पर तुम यह क्यो भूलती हो कि तुम्हारी-उसकी सस्कृति, मान्यताओ, परम्पराओ, रहन-सहन, खान-पान, रीति-रिवाज, बोली-भाषा आदि मे कितनी गहरी असमानता है। तुम यह असमानता सहन नही कर सकोगी। विवाह उससे कर लिया तो साल-दो साल तो प्रेम के जोश, गर्मी और प्रकाश की चकाचौध तुम्हे अधा कर देगी, उसकी तीव्रता मे तुझे आगा-पीछा, अपना भूत वर्तमान और भविष्य कुछ भी नही दिखाई देगा, समझाई देगा पर भूत उतर जाने के बाद—और जल्दी ही भूत उतरेगा—तुम अपने का एकाकी, एकाङ्गी और परित्यक्त अनुभव करोगी, सदा रोओगी, कलपोगी, हाथ मलोगी, पछताओगी।"

मै कहती "तुम बहुत भावुक हो। मै 'प्रैक्टिकल' (व्यावहारिक) हू। ऐसा कुछ नही होगा।"

सुधा कहती "काश ऐसा ही होता बहिन! यह तो भविष्य ही बताएगा कि मै क्या हूँ और तुम क्या हो? मै ठीक थी या तुम ठीक थी? मे तुम्हारी प्रिय सहेली हूँ। उस नाते तुम पर मेरा अधिकार है जो कहती हूँ। मुझे तुम पर दया आती हे। पर तुम मेरा कहना क्यो नही मानती? क्या मेरा कहना मानना तुम्हारा कर्त्तव्य नही है? क्या मै तुम्हारी हितैषिनी नही हूँ? क्या तुम्हारे परिवार वाले तुम्हारे हितैषी नही हे? तुम उनका कहना क्यो नही मानती? क्या तुम अपने को पिता, नाना जी से भी अधिक बुद्धिमान और अनुभवी समझती हो? क्या तुमने उनसे अधिक ऊँच नीच इस ससार मे देखा-समझा है? मेरी अच्छी रेखा! मै तुम्हारे अधकारमय भविष्य को सोच कर कॉप जाती हूँ।"

मै उसके निष्कपट प्रेम, उसके हृदय से निकली आवाज से प्रभावित होती अवश्य पर मेरा अधा प्रेम उस प्रभाव को क्षणिक ही रखता। मै कहती "तुम मेरी सबसे बडी मित्र हो, अपनी हो। मै तुम्हारी प्रत्येक बात मानना चाहती हूँ। काश यह भी मान पाती। पर यह मैं नही मानती जो तुम कहती हो—अपना दुख-सुख, भविष्य, रुचि आदि जितना

मै समझ सकती हूँ, दूसरा नही समझ सकता। और फिर कौन मै किले-दार से विवाह किए लेती हूँ। वह बाद मे देखा जायगा। और मै तुम्हे सच बताऊँ—मै तो उसे नचा रही हूँ, उसे खिला रही हूँ। इन तरुणो से जरा बोल दो, जरा इन्हे ढील दे दो बस तुम्हारे तलवे चाटने लगेगे। बेचारा खुश हो लेता है मेरा हाथ-वाथ छूकर, हो लेने दो मेरा क्या बिगडना है। उसकी बेचैनी, उसकी आह-ऊह का मज़ा लेती हूँ, मन ही मन हँसती हूँ।"

सुधा जोशी कहती "तुम्हारी बात यदि सच भी है तो भी तुम आग से खेल रही हो। तुम उसे खेल खिला रही हो, कही वह उल्टे तुम्हे ही खेल न खिलाने लगे। तुम कहती हो उसे नाच रही हो—मजाक मे—कही वह तुम्हे ही नाच न नचाने लगे, और फिर जीवन भर ऐसे कि रोने को आँसू भी तुम्हारे पास शेष न रहे। तुम चाहे जो कहो, पर यदि ऐसे ही उस पर रीझी रही तो उससे विवाह भी करोगी और मुसलमान बनने को भी बाध्य होगी। देखो रेखा! एक तरुणी को प्रेम का 'मजाक', 'खेल' भी नही खेलना चाहिए, अन्यथा शिकार करने वाला स्वय शिकार हो जाता है। उस खेल मे सदा हार हम स्त्रियो की ही होगी, याद रखो।"

मै कहती—"अहँ देखा जायगा जब जैसा होगा। उसके लिए अभी से माथा-पच्ची क्यो करूँ।"

"और आज सुधा का एक-एक अक्षर, एक-एक शब्द, एक-एक वाक्यँ मुझे याद आ रहा है। मेरा विवाह भी हुआ—हिदू न्याय-शास्त्र मे ऐसे ही विवाहो को असुर-विवाह कहते है—मुसलमान भी हुई, अपनी जन्मभूमि से छूटी, पश्चाताप की ज्वाला मे निरन्तर जल रही हूँ। अपने एकाकीपन से इतना ऊब गयी हूँ कि पिजडे मे बन्द पक्षी की भाँति फडफडा रही हूँ। सोचती हूँ मेरे पख होते तो मै उड जाती अपने परिवार, अपने देश, अपने 'अपनो' के पास। विभिन्न धर्म तथा सस्कृति वाले पुरुषो से विवाह करके स्त्रियाँ, विशेषकर मुझसी सवेदनशील और

भावुक लडकिया कितनी भयकर भूल करती है। किलेदार के साथ मै निभा रही हूँ क्योकि और कोई चारा नही है। हाँ उनका प्रेम तथा मेरा मातृत्व ऐसी जजीरे है जिन्होने मेरे पख, डैने अपने बोझ से दबा रखे है, जकड रखे है, तोड दिए है, मुझमे उडने की शक्ति भी नही रह गई है।

"मेरा अन्तर्द्वन्द, मेरा मानसिक क्षोभ और विचारधाराओ का सघर्ष एक तो यो ही असह्य था और अब मेरी बुद्धि और भी काम नही करती। मेरी समझ मे नही आता कि क्या करूँ क्या न करूँ। मेरे लिए क्या उचित है, क्या अनुचित। आप मुझे प्रोत्साहन देते है कि यदि फिर सम्भव हो तो हिंदू-धर्म मे लौटूँ, अपने देश, अपने महाराष्ट्र-समाज मे लौटूँ। उसके लिए यदि पति के प्रेम को भी भूलना पडे, माता की ममता को भी दबाना पडे तो कोई हानि नही है -

उधर मजुला बहिन कहती है "तुम्हारा एकाकीपन दूर हो, मानसिक और आत्मिक क्लेश दूर हो, तुम अपने हिंदू-धर्म, महाराष्ट्र-समाज, अपने आत्मीयो-सम्बन्धियो, अपनी जन्मभूमि को फिर से पा सको यह अच्छा ही है। तुम्हारा प्रत्येक हितैषी यह चाहेगा। पर कभी-कभी यह सोचती हूँ अब तुम अपना छोटा सा घोसला बना चुकी हो। तुम्हारी सुखी और भरी-पुरी गृहस्थी है। एक सुन्दर बच्चा है, दूसरा दो-चार मास मे आने को है तथा पति का अटूट प्रेम और विश्वास प्राप्त है। इस बसी-बसाई गृहस्ती को आग क्यो लगाई जाय? इसे एक बार बसाकर फिर क्यो मिटाया जाय, उजाडा जाय? अब तो जो होना था वह हो चुका। उसी पर धैर्य तथा सतोप रखो। तुम्हे पति को, बच्चो को छोडना पडेगा। अभी हिंदू-धर्म मे लौटने की भावुकता मे तुम यह सब सोच रही हो और यदि हिंदू फिर हो गयी तो कुछ दिनो बाद फिर एकाकीपन का अनुभव करोगी। अपने पति का प्रेम, अपने मातृ-हृदय की ममता तुम्हे रुलायेगी। तुम्हे चैन न इस करवट मिलेगी न उस करवट। मेरी समझ मे तो जो है सामने उसीसे समझौता करके, उसी के अनुसार अपने को ढालकर तुम्हे अधिक शान्ति मिलेगी। इस भाग-

दौड मे, इस बार-बार के अदल-बदल मे तुम्हारी मानसिक शान्ति और भग होगी ।

"यह मनुष्य के स्वभाव की कमजोरी भी है और विचित्रता भी कि वह अपने वर्तमान से असतुष्ट रहता है । वह जिस भी स्थिति मे हो पर परिवर्तन चाहता है और परिवर्तन हो जाने के कुछ समय बाद फिर उस परिवर्तित स्थिति मे भी परिवर्तन चाहता है । और रेखा बहिन ! सौ बात की एक बात यह है कि स्त्री बिना पति के प्रेम के जीवित नही रह सकती—वास्तव मे जिसे जीना कहते है । और फिर तर्क की तो और बात है, 'वासना' का भी, काम-पिपासा का भी ससार मे महत्वपूर्ण स्थान है, इस तथ्य को भी आँख से ओझल नही किया जा सकता । आज आवश्यकता अनुभव नही होती है तो इससे यह नही समझना चाहिए कि कल भी आवश्यकता अनुभव नही होगी । खूब अच्छी तरह से आगा-पीछा सोच लो बहिन !

"मान लो तुम बम्बई पहुँच गई, मान लो तुम्हारा धर्म-परिवर्तन कर दिया गया, मान लो तुम्हारे रहने और खाने-पीने की समस्या हल हो गई तो भी पहले की सी पूर्ण वैसी ही आत्मीयता तुम्हे मिल सके, माता-पिता, नाना-नानी से मिल सके, आवश्यक नही है, सभव भी नही है । एक सा भाव, एक सा विचार, एक सा ढग कभी नही रहता । क्षण-क्षण परिवर्तनशील ससार मे किसी चीज मे भी तो स्थायित्व नही है । एक बार जैसा और जो सुख मिल चुका है वैसा ही सुख फिर कभी भी नहीं मिल सकता, इसे भूलने से क्या लाभ । तागा जब टूट जाता है तो उसमे गाँठे पड ही जाती है, वह छोटा पड ही जाता है, जोडने पर । हृदयो मे जो दरारे पड चुकी है, प्रेम मे, आत्मीयता मे जो एक बार कमी आ चुकी है उसे कैसे मिटाया जा सकता है । इस मनोवैज्ञानिक सत्य से आँखे बद करने से क्या लाभ होगा ?

"यो जो वह आज्ञा देगे, तुम जैसा चाहोगी मै करूँगी ही पर मैने अपने मन की बात कह दी है ।"

"तो आप्टे भैया ! मजुला बहिन की बात भी बिल्कुल सार-रहित हो, ऐसी बात नही है। आपकी बात भी मेरे हित-साधन के लिए ही है। मै सोचते-सोचते परेशान हो जाती हूँ। मुझे कोई कूल-किनारा नही मिलता, बाज दफे तो यही लगता है कि अपने को बिल्कुल भाग्य पर छोड़ दू। भाग्य की प्रबल धारा जिधर बहा ले जाय उधर मै अपने को बह जाने दूं—व्यर्थ हाथ-पैर मारने मे क्या लाभ ? उसमे थकावट तो आ सकती है, पर किनारे तक पहुँच सकूँगी यह नही दिखता—हाँ थक कर जल्दी डूब सकती हूँ। मुझे किनारा दिखाई तो देता है पर किनारे तक पहुंचना असभव ही लगता है। लगता है कि ऐसी ही बीच मँझधार मे डूबना पडेगा और या फिर बेसहारा अनजान दिशा मे मुझे बहते रहना पडेगा।"

"तो घोरपडे भाई ! यह सब रेखा जी कहती रहती है।

"उसके बाद वाले रविवार को मै तथा मजुला किलेदार के यहाँ चार से दस बजे रात तक रहे। उस दिन एक विशेष घटना घटी। किलेदार का मित्र शहरयारखा सिद्दीकी भी पाँच बजे के लगभग आ गया। हम सब नाश्ते पर बैठे। शिष्टाचार के नाते उसे भी किलेदार को बुलाना पड़ा। मुझे तथा मेरी पत्नी को वहाँ देखकर और मेरे सामने रेखा को भी बैठे देखकर उसे कदाचित् अच्छा नही लगा। मुझे तथा मजुला को उसका परिचय दिया गया था। हम लोगो के बारे मे उसने कुछ सुना अवश्य था, पर इस सीमा तक हम लोग निकट है न इसका उसे अनुमान था और न उसे यह अच्छा ही लगा। वह किलेदार सा उदार विचारो का नही है। उसमे कट्टरता, ताअसुबपन कुछ अधिक है। एक हिंदू तथा हिंदू-परिवार से एक यवन-परिवार का इतना घुलना-मिलना उसे पसद नही आया। उसका चेहरा बहुत कुछ उसके हृदय के भावो को खोले देता था, लाख वह शिष्टाचार का सहारा लेकर अपने सच्चे रूप को छिपा रहा था।

"उसके आने की किलेदार को भी आशा न थी, क्योकि इसके पूर्व के

सारे इतवारो को उससे तथा अपने अन्य परिचितो से किलेदार कह देते थे कि पहले से उनका कार्यक्रम निश्चित है तथा वह व्यस्त है अत न वह किसी के यहा आ सकेगे, न घर पर ही किसी से मिलेगे।

"उस दिन के लिए शहरयारखाँ को पहले से सूचना देने का न उन्हे अवसर आया न याद रही। और शहरयारखाँ स्वय चाहता था कि अवसर पाते ही मै यह देखूँगा कि किलेदार के क्या रंग-ढग इतने इत-वारो से रहे है। अत वह इस उद्देश्य से ही उस दिन वहाँ आया था।

"मानी हुई बात थी कि वह खुलापन और बेतकल्लुफी समाप्त हो गई। वातावरण म एक अशोभनीय नीरसता छा गई जिसे दूर करने का पयत्न सब जबरदस्ती हँस-हँस कर कर रहे थे। पर कहाँ उन्मुक्त हास्य और कहाँ ऐक्टिगवाला हास्य। शहरयारखाँ ने स्वय भी अनुभव किया होगा कि वह अनचाहा, बेबुलाया मेहमान है, उसके आने से रग मे भग हुआ है, अत उसने दो-चार बार कहा "माफ कीजिएगा आप लोगो को आराम और सोहबत मे खलल डाला। अब इजाजत दे, एक बहुत जरूरी काम करना है अभी। आप्टे जी से मिलकर निहायत खुशी हुई। खुदा चाहेगा तो अब अक्सर मुलाकाते होती रहेगी।"

"मजुला और रेखा चाय पीते ही अदर चली गई और फिर नौ बजे के पहले आई ही नही। वे दोनो यो भी खाना बनाने चली जाती और किसी आवश्यकता से ही बीच मे आती, तो और बात थी, अन्यथा भोजन बनाने के पश्चात् ही आती। पर शहरयारखाँ यही समझा कि मेरे ही कारण दोनो चली गई है। निश्चय ही शहरयारखाँ की मौजू-दगी मुझे भी अप्रिय थी, किलेदार को भी उस समय अप्रिय लग रही थी। दो-चार बार शिष्टाचार के नाते 'बैठिए-बैठिए' हम दोनो ने कहा, पर वह भाप रहा रहा ही था अत. वह चला गया, मेरे प्रति ईर्षा-द्वेष की भावना ले कर। उसके जाने के पश्चात् हम लोगो ने राहत की साँस ली। मैं बिलकुल नही चाहता था कि मजुला उसके सामने बैठे या मजुला से उसका परिचय कराया जाय। होगा वह किलेदार का

मित्र । कुछ भी हो उस दिन की महफिल जमी नही, रग फीका-फीका रहा।

"किलेदार ने कोई विशेष बात मुझसे अपने मित्र के बारे मे नही की, पर रेखा ने एक बार मुझसे बताया था कि एक दिन शहरयारखाँ उनके पास आया था । भाभी, याने मुझे बुलवाने की फरमाइश की थी, पर मे नही ही गई उसके सामने—इनके कहने पर भी । मै इनके किसी मित्र के सामने बिना मतलब के नही होती हूँ । मै जरा 'रिजर्व' प्रकृति की हूँ । ओर सच बात तो यह है कि मुझे यवन अच्छे नही लगते—पति से तो लाचारी है । खै र उसने इसे बहुत बुरा माना था । हँसकर कहता था 'मुझसे अच्छी तकदीर तो उस काफिर की ही है ।'

वह इनसे बाते करता रहा था । बगल के कमरे से छिपकर मैंने उसकी बाते सुनी थी । आपके विरुद्ध वह जहर उगल रहा था—जहर ही कहिए । कहता था 'काफिरो से इतना घरेलू रिश्ता कायम करना तुम्हारे लिए कही आगे चलकर मँहगा न पडे । इन काफिरो पर कभी भरोसा न करना चाहिए—आस्तीन के साप है ये । आपकी बेगम मुझसे तो पर्दा करती है । मेरे सामने आने म तो उन्हे एतराज है—इस्लाम की रूह मे तो पर्दादारी ठीक है, जायज है—मगर एक तो मजहब के उसूलो की खिलाफत बेपर्दगी से होती है, ओर नई रोशनी की वजह से अगर पर्दादारी पर इतनी तवज्जोह न भी दे औरते, तो इसके क्या माने है कि एक मुसलमान भाई से पर्दा और एक हिदू से बेपर्दगी । यो मेरे भी कुछ हिदू मुलाकाती है । इसे मै बुरा नही कहता पर जो सूरत तुमने अख्तियार की है, मेरे ख्याल से वह नामुनासिब है, आगे तुम्हारी मर्जी । यह हिदू तुम्हे आगे चलकर धोका न दे ।"

'तो उसने उनसे यह कहा । इन्होने कहा 'देखो भाई । आप्टे जी की बीबी मेरे भी सामने निकलती है इसी से मेरी बीबी उनके सामने निकलती है । इन दोनो औरतों मे ज्यादा बनती है तो इसमे मै क्या करूँ । हाँ तुम्हारी बात भी गौरतलब है । इस पर सोचूँगा । तुमसे फिर मशविरा करूँगा ।'

"मुझसे भी इन्होने कहा था "मेरे मुसलमान दोस्तो की बीबियो से तुमसे इतनी ज्यादा क्यो नही पटती जितना मजुला जी से और मधूलिका जी से। वैसे ही मेरे मुसलमान दोस्तो के लिए तुम्हारे दिल मे जगह नही है जितनी आप्टे जी और अब घोरपडे जी के लिए। तुममे हिंदू-खून रहा है—शायद इसी से ऐसा है। घुटना जब नवेगा पेट की ही ओर नवेगा।"

'बात सच थी मै क्या उत्तर देती। इसके अतिरिक्त मै प्राय. यह सोचती हूँ कि प्राय: यह तुम्हे जानबूझ कर तो अवसर नही देते है मुझसे अकेले मे मिलने का, इसीसे अकसर देर करके घर आते है जब तुम आने वाले होते हो। कही इन्हे तुम पर या मुझ पर कुछ सदेह तो नही हो गया है ? पर ऐसा लगता तो नही है, यो किसी के हृदय की बात कौन जान सकता है। पर ऐसा लगता है शहरयारखाँ इनके कान भरेगा और हो सकता है सी० आई० डी० की तरह इनकी, तुम्हारी और मेरी निगरानी रखने का प्रयत्न करे। कम से कम सतर्क तो रहना ही चाहिए।'

मैने कहा "रेखा! आज तुमने बुद्धिमानी की बात कही है। इसी मे कहता हूँ कि अकेले मे नही ही हमे मिलना चाहिए। जब बहुत आवश्यक बाते करने को होती है, बताने को होती है, तब एक समस्या अवश्य उठ खडी होती है। तुम्हे अपने हैड-राइटिग (लिखावट) मे लिखकर मै देना नही चाहता। देखो रेखा! मै 'डिप्लोमेटिक सर्विस' मे हूँ। कुछ 'कानडक्ट' (व्यवहार, आचरण) हम लोगो के लिए निश्चित है। यदि तनिक भी सदेह हो जाय कि मैं धर्म, राष्ट्र या किसी पाकिस्तानी के व्यक्ति-विशेष के सम्बन्ध मे कोई प्रकट या अप्रकट कारवाई कर रहा हूँ तो मुझे तुरन्त नौकरी से निकाला जा सकता है, तुरन्त पाकिस्तान से चले जाने का आर्डर मिल सकता है। अपनी स्थिति मै ठीक से समझता हूँ। जो मैं कर रहा हूँ वह मुझे नही करना चाहिए। मेरी हानि, मेरा नाश सा हो सकता है। घोरपडे जी ने भी मुझे बहुत समझाया है। पर

बहिन ! तुम्हारे लिए यह भयकर खतरा भी मैने लिया है। अब तुम अच्छी बहन की तरह बचपन न किया करो, जिद न किया करो।"

"इसके बाद न हम लोग एक-दूसरे के घर ही गए न रविवार को ही एक-दूसरे के यहाँ भोजन करने गए। मैने बहाना कर दिया कि इस रविवार को इतना आवश्यक कार्य है कि मिल न पाऊँगा। अगले रविवार को अवश्य मिलेगे। कुछ किलेदार भी ढीला रहा। मुझे लगता है हृदय-परिवर्त्तन तो उसका नही हुआ है ? या शहरयारखाँ को प्रसन्न करने के लिए उसने सोचा हो कि लाओ कुछ दिनो जरा मिलने-जुलने मे ढील ही हो जाय।

"बहरहाल पिछले इतवार को किलेदार सपरिवार मेरे यहाँ दस बजे दिन को आया था और पाँच बजे शाम को चला गया। कहा 'आवश्यक काम है। जाना जरूरी है।' पर उस दिन के उसके व्यवहार मे वही आत्मीयता, प्रसन्नता, निकटता थी।

"अब तीन दिन के बाद इतवार पडेगा। देखना है क्या होता है, आप आ ही गए है। अब काफी देर हो गई है। सायकाल को आऊँगा, सपत्नीक आऊँगा, और आपसे सुनूँगा। मुझे अब विशेष नही कहना है। अब चलता हूं।"

: १९ :

सायकाल के बाद श्री घोरपडे ने मुझसे वार्त्तालाप किया। कहा "लाहौर होता हुआ मैं दिल्ली गया और वहाँ से अपने घर नागपुर। वहाँ एक सप्ताह रुक कर मै जलगाँव अपनी पत्नी को उसके मैके भेजने

गया। लगभग एक सप्ताह वहाँ भी मै रहा। वहाँ से मै नासिक गया। पत्नी ने भी रेखा मे रुचि लेना प्रारभ कर दिया है अत वह भी मेरे साथ रही। मै रेखा जी के पिता जी से मिला और माता जी से भी। मुझे उनसे जबानी कहना तो कुछ था ही नही क्योकि मेरे जाने वाले दिन के अतिरिक्त शेष सब दिनो का हाल तो तुमने लिख ही दिया था। अपनी, तुम्हारी, रेखा की तथा किलेदार की तस्वीरे मैने उन्हे दे दी। किलेदार की तस्वीर उन्होने वापस कर दी शेष तीनो तस्वीरे उन्होने रख ली।

"पूरी कापी अर्थात् पत्र उन्होने आद्योपान्त पढा। मै बैठा रहा। पत्र पढते समय कई बार उन्होने आँसू पोछे। पत्र पढ चुकने के बाद काफी देर तक वह चुप रहे। फिर कहा "मै पिता हू उसका, लाख वह कैसी ही रही हो या अब हो। वह जहाँ भी रहे प्रसन्न रहे, यही मेरा उसे आशीर्वाद है। मेरी सलाह तो उसे यही है कि जो होना था वह तो भाग्य ने फैसला कर दिया। अब जिस हालत मे है उसी मे सतोष रखे। एक बार फिर अपनी बसी-बसाई गृहस्थी को वह उजाड़े, भविष्य के उस काल्पनिक चित्र के लिए जो कल्पना ही रहेगा, कभी सत्य मे परिवर्तित नही होगा। अब उसका हाथ-पैर मारना व्यर्थ है। आप्टे जी की सद्भावनाओं की मै कद्र करता हूँ पर वह भी भावुकता मे बह रहे है। उससे रेखा को कुछ लाभ तो पहुँचा नही सकेंगे, उल्टे हानि ही उसे उठानी पडेगी।

"स्वय वह अपने को तथा अपनी नौकरी को भी खतरे मे डाल रहे है। वह परोपकारी सज्जन तथा उत्साही तरुण लगते है। एक महाराष्ट्र-स्त्री के लिए उनके हृदय मे करुणा है—एक महाराष्ट्रीय होने के नाते – पर मैने अपने बाल धूप मे नही सफेद किए है। मै यदि कहूँ रेखा जी, आप्टे जी तथा आपसे भी—क्योकि मैं आपसे आयु मे काफी बडा हूँ, और मेरे पास मेरी आयु के अनुभव है, आप लोगो से अधिक, तो आप लोग इसमे न बुरा माने और न इसे मेरी आत्मश्लाघा समझे।

"सोचिये किलेदादर हिंदू बनने से रहा, उसकी सरकारी नौकरी पाकिस्तान मे है, नौकरी छोड कर वह पाकिस्तान से आने को रहा और अब दूसरे बच्चे की माँ रेखा बनने वाली है, अतः जैसा पत्र मे लिखा है, रेखा ने लिखा है, आप कहते हे कि किलेदार भला, स्वस्थ, कमासुत ओर प्रेमी पति है तथा रेखा को खाने-पीने, रहने आदि का कष्ट नही है और पति उसे आँखो की पुतलियो की भाँति रखता है तो फिर यहाँ मेरे पास, नाना जी के पास या देशपाडेय के पास रेखा आकर क्या करेगी।

"मै नही चाहता कि कभी रेखा मेरे सामने आवे क्योंकि तब वर्षो के बाद हमारे कच्चे ढके घाव फिर फूट जॉयगे और रेखा को भी महान व्यथा होगी और मुझे तथा उसकी माँ को भी। हाँ यदि वह मेरे सामने घटनावश पड जायगी तो उमे गले लगाने से, उसे प्यार से थपथपाने से मे भी अपने को नही रोक सकूगा। पर पहले की सी बात, पहले का-सा प्रेम न रेखा के प्रति हम पति-पत्नी का हो सकता है, न रेखा का निर्भय निष्कपट अधिकार वाला भाव हम लोगो के प्रति। अत जो जहाँ है उसे वहाँ रहने दो। वह समझ ले उसके माता-पिता मर गए। मैं भी यह समझे बैठा हूँ कि मेरी रेखा खोगई, सदा को खो गई। अब उतने उत्साह से फिर उसे हिंदू-धर्म मे दीक्षित करने का कोई भी प्रयत्न नही करेगा। जो चार वर्ष पहले बात थी वह अब नही है। पर आप उसके हितैषी है। आपमे यही प्रार्थना कर सकता हूँ कि आप उस पर ममता रखे।" उसके बाद उसके पिता वहाँ से हट गए—सभव है अपने आँसू रोकने मे वह असमर्थ हो रहे हो।

"उसकी माता ने भी पत्र पढा था। अपने पति की बाते भी सुनी थी। वह तो निरतर रोती ही रही थी। मुझमे केवल इतना कहा "माँ की ममता को बेटा! तुम कैसे समझोगे। लगभग तीन-चार वर्ष के बाद मैंने उसका हाल सुना है। वह सुखी भी है दुखी भी है। भगवान उसे शान्त दे, अखण्ड सौभाग्यवती रखे और क्या कहूँ। उसके सम्बध

मे जब सोचती थी तो हृदय फटने लगता था। यही समझ कर मन को समझा लेती थी, हृदय का भार हल्का कर लेती थी कि मेरी रेखा मर गई। वह जिये और सुखी रहे। उसका यह समाचार जान कर कि वह सुखी है परम सतोष हुआ। और क्या कहूँ बेटा! रेखा को अपनी बहिन, मूर्ख बहिन, सब के द्वारा परित्यक्त बहिन जान कर ममता रखना। हाय मेरी बेटी तूने क्या कर डाला" कह कर रेखा की माँ ऐसी रोई कि मेरी पत्नी की तो बात ही क्या, मै भी अपने आँसू न रोक सका था।

"किसी भी तरह उन लोगो ने हम लोगो को नही छोड़ा, बम्बई जाने दिया। रात भर रेखा की माँ मेरी पत्नी के पास लेटी-लेटी बाते करती रही और रोती रही थी। वह यही कहती थी कि क्यो मैने रेखा पर तब इतनी कठोरता की? क्या मेरे ही पापो से, कठोर व्यवहार से वह भागने को विवश हुई?"

"पत्नी उन्हे समझाती रही कि "आपका तनिक भी दोष नही है। प्रत्येक माता अपनी कन्या के लिए यही करती। आपकी कठोरता के पीछे माता की ममता थी।"

" पत्नी से उन्होने रेखा का ध्यान रखने, स्नेह करने की प्रार्थना की। यह भी कहा "पत्र यदि यह कभी लिखें तो या मै तुम्हे लिखूँ या तुम्हारे पतिदेव को तो उत्तर तो दोगी बेटी? पर पत्र लिख कर, हाल पूछ कर क्या होगा। इस दुखद प्रसग को, इस फोडे को भूला ही यदि रहा जा सके, ढका ही रखा जा सके तो उत्तम होगा। टीसन से, पीडा से, हृदय के हाहाकार से तो बचा जा सकता है। जो असम्भव है उसे क्यो सोचा जाय। रेखा से इस जीवन मे सम्बन्ध होने से रहा।"

"हम दोनो की काफी खातिर की गई। दोनो पति-पत्नी अश्रुपूर्ण नेत्रो से हमे नासिक स्टेशन तक आकर ट्रेन पर बैठा गए और यह प्रतिज्ञा करवा ली कि बम्बई से लौटते नासिक अवश्य उनके यहाँ आयेंगे, भले ही दो-चार घंटे को। और मैने ऐसा किया भी। मैने कहा

भी कि रेखा को यदि वह पत्र लिखे तो मै दे दूँगा, पर पत्र लिखने को कोई तैयार नही हुआ । कहा "सम्बन्ध बढा कर हम उसकी और अपनी पीडा और नही बढा सकते । हम दोनो का आशीर्वाद कह दीजिएगा तथा मौखिक सदेश ।"

"नासिक का करुणाजनक दृश्य, हृदयद्रावक चित्र आज भी हृदय को हिलाए देता है ।"

"नाना जी से भी मिला । उन वयोवृद्ध को देखकर देखने वालो के हृदय मे आन्तरिक श्रद्धा उभरती हे । उनको भव्य मूर्ति, आयु से जर्जर शरीर और ममता, स्नेह, करुणा का भण्डार हृदय मनुष्य को सोचने पर बाध्य करता है कि मनुष्य के भेष मे वह देवदूत है या कोई प्राचीन ऋषि-महात्मा । रेखा कितनी भाग्यवान थी ऐसा नाना पा कर, और कितनी अभागी है जो उनसे छिन गई, उनसे दूर हो गई । उनकी निकटता पाकर मै आत्मविभोर होकर अपना अस्तित्व-सा भूल गया ।

"तुम्हारा पत्र अर्थात् वह कापी पढने मे उन्होने कई घटे लगाए । एक वाक्य पढते थे और फिर देर-देर तक अश्रु पोछते थे । रुक-रुक कर किसी तरह से उन्होने पत्र समाप्त किया था । रेखा को वह कितना प्रेम करते है, यह तो मैं स्वयं देख आया । रेखा क्यो अपने नाना जी को इतना याद करती है अब समझ मे आया । मैं तो समझ ही नही पाता हूं कि रेखा ऐसी स्नेह-ममता की मूर्ति नाना जी को कैसे छोड सकी । रेखा का, अपना, तुम्हारा तथा किलेदार के फोटो मैने उन्हे दिए और उन्होने सहर्ष स्वीकार कर लिए ।

"रेखा की नानी जी ने भी आद्योपान्त पत्र पढा । वह भी रोती ही रही या अपने पति को बातो को ध्यान से सुनती रही । मैंने उनसे कहा भी "नानी जी ! आपको रेखा से कुछ कहना है या पत्र देना है ।"

उन्होने कहा "जो इन्होने कहा है उसे मेरा भी कहा समझो । पत्र

देना होगा तो यह देगे । मै क्या कहूँ ? मेरा उसे आशीर्वाद कह दे । वह सकुशल है, सकुशल ही रहे चाहे जहाँ रहे । आप उसके निकट है, हितैषी है, आप उसे ढारस बँधाते रहे, धीरज बँधाते रहे । अपनी ही कन्या उसे समझे, बस और क्या कहूँ ।"

"वह भी जब तक मै रहा रोती ही रही । मेरी पत्नी से नानी जी रेखा के सम्बन्ध मे बाते करती रही । पत्नी ने मुझे बताया कि जितना नानी जी रोई उससे अधिक उन्होने मुझे रुलाया । रेखा की एक भूल से कितने प्राणी दुखी हुए, दुखी है वह स्वय तो है ही ।

"नाना जी ने कहा "देशपाडेय के बारे मे पूछते हो बेटा ! वह महापुरुष दो वर्ष हुए एक मोटर-दुर्घटना से स्वर्ग सिधारा । उसका-सा शेर-दिल, परोपकारी, देश-भक्त, हिन्दू-धर्म का अनन्य प्रेमी, सेवा-परायण और त्याग-मूर्ति सयमी भारत से उठ गया, यह भारत का दुर्भाग्य है आर० एस० एस० का तो वह प्राण था । आर० एस० एस० के बाहर उसे लोग कम ही जानते थे । पर अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए जो अटूट लगन और अदम्य उत्साह उसमे था वह कितनो मे पाया जाता है ।

"यदि रेखा उसकी हो गई होती तो रेखा के भाग्य की सीमा नही रहती । पर बीती बातो और व्यर्थ की बातो को सोचने से क्या लाभ ? पर यदि देशपाडेय जीवित होता तो हर प्रकार के बलिदान कर के, कष्ट उठा कर रेखा के लिए कार्य निस्वार्थ भाव से करता और सभव है आप्टे जी की इच्छा को पूरा भले ही न कर पाता पर प्रयत्न करने मे वह पृथ्वी-पाताल एक कर देता । रेखा के लिए उसने बराबर आँसू बहाए है और रेखा के स्वेच्छा से किलेदार के यहाँ जाने के बाद मे सदा यही कहता था "मेरी सीता माता रावण के यहाँ बदिनी है । काश वह भारत मे होती तो छुडाने का प्रयत्न करता ।" किलेदार के यहाँ चले जाने पर रेखा को उसने फिर सदा बहिन, कन्या और माता ही कहा था, समझा था । जाने दो उसकी बात ।

"रेखा को मैं कितना स्नेह करता हूँ इसे न कहा जा सकता है न समझा जा सकता है। रेखा ही इसे जानती होगी। उसका सुख ही मेरा सुख हे। वह जहाँ भी रहे सुख से रहे। वह हिन्दू-धर्म मे परिवर्तित होकर भी पहले सा सुख, पहले सी शान्ति नही पा सकेगी। देशपाडेय चला ही गया। मै तथा उसकी नानी नदी-तट के वृक्ष है, कभी भी ढह सकते है। अब जो गृहस्थी उसने अमनी बना ली है उसीमे अपना यह जीवन सेवा, कर्त्तव्य और प्रेम से बिता दे।

"उसके पति के सुख और प्रेम को मै उसका हितैषी होकर कैसे छीनने की बात सोच सकता हूं, उसके मातृ-हृदय की ममता को उसके बच्चे छिनवा कर मै कैसे कुचल डालने की सोच सकता हूँ। किलेदार तथा वह एक-दूसरे को ऐसे ही प्रेम करते रहे। वे सुखी है, किलेदार भला है, उसे प्रेम करता है, वह भी उसे प्रेम करती है, यह जान कर बहुत सतोष हुआ। कोई दिन ऐसा न होता होगा जब मै रेखा के विषय मे न सोचता हूँ, उसकी याद न करता हूँ। बस मेरे आशीर्वाद के साथ यही उससे कह देना। यही मेरा पत्र है, यही सदेश।

"जो असभव है, जो बदला नही जा सकता, उसके लिए व्यर्थ हाथ-पैर मारने से लाभ ? पर रेखा कभी बम्बई आवे और मै उसे देखने के लिए जीवित बचा रहूं तो मेरे लिए वह दिन स्वर्ण का होगा। उसे पत्र लिख कर उसके घावो को मै कुरेदना नही चाहता। अत उसने मुझे कभी पत्र नही लिखा, यह अच्छा ही किया। मुझे उसका पता ज्ञात भी होता तो मै उसकी मानसिक शान्ति को नष्ट होने के भय से, दृष्टकोण से उसे न लिखता। उसे तो नही पर तुम्हे कभी लिख सकता हूँ। उसे तो नही एक पत्र किलेदार को लिखे देता हूँ, यह उन्हे दे देना।"

"नाना जी पत्र लिखते रहे और नानी जी मुझसे रो-रो-कर बाते करती रही। चार वर्ष के बाद रेखा जी का समाचार उन्हे मिला था। कुछ समय के बाद नाना जी ने पत्र लिख कर मुझे दे दिया। उन्होने मुझसे पत्र पढ लेने को कहा। पत्र मे लिखा था :—

प्रिय बेटा किलेदार,

दीर्घायु हो, सदा प्रसन्न रहो। रेखा मेरी नातिन है—लडकी की लडकी—इस दृष्टि से तुम मेरे पुत्र के पुत्र के समान हो। रेखा मुझे कितनी प्रिय थी, सम्भव हो उसके द्वारा तुम्हे पता चला हो। तुम उसके पति हो अतः रेखा के नाते तुम भी मुझे उतने ही प्रिय हो जितनी रेखा। चार वर्ष बाद मुझे रेखा तथा तुम्हारा कुशल-समाचार मिला। तुम लोग सकुशल हो, सुखी हो, इससे अधिक सुखद समाचार मुझे और मेरी पत्नी को क्या हो सकता है।

जो चार वर्ष पहले हुआ, उसमे जो कडवाहट थी, उसमे न तुम्हारा दोष था, न मेरा, न किसी का। हवा का झोका था, आया और निकल गया। रेखा तुम्हे प्राणो से अधिक चाहती है और तुम रेखा को प्राणो से अधिक चाहते हो, यह क्या कम बात है। केवल जवानी का जोश, केवल वासना, केवल रूप और शरीर का मोह ही तुम दोनो को एक-दूसरे के प्रति न था, वह सच्चा प्रेम था। इसके लिए तुम दोनो पर मुझे गर्व है। तुम सुखी हो, स्वास्थ्य, धन, सन्तान तथा श्री से भरे-पुरे हो इससे बढ कर इस बृद्ध की क्या कामना हो सकती है और ऐसा देख कर फिर कौन और अधिक प्रसन्नता मुझे हो सकती है। भगवान करे तुम दोनो की दिन-दूनी रात चौगुनी उन्नति हो।

तब तुम्हारा हठ था कि मै इस्लाम-धर्म मे रह कर ही जैसे भी होगा रेखा को अपनी पत्नी बनाऊँगा। रेखा का हठ था कि मै हिन्दू रह कर ही, तुम्हे अगाध प्रेम कर के, तुम्हे हिन्दू बना कर तुम्हे पति बनाऊँगी, पर यदि, तुमने हिंदू बनना पसद न किया तो सदा अविवाहित रह कर तुम्हे देवता की भाँति पूजूँगी। दोनो के आदर्श अपने-अपने दृष्टिकोण से ऊँचे थे। मै दोनो की सराहना करता हूँ। हिंदू और मुसलमान दोनो ही एक ईश्वर की सताने है अत दोनो मे भेद ही क्या है ? पर अँग्रेजो के 'आपस मे भेदभाव कराओ और राज्य करो' राजनीति की शिकार सारी जनता रही। इसीके कारण तुम्हे बम्बई

से भागना पडा और आज तुम बम्बई का घर छोडकर इसी लिए पाकिस्तान मे नौकरी कर रहे हो ।

अतिम समय मे तुम्हे और रेखा को अपने निकट देखने की इच्छा है । यदि मेरी निम्न-लिखित बात तुम दोनो के लिए मानना सभव हो तो कैसा रहे —

तुम इस्लाम-धर्म को ही मानते रहो, रेखा भी यवन ही रहे । वह तुम्हारी पत्नी और तुम उसके पति हो ही, सदा रहोगे भी । न वह स्वय हिन्दू बनने का प्रयत्न करेगी न तुम्हे वह हिन्दू बनाने का स्वप्न देखेगी, न वह कभी तुम्हे छोडेगी न तुम उसे कभी छोडोगे—इतना पहले से मान कर मै तुम्हे अपना आश्वासन देता हूँ, और चाहता हूँ तुम दोनो भी इसका आश्वासन मुझे दो । तब तुम बम्बई मे अपने घर आ जाओ और रहो । तुम्हे कोई भी परेशान करे तो मेरा पूरा उत्तरदायित्व है अब । अब पहले का समय और वातावरण नही है । पाकिस्तान की नौकरी तुम छोड सकते हो । दो सौ रूपया मासिक मै तुम्हे देता रहूँगा । मेरे बाद भी तुम दोनो को जीवन-पर्यन्त ये मिलते रहेगे, इसकी लिखा-पढी मै पहले ही कर दूँगा । यह तुम्हे ध्यान नही होगा कि तुम अपना इसमे अपमान अनुभव करो । तुमसे मै अपने कारखाने मे सर्विस लूँगा । दो सौ रूपए तो कम से कम मैने लिखे है । इससे अधिक हो सकते है तुम्हारी पद-वृद्धि के साथ । अपने अन्तिम समय मे रेखा को देख सकूँ यही कामना है । बदले मे, एवज मे केवल इतना माँगूँगा कि मै तथा मेरी पत्नी तुम्हारे यहाँ जब इच्छा हो रेखा से, तुमसे मिलने आ सके और मेरे यहाँ मुझसे तथा अपनी नानी से मिलने, जब रेखा मिलना चाहे, उसे ऐसा करने की पूरी स्वतन्त्रता हो तथा तुम भी मेरे परिवार का अग बन कर आते-जाते रहो । यही मुझे एक व्यावहारिक हल रेखा को, तुम्हे, अपने को सुखी बनाने का दिखता है ।

यो भी लड़की-वाले को सदा झुकना पडता है । और अब तो रेखा

अपने को हार ही चुकी है और उसके साथ मै भी। तुम्हारी स्थिति बलवान की है अत तुम अधिक उदार हो सकते हो।

यदि मेरा सुझाव मानना सम्भव न हो तो कभी यदि बम्बई आना तो रेखा के साथ इस बृद्ध से अवश्य मिलना। इस बृद्ध की बात पर यदि पूर्ण विश्वास कर सको तो करना। इसमे किसी प्रकार की राजनीतिक गन्ध तुम्हे न आनी चाहिए, यह मेरा निवेदन है। चि० हमीद को आशीर्वाद, चि० सौ० रेखा को मेरा तथा उसकी नानी का स्नेह।

आशा है उत्तर शीघ्र दोगे। श्री घोरपडे सपत्नीक मुझसे तथा मेरी पत्नी से मिले। वह तुम्हारे मित्र है, रेखा को भी जानते है, यह ज्ञात होने पर अति प्रसन्नता हुई। आशीर्वाद के साथ—

शुभेच्छुक,
नाना जी।

× × × ×

"एक दिन नाना जी ने भी किसी तरह मुझे नही आने दिया और जब तक बम्बई मे रहूँ तब तक प्रतिदिन उनसे मिलूँ, भले ही पाँच मिनट को, यह प्रतिज्ञा करवा कर ही मुझे तथा पत्नी को आने दिया और मैने उनके आदेश का पालन भी किया।

"दूसरे दिन मै किलेदार के चाचा जान से मिला। हमीद, किलेदार तथा रेखा के चित्र पाकर वह बहुत प्रसन्न हुए। अपना पत्र भी उन्होने दूसरे दिन किलेदार के लिए तथा हमीद और रेखा के लिए कुछ खिलौने, कपडे तथा अन्य सौगाते ले लेने को कहा। यह भी कहा "या आप पता बता दे आप कहाँ टिके है तो मैं खुद खिदमत मे हाजिर हो जाऊँगा, या फिर आप ही को जहमत होगी।"

"दूसरे दिन मै हमीद, रेखा तथा किलेदार के लिए कपडो, खिलौनो तथा अन्य वस्तुओ का एक पुलिन्दा मय पत्र के ले आया। उन्होने किलेदार के लिए जबानी सन्देश भिजवाया है कि बम्बई वह सब

को लेकर जल्दी आवें—काफी इसरार था उनका, दोनो दिन मेरी उन्होंने बहुत खातिर की। पहले दिन तो मै अपनी पत्नी को भी जानबूझ कर साथ ले गया था ताकि वह रेखा के सम्बन्ध मे अधिक से अधिक जानकारी पा सके, उसका घर देख सके। चाचा जान तो अत्याधिक शरीफ और भले मुसलमान भाई है।

"तीन दिन मै बम्बई मे रहा अत: दो बार मै और नाना जी से मिला। ऐसा लगता था जैसे मेरा-उनका जन्म-जन्मान्तर का सम्बन्ध है। इतने स्नेही जीव वह है।

"नासिक कुछ घटो के लिए गया था पर एक रात उन्होंने जबरदस्ती रोक रखा। फिर जलगॉव, नागपुर और दिल्ली होते मैं करॉची वापस आ गया, एक महीने की छुट्टी थी। छुट्टी के लिहाज मे ही पासपोर्ट बनवाया था। एक महीना कटते कितनी देर लगती है।"

मैने कहा "नासिक तथा बम्बई-सम्बन्धी हाल तो आपने बता दिया, अब आप बताइए इन सब के आधार पर अब किया क्या जाय ?"

घोरपडे ने कहा "जो तुम्हारी पत्नी ने रेखा से कहा था लगभग वैसी ही बात मधूलिका भी कहती है। तुम्हारे पास तो बैठी है चाहे पूछ न लो। रेखा के पिता, माता, नानी, नाना ने भी स्पष्ट शब्दो मे लगभग यही बात कही है। मेरी भी लगभग ऐसी ही सम्मति सदा से रही है। मेरा विचार है कि यदि हम लोगो की सम्मिलित राय, एक-मत को मानो तो रेखा की वर्तमान स्थिति मे गडबडी मत करो। क्योकि यह गडबडी तुम कर नही पाओगे। यदि कर पा सकने की क्षमता तुममे या मुझमे होती तो मै तुम्हारी सम्मति मान भी सकता था"।

"रेखा की भावनाओ से खेलने की आवश्यकता नही है, इस पर व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाना होगा। तुम मुझे एक प्रश्न का उत्तर केवल दे दो, बस मै तुम्हारी समस्त बाते मान लूँगा। यह न भूलना,

जैसा पचासो दफे कह चुका हूँ कि तुम 'डिपलोमेटिक सर्विस' मे हो, और जो कुछ तुम कर रहे हो इसे करने का तुम्हे अधिकार नही है। मै मानता हूँ यो तो हाई-कमिश्नर्स-आफिस मे होने के कारण 'डिप्लो-मेटिक बैग' मे जो डाक आदि जाती है उसके साथ तुम्हारा पत्र भी जा सकता था, अब भी जा सकता है। सी० आई० डी० विभाग द्वारा खोले जाने का भय नही था, पर मैने वह भी खतरा लेने की सम्मति नही दी। पर रेखा के सम्बन्धियो की राय जानने के बाद अब तुम अगला कदम क्या उठाओगे ? मेरे इन समस्त प्रश्नो का उत्तर दो।"

मैने कहा "पहला कदम तो मेरा यह होगा—यदि आपकी सम्मति हो—कि आपने जो-जो मुझे अपनी यात्रा के दौरान का हाल बताया है वह अक्षरत रेखा को बता दूँ। आपकी तथा भाभी की राय भी बता दूँ। यह काम तो सरलता से हो सकता है क्योकि किलेदार से मै कह ही चुका हूँ कि आपके वापस आते ही आपसे मिलने के बाद उसके घर सूचना दे आऊँगा। देखूँगा रेखा क्या कहती है।"

घोरपडे ने कहा "ठीक है, मैने यह स्वीकार किया। उसके बाद तुम्हारा दूसरा कदम ?"

मैने कहा "रेखा को पाकिस्तान मे हिंदू-धर्म मे फिर से लेने का तो प्रश्न ही नही है। यह तो भारत मे ही सभव है। पर सब से बडी बाधा तो यही है कि उसे भारत तक भेजा कैसे जाय ? किलेदार को पता न चले और पाकिस्तान-सीमा के बाहर रेखा हो सके, यह कैसे सभव हो ? यही तो समझ मे नही आता। पासपोर्ट मे फोटो भी साथ मे होता है। कोई अपना विश्वासपात्र भारत जाता हो तो उसकी पत्नी कह कर रेखा का भी पासपोर्ट बन सके, पर यह कैसे सभव होगा ? रेखा जी घर के बाहर नही निकल पावेगी और निकलेगी तो किलेदार को ज्ञात हो जायगा। और ऐसे कामों के लिए कई बार आफिसो मे आना-जाना पडता है। दिमाग काम नही दे रहा है। पर करना कुछ अवश्य है।"

घोरपडे बोले "लाख तुम हाई-कमिश्नर के दफ्तर मे हो, तो भी

इस बाधा को कैसे दूर कर सकोगे ? इसीसे मै कहता था रेखा को भारत भेजना सरल नही है।"

मैने कहा "हाँ भारत मे जब रेखा पति के साथ हो, जैसा कि किलेदार साल-छै महीने के बाद जाने को कहता है, तब वहाँ से तो रेखा इधर-उधर गुम भी हो सकती है। यद्यपि उसमे भी तथा उसके बाद भी कठिनाइयाँ है।"

घोरपडे बोले "इसीसे मेरा विचार है कि जैसा चल रहा है वैसा चलने दो। केवल रेखा ओर किलेदार मे और भी मधुर सम्बध हम लोग बढावे और रेखा को जितना अधिक से अधिक सुख और शान्ति हम लोग पहुँचा सके, पहुँचावे। उसका अत्याधिक ध्यान रखा जाय। हम लोग उसे अपनी सगी बहिन समझ कर अपना ले। शेप उपयुक्त अवसर के लिए प्रतीक्षा करे।

'मेरे विचार मे रेखा को अधकार मे मत रखो। जो हमारी-तुम्हारी अभी भी बाते हुई है उन्हे भी उसस कह दो। और सबसे बडी बात तो यह है कि पहले यह तो देखो कि सारी बाते जान कर रेखा पर क्या प्रतिक्रिया होती है तब तदानुकूल कदम उठाया जायगा—मौका-महल देख कर जो उचित होगा।

"किलेदार यवन है बस यही तो खटकने वाली बात है तुम्हे, मुझे रेखा को, या हो सकती है, यो आदमी तो निहायत शरीफ है, अच्छा प्रेमी पति है, समझदार, कामकाजी, स्वस्थ, सुन्दर, मिलनसार, हँसमुख, अच्छे स्वभाव का उदार विचार का है, अच्छा पिता है, मियाँ-बीबी मे पटती है, रेखा भी उसे प्रेम करती है। रेखा का इससे अधिक ध्यान कोई भी अन्य पति कदाचित् ही रखता—विशेष कर यवन पति। अत यदि कुछ दुर्भाग्य है तो साथ मे कुछ अच्छा भाग्य भी है। 'यवन है' यह खटकने वाली चीज केवल भावनात्मक है। मुझसा व्यावहारिक दृष्टि-कोण रखो। नाना जी के पत्र की भी कोई लाभदायक प्रतिक्रिया होती है किलेदार पर या नही यह भी देखना है। रेखा पर भी उस पत्र की क्या प्रतिक्रिया होती है यह भी देखना है।"

और भी इधर-उधर की बाते होती रही। मुझे जो कल करना है वह निश्चय हो ही गया था। हम लोगो ने वहाँ भोजन किया और लगभग ग्यारह बजे रात तक घर आ गए।

: २० :

दूसरे दिन मै दफ्तर समाप्त होने के कुछ पूर्व ही अपने बॉस से कह कर चल दिया और रेखा के यहाँ पहुँचा। द्वार खटखटाया, और मेरी आवाज सुनते ही रेखा ने द्वार खोल दिए तथा मेरे अदर कदम रखते ही उसने मेरे हाथो को पकड कर झकझोरते हुए बोली "आज ही क्यो आए हो। चले जाओ न! इन्होने मुझसे प्रतिज्ञा की थी कि अपनी बहिन को हर प्रकार का सुख, शान्ति, सतोष देगे, मार्ग-प्रदर्शन करेंगे, मुझे उबारेगे। बहुत मुझे सुख दे रहे हो न! वर्षो बाद आज मेरी सुधि आई है इन्हे! बोलो तुम इतने दिनो क्यो नही आए? तुम्हे पता था मै कैसी थी? मेरा समय कैसे कटा? कठोर कही के!"

मैने कहा "रेखा बहिन! तुम्हारे एक साथ इतने प्रश्नो का उत्तर कैसे दूँ? तुम्हारा वर्ष तो सात-आठ दिन का होता है। क्या मै तुमसे नित्य मिलना नही चाहता? पर व्यावहारिक कठिनाइयाँ है इसे भी तो सोचो। शान्त होकर बैठो मुझे तुमसे बहुत गम्भीर और आवश्यक बाते करनी है।"

रेखा ने कहा "मुझे तुमसे बाते नही करना है। मै तुमसे बोलूँगी ही नही।"

मैने कहा "यह और अच्छा है। तुम सुनती ही रहो। तुम्हे बोलने

की आवश्यकता नही है । मुँह फुला कर बैठी तो मार पडेगी । इस समय मै काफी गभीर हूँ, गभीर होकर सुनो ।"

हम दोनो एक कोच पर बैठ गए । मैने कहा "तनिक दूर बैठो ।" तो रेखा और भी सट कर मुझसे बैठ गई । मैने हँस कर उसे एक चपत मार दी और कहा 'आज तुम लडने के मूड मे हो ।' इसके बाद जैसा घोरपडे जी से निश्चय हो चुका था मैने घोरपडे जी द्वारा बताई समस्त बातें तथा मेरे और उनके बीच मे हुआ समस्त वार्त्तालाप अक्षरत रेखा को बताया । घोरपडे तथा उनकी पत्नी की सम्मति तथा अगले कदम मे क्या-क्या कठिनाइयाँ पडेगी यह सब बिस्तार से बताया ।

मैने उसके चचिया ससुर द्वारा दिया सामान का बडल दिया जिसमे उनका लिखा पत्र भी था । उसके नाना जी ने जो पत्र किलेदार को दिया था वह भी मैने रेखा जी को दिया । वह पत्र खुला था अत उसने उसे पढ लिया । उसके बाद उसमे पानी लगाकर चिपका दिया गया ।

सब कुछ कह देने के बाद, बता चुकने के बाद मेने रेखा से पूछा "अब तुम क्या कहती हो ? अब चित्र बिल्कुल स्पष्ट है । अब हमे अपना कार्यक्रम निर्धारित करना हे ।

रेखा लगातार बीच-बीच मे अपने आँसू पोछती रही थी । बोली "मेरी बुद्धि एक तो यो ही कुछ काम नही देती थी ओर इस समय तो मेरे सोचने-विचारने की शक्ति लोप हो गयी हे । तो भी रात को आज तथा कल दिन मै बिचार करूंगी । आशा तो नही हे कि मुझे कुछ समझ मे आवे, पर यदि कुछ समझ मे आया तो कहूँगी । पर समझ मे आना भी क्या है मैने तो आपसे पहले ही कहा था कि आप कुछ भी नही कर सकेंगे, परिस्थितियाँ ऐसी विकृत है । मै मक्खी की भाँति मकडी के जाले मे फँस चुकी हूँ । जितना फडफडाऊँगी और भी जकडती जाऊँगी । अब तो मुझे पिता जी, माता जी, नानी तथा नाना, मधूलिका बहिन, मजुला बहिन तथा घोरपडे जी की सम्मति मानना ही उचित

लगता है। इसके अतिरिक्त कुछ सम्भव नही है। आपके तथा घोरपडे जी के परिवार को ही मैं अपने माता, पिता तथा नाना-नानी का परिवार मानूगी और इस बसाई हुई गृहस्थी की रक्षा करूंगी। इसे मिटा कर, बिगाडकर क्या करूंगी।

"पर आप और घोरपडे जी पर तथा दोनो की पत्नियो पर मेरा सारा भार मेरा पिता, माता, नानी, नाना डाल चुके है, इसे ठीक से समझ लीजिए। आप लोगो पर कितना उत्तरदायित्व सौपा गया है यह जान गए है न ? कहाँ तक उसे निभाइयेगा ?"

रेखा के हाथो को कोमलता से अपने हाथो मे लेता हुआ बोला "रेखा बहिन ! अपना उत्तरदायित्व मै समझ गया हूं, मेरी पत्नी भी और सपत्नीक घोरपडे भी। मै अपने उत्तरदायित्व को अधिक से अधिक निभाने का प्रयत्न करूँगा और घोरपडे-परिवार के सम्बन्ध मे भी तुम ऐसा ही समझ लो।"

रेखा ने कहा "यदि केवल आप दोनो के परिवारो के साथ मेरे परिवार का ऐसा ही घनिष्ट आत्मीय सम्बन्ध बना रहे, यदि आप दोनो के परिवार या स्वय् मेरा परिवार जुदा होने को, अलग-अलग होने को बाध्य न हो तो मैं एकाकीपन का इतना अनुभव नही करूंगी। पर यही भैया का धर्म है, वर्षो बाद मिलोगे ? यह नाना जी की बात मान ले, यह असम्भव है। अब मुझे इसी पाकिस्तान मे और इन्हीकी पत्नी के रूप मे मरना है । अब व्यर्थ न तुम परेशान होना, न मुझे परेशान करना।"

मैंने कहा "कल रविवार है। घोरपडे जी ने मेरे द्वारा अपने यहाँ कल का निमन्त्रण दिया है। प्रातः छै बजे उनके यहाँ तुम लोग पहुँच जाना। फिर प्रत्येक रविवार को तथा जिस रविवार को भी खान-पान होगा इतना समय देना किसी के लिए सम्भव न होगा। देखना है किलेदार जी पर क्या प्रतिक्रिया होती है।"

किलेदार ने दरवाज़े पर धक्का दिया। रेखा तुरन्त दूसरी कुर्सी पर

बैठ गई। ड्राइग-रूम मे आकर मुझे बैठे देखा तो रेखा से पूछा "आप का इस्मशरीफ ? आप कौन है ? ऐसा लगता है जैसे कभी देखा है इन्हें ?"

रेखा मुस्करा दी और मै उठकर किलेदार के गले से चिपट गया। उन्होंने कहा "देखो यह वहशियानापन मुझे अच्छा नही लगता है। जरा दूर रहिए। बेगम तुमने इसे घर में क्यो घुसने दिया ? कितने दिनो के बाद यह शख्स आया है ? आज जब पश्चिम से सूरज निकल रहा था तभी मैंने सोचा था कि कुछ अजीबोगरीब वाकया होने वाला है।"

रेखा मुस्कराती रही। मैं माफी माँगता रहा जब किलेदार ने कहा "मैं इस भले आदमी के यहाँ दो-दो बार गया और यह न मिला और न इसे इतनी तमीज हुई कि उलट कर मेरे घर तो आता। और ऊपर से बहिन जी ने मुझे अपने यहाँ दो-दो घटे कैद रखा, रिहाई देने का नाम ही नही लेती थी। एक तुम हो कि इसे खैर। अपने और मेरे लिए चाय-नाश्ता लाओ। खबरदार ! जो इस बेदर्द के लिए लाई।"

मुझे यह निश्चय हो गया कि किलेदार का हृदय हम लोगो के लिए वैसा ही प्रेममय और निष्कपट है। मैंने कहा "मैंने कहा था कि घोरपडे जिस दिन आयेगे उनसे बातचीत हो जाने के बाद फौरन ही तुम्हारे यहाँ दूसरे दिन आऊँगा। कल मेरी उनसे रात को बाते हुई और मुलाकात हुई और आज सेवा मे उपस्थित हूँ। घोरपडे जी रेखा जी के पिता, माता, नानी से मिले थे, आपके चाचा जान से भी। देशपाडेय से वह मिलने को सोचकर गए थे पर देशपाडेय का दो साल हुए एक मोटर-दुर्घटना से देहान्त हो गया था। आपके चाचा जान ने जो भी आपको भेजा है वह मैंने रेखा बहिन को दे दिया। आपके बारे मे मैंने थोडा-बहुत घोरपडे जी को बता दिया था।"

"अभी आया" कहकर वह भीतर चले गए। थोडी देर बाद पुलिदा लेकर आए। रेखा चाय-नाश्ता भी ले आई। देशपाडेय का नाम सुनकर

और उसकी मृत्यु का हाल जानकर उन पर क्या प्रतिक्रिया हुई यह उन्होने अपने चेहरे से जानने नही दिया, न उसके बारे मे कुछ कहा। जैसे उन्होने सुना ही न हो। हॉ देशपाडेय की मृत्यु की बात सुनकर रेखा को अतीव व्यथा हुई थी यह उसके चेहरे से स्पष्ट था। उसने अपना अश्रु पोछ लिया था। कहा एक शब्द उन्होने मुख से नही था।

किलेदार ने कहा "तुमने देखा इस औरत को ? तुम इसकी बडी तारीफ करते थे ? अपने शौहर की बात भी तो यह नही मानती। क्यो बेगम ! मैने तुमसे मना किया था इसके लिए कुछ मत लाना, तो और भी ज्यादा ले आई हो।"

चाय के बाद उन्होने चाचा जान का पत्र पढा, फिर उसे रेखा को पढने को दे दिया। कहा "कोई खास बात नही है। सब अमन है, खैरियत है वहॉ। हम लोगो को जल्दी वतन बुलाया है।" फिर पुलिदा खोलकर खिलौने तथा अपने, रेखा और हमीद के लिए भेजे कपडे आदि देखते रहे।

मैने कहा "रेखा जी के पिता, या माता दोनो ने आप दोनो को आशीर्वाद कहा है। दोनो कहते थे 'अब जो हो चुका वह हो चुका। तुम दोनो सुखी रहो, दीर्घायु हो और फलो-फूलो, चाहे जहॉ रहो। तुम दोनो का कुशल-समाचार जान कर प्रसन्नता हुई है। नाना जी तथा नानी जी ने भी आप दोनो तथा चिरजीव हमीद को आशीर्वाद कहा है। नाना जी कहते थे "हिन्दू-मुसलमान दोनो एक ही भगवान की सताने है। सब मेरी नजर मे बराबर हैं। रेखा मुसलान ही सही पर वह खुश रहे और तुम खुश रहो, यही भगवान से प्रार्थना है। कहते थे अब तो सम्बध हो जाने से किलेदार मुझे रेखा से अधिक प्रिय है। मुझे पुत्र मे अधिक प्रिय है। यह सदेश भिजवाया है कि बम्बई आवे तो पति-पत्नी मुझसे अवश्य मिले।"

किलेदार ने कहा "वह सचमुच फरिश्ता है। मेरी निगाहो मे उनकी

इज्जत बहुत ज्यादा है। इशाअल्लाह अगर बम्बई गया तो मिलने का जरूर नियाज हासिल करूँगा।"

मैने कहा "नाना जी ने आपको एक पत्र भी भेजा है। रेखा बहिन दे दो इन्हे।"

रेखा से पत्र पाकर उन्होने पढा और काफी गभीर हो गए। रेखा को पढने को दे दिया। रेखा पढ तो पहले ही चुकी थी, फिर पढ गई। मुझसे भी पढने को कहा। मैने भी वैसा ही किया।

किलेदार ने कहा "इस फरिश्ते के जजबात की मै कद्र करता हू, इज्जत करता हूँ, काश ऐसा करना मुमकिन होता। पर भाई! लगी-लगाई सरकारी नौकरी छोडकर जाना गैरमुमकिन है। साथ ही अब जिस गुलशन मे एक बार भाग कर आया और दूसरी जगह अपना नशेमन बनाया उस बने-बसे नशेमन को तोडना-छोडना नामुनासिब और नामुमकिन है। अब तो अपना वतन, अपना घर यही है। कौन लडकी मा-बाप और मैके के दीगर रिश्तेदारो के यहाँ रहती है। अपने मैके की याद आना तो मुनासिब ही है, यह तो फितरतन ठीक है। मगर हाँ तुम्हारे 'सर्कम्सटासेज' कुछ पेचीदा और तकलीफदय रहे है। बेगम! मायूसी की क्या बात है, बम्बई तो खैर कभी न कभी चलेगे ही। तुम्हारे आँसू निकलना कुदरतन ठीक है, मगर तुम न भी कहो, न भी बताओ तब भी मुझे तुम्हारी खुशियो, तुम्हारी ख्वाहिशो का ध्यान रहता है। अपनी ताकतभर मै तुम्हे तकलीफ नही होने दूँगा।"

मैने कहा "कल घोरपडे जी के यहाँ आपका छै बजे प्रात से बुलावा है, निमत्रण है। वह स्वय आपके यहाँ आ रहे थे। मैने ही रोक दिया। कहा 'मै स्वय आपकी ओर से कह दूँगा।' अच्छा अब जाने की आज्ञा दे।"

किलेदार ने कहा "निहायत दानिशमदी का काम किया। बेगम! खाना पकाने जा रही हो न! इनका खाना भी बना लेना। जब तक मै जरा घोरपडे के यहाँ मिल आऊँ।"

मैंने कहा "भाई भोजन यहाँ नही ! देर मे पहुँचा तो क्यो डाँट खिलवाने पर तुले हो। नही रेखा बहिन ! मत बनाना।"

किलेदार ने कहा "खुदा करे डाँट नही, मार पडे। मै अपनी बीबी को ज्यादा पहचानता हूँ। तुम्हारी यह बात कभी नही मानेगी। कोशिश करके देख लो—कुछ शर्त्त बद कर। बेगम अगर तुम्हारी शिफारिश करेगी तब तो खैर देखा जायगा नही तो तुम्हे रात भर नही जाने देना चाहता। तुम्हारी यही सजा है कि बहिन जी तुम्हारी मरम्मत करे।"

हम दोनो घोरपडे जी के यहाँ गए। करीब डेढ घटे वहाँ बैठे। आते-जाते अनेक प्रश्न किलेदार मुझसे नासिक, बम्बई आदि के सबध मे करते रहे और जो उचित और आवश्यक उत्तर होते थे, वह देता रहा।

घोरपडे जी से उन्होने रेखा के माँ-बाप, नाना-नानी के बारे मे और उनके विचारो के बारे मे काफी जानकारी सवाल-जबाब द्वारा प्राप्त की। अपने विद्यार्थी जीवन की घटनाये एक बार फिर उनकी कल्पना मे साकार हो गई होगी। बहरहाल वह सतुष्ट ही दिखाई दिए।

किलेदार के यहाँ वापस आकर भोजन किया फिर लड-झगड कर किसी तरह से ११ बजे घर को चला। किलेदार ने कहा "अबकी महीनो का लम्बा गोता लगाया तो इससे कडी सजा मिलेगी।"

प्रात काल मै तथा किलेदार सपरिवार घोरपडे के यहाँ पहुँचे। बहुत दिनो के बाद आज फिर हाहा-हूहू हुआ और महफिल का रग जमा। किलेदार को घोरपडे अपनी यात्रा-सम्बन्धी बाते विस्तार से बताते रहे। उधर रेखाजी से खूब खुल कर मधूलिका जी से बाते हुई। तीनो सहेलियाँ थी ही वहाँ। रेखा को दोनो स्त्रियो ने प्रत्येक प्रकार से सान्त्वना दी कि हम लोगो के होते हुए तुम क्यो एकाकीपन अनुभव करो। रेखा जी काफी रोती रही।

रेखा ने अपना भावी कार्यक्रम उन दोनो की सलाह से निश्चय कर लिया, उन्हे क्या करना चाहिए क्या नही। यह भी मजुला और मधूलिका ने उन्हे सलाह दी। द्विविधा वाली अनिश्चित स्थिति सदा कष्टप्रद होती

को भी देना सभव न होता। क्योकि आखिर हम सभी को अपने-अपने निजी काम थे।

रेखा से एकान्त मे मिलने के अवसर कम मिलते। मैं चाहता भी न था। क्योकि अब एकान्त मे बातचीत करने को शेष रह ही क्या गया था। मुझे भी सबका तर्क समझ मे आ गया था कि चूँकि रेखा और किलेदार एक-दूसरे को प्रेम करते है, किलेदार उदार विचारो का है और रेखा की भावनाओ का ध्यान रखता है, इससे इन दोनो की बसी-बसाई गृहस्थी को अस्तव्यस्त न किया जाय। यदि रेखा और किलेदार दोनो ही एक साथ हिंदू-धर्म मे परिवर्तित किए जा सके या यदि दोनो यवन रहते हुए भी नाना जी की इच्छा के अनुसार फिर बम्बई जाकर बस सके तब ही कुछ किया जा सकता है और करने का प्रयत्न किया जाय, पर इसके पहले चुप ही रहा जाय। पर ये दोनो बम्बई मे फिर बसेगे यह असभव है। घुटना जब झुकेगा पेट की ही ओर—यह स्वाभाविक ही है। अत किलेदार के इस्लाम-प्रेम ने उसे यदि पाकिस्तान का प्रेमी बना दिया था तो क्या बुरा था, क्या अस्वाभाविक था। और लगी-लगाई नौकरी को कौन छोडना पसद करता—बिना विशेष कारण के। पर चूँकि तीनो स्त्रियाँ कभी-कभी एक-दूसरे के यहाँ आ जा सकती थी। कभी-कभी, इससे रेखा को थोडी सान्त्वना थी। हम लोगो के यहाँ जब भी त्योहार होता तब रेखा तो अवश्य बुला ली जाती। रेखा भी मुसलमानी त्योहारो पर मजुला तथा मधूलिका को बुला लेती।

पर रेखा मुझसे रुष्ट थी क्योकि मै उससे अकेले मे मिलने से जान-बूझकर दूर भागता था। एक तो उसकी आवश्यकता ही न थी अब, और दूसरे वह खतरनाक चीज थी और उससे मेरा और उससे भी अधिक रेखा का अहित हो सकता था, और तीसरी बात यहै थी कि अकेले मिलने पर प्राय वह रोती ही रहती थी। मुझे स्वय भी ग्लानि थो अपने ऊपर कि मैं रेखा की विशेष सहायता नही कर पाया, यद्यपि जिस रूप मे सहायता मैं देना चाहता था उसे स्वय रेखा भी पूरे मन

मे नही चाहती थी; और वैसी सहायता देना मेरे भी बूते के बाहर की बात थी। तभी एक विशेष बात हुई।

मुझे पाकिस्तान से कही दूसरी जगह ट्रासफर (बदली) करने की कुछ उडी-उड़ी खबर मुझे मिली थी—कदाचित् मास्को, इगलैड या अमरीका। मै अपने कार्यो मे विशेष कुशल समझा जाता था और जिन अफसरो के आधीन मुझे कभी भी काम करना पडा वे प्राय मुझसे अत्यत सतुष्ट ही रहे। अपने ट्रासफर होने की शका की बात मैने रेखा से बता दी थी और कहा था कि किलेदार या किसी से न कहे अभी।

उसे सुनकर रेखा अत्यन्त व्याकुल हुई थी और रोई थी। पर नोकरी की बात थी और मेरी बेबसी को वह समझती थी। कहती थी "भैया तुम चले गए तो मै अधिक दिनो तक नही जिऊंगी। मेरा सहारा, मेरा बल टूट जायगा। घोरपडे जी यहा है। पर जितनी आत्मीयता तुम्हे मुझमे हे या मुझे तुमसे, उतनी उनके साथ नही है—न मेरी ही न उनकी। हो सके तो अपनी छोटी बहिन के लिए मत जाओ भैया! मै स्वार्थिन हूं, तुम्हारा पदोन्नति तथा विकास मे बाधक बनना चाहती हू, मुझे ऐसा नही चाहिए पर ।" रेखा की वाणी उसकी सिसकियो मे छिप गई थी।

रेखा की अन्तर्व्यथा मै भी समझता था। मैने कहा "मै केवल प्रयत्न कर सकता हू कि यहाँ से न जाऊं। लिखा-पढी, कहा-सुनी भी अफसरो मे यदि सभव हुआ तो करूंगा। पर यह 'डिप्लोमेटिक सर्विस' है, यहा के नियम कुछ अधिक कठोर तथा विशेष होते है। काश मै यहाँ रह सकूँ—अपनी रेखा के लिए।

"देखो रेखा! चूंकि मुझसे बडे अफसर तथा स्वय हाई-कमिश्नर बहुत प्रसन्न है, इसीसे मै नौकरी से निकाला नही गया हूँ नही तो कब का या इस्तीफा देने को बाध्य किया जाता या निकाल दिया जाता या किसी अन्य विभाग मे भी मेरी तब्दीली की जा सकती थी। मेरे ऊपर अफसरो का वरद हस्त है इसी से मै बच गया हूँ। मैने तुम्हे बताया

था यह 'डिप्लोमेटिक सर्विस' है, तथा इसमे कुछ ऐसे विशेष नियम है जिनका हमे पालन करना पडता है। हम लोगो को बहुत ज्यादा लोगो से घुलने-मिलने की मनाही है—विशेष कर पाकिस्तानी लोगो से और उससे भी अधिक पाकिस्तानी सर्विस वालो से। मेरा तुम्हारे पति से इतना अधिक हिलना-मिलना लोग जानते है। मुझे ऐसा नही करना चाहिए था—जिस सर्विस मे मै हूँ उसके विचार से तथा उसके नियमो के आधार पर।

"मुझ पर सदेह किया जाना स्वाभाविक है कि कही मै पाकिस्तानियो से मिल तो नही गया हूँ और उनका एजेंट हूँ। मेरी काफी शिकायत की गई है, अफसरो के कान भरे गए है। श्री घोरपडे ने मुझे पहले ही कई बार सूचित किया था, समझाया था कि 'तुमसे तथा तुम्हारे पति से इतना अधिक हेल-मेल इस डिप्लोमेटिक सर्विस के नियमो के विरुद्ध है—यह तुम अपने लिए खतरा उत्पन्न कर रहे हो। तुम्हारे ऊपर आँच आ सकती है। और जो तुम प्रयत्न रेखा के लिए कर रहे हो इसमे तो तुम पाकिस्तान के विरुद्ध कारवाई कर रहे हो और तुम्हे भारत का सी० आई० डी० भी समझा जा सकता है तथा तुम्हे तुरत पाकिस्तान छोड कर जाने की आज्ञा मिल सकती है। रेखा के लिए व्यक्तिगत खतरा तो जो है सो है ही, तुम्हारी जान का भी खतरा किलेदार द्वारा हो सकता है, यदि उसे तनिक भी सदेह हुआ, या भडाफोड हुआ।

"पर तो भी रेखा! तुम्हारे लिए मैने सब कुछ खतरा उठाना स्वीकार किया।"

"मै अपने कार्य मे अत्यधिक कुशल हूँ। आजकल कोरिया का प्रश्न अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्न है। अत इगलैड, अमरीका तथा रूस मे हाई-कमिश्नर तथा एम्बेसडरो के दफ्तरो मे तीक्ष्ण बुद्धि वाले कार्य-कुशल व्यक्ति भेजे जा रहे है। मुझ भी सौभाग्यवश एक योग्य व्यक्ति समझा जाता है। अत इस प्रकार के ट्रासफर साधारण बात है। जाना तो मुझे पडेगा ही। नौकरी छोड दूँ तो और बात है। पर नौकरी छोड

कर मैं यहाँ रह नही सकता, क्योकि पाकिस्तानी तो मै हूँ नही, भारत मुझे जाना ही पडेगा। यह राजनीति का प्रश्न है। अत मेरा मास्को जाना ही उत्तम है।

"हा ऐसा नियम होता है कि एक देश से दूसरे देश को भेजने के पूर्व भारत मे अपने परिवार वालो से मिलने जाने देने के लिए अवकाश दिया जाता है। साथ ही भारत मे कुछ कार्य-सम्बधी प्रशिक्षण भी होता है अत मुझे भारत जाना पडेगा और कुछ दिनो दिल्ली भी रुकना पडेगा। भारत जाऊँगा तो स्वय तुम्हारे माता-पिता-नानी-नाना से मिलूँगा और सभव है किलेदार भी अपने चाचा से मिलने को कहे। मै स्वय बम्बई मे किलेदार का घर देखना चाहता हूँ।

"तुम मुझसे तर्क मत करो। मै तुम्हारी 'ना' नही सुनना चाहता। जो आज्ञा देता हूँ करो। तुम अपने पिता, माता, नानी तथा नाना को एक-एक पत्र लिख रखो। मुँह खोलने का प्रयत्न मत करो। क्या लिखो, तुम्हारे ऊपर छोडता हूं, पर लिखो अवश्य। जैसे भी होगा, जो कुछ भी उन लोगो से बाते होगी तुम्हे सूचित करूँगा—पत्र के द्वारा, जो घोरपडे को भेजूँगा। यदि डाक से उन्हे भेजा तो अत्यन्त सतर्क होकर लिखूगा। यदि किसी के द्वारा भेजा तो खुल कर लिखूँगा। प्रयत्न यही होगा कि कोई विश्वासपात्र भारत से पाकिस्तान आता हो तो उसके द्वारा ही घोरपडे को पत्र भिजवाऊँ, भले ही इसमे समय अधिक लगे। घोरपडे किसी न किसी तरह मधूलिका द्वारा तुम्हे मेरा पत्र दे देंगे।

"रेखा! आदमी कितना बेबस होता है—तुम भी और मै भी।"

मै केवल रेखा के सिर के बालो पर हाथ फेरने और उसे ढारस बंधाने के अतिरिक्त कर ही क्या सकता था।

मेरी स्त्री ने बताया था कि रेखा मुझसे मिलने पर इस बुरी तरह से गले चिपट कर रोई थी कि जैसे उसका हृदय फट जायगा। यदि भारत होता तो मैं तुमसे कहती 'हटाओ छोड़ो इस नौकरी का मोह।

रेखा के लिए उसके पास ही रहो, कोई नौकरी ढूँढने का यही प्रयत्न करो।' पर यह है पाकिस्तान।"

श्री घोरपडे की भारत-यात्रा के चार-पाँच मास के पश्चात् ही मुझे मास्को जाने का आर्डर मिल गया। मैने घोरपडे तथा उनकी पत्नी से विशेप जोर देकर भावपूर्ण वाणी मे कहा "योरुप जाने, पदोन्नति की आशा मे मुझे प्रसन्नता नही है यह कैसे न कहूँ, पर उससे कही अधिक पीडा और क्लेश मुझे इस अभागी बहिन को छोडने मे हो रहा है। वह इस सीमा तक मुझसे दुलराती है जैसे वह बच्चा हो, और मै उसका नाना नानी, माता-पिता हूँ। वह मेरा इस सीमा तक विश्वास करती है कि मुझसे अकेले मिलने मे कभी उसे सकोच नही हुआ। मेरे जाने के बाद उसकी क्या मनोदशा होगी इसकी कल्पना मै कर सकता हूँ। मै अपनी तथा अपनी पत्नी की पूरी जिम्मेदारी, रेखा के प्रति अपने स्नेह को सँभालने का पूरा भार आप दोनो पर डाल रहा हूँ। आप दोनो पर अब दुगना उत्तरदायित्व है। जब तक आप दोनो मुझे पूरा आश्वासन नही देगे रेखा की देखभाल का, मुझे मास्को मे मानसिक शान्ति नही मिल पावेगी।"

घोरपडे ने कहा "अपनी बढी हुई जिम्मेदारी का मुझे आभास है। और इतना तो तुम समझते ही हो कि मैं उसे यथा-शक्ति निभाने का प्रयत्न करूँगा। रेखा मेरी और मधूलिका की सगी बहिन, सगी बेटी-सी हुई, पर तुम्हारी मौजूदगी से जो उसे राहत मिलती थी, बल था, ढारस था, वह मुझसे उसे प्राप्त नही होगा। किलेदार से यद्यपि तुमसे भी पहले से मेरा परिचय है पर जितनी आत्मीयता तुम्हारी उसमे और रेखा से है उतनी मेरी नही। तो भी मै तथा मेरी पत्नी जो कुछ कर सकते है करेंगे।"

मेरी पत्नी से भी कुछ ऐसी ही बाते मधूलिका बहिन ने कही और सुनी। इसके अतिरिक्त हम लोग कर ही क्या सकते थे।

किलेदार को जब मैने अपने मास्को के ट्राँसफर की बात बताई

तो उसने भावुक होकर कहा "तुम-सा अजीज और प्यारा दोस्त और भाई और बहिन मुझसे अलग हो जायँगे—और खुदा जाने अब फिर कभी मुलाकात हो या न हो—तो समझो मेरी एक बाँह ही टूट गई। मैं तो खैर बर्दाश्त भी कर लूँगा, आदमी हूँ, यार-दोस्तों, घर और आफिस के कामों में मशगूल रहकर भूला भी रहूँगा—और फिर वक्त वह मरहम है जो हर जख्म, हर दर्द को अच्छा कर देता है कम कर देता है—मगर तुम्हारी रेखा बहिन के लिए यह नाकाबिले बरदाश्त खबर है। वह टूट जायगी। तुम मेरी बात पर यकीन करो। मैं अपनी बीबी को पहचान चुका हूँ।"

मैंने किलेदार से कहा "मेरे भाई! जाने के पहले मैं तुमसे दो-तीन भीखें माँगता हूँ, मेरे सवाल हैं तुमसे, अगर तुम उन्हें पूरा कर सको।"

किलेदार ने कहा "जान देकर भी उन्हें पूरा करने की कोशिश करूँगा, अगर यह मेरे लिए मुमकिन हुआ। उन्हें तुम कहो तो। भीख नहीं, हुक्म कहो। मुझ पर तुम्हारा हक है।"

मैंने कहा 'पहली भिक्षा तो यह है कि मैं और मेरी पत्नी अपनी बहिन रेखा को तुम्हें सौंप रहे हैं वैसे ही जैसे कन्या के माता पिता उसके विवाह के पश्चात उसे उसके पति के हाथों में सौंपते हैं। मेरी बहिन को किसी तरह से दुःख और चिंता न होने पावे, उनका स्वास्थ्य न गिरने पाए, उनकी हर उचित इच्छा की पूर्ति हो, इसका तो तुम स्वयं ही सदा ध्यान रखते हो, पर अब से और भी। यह मेरी थाती है जो मैं तुम्हें सौंपे जा रहा हूँ। दूसरी भिक्षा यह है कि मेरा अभाव तुम और रेखा दोनों ही अनुभव करोगे ही, मगर उस कमी को तुम घोरपड़े और मधूलिका बहिन से पूरा करना। जो मैं तथा मेरी पत्नी तुम दोनों के लिए है, वैसे ही तुम दोनों अपने सम्बंध उस परिवार से रखोगे, वरन् उससे भी बढ़ कर उनसे सम्बंध रखोगे, उन्हें अपना समझोगे। तीसरी भीख यह माँगता हूँ कि कभी भी मेरी सम्मति या सेवा की

आवश्यकता तुम्हे या रेखा को पडे तो तुम निसकोच मुझे लिखोगे। देखूंगा मै क्या कर सकता हूं ।"

मेरी आँखे नम हो गई थी और किलेदार की भी ।

उसने कहा था "मै खुदा की कसम खाकर कहता हूँ कि तुम्हारे तीनो ही हुक्मो को सिर-आँखो पर लेता हूँ—हुक्म-उदूली नही करूँगा। जहाँ तक मजहब का सवाल है उसे छोड कर मैने कोई रेखा की ऐसी बात नही है जो नही मानी है। यही मेरा कौल पहले भी था और यही अब भी है। रेखा की हर तमन्ना पूरी कर सकूं, उसकी तन्दुरुस्ती और खुशी को बरकरार रख सकूं, कोशिश यही मेरी रही है और रहेगी। तुम्हारी धरोहर को जान से ज्यादा अच्छी तरह से रखूँगा। धोरपडे जी मुझे तुम्हारी तरह ही अजीज है, मगर अब से वह और उनकी मुअज्जिजा बीवी दोनो मेरे ही खानदान का एक हिस्सा होगे। नाना जी की ख्वाहिशो को पूरा करना मेरे लिए कितना गैरमुमकिन है यह तुम ठीक से समझ सकते हो। मगर एक छोटी सी इल्तिजा मेरी भी है। जब तक तुम मास्को के लिए रवाना नही होते हो उन पाँच-छै, चद दिनो, तुम दोनो कम से कम एक वक्त का नाश्ता और खाना मेरे यहाँ जरूर खाओगे। मेरा खयाल है दफ्तर मे छुट्टी के बाद ठीक रहेगा।"

मैने कहा "तुम्हारी शर्त्त मजूर करनी ही पडेगी मगर एक बात अगर तुम अपने ऊपर ओढ सको ?"

"वह क्या ?"

"दफ्तर से लौटते वक्त तुम अपनी बहिन मजुला को हर रोज अपने साथ ले आया करो—इतना कष्ट करो। मुझे चद दिन ही मास्को जाने मे रह गए है। न जाने मुझे कहाँ और क्या करना पडे इन दिनो मे, इस लिए शाम को पत्नी को लेने जाने के बधन से मै मुक्त रहना चाहता हूँ।"

"मुझे इसमे तकलीफ काहे की होगी। मगर अकेले ..... ?"

"मगर अकेले तुम्हें उन्हें लाने में संकोच होगा ? या यह नामुनासिब होगा ? या मंजुला बहिन पर यह तुम्हारी बेजा सख्ती तो न होगी ? या मैं मुसलमान हूँ ? यही सब तुम कहने वाले थे न ! भाई क़िलेदार ! अब भी तुम यह सोच सकते हो, जब वह तुम्हारी बहिन है और मैं तुम्हारा भाई ?"

क़िलेदार मुझसे लिपट गया। बोला "न जाओ भाई, न जाओ मास्को, हम लोगों को छोड़ कर।"

मैंने कहा "तो एक काम करो। तुम पाकिस्तान का मोह छोड़ो, मैं मास्को का। चलो हम दोनों बम्बई चलें। नाना जी के चरणों पर अपने शीश रख दें। और मुझे और घोरपडे को सपरिवार या मुसलमान बना लो या तुम सपरिवार हिंदू हो जाओ।

किलेदार को कोई अत्यन्त आवश्यक काम था। घंटा भर को वह बाहर चला गया। रेखा से कहता गया "यह यहाँ से जायेंगे नहीं जब तक मैं वापस न लौटूँ।"

उसके जाने के बाद रेखा मुझसे लिपट गई और जो उसने सिसकना प्रारम्भ किया तो फिर निरन्तर आँसू बहाती ही रही। मैंने उसके माथे को बार-बार चूमा और उसे हर तरह से ढारस दिया कि जो अब तक मैं और मंजुला हैं वही अब से घोरपडे और मधूलिका तुम्हारे लिए होंगी। पर यह समझाने भर की बात है—मेरा अभाव घोरपडे पूरा नहीं कर सकेंगे, यही वह सोचती होगी।

बातें हम लोग अधिक क्या करते। जब व्यथा और चिन्ता अपनी पराकाष्ठा पर होती हैं तब मस्तिष्क काम करना बन्द कर देता है और जिह्वा मौन हो जाती है।

मास्को जाने के पूर्व भारत जाना था। पर भारत से सीधे ही मास्को जाना था। अतः रेखा से हम लोगों का चन्द दिनों का संयोग शेष था। हम पति-पत्नी लगभग सायं ६ बजे से ९ बजे रात तक क़िलेदार के यहाँ हाजिरी देते। और किलेदार ने ऐसा ही करने को

घोरपडे को भी सपत्नीक बाध्य किया। एक दिन शहरयारखाँ भी अपने परिवार के साथ सम्मिलित हुआ था।

सब एक साथ एकत्रित अवश्य होते थे, पर उत्फुल्लता पर भावी-वियोग की छाया पड चुकी थी। मैंने प्रत्येक दिन रेखा को अलग एकान्त मे मिल लेने का अवसर दिया किसी न किसी तरह भले ही पाच मिनट को सही। उसकी यही इच्छा थी, मेरे साथ अन्तिम इच्छा। पर मिलने पर सिवाय रोने के वह कुछ करती न थी।

भारत जिस दिन मे हवाई-जहाज से रवाना हुआ, करॉची ऐरोड्रोम पर घोरपडे तथा किलेदार सपरिवार थे। मेरे अनेक मित्र ओर शहरयारखाँ भी वहाँ मौजूद थे। सब के दिल भारी थे। रेखा का मधूलिका सहित सँभाले थी। जब हवाई-जहाज ने जमीन छोडी तो मै अपने सब मित्रो की व्यथा का अनुभव कर रहा था। जब तक देखा जा सका मै बराबर आँसू पोछती हुई रेखा को देखता रहा और कदाचित् हवाई-जहाज जब तक दिखाई देता रहा होगा, तब तक घोरपडे तथा किलेदार-सपरिवार आकाश की ओर देखते रहे होगे।

दो दिन पूर्व जो फोटो-ग्रुप हम लोगो ने खिचवाया था, जिसमे न केवल हम तीनो के परिवार थे वरन् शहरयारखाँ भी अपनी पत्नी ओर बच्चो के साथ था, मै उस फोटो-ग्रुप को निकाल कर देखता रहा। सब इस क्रम से फोटो मे कुर्सियो पर बैठे हुए थे—शहरयारखा, घोरपडे, किलेदार, मै, रेखा, मजुला, मधूलिका, शहरयारखाँ की पत्नी। हमे सबके बच्चे किसी न किसी की गोद मे थे या पृथ्वी पर आगे बैठे हुए थे। हमीद मेरी पत्नी की गोद मे था, मेरा एक-एक बच्चा रेखा ओर किलेदार लिए हुए थे, शहरयारखाँ का एक बच्चा मेरी गोद मे था ओर दो बच्चे मधूलिका और घोरपडे की टाँगो के बीच मे थे। शहरयारखाँ और उसकी पत्नी की गोद मे घोरपडे के दो बच्चे थे। शेष आगे बैठे हुए थे।

× × × ×

: २२ :

भारत पहुँचने पर अपने परिवार वालो से मिलने के पश्चात् मै नासिक गया। पर नासिक पहुचने के पूर्व ही मै रेखा के पिता तथा नाना को पत्र लिख चुका था। नासिक मे जिस प्रेम से रेखा के माता-पिता मुझसे मिले और जो आत्मीयता उन्होने मुझसे दिखाई वह भूलने की चीज नही है। मैने समस्त बाते रेखा के सम्बन्ध मे विस्तार से बताई। मेरे वहा से चले आने के बाद रेखा की क्या दशा हो सकती है, इसका भी वर्णन किया। रेखा के पत्र भी दिए।

रेखा के पत्र कुछ पक्तियो के ही थे। वह लिखती ही क्या। यही लिखा था कि एक भूल कर चुकी है, उसका मूल्य चुका रही हूँ, पर आप लोगो के दर्शनो की अभिलाषा लिए ही न मरना पडे, यही भगवान से प्रार्थना है। नाना जी का प्रस्ताव यह मानने को तैयार नही हूँ आदि।

रेखा के पिता ने मुझसे कहा "रेखा को तो मै नही लिखूँगा। तुम लिखना तो लिख देना। एक गलती तो कर चुकी है। अब दूसरी गलती किलेदार को छोडकर न करे। जो होना था वह हो गया। अब तो तुम भी वहा नही हो। तुम होते तो उसे भी धीरज रहती। घोरपडे जी जो तुम्हारे विषय मे हम लोगो को बता गए उससे तुम पर हमे भरोसा था। ईश्वरेच्छा! वह जहाँ रहे प्रसन्न रहे। सन्तान की कल्याण-कामना तथा उसकी शान्ति और सुख ही माता-पिता चाहते है।

नाना जी तथा नानी जी से भी मिला। रेखा ने वैसा ही कुछ उन्हे भी लिखा था और उन्होने ने भी ऐसा ही कुछ कहा जैसा रेखा के पिता ने मुझसे कहा था, मुझे रेखा को लिख देने को कहा। स्वय पत्र रेखा को लिखने को नाना जी भी प्रस्तुत नही हुए। हा नाना जी और नानी जी रेखा की सुधि करके निरन्तर रोते रहे।

एक-एक फोटो-ग्रुप रेखा के पिता तथा नाना के लिए भी लाया था

भी उन दोनों को भी जबरदस्ती दे आया, विशेष कर रेखा के पिता को।

किलेदार ने अपने चाचा को पत्र दिया था। उनके चाचा से भी मिला। बहुत प्रेम से वह मुझसे पेश आए और खातिरदारी की।

बहुत भारी मन से मै बम्बई से लौटा था।

बाद मे ये सारी बातें मैंने रेखा को पत्र मे लिखी थी जो एक पाकिस्तान जाने वाले सज्जन के द्वारा मैंने घोरपडे को भिजवा दिया था, जिसे घोरपडे, मधूलिका तथा रेखा ने अवश्य पढा होगा।

भारत मे तो नही मास्को से मैंने शहरयारखाँ, घोरपडे और किलेदार को पहुँच के पत्र लिखे थे। किलेदार के ही पत्र मे नीचे रेखा का मैंने पत्र लिखा था। यही उसे लिखा था कि तुम्हारा स्वास्थ्य तुम्हारे पास मेरी धरोहर है। जब भी तुमसे मिला और तुम्हारे स्वास्थ्य को तनिक भी गिरा हुआ पाया तो तुम्हे फिर कभी क्षमा नही करूँगा। पत्र लिखने मे मैं आलसी हूँ। हो सकता है इसकी शिकायत तुम्है क्या सभी को रहे, परन्तु कोई भी दिन क्या ऐसा हो सकता है जब तुम्हारी और किलेदार की याद मुझे न आवे, आदि। पत्र छोटा सा था।

उत्तर भी आए थे। रेखा का उत्तर दो-चार वाक्यो का था —

पूज्य भैया,

सादर नमस्कार।

मै स्वस्थ और प्रसन्न हूँ। तुम सबको भगवान सुखी रक्खे। मुझे तुम लोग याद कर लेते हो, मेरे लिए यह कम नही है। घोरपडे जी तथा उनकी पत्नी का स्नेह मुझे बराबर मिलता है परन्तु.. ....। खैर कोई नई बात नही है जो तुम्हे लिख सकूँ। बहिन जी को नमस्कार और चि० बच्चो को आशीर्वाद।

तुम्हारी छोटी बहिन,
अभागिनी रेखा।

\+ \+ \+ \+

दो एक अक्षरो पर आँसू गिरे थे यह स्पष्ट था ।

शहरयारखाँ और किलेदार को मैने फिर पत्र नही लिखे । किलेदार जी के दो-एक पत्र अवश्य आए थे, पर मैने उत्तर नही दिया । फिर उन्होने भी पत्र लिखना बन्द कर दिया । घोरपडे के पत्रो मे वह अपनी और रेखा की शिकायत लिखवा देता था । रेखा का नाम कदाचित् अपने मन मे लेना होगा क्योकि मुझे न जाने क्या लगता है कि रेखा का सुख और आशा मेरे बाद बहुत कुछ समाप्त हो गई होगी और किलेदार मे मेरा नाम लेने को वह बराती होगी । उसकी पीडा, उसकी निराशा को मै समझता हूँ । घोरपडे को मै अवश्य कुछ दिनो पत्र लिखता रहा था और उनके पत्र मे रेखा और किलेदार तक अपनी भावनाओं को उन तक पहुँचा देने का लिखना था ।

मैने घोरपडे को लिख दिया था कि रेखा की पीडा बार-बार न उभरे उससे जान-बूझकर मै उसे पत्र लिखना समाप्त कर चुका हू । थोडे दिन तडपेगी, फिर स्वय धीरज आ जायगा । उससे फिर मुलाकात होगी ही, कैसे कह सकता हूँ, और कभी दस-पाँच वर्ष मे हुई भी तो यह निकटता, यह आत्मीयता तो अब कहानी की बात रह जायगी । इससे वह मुझे निष्ठुर समझकर भूल जाय तो वही अच्छा ।

घोरपडे के पत्रो मे रेखा और किलेदार का हाल मिलता । वह लिखते रेखा मिलने पर प्रसन्नचित्त ही दिखती है । पर मै जानता था उसकी दिखावटी प्रसन्नता, ऊपरी मुस्कराहट भयानक है, अशुभ है । उसका हृदय जब रोता होगा, उसकी आँखो के आसू भी जब समाप्त हो गए होगे तब वह मुस्कराने की ऐक्टिग करती होगी ।

घोरपडे के पत्रो से भी मुझे पीडा होती, और उन्हे पत्र लिखना मैने लगभग बन्द सा कर दिया था ।

लगभग दो वर्ष मुझे मास्को मे आए हो गए । तब तक मै रेखा को थोडा-बहुत भूल सका था या यो कहूँ कुछ मेरी व्यथा कम हो

चुकी थी। मैं समझता था अपनी परिस्थितियों तथा भाग्य से उसने भी रो-पीट कर समझौता कर लिया होगा। तब लगभग एक वर्ष के बाद घोरपडे का पत्र मेरे पास आया। पत्र इस प्रकार था —

प्रिय आप्टे भाई !

लगभग एक वर्ष बाद तुम्हे पत्र लिख रहा हूँ। तुम मुझे न भी लिखते तो भी मैं तुम्हे पत्र बराबर लिखता ही रहता। परन्तु कुछ ऐसी ही बात थी कि मैं चुप था। मैं तुम्हे कुछ दर्दनाक बाते नही लिखना चाहता था। तुम वहाँ सिवाय तडपने के और कुछ न कर पाते, और तुम्हे व्यर्थ पीडा देने से कोई लाभ नही था। इसके अतिरिक्त रेखा जी ने मुझे बडी से बडी कसमे रखवा दी थी कि मैं कुछ भी तुम्हे न लिखू। मेरे समझाने-बुझाने और खुशामद करने पर भी वह टस से मस नही हुई थी। अपनी अन्तिम इच्छा, आदेश, प्रार्थना आदि के नाम पर किलेदार को भी कसम दे कर उसने तुम्हे लिखने से रोक दिया था। परन्तु आज उसकी रखाई कसम और निकलते आसुओं की परवाह न करके भी तुम्हे लिख रहा हूँ यद्यपि उससे झूठ बोलूँगा कि तुम्हे नही लिखा है—अगर झूठ बोल सका तो।

तुम्हारे मास्को आने के छै महीने बाद ही रेखा की तबियत कुछ खराब रहने लगी थी। तब उसकी गोद मे तीन मास की एक लडकी थी। रेखा ने अपने अस्वास्थ्य को छिपाया पर किलेदार की तेज निगाहे बराबर उसके गिरते हुए स्वास्थ्य पर ध्यान दे रही थी। उसने मुझसे जिक्र किया। मैने रेखा को विशेष रूप से देखा। उसके रोकने और बाते बनाने पर भी हम लोगों ने उसकी डाक्टरी-परीक्षा करवाई। डाक्टर को क्षय का सन्देह हुआ। एक्सरे हुआ, खून, पैखाना, पेशाब, थूक सब टेस्ट हुआ। रेखा के दोनो फेफडे खराब निकले। किलेदार सब रिपोर्टों को जान कर मेरे पास आकर देर तक रोया था।

उसने कहा था "आप्टे भाई यदि न जाते तो शायद रेखा को टी० बी० न होती। यों तो आप्टे से मेरी मुलाकात के पहले ही से रेखा

की तबियत गिरी-गिरी रहती थी, मगर आप्टे से मुलाक़ात के बाद रेखा की खुशी और तन्दुरुस्ती लौट आई थीं और आपके खानदान से रिश्ता और पुख्ता हो जाने के बाद तो वह कुछ मुटापे की तरफ़ मायल होने लगी थी। मगर तभी आप्टे चला गया और अपने साथ रेखा की खुशियाँ, उम्मीदें, तन्दुरुस्ती सब समेटता लेता चला गया। वह कहती थी कि आप्टे मेरे भाई हैं, पिता हैं, नाना हैं, माँ, हैं, नानी हैं—सब एक साथ हैं। मैं रेखा की खुशी में कितना खुश था। किसी तरह उसकी खुशी लौटी तो।

"मेरे मुसलमान दोस्तों को कम एतराज नहीं था मेरे आप लोगों से इतने हेलमेल पर। पर रेखा की वजह से मैंने उनकी शिकायतों और एतराजों को कभी परवाह नहीं की। मेरे लिए रेखा की खुशी उन सब की शिकायतों और एतराजों से ज्यादा अहमियत रखती थी। पर तक़दीर में तो कुछ और ही होना लिखा था। आप्टे और मंजुला बहिन को अगर मास्को ही जाना था तो कहीं अच्छा होता तक़दीर हमें-उसे इतना नजदीक करती ही नहीं। और किया ही था तो फिर आप्टे मास्को न जाता। अगर आप्टे से मुलाक़ात न होती, और घरेलू रिश्ते न हो पाते तो रेखा अपनी मौजूदा जिन्दगी से समझौता कर चुकी थी। तब शायद उसे टी० बी० होने की नौबत न आती। मगर आप्टे को पाकर फिर खो देना—यह धक्का वह सँभाल न सकी और इसीसे वह टूट-फूट गई, उसी का नतीजा यह टी० बी० है। क्यों किसी को किसी से इतनी ज्यादा उनसियत हो जाती है, इसे शायद परवरदिगार ही ठीक से समझ सकता है। शायद दुनिया की सारी बातों के पीछे कोई मसलहत हो। खैर ग़लती किसी की नहीं है, सब तक़दीर का खेल है।"

रेखा का तर्क है कि "मैं अच्छी हो जाऊँगी। विश्वास रखो। तब अच्छे हो जाने पर यह शुभ समाचार भैया और बहिन को भेजना। अभी व्यर्थ में उन्हें परेशान करने से क्या लाभ? ऐसा न हो कि मेरा

हाल जान कर वह बहिन के साथ मुझे देखने को व्याकुल हो जायँ और छुट्टी लेकर मास्को से यहाँ के लिए भागे। वह इतने अमीर नही है। इसके लिए वह बहिन के गहने भी बेच सकते है और कर्ज भी ले सकते है। मै उनके स्वभाव को जानती हूँ। और यह कष्ट मै उन्हे देना नही चाहती। और किसी तरह से वह यहाँ न आ सके तो पानी के बाहर की हुई मछली की तरह वे दोनो मेरे लिए तडपेंगे। पैसे का प्रबन्ध हो भी जाय तो भी हो सकता है कि उन्हे छुट्टी ही न मिले दफ्तर से, और तब भी वह मेरे लिए बेचैन रहेगे। पति, पिता, माता, नाना, नानी और स्वय आप और मधूलिका बहिन सब मेरे भाग्य ने मुझे सर्वोत्तम ही दिए है। आप देख रहे है मै धीरे-धीरे अच्छी हो रही हूँ।"

हम लोग रेखा के अच्छे होने की झूठी आशा मे भूले रहे, या कहे अपने को भुलाते रहे। और रेखा जी का तर्क भी हम लोगो की समझ मे आया।

डाक्टर ने माँ-रेखा को अपना दूध बच्ची को पिलाने को मना कर दिया। एक तो यो ही लडकी दुबली-पतली थी। एक आया रखी गई परन्तु कुछ दिनो को ही, क्योकि ऊपर के दूध पर कन्या अधिक दिनो तक जी न सकी। कदाचित् दो मास के बाद वह मर गई। और मेरा विचार है कि कन्या की मृत्यु ने एक और जोरदार धक्का रेखा को दिया। उसकी बच्चेदानी निकलवाई ही जा चुकी थी, इन कन्या के जन्म के पश्चात्। इससे इस लडकी की मृत्यु का घोर शोक पति-पत्नी को स्वाभाविक ही था। रेखा की तबियत बिगडती रही।

अब सक्षेप मे हाल यह है कि रेखा की हालत काफी खराब है। एक तरह से डाक्टर जबाब दे चुके है। सब तरफ से निराशा है हर तरह का सभव और उत्तम इलाज किया गया है। किलेदार कहता है कि 'अपने को बेचकर भी मै रेखा को बचाना चाहता हूँ। काश ऐसा मुमकिन होता।' पर सद्भावनाओ और रूपयो मे ही यदि मनुष्य

को बचाने की शक्ति होती तो कोई भी अपने प्रियपात्र को मरने क्यो देता। हम देखते है बेबसी है, तडपते रहते है और हमारी आँखो के सामने हमारा प्रियपात्र निष्ठुरतापूर्वक छीन लिया जाता है। आदमी की समस्त शक्ति रखी ही रह जाती है।

मुझे और डाक्टर को अब कोई आशा रेखा के जीवन की नही रह गई है। रेखा को तो पहले ही से नही थी यद्यपि वह हम लोगो को बहलाती रही, धोखे मे रखा। मुझे लगता है कि रेखा अपने जीवन से ऊब चुकी थी और उसने जानबूझ कर अपनी मृत्यु को निमत्रण दिया है। मै आज अनुभव कर रहा हूँ कि मुझसे बडी भूल हो गई है। मुझे पहले ही तुम्हे लिखना था। तुम्हारे पत्र उसे मौत के मुह से तो कदाचित् न बचा पाते पर उसको मृत्यु-यत्रणा न होती इतनी, या होती तो भी वह प्रसन्नतापूर्वक मर सकती। तुम्हारे पत्र उसे अमृत तो न होते, और नही हो सकते, क्योकि रोग अपनी आखिरी स्टेज पर है, पर वे पत्र अमृत के समान, घाव पर मरहम के सदृश्य होते रहे है। काश तुम उसे पत्र लिखते रहते।

अब तो जब तक की सासे है तब तक सासे है। पर जब तक स्वासा तब तक आशा। मुझसे बहुत भारी भूल हो गई, अब सिर्फ पछताना ही रह गया है। घबराना मत, क्योकि उससे कोई लाभ नही है। अब से मै प्रत्येक सप्ताह और यदि आवश्यक हुआ तो सप्ताह मे दो पत्र तुम्हे अवश्य लिखूगा। आज मै रेखा से बता दूँगा कि 'मैने पहले प्रतिज्ञा भग नही की, इसकी मुझे सदा ग्लानि रहेगी, अपनी मूर्खता पर सदा अफसोस रहेगा कि मैने क्यो तुम्हारी बात मानी और आप्टे को पत्र नही लिखा।'

मै और मेरी पत्नी अपना अधिक से अधिक समय रेखा के यहाँ देते हैं। शहरयारखाँ और उसकी पत्नी भी जी-जान से रेखा की सेवा मे जुटे है। रेखा की बीमारी ने कट्टर यवन शहरयारखाँ को भी मेरे निकट कर दिया है। उसकी बीबी भी मुझसे पर्दा नही करती है और अपने पति के सामने मुझसे भाई-साहब कह कर बाते कर लेती है।

पहाड पर भेजने की राय एक तो उसकी कमजोरी के कारण नही पडी और फिर उसकी कडी जिद् है कि पहाड पर वह नही ही जायगी। भगवान जाने वह किस कारण यह जिद् कर रही है ? तुम्हारे पत्र की आशा के लिए या मृत्यु से बचना वह चाहती ही नही हे। उसने मुझसे यही कहा है "पहाड जाने पर जो आप तथा मधूलिका बहिन, शहरयार भाई और पुखराज बहिन (शहरयार की पत्नी) की निकटता, आत्मीयता, सेवा है मै इससे वचित रह जाऊँगी। आप लोग चाहे भी तो नौकरी के कारण मेरे साथ नही जा सकते। यहाँ मुझे हर तरह की सुविधा है, सतोष है।"

पर आज जो घटना रेखा के घर पर घटी है उसने हम सब के, विशेप कर मेरे और मेरे पत्नी के हृदय को हिला दिया है और मै तुम्हे पत्र लिखने को बाध्य हो गया हूँ। यो रेखा जी के चेहरे पर तेज है। उनकी वाणी तथा उनके मस्तिष्क मे कोई कमजोरी नही आई है। वह ठीक से बात-चीत करती है। हाँ पलँग से हिलने की न उसे आज्ञा है न शक्ति। आज रेखा ने खुलकर तुम्हारा नाम लिया, तुम्हारे बारे मे दो-चार बाते कही-सुनी—तुम्हारे जाने के बाद और खास-तौर से अपने बीमार पडने के बाद आज पहली बार। इससे लगता है कि दिये का तेल समाप्त हो चुका है। किसी समय हवा का एक भी झोका उसे बुझा सकता है। जब मेरा यह पत्र तुम्हे मिलेगा तब रेखा इस पृथ्वी पर होगी या नही, मै नही कह सकता। बहरहाल दो-एक दिन मे ही तुम्हे पत्र लिखूँगा फिर। उसे पाकर तब कुछ अपना कार्यक्रम निश्चित करना। उसे पाए बिना वहा से हवाईजहाज पर न बैठ जाना यहाँ के लिए।

हाँ तो आज के हृदय-द्रावक दृश्य की बात कह रहा था। आज रविवार होने के कारण खा-पी कर जल्दी दिन मे ही हम दोनो रेखा के पास आ गए थे। रेखा आज अधिक उदास थी। उसके कष्ट भी आज अधिक बढे थे—छाती मे पीडा, खाँसी, बलगम आदि। हड्डी का ढाँचा तो पहले ही से थी। किलेदार को रेखा बराबर मना करती है कि उसके

पास अधिक न आएँ-जाएं—छूत के भय से। पर वह नही मानने है। हम लोगो को भी पास आने से रोकती रहती है। आज किलेदार रेखा के सिर को अपनी गोद मे लिए बैठे थे।

मेरे आने पर रेखा ने मुस्कराने का प्रयत्न किया। कहा "कदाचित् दो-चार दिन से अधिक न बचूँगी। कुछ इच्छाओ को लिए हुए ही मुझे जाना पडेगा। जो भगवान की मर्जी। पर यह इच्छा अवश्य थी कि मरने के पूर्व यदि नही कुछ नही, जाने दो।"

किलेदार रो दिया। बोला "रेखा! बेगम!! तुम अच्छी हो जाओ। मै तुम्हे बचाने के लिए सब कुछ कर सकता हूं। तुम्हे जीवित रखने के लिए सब कुछ छोड सकता हूँ। तुम वादा करो कि अच्छी हो जाओगी। तुम सिर्फ अच्छी हो जाओ। मै पाकिस्तान छोट दूंगा, नौकरी छोड दूंगा। मै बम्बई चला जाऊँगा। भारतीय 'नेशनल' (नागरिक) बनने की कोशिश करूंगा और उसमे मुझे कामयाबी होगी। तुम्हारे नाना जी की बात मैं मान लूंगा। महज तुम अच्छी हो जाओ! बेगम, तुम अच्छी हो जाओ!

"तुम्हारे दिल मे कहा जख्म है मै उसे समझता हूं, बेगम!

"..नही, आज से 'बेगम' नही, रेखा, सिर्फ रेखा। मै सब समझता हू, बच्चा नही हूं। जो मैने कभी नही सोचा, कभी न करता, तुम्हारे बचाने के लिए वह भी करूगा, वह भी कर सकता हूँ। मैं तुम्हे पाने के लिए, जिंदा रखने के लिए हर कीमत चुकाने को तैयार हू, हर कुरबानी करने के लिए तैयार हूं। तुम हुक्म दोगी तो मै तुम्हारे साथ हिन्दू भी हो जाऊंगा, रेखा! हिंदू भी हो जाऊगा, शुद्धी करा लूंगा। इससे ज्यादा मैं कर क्या सकता हू मेरी रेखा! काश मैं तुम्हें अपना दिल दिखा सकता कि मै तुम्हे कितना प्यार करता हूं, तुम्हारी कीमत, अहमियत मेरी निगाहो मे कितनी है!"

रेखा के नेत्रो मे चमक आ गई। वह बोली "तुम हिंदू बन सकते हो, मेरे लिए हिंदू बन सकते हो? तुम क्या कह रहे हो?"

रेखा ने कहा "तुमसे आज की बाते सुन कर मै मरना नही चाहती। ऐसे पति, भैया, नाना, पिता, घोरपडे जी के समान बडे भाई कहाँ मिलेगे। अब तक मै स्वय जीना नही चाहती थी, दवा कैसी लगती मुझे। अब मै स्वय जीना चाहती हू। मुझे बचा लो। मुझे तुम सबसे, इस ससार से प्रेम है। तुम हिदू बन जाओ या मुसलमान ही रहो, मै तुम्हारे ऊपर छोडती हूँ—भगवान की सौगध है। पर तुम मेरे नाना जी की बात मान लो बस इतना पर्याप्त है। पर अब बहुत देर हो चुकी है। अब मै चाहूँ या तुम लोग, पर मुझे जाना ही पडेगा। इसलिए अपनी अतिम इच्छाओ को तुमसे कह ही देना चाहती हूँ। मेरे मरने के बाद—मरने के पूर्व नही—तुम माता-पिता को, नानी-नाना को, आप्टे भैया-मजुला बहिन को मेरे मरने की सूचना दे देना। दूसरी प्रार्थना यह है कि तुम्हारी देख-रेख के लिए एक पत्नी की आवश्यकता है। तुम किसी यवन स्त्री से विवाह कर लोगे। अन्यथा मेरे बिना तुम अपने जीवन और स्वास्थ्य की उपेक्षा करोगे, अपने को मिटा दोगे। पहले प्रतिज्ञा करो तब आगे बढूँ।"

किलेदार ने कहा "तुम्हारी पहले की शर्त्त मजूर। मगर आखिरी कभी नही मजूर करूँगा, कभी नही मजूर करूँगा। तुम बहुत लाचार करोगी तो, तो अगर मै तुमसे झूठा वादा कर लूँ, तुम्हे खुश करने को, तो उस झूठ का गुनाह तुम्हारे सिर पर होगा, मुझ पर नही। हाँ आगे कहो। इस पर फिर कह लेना।"

रेखा कुछ देर चुप रही, सोचती रही, फिर बोली "यह क्या सभव है कि मेरी हड्डियाँ गगा जी मे डाली जा सके। मरते समय मेरे मुख मे गगाजल तो डाला ही जा सकता है, क्योकि वह तो अवश्य घोरपडे जी के यहाँ होगा। पर मै कहती थी यह सब तुम्हारे साथ अन्याय होगा। क्या मै गीता मधूलिका बहिन से सुन सकती हूँ ? अच्छा यह तो प्रतिज्ञा करोगे कि तुम अपने जीवन और स्वास्थ्य के साथ मजाक नही करोगे, अन्यथा न मै दवा पियूँगी और न इलाज कराऊँगी।'

किलेदार ने गभीर किन्तु शान्ति वाणी मे कहा "मुसलमान हूँ अभी, इससे दफनाना तो पडेगा। अव्वल तो यह मनहूस घडी आयेगी ही नही – मगर उसके बाद अगर किसी तरह से कब्र से हड्डियाँ दस्तियाब करना मुमकिन होता तो मै जरूर उन्हे गंगा जी मे डालता। मगर यह नामुमकिन है। पर मैं तुम्हारे बाल और नाखून काट लूँगा, और उन्है ज़रूर खुद कभी न कभी गगा जी मे डाल दूँगा। और मै खुद गगा जी मे नहा लूँगा। रहा तुम्हारे मुँह मे गगा-जल डालने की बात और गीता सुनाने की बात—मै मुसलमान हूँ, मगर नेक मुसलमान हूँ, ताअस्सुब मुझमे नही है—जरूर घोरपडे जी और बहिन जी ऐसा करे, सिर्फ जब शहरयारखाँ और उसकी बीबी हो यहाँ उतनी देर भर को रुक जायँ। मैं कोशिश करूगा वे कम से कम यहाँ रह सके तुम्हारे करीब। मुझे इसमे खुशी ही होगी क्योकि इसमे तुम्हे खुशी होगी।"

रेखा ने कहा "मेरी एक फोटो अभी खिचवा दो। और उसे मेरे मरने के बाद मेरे पिता, नाना जी, आप्टे भैया घोरपडे भाई साहब को दे देना।"

कितना करुणाजनक दृश्य था यह लिखना असभव है। मुझे इस जीवन मे किलेदार का ऐसा अपने मजहब पर ईमान रखने वाला सच्चा दीनदार मुसलमान और साथ ही इतना उदार विचारो वाला और सच्चा प्रेमी, पति और मनुष्य नही दिखा, नही मिला।

इतने दिनो तक तुम्हे पत्र न लिखने के कारण जो अपराध हुआ है उसके लिए क्षमा-प्रार्थी हूँ।

बहिन तथा बच्चो को आशीर्वाद। पत्रोत्तर भी देना तो दूसरा पत्र पाकर।

सप्रेम,
नारायण केशव घोरपडे।

× × +

तीसरे दिन फिर पत्र आया। उसमे लिखा था :—

प्रिय आप्टे भाई,

जो होना था वह हो चुका। कल सब की मौजूदगी मे, पति की गोद मे सिर रखे और गगा-जल मुख मे लेती हुई रेखा का नश्वर शरीर ही पृथ्वी पर शेष रह गया था। उसकी इच्छा के अनुसार उसे गीता सुनाई दी गई थी और उसे पृथ्वी पर उतार लिया गया था। मृत्यु के समय भीषण यत्रणा हो उसे, ऐसा तो उसके मुख से प्रकट नही होता था। यो उसकी आन्तरिक दशा को हम लोग कैसे जान सकते थे। बोलते बोलते और होश मे रहते ही वह मरी है—मरने के कुछ घटे पहले तक। भगवान उसकी आत्मा को शान्ति दें।

किलेदार ने उसके बालो और नाखूनो को काट लिया है और उसे एक चाँदी की डिबिया मे बद कर लिया है। रेखा का जनाज़ा उठा था। मैं भी उसमे सम्मिलित हुआ था। उसका भौतिक नश्वर शरीर इस्लामी उसूलो के अनुसार दफना दिया गया है।

किलेदार पागल-सा हो रहा है। कब्रिस्तान से आने के बाद कह रहा था "हमीद को शहरयारखाँ या तुम्हे सौप दूँगा। छुट्टी लेकर या नौकरी छोडकर हिन्दुस्तान चला जाऊँगा। रेखा की आखिरी ख्वाहिश, जो उसे ताजिंदगी रही है मेरी मोहब्बत मे मुब्तिला होने के बाद, उसे पूरी करूँगा। उसकी जिंदगी मे जो नही कर सका, उसे उसकी मौत के बाद पूरी करूँगा। उसके बालो और नाखूनो को गगा जी मे बहाने के बाद, खुद नहाने के बाद मै नासिक और बम्बई उसके वालिद-वालिदा, नाना-नानी से मिलूँगा। अपनी शुद्धी करवा कर हिंदू हो जाऊँगा। मगर चूँकि मुझे इस्लाम पर नाज है, और मैं सच्चा मुसलमान हूँ। मेरा यह काम कुफ्र होगा। इससे हिंदू बनने के बाद ही मै खुदकुशी कर लूँगा; इस्लाम छोडने के गुनाह की फौरन सज़ा अपने को यह दे दूँगा ताकि एक गैर-मुसलिम होकर कुफ्र की ज़िदगी न बिताऊँ।

"मेरे इस काम से रेखा की रूह को जन्नत मे सुकून हासिल होगा,

गहत मिलेगी । या फिर ऐसा करूँगा कि हिंदू बनने के बाद—रेखा की ख्वाहिश पूरी करने के बाद—फौरन इस्लाम मजहब फिर कबूल करूँगा । और अपनी बाकी जिंदगी खुदा की इबादत मे बिता दूँगा । नाना जी के पास भी रह सकता हू—पर बिना रेखा के मेरी क्या कीमत होगी नाना के लिए या फिर पाकिस्तान भी आ सकता हू । पर यहाँ रहूँगा, इस घर मे रहूँगा तो रेखा की याद मुझे चैन नही लेने देगी । तब या मै पागल हो जाऊगा या फिर मुझे भी तपेदिक हो जायगा ।" आदि ।

किलेदार इस समय सन्तप्त है, दुखी है, भावनाओ मे बह रहा है । उसे समझाना है । आशा है मेरी बात वह मान लेगा । अब व्यर्थ मे धर्म-परिवर्तन या नाना जी के पास रहने की भावुकता बचपन की बात है । जब रेखा ही नही रही तो फिर इन सब बेकार बातो से अब लाभ ? और मेरा ख्याल है दो-चार दिनो मे उसका यह जुनून खुद उतर जायगा ।

मेरी सलाह मानो । व्यर्थ मे भावुकता मे बह कर यहाँ आने से क्या लाभ होगा तुम्हारा ? उससे किलेदार का शोक फिर उभरेगा । तुम तथा बहिन वहाँ रेखा के लिए वैसे ही रो लेना जैसा मै और मधूलिका यहा रो रहे है । हाँ किलेदार को पत्र लिखते रहना कुछ दिन ।

पर मै फिर कहता हूँ कि रेखा-सी महाराष्ट्र की आदर्शवादी-कन्या और किलेदार सा उदार विचारो का नेक और सच्चा मुसलमान मैने नही देखा । रेखा और किलेदार का जीवन एक आदर्श पति-पत्नी, प्रेमी-प्रेमिका का ही द्योतक नही है, हिन्दू-मुसलिम एकता, हिन्दू-मुसलिम के भाईचारे का भी एक ज्वलन्त नमूना है, उदाहरण है, आदर्श है, मार्ग-प्रदर्शक दीपक है । रेखा और किलेदार की कहानी स्वर्णाक्षरो मे लिखने योग्य है ।

दो बातें तुम्हे और सूचित करना है । नासिक और बम्बई जाने के बाद जो पत्र तुमने एक सज्जन के द्वारा मुझे भिजवाया था, वह काफी देर मे मुझे मिला था । मगर रेखा के जीवन-काल मे ही मिल गया था और मधूलिका ने भी उसे पढ कर रेखा को दे दिया था । इस

तरह से तुम्हारा लिखा पत्र उसे मिल चुका है। पर पढकर उसने मधूलिका को वापस करते हुए कहा था कि इसे अपने पास वह सुरक्षित रखे।

दूसरी बात यह कि ये दो आखिरी पत्र जो मैने तुम्हे लिखे है इन दोनो की पूरी कापियाँ रेखा जी के पिता तथा नाना को भी मैने भेज दी है। जैसे तुम्हे रेखा की आखिरी फोटो भेज रहा हूँ वैसे ही उन दोनो को भी भेज चुका हूँ।

तुम्हारी भाभी तुम दोनो तथा दोनो बच्चो को सद्भावनाये भेज रही है। किलेदार ने तुम्हे सलाम लिखने को कहा है।

पत्रोत्तर की आशा मे।

सप्रेम,

ना० के० घोरपडे।

× × ×

पत्र पढकर मैने पत्नी को दे दिया। वह उसे पढती रही और रोती रही। और अपने आँसू पोछते हुए मै सोच रहा हूँ कि पहली भूल मैने रेखा को किलेदार से छुडाने की बेसूद योजना बनाने मे की थी। खैर वह तो पूरी नही हुई। पर दूसरी गलती मैने रेखा को पत्र लिखना बन्द करके की। कदाचित् उसे इसीलिए क्षय हुआ। मै पत्रो द्वारा उसे काफी ढारस बँधा सकता था।

रेखा काफी आत्म-सम्मान-प्रिय थी। वह टूट गई पर नवी नही। एक स्त्री चुप रह कर, जिह्वा सी कर कितना सह सकती है ! मेरा अन्याय भी उसने सहा पर उफ नही की।

पर मै भावुक होने के साथ ही साथ मूर्ख भी हूँ। रेखा को इतनी जल्दी मार डालने का कारण मै हूँ और भगवान चाहे मुझे क्षमा भी कर दे, पर मै स्वय अपने को इसके लिए क्षमा नही करूँगा। बेचारी रेखा ! और उस बेचारी अभागिनी की दर्दनाक मौत !!

डॉ० लक्ष्मीनारायण टण्डन 'प्रेमी'

भूतपूर्व-सम्पादक 'प्रकाश' (मासिक), 'खत्री-हितैषी' (मासिक), 'पंच-परमेश्वर' (पाक्षिक), 'होनहार' (पाक्षिक)

के कुछ अन्य ग्रन्थ:—

१. हृदय-ध्वनि (कविता-सग्रह)
२. रोगी का स्वर्ग (एकाकी-सग्रह)
३. देश के लिए (,, ,,)
४. हम अछूत नही निर्बल नही (नाटक)
५. खत्री-जाति-परिचय (इतिहास)
६. प्रमुख भारतीय वैज्ञानिक (जीवनी)
७. सयुक्त-प्रान्त की पहाडी यात्राएँ (यात्रा-साहित्य)
८. सयुक्त-प्रान्त के तीर्थ-स्थान (,, ,,)
९. प्रमुख भारतीय तीर्थ-स्थान (, ,,)
१० ऐतिहासिक लखनऊ (,, ,,)
११. जादूगरी (विविध)
१२. क्षय रोग कारण और निवारण (अनुवाद)
१३. भाग्य का विधान (उपन्यास)
१४. पुराने रास्ते : नए मोड़ (,,)
१५. बन्धन और गति (,,)
१६ बदलते युग-धर्म (,,)
१७. प्रेम की अन्तिम मोड़ (,,)
१८ आँधी के बाद (,,)
१९. दो रूप (कहानी-सग्रह)